रिमझिम

(सोलह मौलिक हास्य एकांकियों का संग्रह)

●

रामकुमार वर्मा

कि ता ब म ह ल
इलाहाबाद, बम्बई, दिल्ली

अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्

(धनञ्जय)

आचार्य भरत !

हमारे नाटककारों और अभिनेताओं को ऐसी स्फूर्ति प्राप्त हो कि
वे भारतीय रंगमंच का वर्तमान और भविष्य
अधिक उज्ज्वल और प्रशस्त करें।

रामकुमार वर्मा

समर्पण

श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

और

श्री जयशंकर 'प्रसाद'

की

पवित्र स्मृति में—

रामकुमार वर्मा

If you laugh all round him, tumble him, roll him about, deal him a smack and drop a tear on him, own his likeness to you and yours to your neighbour, spare him as little as you shun, pity him as much as you expose, it is a spirit of Humour that is moving you.

—Meredith

ये मेरे छोटे नाटक

मेरे एक आलोचक ने मेरे छोटे नाटकों के सम्बन्ध में कहा था :—

नाटक रामकुमार के, ज्यों नावक के तीर।
देखत में छोटे लगें, घाव करें गंभीर॥

किन्तु इस प्रकार की उपमा मेरे नाटकों को नहीं देनी चाहिए। जो महाकवि बिहारी के दोहों में शक्ति है, वह इन नाटकों में कहाँ! ये अपने कलेवर में छोटे हैं, साथ ही साथ शक्ति में भी! फिर कविता और नाटक के शिल्प में अन्तर भी है। आलोचक महोदय ने सम्भवतः मेरे प्रति स्नेह और आदर-भाव से ही ऐसा कहा था।

मैं नाटक में हास्य, व्यंग्य और विनोद रखने के पक्ष में अवश्य हूँ। इसीलिये मेरे गम्भीर नाटकों में भी यथावसर व्यंग्य और विनोद के चित्र मिल जाते हैं। चारुमित्रा, उत्सर्ग, दुर्गावती, तैमूर की हार, रजनी की रात आदि नाटकों में अनेक प्रसंग ऐसे हैं जिनमें परिस्थिति या पात्र की एक कंकड़ी पड़ने से हँसी या विनोद की लहरें उठी हैं और ये जो मेरे छोटे नाटक हैं, वे तो आरम्भ से अन्त तक विनोद, हास्य या व्यंग्य से प्रेरित हुए हैं।

प्राचीन दृश्य-काव्य में हास्य का विधान दो रूपों में किया जाता था। एक तो विदूषक की उक्तियों में और दूसरे प्रहसन की परिस्थितियों में। इस प्रकार पात्रों की वार्ता और परिस्थितियाँ दोनों ही हास्य की अवतारणा करती थीं। नाटक में विदूषक नायक का सहचर था। जिन नाटकों में शृङ्गार रस प्रधान होता था उनमें विदूषक आवश्यक हो जाता था; क्योंकि आचार्य भरत ने 'शृंङ्गारादि भवेद्धास्यः' सूत्र में हास्य की उत्पत्ति शृङ्गार से ही मानी थी। धीरोदात्त नायक जब-जब प्रेम के झंझावात में तिनके की तरह अव्यवस्थित होता था, तब-तब उसका मनोरंजन करने के लिए अथवा आशा देने के लिए विदूषक अपने हास्य का प्रयोग करता था। किन्तु हास्य केवल शृङ्गार से ही प्रेरणा नहीं पाता, जीवन की अनेक परिस्थितियों से बल ग्रहण करता है। अभिनवगुप्त ने हास्य का मूल अनौचित्य प्रवृत्ति में माना है। अनौचित्य प्रवृत्ति प्रत्येक रस के उद्दीपन या

आलम्बन में हो सकती है। अतः प्रत्येक रस में हास्य की संभावनाएँ हो सकती हैं। आज जब जीवन का मूल्यांकन रस-दृष्टि से न होकर केवल मनोविज्ञान के सिद्धान्त से हो रहा है तब तो हास्य का बीज पत्थर पर भी अंकुरित हो सकता है और यह बीज इतना विचित्र है कि इसमें अनेक रङ्गों के फूल एक साथ ही प्रस्फुटित हो सकते हैं।

आचार्य भरत ने हास्य के दो विभाग किये हैं, आत्मस्थ और परस्थ। जब पात्र स्वयं हँसता है तो आत्मस्थ है जब दूसरे को हँसाता है तो परस्थ है। पंडित-राज जगन्नाथ ने इसका विवेचन दूसरे ढङ्ग से किया। हास्य के विभाव को देखने से जो हास्य उत्पन्न होता है, वह आत्मस्थ है और किसी अन्य को हँसता हुआ देखकर जो हास्य उत्पन्न होता है वह परस्थ है।

वस्तुतः अपने प्रभाव की दृष्टि से हास्य तीन प्रकार का माना गया, उत्तम मध्यम और अधम। इन तीन प्रकारों में प्रत्येक के दो भेद हैं। उत्तम के भेद हैं स्मित और हसित, मध्यम के भेद हैं विहसित और अवहसित तथा अधम प्रकार के भेद हैं अपहसित और अतिहसित। प्रत्येक भेद आत्मस्थ और परस्थ हो सकता है। इस प्रकार निम्न प्रकार से हँसने की क्रिया बारह तरह से हो सकती है :—

हास्य के जो छः विशिष्ट प्रकार हैं, उनकी विशेषता निम्नलिखित है :—

(१) स्मित—शब्द-रहित मन्द मुस्कान ।

(२) हसित—मुस्कान के साथ दन्त-दर्शन ।

(३) विहसित—दन्त-दर्शन के साथ मधुर शब्द ।

(स्त्रियों के कण्ठ से 'ई' स्वर)

(पुरुषों के कण्ठ से 'आ' 'ऊ' या 'ओ' स्वर)

(४) अवहसित—मधुर शब्द के साथ शरीर-सञ्चालन ।

(५) अपहसित—शरीर-सञ्चालन के साथ हर्षाश्रु ।

(६) अतिहसित—हर्षाश्रु के साथ ताली और अट्टहास ।

हास्य के ये प्रकार हँसने के मनोभावों के विकास के आधार पर ही हैं। इस विकास में अनुभावों की रूप-रेखा भी दृष्टि में रक्खी गई है। किन्तु जब हास्य के क्रोड में विनोद मात्र न होकर कोई छल हो, प्रकट हो गई वस्तु को छिपाने का भाव हो अथवा ध्वनि-विकार से या श्लेष से अभिप्राय का रूपान्तर हो तो वह 'हास्य' रहते हुए भी एक नवीन कोटि की सृष्टि करेगा । हास्य के इस रूपान्तर को हमारे यहाँ के आचार्यों ने 'रस' के अन्तर्गत न रखकर अलंकार के अन्तर्गत रक्खा है। यही कारण है कि हमारे अलङ्कार-ग्रन्थों में हास्य की इस कोटि को व्याजोक्ति, अप्रस्तुत प्रशंसा और वक्रोक्ति आदि अलंकारों द्वारा व्यक्त किया गया है ।

आचार्य मम्मट ने इन अलङ्कारों के लक्षण निम्न प्रकार से दिये हैं :—

व्याजोक्ति—व्याजोक्तिश्छद्मनोद्भिन्न वस्तु रूप निग्रहनम् ॥१०॥११८

(प्रकट हुई वस्तु को छल से गोपन किया जाय ।)

अप्रस्तुत प्रशंसा—अप्रस्तुत प्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया ॥१०॥९८

(प्रस्तुत के आश्रय से अप्रस्तुत का वर्णन ।)

वक्रोक्ति—यदुक्तमन्यथा वाक्यमन्यथान्येन योज्यते ॥

श्लेषेणवाक्वा वा ज्ञेया सा वक्रोक्तिस्तथाद्विधा ॥९॥७८

(एक प्रकार से कहा हुआ वाक्य श्लेष अथवा ध्वनि-विकार से दूसरे प्रकार के अभिप्राय से जोड़ दिया जाय ।)

शब्द-शक्तियों में लक्षणा और व्यञ्जना भी लक्ष्य या व्यंग्य (ध्वनि) से हास्य की उत्पत्ति कर सकती हैं।

पाश्चात्य साहित्य में हास्य—(Humour) ने मनोविज्ञान का आश्रय लेकर अनेक रूप धारण किये हैं जिनमें प्रमुख ये हैं :—

(१) Satire (विकृति) आक्रमण करने की दृष्टि से वस्तु-स्थिति को विकृत कर उससे हास्य उत्पन्न करना।

(२) Caricature (विरूप या अतिरंजना)—किसी भी ज्ञात वस्तु या परिस्थिति को अनुपातरहित बढ़ा कर या गिराकर हास्य उत्पन्न करना।

(३) Parody (परिहास)—उदात्त मनोभाव को अनुदात्त संदर्भ से जोड़कर हास्य उत्पन्न करना।

(४) Irony (व्यंग्य)—किसी वाक्य को कहकर उसका दूसरा ही अर्थ निकालना!

(५) Wit (वचन वैदग्ध्य)—शब्दों तथा विचारों का चमत्कारपूर्ण प्रयोग। फ्रायड ने इसे दो प्रकार का माना है। सहज चमत्कार (Harmless Wit) और प्रवृत्ति चमत्कार (Tendency Wit)। सहज चमत्कार में केवल विनोद-मात्र रहता है किन्तु प्रवृत्ति-चमत्कार में ऐन्द्रयिक प्रतिकारात्मक भावना रहती है।

मैंने पिछले पच्चीस वर्षों में एकांकी नाटकों के क्षेत्र में जो प्रयोग किये हैं वे पश्चिम की प्रवृत्तियों से प्रभावित होकर भी भारतीय नाट्य-शास्त्र के क्रोड़ में पोषित हुए हैं। संभवतः इसीलिए मेरे नाटकों में यथार्थवाद से उद्भूत एक नैतिक आदर्शवाद है। परिस्थितियों के विचित्र संघर्षों में रस की स्थिति में मेरा विश्वास है। यह रूप मैंने रूढ़िवाद के शिकंजे से मुक्त होकर ही करने का प्रयत्न किया है, नहीं तो नवीन प्रयोगों के लिए मुझे कोई क्षेत्र हो न मिलता। इन प्रयोगों को ध्यान में रखकर हास्य के विभावों को मनोविज्ञान में स्थापित कर मैंने हास्य के पाँच भेद किये हैं जिसमें प्रत्येक के दो-दो प्रकार हैं :—

इस भाँति हास्य सहज विनोद से चलकर क्रमशः दृष्टि, भाव, ध्वनि और बुद्धि में नाना रूप ग्रहण करता हुआ विकृति में समाप्त होता है और अपनी यात्रा में मनोविज्ञान की सभी स्थितियों से गुज़र जाता है। सहज भाव में जब परिस्थितियों की प्रतिक्रिया होने लगती है तभी विकार आरम्भ हो जाता है। सबसे पहले यह विकार दृष्टि में आता है फिर वह भाव में परिणत होता है। भाव ध्वनि में प्रकट होता है और ध्वनि की प्रतिक्रिया में बुद्धि विकार होता है। इस भाँति यदि मनोविज्ञान की दृष्टि से देखा जाय तो बुद्धि-विकार दो प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप होता है और ये प्रतिक्रियाएँ हैं दृष्टि की तथा ध्वनि की। इसीलिए हास्य के अन्तर्गत व्यंग्य और विकृति की रचना गहरी दृष्टि और विस्तृत अनुभव की अपेक्षा रखती है।

सहज के दो रूप हैं विनोद और अट्टहास। इन दोनों में केवल हास्य की निरीह और निर्दोष भावनाएँ हैं जो हृदय को चिन्ता से मुक्त कर प्रसन्नता का वरदान देती हैं। विनोद तो एक बुलबुले की भाँति भाव-लहरों पर तैर कर फूट पड़ता है और अट्टहास बढ़ती हुई लहर की भाँति जीवन के दोनों तटों को अपनी बाहु में समेट लेना चाहता है। अतः इन दोनों का चित्र मेरी कल्पना में क्रमशः एक बिन्दु (०) और एक वर्तुलाकार रेखा (ᘯ) की भाँति है। दृष्टि-विकार दो प्रकार से होता है, एक अतिरंजना में वस्तु या परिस्थिति को अनुपात रहित घटा-बढ़ा देने में जैसे कोई कार्टून बनाने वाला छोटे शरीर पर बड़ा सिर बना दे या छोटे सिर में बड़े पैर जोड़ दे और दूसरे विद्रूप में (अर्थात् परिस्थितियों को उलट देने में, जैसे उलटवाँसियों में हास्य के दर्शन होते हैं।) अति-

रंजना और विद्रूप वस्तुस्थिति की सभी दशाओं में हो सकता है। इस भाँति इनका रूप मेरी कल्पना में चतुर्भुजी है। एक सीधा ( ) दूसरा उल्टा

भाव-विकार दो रूप में होता है, एक परिहास में—जिसमें उदात्त मनोभाव अनुदात्त संदर्भ से जोड़ दिया जाता है और दूसरा उपहास में—जिसमें उदात्त मनोभाव ही अनुदात्त हो जाता है। इस भाँति उपहास परिहास का ही विकसित रूप है। मेरी कल्पना में परिहास त्रिभुज है (△) और उपहास त्रिभुज के नीचे की ओर बढ़ी हुई रेखाएँ (A) हैं। ध्वनि-विकार व्याजोक्ति और वक्रोक्ति के रूप में प्रकट होता है। व्याजोक्ति में प्रकट को गुप्त कर देने का वाणी-चातुर्य है और वक्रोक्ति में संदर्भ ही बदल देने की मनोवृत्ति है जो ध्वनि-विकार से भी सम्भव है। व्याजोक्ति-रूप वाणी के चतुर्दिक चातुर्य से वर्गाकार (▭) है जो वक्रोक्ति में वक्ररेखाओं से ( ) निर्मित होता है।

बुद्धि-विकार व्यंग्य और विकृति से व्यक्त होता है। व्यंग्य बड़ा तीखा है। वह कहता एक बात है और मतलब दूसरी बात का हो जाता है। यह बहुरूपीय है। अमृत में विष डालना या फूल में कीट बनकर पहुँचना इसी का काम है। विष में बुझे हुए बाणों की नोक की भाँति यह तीखा है। मेरी कल्पना में इसका चित्र बाण के मुख की भाँति (∧) है। विकृति तो व्यंग्य और विद्रूप से सम्भव होकर वस्तु की सुचारुता को विचित्र तरह से मोड़ देती है। इसका रूप बाणों की उल्टी और सीधी नोकों के अन्तर्व्याप्त (XX) होने में है।

हास्य के मनोभावों से प्रेरित होकर मेरे द्वारा जो नाटक लिखे गये हैं, उनका वर्गीकरण न्यूनाधिक रूप में निम्न प्रकार से किया जा सकता है :—

(१) विनोद (Wit) — { —पृथ्वी का स्वर्ग; —रंगीन स्वप्न }

(२) अट्टहास (Laughter) — { —फ़ैल्ट हैट; —रूप की बीमारी }

(३) अतिरंजना (Caricature) — कवि पतंग

(४) विद्रूप (Contrast) — { —नमस्कार की बात; —एक तोला अफ़ीम की क़ीमत }

(५) परिहास (Parody) — आँखों का आकाश
(६) उपहास (Comic) — फ़ीमेल पार्ट
(७) व्याजोक्ति (Sarcasm) — छींक
(८) वक्रोक्ति (Tendency Wit) — { —एक अंक की बात
—छोटी सी बात }
(९) व्यंग्य (Irony) — { —कहाँ से कहाँ
—आशीर्वाद }
(११) विकृति (Satire) — { —इलेक्शन
—सही रास्ता }

इन नाटकों की रचना भिन्न-भिन्न अवसरों पर हुई है। नाटकों की रचना करते समय हास्य की किसी विशिष्ट कोटि का ध्यान मन में नहीं था, किन्तु आलोचनात्मक दृष्टि से विश्लेषण करने के बाद इन नाटकों की कोटियाँ निर्धारित की जा सकीं।

इन नाटकों के शिल्प-विधान में मैंने कुतूहल और संकलन-त्रय को स्थान दिया है जो मैं एकांकी के लिये अनिवार्य मानता हूँ। विविध प्रसंगों की सन्धि में ही हास्य की कोटियों के अन्तर्गत उनका निर्धारण हो सका है।

मेरे इन नाटकों के निर्माण में सदैव रंगमंच की प्रेरणा रही है। जब कभी मुझसे ध्वनि-नाटकों के लिखने का आग्रह किया गया है, तब भी नाटकों के प्रतिन्यास को छोड़कर, पात्रों के मनोवैज्ञानिक विकास और नाटकों की परिस्थितियों को उभारने में रङ्गमञ्च को स्थान मिल गया है। इस भाँति रङ्गमञ्च ऐसी पीठिका है जिस पर मेरे नाटकों की रूप-रेखा संपूर्ण कुतूहलता के साथ उपस्थित की गई है। इधर प्रयाग विश्वविद्यालय के नाट्य-संघ से मेरा सम्बन्ध लगभग बीस वर्षों से है, जिसमें मेरे नाट्य-प्रयोगों का अनवरत और अविच्छिन्न इतिहास संचित है। नाटक का संयोजन करने में रङ्गमञ्च की अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हुआ करती हैं। ऐतिहासिक नाटकों में वेश-विन्यास का निर्धारण एवं भाषा की विविधता, भावों की प्रखरता के लिए पार्श्व-संगीत का नियोजन, परिस्थितियों का चित्रण करने के लिए प्रकाश की समुचित व्यवस्था तथा भूमिकाओं के अभिनय के लिए उपयुक्त पात्रों की व्यवस्था, एक महत्वपूर्ण उत्तर-

दायित्व है। सामाजिक नाटकों में वातावरण के निर्माण में विशेष कठिनाई होती है, क्योंकि सामान्य कथानक में तब तक कोई आकर्षण नहीं आता जब तक घटनाओं में कुतूहलता की सृष्टि न की जाय। न तो वहाँ ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि है, न वेश-विन्यास। ऐसी स्थिति में रंगमञ्च एवं प्रकाश की सानुपातिक व्यवस्था में ही नाटक की सफलता सम्भव हो सकती है।

उत्तर भारत में आधुनिक रङ्गमञ्च की सबसे बड़ी कठिनाई स्त्री-पात्रों के अभिनय में हुआ करती है। हमारे समाज की शिक्षित नारियाँ भी रङ्गमञ्च पर आने में अथवा किसी स्त्री-पात्र की भूमिका का अभिनय करने में संकोच करती हैं। यह एक विचित्र-सी बात है कि वे प्रतिदिन अपने अधिकारों का क्षेत्र तो बढ़ाती जा रही हैं, किन्तु उसका वह क्षेत्र रङ्गमञ्च का स्पर्श भी नहीं कर सका, जैसे रङ्गमञ्च उनके लिए अनधिकृत क्षेत्र हो! परिणाम-स्वरूप नारी-पात्र की भूमिका के अभिनय में सुकुमार, सुन्दर और भोले लड़कों की खोज करनी पड़ती है, जिनकी संख्या दिनों-दिन घटती जा रही है। यदि संयोजक के सौभाग्य से कोई युवक मञ्च पर रूप-परिवर्त्तन के लिए राज़ी भी हो गया तो उसका अभिनय दर्शकों की रसिक-दृष्टि में परिहास का विषय बन जाता है और आधुनिक रङ्ग-मञ्च सत्रहवीं शताब्दी का रङ्गमञ्च जैसा दीखने लगता है। बात सही भी है, काग़ज के फूलों में सुगन्धि नहीं होती; पानी की किसी बूँद में वैसा सौन्दर्य कहाँ, जैसा ओस की बूँद में है—जो घास के सूखे पत्ते पर भी मोती की तरह चमकती है। विश्वविद्यालय में यदि अधिकारी-वर्ग चरित्र को पिघलने वाली मोम की गोली न समझें तो इस प्रकार की कठिनाई हल हो सकती है; किन्तु हमारे पदाधि-कारियों ने चरित्र को इस्पात का खण्ड समझना भुला दिया है; परिणामस्वरूप एक वर्ग के व्यक्तियों को दोनों वर्गों की भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है और रङ्गमञ्च 'प्रसाद' की 'ध्रुव-स्वामिनी' के बौने और कुबड़ों का रूप लेकर भद्दे परि-हास की भाँति कुण्ठित हो जाता है। हमारी इस सामाजिक हीन-ग्रन्थि ने रङ्गमञ्च के विकास में बहुत बड़ी बाधा उपस्थित कर दी है। मैं तो यह निर्भीक स्वर से कह सकता हूँ कि हमारे नवयुवक और नवयुवतियाँ यदि मर्यादा में सुदृढ़ रहते हुए, रङ्गमञ्च पर अभिनय करें तो हमारी नाट्यकला का विकास अनतिकाल में ही हमारे प्राचीन-गौरव के अनुरूप हो सकता है।

विद्यार्थियों के 'छात्रावासों' में तो नारी-पात्रों के अभिनय की कठिनाई और भी अधिक है। वहाँ नारी-भूमिका का निर्वाह करने के लिए विद्यार्थियों के समक्ष कितनी कठिनाइयाँ उपस्थित हो सकती हैं, इसका अनुमान सहज ही किया जा सकता है। जो कठिनाइयाँ मुझे छात्रावास में नाटकों का संयोजन करते समय अनुभव करनी पड़ीं, वे ही तो मेरे 'फीमेल पार्ट' शीर्षक रचना का कारण बन गई हैं।

नवम्बर १९५४ में विश्वविद्यालय ड्रैमेटिक-एसोसियेशन के तत्वावधान में 'पृथ्वी का स्वर्ग' (विनोद) नाटक प्रस्तुत किया गया। विश्वविद्यालय के कलाकारों के सहयोग से इस नाटक को अभूतपूर्व सफलता मिली। कलासमीक्षकों ने प्रयाग-नगर के सांस्कृतिक उत्सवों के इतिहास में उसे एक महत्वपूर्ण घटना कहा। यह स्पष्ट है कि रङ्गमञ्च पर नाटक की सफलता तभी सम्भव हो सकती है, जब निर्वाह्य और निर्वाहक दोनों का अनुपम संयोग हो। इसमें आधुनिक जीवन के एक परम्परावादी धन-लोलुप व्यक्ति का चित्र इस प्रकार उपस्थित किया गया है, जिससे सरल और निर्दोष मनोरंजन की सृष्टि हो सके और विनोद का उद्देश्य पूरा हो।

आजकल विश्वविद्यालय तथा कालेजों के विद्यार्थियों में एक विचित्र 'रंजना' पाई जाती है। प्रेम और अनुराग व्यक्तिगत आकांक्षाओं में होकर चलता है और यदि अनुराग नवयुवक और नवयुवती के चरम-ध्रुवों को समीप लाने में समर्थ हो सका तो उसमें एक मादक कुतूहलता निवास करने लगती है और वही कथानक के निर्माण में मुख्य संवेदना बन जाती है। 'रंगीन-स्वप्न' और 'रूप की बीमारी' इस मनोवृत्ति के दो पार्श्व विनोद का निर्माण करता है और द्वितीय पार्श्व अट्टहास का। 'रूप की बीमारी' तो कई बार रङ्गमञ्च पर जीवन का स्वास्थ्य लाई है और उसकी अनेक परिस्थितियों में अट्टहास की ध्वनि गूँज उठी है। इसी प्रकार 'फेल्ट हैट' (अट्टहास) में दो परम्पराओं का संघर्ष है। आज का नवयुवक जीवन में उपयोगितावाद को सबसे अधिक महत्व देता है। जब किसी नये हैट की उपयोगिता मूँगफली रखने में स्पष्ट होती है, तो छोटी से छोटी चीज़ को सँवार कर रखने वाली प्राचीन परम्परा से उसका संघर्ष होता है और इस संघर्ष की क्रमिक परिस्थितियों में अट्टहास निवास करता है।

हास्य की स्थिति बहुत कुछ अनुपात-हीनता तथा अतिरञ्जना में है। यदि कोई सुन्दरी सिंदूर की बिन्दी माथे पर न लगाकर नाक पर लगावे अथवा अपनी एक आँख में ही अञ्जन आँज ले तो अतिरञ्जना के साथ ही हास्य की उत्पत्ति होगी। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति में किसी गुण की अनुचित अतिरेकता भी हास्योत्पादक होती है। कवि पतंग में स्त्री-सुलभ सुकुमारता ने कवि के हृदय में अपना नीड बना लिया है। उसकी भावुकता चरम सीमा को भी पार कर गई है; अतः उसका चित्र दर्शकों को अतिरंजना का परिचय देते हुए हँसाने में समर्थ हो सका है।

मेरे दो नाटक विद्रूप की कोटि में आते हैं, वे हैं—'नमस्कार की बात' तथा 'एक तोला अफ़ीम की क़ीमत'। 'नमस्कार की बात' में फ़िल्म-निर्माण संलग्न प्रगल्भ सेठ जी अपने यौवन का स्वप्न देख रहे हैं। वे तरुण अभिनेत्री के हृदय-दर्पण में अपनी छाया देखना चाहते हैं, किन्तु इन दर्पणों में प्रायः तरुण व्यक्तियों के चित्र ही उभरा करते हैं और इसलिए बेचारे सेठ जी पैरों से कुचली जाने वाली दूब की तरह बार-बार उभरने का प्रयत्न करते हैं। बेचारे सेठ जी! 'एक तोला अफ़ीम की क़ीमत' में असफल आत्महत्या के प्रयत्न हैं। यह आत्महत्या का अभिनय निराश प्रेमियों के लिए वरदान बन जाता है और जो बात वे सौ जन्म में जीकर भी प्राप्त न कर सकते, वह वे एक बार की आत्महत्या के प्रयत्न में पा जाते हैं; किन्तु मैं यह स्पष्ट घोषित करना चाहता हूँ कि यह प्रयत्न अनुकरणीय नहीं है। किसी के भाग्य से कभी किसी परिस्थिति में यह संयोग प्राप्त होता है और वही संयोग इस नाटक में क़ैद कर दिया गया है। दोनों नाटक परिस्थितियों की विद्रूपता चित्रित करते हैं और इनमें मनोरंजन सहस्रबाहु होकर दर्शकों के हृदय पर विजय प्राप्त करना चाहता है।

'आँखों का आकाश' एक परिहास (Parody) है, जिसमें केवल दो पात्र हैं—नव विवाहित दम्पति। ज़रा सी बात पर झगड़ा कर बैठते हैं और उससे भी कम बात पर मेल कर लेते हैं। प्रसन्न-राघव' में 'महाभारत' प्रवेश कर जाता है और 'महाभारत' में 'प्रसन्न राघव'। ये स्वर्ग के चित्र एक-एक बात पर बनते और बिगड़ते हैं। न जाने कितनी कलियाँ एक ही वृन्त पर झूलती हैं और एक ही शीतल समीर के झोंके से बिखर जाती हैं। यह प्रेम का इन्द्रधनुष

बनकर बिगड़ता है और बिगड़कर बनता है । प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ये घड़ियाँ आई हैं और जब बूढ़े व्यक्ति इन्हें देखते हैं तो उनके दन्तहीन मुख पर जो हसरत भरी मुस्कराहट खेल जाती है, वही विश्व के इतिहास में एक स्मरणीय घटना है । यह परिहास परिस्थिति पर स्प्रिट में घुला हुआ नया रङ्ग चढ़ा देता है जो देखते-देखते उड़ जाता है ।

'छींक; व्यांजोक्ति के अन्तर्गत अन्ध-विश्वास का बड़ा मनोरंजक चित्र प्रस्तुत करता है, जो विश्वास के गहरे रंगों से भरा गया है । जब पाण्डित्य का दंभ असत्य का समर्थन करने लगता है तो उसके वाक्यों में सर्प की तरह बल खाती हुई सूक्तियाँ निकलने लगती हैं, जिनमें स्तुति निन्दा बन जाती है और निन्दा स्तुति । इस प्रकार के वस्तु-संगठन में सत्य का संकेत है जो काई के नीचे निर्मल जल की भाँति प्रच्छन्न है ।

'छोटी सी बात' सत्य का मनोरञ्जक इतिहास है । किसी भी महान् घटना का आधार इतना छोटा होता है कि वह सामान्य परिस्थितियों में समझा नहीं जा सकता, किन्तु वह अपने विकास में इतना वृहत् रूप धारण करता है कि उसे देखकर आश्चर्य होता है । एक छोटे से विनोदपूर्ण वाद-विवाद में इसे स्पष्ट करते हुए जीवन की प्रगतिशीलता का चित्र खींचा गया है । 'एक अङ्क की बात' कला की दृष्टि से हिन्दी में एक नवीन प्रयोग है, यह पद्य-नाटक काव्य की शोभा में घटना का विश्लेषण तीन दृश्यों में करता हुआ 'एक अङ्क की बात' को ही एकांकी बना देता है । एक ही पात्र तीन विविध भूमिकाओं में अभिनय करता है और अपनी अभिनय-कला से इस नाटक में प्राण-प्रतिष्ठा करता है । वह नेपथ्य की ओर देखता हुआ प्रतिन्यास का चित्र अपने अभिनय द्वारा खींचता है। इस प्रकार सारा नाटक एक पात्र में सिमिटकर 'वक्रोक्ति' का उदाहरण उपस्थित करता है ।

'कहाँ से कहाँ' और 'आशीर्वाद' व्यंग्य हैं, जिनमें मध्यम वर्ग के परिवार का जीवन चित्रित है । प्रथम में सास-बहूका परम्परागत झगड़ा है, उसमें भी दो परम्पराओं का संघर्ष हैं और इस संघर्ष में सन्धि हुई है, बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से । महिला संस्थाओं में इसका अभिनय अनगिनती बार हुआ है और अनेक संयोजिकाओं ने नाटककार को या तो सास का पद दिया है या बहू का ।

'आशीर्वाद' में लाटरी में इनाम पाने के लिए उत्सुक मध्यम वर्ग के पति और पत्नी की मनोवृत्ति का चित्रण है। लाटरी अधिकांश लोगों के लिए मृग-मरीचिका है—आकाश-कुसुम है, शश-शृंग है या वन्ध्या-पुत्र है। उत्साह और निराशा जैसे पति-पत्नी बन जाते हैं और इन दोनों में शास्त्रार्थ होने लगता है। आज के युग में नारी की विजय की भाँति निराशा ही विजयिनी बनती है और लाटरी का उत्साह टूटे हुए बर्तन की भाँति घर के कोने में फेंक दिया जाता है। आधुनिक वैभव के प्रति इसमें तीखा व्यंग्य है।

'इलेक्शन' किसी भी संख्या में निर्वाचन-पद्धति की कशमकश का चित्रण है। आज का तरुण वर्ग जिस संक्रांति-युग में अपने व्यक्तित्व की रूप-रेखा उभारने का प्रयत्न कर रहा है, वह इलेक्शन को सबसे बड़ा माध्यम मानने लगा है। इसी विकृति में 'इलेक्शन' की पद्धति कार्य कर रही है। यूनिवर्सिटी या शिक्षा-संस्थाओं में इसका जो रूप है, उससे एक विचित्र 'इलेक्शन' का रूप जोड़कर उसकी असफलता की ओर संकेत किया गया है। 'सही-रास्ता' में समाज के अनेक वर्गों पर निर्मम प्रहार है। विकृति के आश्रय से जो संकेत इस नाटक में किये गये हैं, वे दोषों के निराकरण के लिए प्रयुक्त होते हैं। समाज के आडम्बर और दम्भ नृशंसता और स्वार्थपरता के जाल को छिन्न-भिन्न करने के लिए जो प्रकाश की किरण एक विशिष्ट दिशा से फेकी जाती है, वह जीवन में सन्तोष और सुख का आविर्भाव करती है। नाटक के अन्त में एक अप्रत्याशित चमत्कार नाटक की विकृति के विष को अमृत में परिणत कर देता है।

वस्तुगत दृष्टि से देखने पर मेरे ये नाटक सामाजिक हैं। इनमें रंगीन स्वप्न में डूबे हुए तरुण-वर्ग के चित्र हैं, छोटी-छोटी बातों में रेशमी धागों की तरह उलझ जाने वाले दम्पतियों के मनोविकार हैं, परम्पराओं में विश्वास करने वाले प्रौढ़ और वृद्ध जनों के संस्कार हैं; मनोविज्ञान के सहज और स्वाभाविक रंगों में अपने अस्तित्व की घोषणा करने वाले प्रेमी हैं, जो प्रेमिकाओं के अनुभावों में भाव बनकर संतरण करते हैं, स्वार्थान्ध सेठ, अनुत्तरदायी अधिकारी वर्ग, वकील, प्रोफ़ेसर, कवि आदि मेरे नाटकों के नेत्रों में पुतली बनकर समा गये हैं। उदारचेता, चरित्र के धनी, संयमी एवं श्रमजीवी वर्गों को मैंने सदैव सहा-

नुभूति की दृष्टि से देखा है, आप इसमें यथार्थ के क्रोड़ में पोषित मेरे आदर्श की झाँकी देख सकेंगे।

मेरे हास्य और व्यंग्य का उद्देश्य अतिरञ्जित और अनुपातरहित दृश्यों की अवतारणा कर दर्शकों को हँसाना ही नहीं है, वरन् उनके हृदय का परिष्कार भी करना है। मेरे हास्य में सुधारात्मक प्रवृत्ति है और जिस पात्र को मैंने अपने हास्य का लक्ष्य बनाया है, उसके प्रति मेरी पूर्ण सहानुभूति है।

यदि मेरे ये छोटे नाटक हास्य की 'रिमझिम' से समाज के प्रगति-पथ को आर्द्र कर उसकी गति को सुगम बना सके तो मेरे ये नाटक रङ्गमञ्च पर आपसे सद्भावना का पुरस्कार चाहेंगे। आशा है, हास्य के इन प्रयोगों से आपको प्रसन्नता होगी। इस प्रसन्नता का कुछ भाग मेरे प्रिय शिष्य श्री सुरेशचन्द्र अग्निहोत्री एम्० ए० को भी प्राप्त होगा जिन्होंने इस संग्रह के कुछ नाटकों को रङ्गमञ्च पर लाने में मुझे अमूल्य सहयोग दिया है।

अन्त में, मैं अपने मित्र श्री श्रीनिवास जी को, जो किताब महल के अधिपति हैं, धन्यवाद देना नहीं भूलूँगा, जिन्होंने अत्यन्त तत्परता से एक वर्ष के अल्प समय में ही इन नाटकों को प्रकाशित करने की व्यवस्था की है।

साकेत
प्रयाग
सितम्बर, १६५६

रामकुमार वर्मा

सूची

विनोद
(Wit)

१. पृथ्वी का स्वर्ग
२. रंगीन स्वप्न

पृथ्वी का स्वर्ग

पात्र-परिचय

अचल—एक चित्रकार, आयु २२ वर्ष

केशव—अचल का मित्र, आयु २४ वर्ष

दुलीचन्द—सेठ, अचल का चाचा, आयु ५० वर्ष

मंगल—दुलीचन्द का नौकर, आयु ४० वर्ष

भिखारिन—आयु ३० वर्ष

बोझा ढोने वाला—आयु २४ वर्ष

स्थान—सेठ दुलीचन्द का बाहरी कमरा।

समय—संध्या, ६ बजे।

पृथ्वी का स्वर्ग

कमरे में अचल और केशव बातें करते हुए आते हैं। इसी समय घड़ी में ६ बजते हैं।

अचल — यह ६ बजे! सारा दिन यों ही बीता।

केशव — (**थके हुए स्वर से**) हाँ, दिन यों ही बीत गया और अभी न जाने कितने दिन बीतेंगे।

अचल — तुम तो इतनी निराशा की बातें करते हो, केशव। कभी न कभी तो मिलेगा ही।

केशव — मिल चुका! ज़माना बदल गया है, अचल! वह तेजी से भागता जा रहा है, अपनी ही धुन में! दुनियाँ बन गई है रेसकोर्स और हर एक आदमी बन गया है घोड़ा, तेज़ भागने वाला घोड़ा।

अचल — घोड़ा? (**हँसकर**) इस रेसकोर्स में गधे नहीं दौड़ते!

केशव — (**हँसी में हँसी मिलाकर**) गधे? यह ख़ूब कहा। गधे नहीं दौड़ते! अरे अचल! गधे दौड़ते नहीं हैं, बोझा ढोते हैं, बोझा।

अचल — ठीक है, लेकिन इस दुनियाँ के आदमी दौड़ते भी हैं, और बोझा भी ढोते हैं। घोड़े और गधे के बीच में आज का आदमी खड़ा है।

केशव — सचमुच आज का आदमी घोड़े और गधे के बीच की चीज़ बन गया है! (**रुककर**) तुम्हारे चाचा जी......दुकान से अभी नहीं आये क्या?

अचल — शायद नहीं। आते तो इतना सन्नाटा न रहता। कभी इसको आवाज़ देते, कभी उसको। कभी यह करते, कभी वह करते।

केशव — हमेशा कुछ न कुछ करते ही रहते हैं तुम्हारे चाचा जी और वे क्या! सभी लोग कुछ न कुछ करते ही हैं।

अचल हाँ ! अजीबोग़रीब है आज का आदमी ! सब कुछ करता है, लेकिन सब अपने लिये। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि जिस तरह कीचड़ भरी ज़मीन पर चलते वक़्त हर क़दम पर जूता कीचड़ की तहें जमाता हुआ भारी बनता जाता है, उसी तरह यह आदमी भी हर क़दम पर दुनियाँ अपने चारों ओर लपेटता चलता है। कीचड़ को वह दौलत समझता है, और अपने को इतना भारी बना लेता है कि चलना भी दुश्वार हो जाता है।

केशव क्या बात कही है, अचल ! बिल्कुल यही बात है। दौलत का नशा इतना ज़बरदस्त है आदमी पर कि वह इंसान को कुर्सी समझकर उस पर बैठ जाता है। आज इंसान इंसान पर बैठा हुआ है। कहाँ है उसमें सहानुभूति, कहाँ है उसमें कोमलता, कहाँ है—भावना, कल्पना और सब कुछ जिनसे तुम्हारा चित्र बनता है। यही वजह है कि आज दिन भर खोजने पर भी तुम्हारी चीज़ तुम्हें नहीं मिली। यों समझो, अचल ! कि जिस तरह पतझड़ में पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं न, उसी तरह आज के कवि और चित्रकार की सारी चीजें ख़त्म हो गई हैं। आज तो तेज़ और गरम हवा चल रही है। चाबुक जैसी मार से पत्ते खड़खड़ करते हुए इधर-उधर उड़ रहे हैं। तुम्हें याद है न, शैली की "ओड टु वेस्ट विंड" पोयम ?

अचल याद है, लेकिन उसमें एक भविष्यवाणी भी है कि इस पतझड़ के बाद बसन्त अवश्य आयेगा। मेरे हृदय का चित्रकार फिर हरा-भरा होगा। उसमें भावनाओं से भरे चित्रों के फूल खिलेंगे।

केशव ईश्वर करे इसी जन्म में खिलें। तुम्हारे चित्रों के लिये मन-चाहे रंग और आवश्यक चीजें मिलें। आज तो दिन भर खोजने पर तुम्हारा ब्रश नहीं मिला !

अचल (सोचता हुआ) कई बार इच्छा होती है, केशव ! कि मैं चित्र बनाना छोड़ दूँ। चित्रकार के लिये न वातावरण है, न सामग्री। इच्छाएँ दिल में ही घुटकर रह जाती हैं। बहुत दिनों से सोच रहा हूँ कि एक चित्र बनाऊँ।

केशव कौन-सा ?

अचल "पृथ्वी का स्वर्ग"। पृथ्वी में स्वर्ग कहाँ है !

केशव अरे ! तो इसमें क्या कठिनाई है ? कश्मीर का चित्र खींच दो। जहाँगीर बादशाह ने कश्मीर को देखकर एक बार कहा भी था :

"अगर फ़िरदौस बर रुए ज़मीनस्त
हमींअस्तो हमींअस्तो हमींअस्त"

अगर पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है, यहीं है। बस, अपने चित्र में कश्मीर का कोई सीन खींच लो।

अचल (सोचते हुए) कश्मीर का ?

केशव और क्या ! गुलमर्ग या पहलगाँव का कोई सीन ले लो ! अगर कोई कठिनाई हो तो बाज़ार में कश्मीर के बहुत फ़ोटो मिलते हैं, कोई लेकर उसी में रंग भर दो। नीचे लिख दो 'पृथ्वी का स्वर्ग'।

अचल लेकिन मेरी पृथ्वी का स्वर्ग वहाँ नहीं है, केशव ! मेरी पृथ्वी का स्वर्ग इस मनुष्य के जीवन में है। वह ठोस नहीं है, तरल है, जो मन्दाकिनी की तरह मानव के प्राणों में कल-कल ध्वनि करता है। वह प्रेम में है, दया में है, सहानुभूति में है जो आज के संसार में कल्पना की वस्तु बन गई है।

केशव (व्यंग्य से) अच्छा, तो आप कवि भी हैं ?

अचल कवि और चित्रकार में भेद क्या है ? कवि अपने स्वर में और चित्रकार अपनी रेखा में जीवन के सत्य और सौन्दर्य का राग भरता है। यही तो मै अपने मनचाहे ब्रश की पतली लकीरों से खींचना चाहता था कि 'पृथ्वी का स्वर्ग कहाँ है ! स्वर्ग क्या है और पृथ्वी क्या है और पृथ्वी के किस कोने में स्वर्ग है।' इसी का रूप मैं अपने चित्र में उतारना चाहता था, केशव ! यह बात तो.........

(नेपथ्य में 'कम्बख्त कहीं का' 'गधा कहीं का', कहते हुए और हाँफते हुए सेठ दुलीचन्द का प्रवेश)

दुलीचन्द (खाँसते और हाँफते हुए) कम्बख्त कहीं का, गधा-कहीं का ! दस

आने लेगा। एक छोटा-सा सन्दूक। उसके उठाने के दस आने! समझा न, दस आने यानी चालीस पैसे—चालीस बरस की उमिर भी न होगी तेरी!

अचल चाचा जी आ गये।

केशव नमस्ते, चाचा जी।

दुलीचन्द (**न सुनते हुए**) चोर कहीं का। लूट मचाई है! जिसको देखो वही लूट-मार करना चाहता है। हम सब अन्धे हैं न! दस आने लेगा, दस रुपये नहीं? तेरे लिये मैंने ख़ज़ाना इकट्ठा करके रख छोड़ा है!

अचल कौन है, चाचा जी!

दुलीचन्द अरे, वही बोझा ढोने वाला! जितने चोर और बदमाश हैं सब बोझा ढोने वाले बन गये हैं। रात में चोरी का माल ढोते हैं, दिन में बोझा उठाते हैं। चाहते हैं कि दुनियाँ में जिसके पास पैसा है, समझा न, वह उनके गोलक में चला जाय! कमीने कहीं के!

केशव यह तो ठीक है, चाचा जी। आप ही से ये लोग मानते हैं। आप ने इन्हें ख़ूब समझा है।

दुलीचन्द जिन्दगी भर यही किया है कि और कुछ, समझा न? (**नेपथ्य में देखकर**) चला आ इधर! सीधे! (**अचल से**) अरे! वह पुराने घर का छप्पर है न? वह टूट रहा है। ठीक कराने में अभी कुछ दिन लगेंगे। बीच के कमरे में एक सन्दूक पड़ी थी। उठवा कर ले आया। यों मामूली कपड़ों की सन्दूक है, लेकिन कपड़े अपने ही तो हैं, समझा न? उस पर भी पैसा ख़र्च हुआ है, तो कपड़े क्यों बर्बाद हों! एँ? (**ठहर कर**) साँस भर आई। (**खाँसता है, बाहर देखकर**) इधर ले आ! गधा कहीं का! किसी धोबी के यहाँ होता तो दिन भर ढोता और एक पैसा न मिलता! (**'एक' पर ज़ोर देकर**) एक पैसा न मिलता। समझा न, इधर ले आ!

(**एक बोझे वाला सिर पर सन्दूक लेकर कराहता हुआ आता है।**)

दुलीचन्द देख, गिरा मत देना! सिर पर बोझा सम्हलता नहीं और दस आने

लेगा ! दस आने ! समझा न ! गिनती आगे नहीं आती नहीं तो और ज़्यादा माँगता, समझा न । (**शान से कुर्सी पर बैठता है**।)

बोझावाला (**केशव से हाँफता हुआ**) बाबू , तनी मदद कइ दें ।

दुलीचन्द (**अकड़ कर**) हे ! मदद कर दें ! मदद करने के चार पैसे कटेंगे, समझा न ?

केशव क्या बड़ा वज़न है ? ले उतार, मैं इस तरफ थामें हूँ ।

अचल तुम रहने दो, केशव ! मैं नौकर बुलाता हूँ । (**पुकार कर**) अरे, मंगल !

(**नेपथ्य से मंगल का स्वर**) आया, सरकार !

केशव (**ज़ोर से**) नहीं, आने की ज़रूरत नहीं है । (**धीरे**) मै उतरवा देता हूँ ।

दुलीचन्द अब अगर यहाँ केशव न होता तो मैं उतरवाता ? जाँगर नहीं चलता तो बोझा ढोता क्यों है ? लेकिन लालच तो खाये जाता है, समझा न ?

केशव (**बोझे वाले से**) अच्छा, ले उतार । मैं इस तरफ से थामे हूँ ।

(**बोझा वाला, 'ऊँह' करते हुए गहरी साँस लेकर सन्दूक उतारता है ।**)

बोझावाला हाय राम ! मूड़ो टूट गवा रहा !

दुलीचन्द दवा के पैसे भी ले ले मुझसे । समझा न ?

अचल बहुत भारी है क्या ?

बोझावाला जानै एहिमा ईंट-पत्थर भरा बा ।

दुलीचन्द अबे, चार तमाचे मारूँगा खींच के ! सिर फिर जायगा । मैं इसमें ईंट पत्थर भरूँगा ? गधे कहीं के ! पुराने कपड़े हैं । कीड़ों से बचाने के लिये इसी सन्दूक में डाल दिए । तू कपड़ों को ईंट-पत्थर कहता है ।

बोझावाला सोना-चाँदी होय, हजूर ! यहि माँ । हमका एहिसे का ? हमका त हमार मजूरी चाही ।

दुलीचन्द तो मज़दूरी माँग । सोना-चाँदी या पत्थर की बात क्या कहता है ! पत्थर होगा तेरे दिमाग़ में ।

अचल चाचा जी, इसे मज़दूरी दे दीजिये ।

दुलीचन्द तुम कहते हो, अचल! तो मैं दे देता हूँ। समझा न? नहीं तो इसकी ज़बान-दराज़ी पर एक पैसा न देता। ले, यह चवन्नी।

बोझावाला (चवन्नी लेकर आँखें फाड़ कर) चवन्नी? ई का है—हजूर, पहिले तो कहिन कै उठाय लै चलो। तुम्हार मेहनत समझ लेंयगे। अब हजूर चवन्नी दिखावत हैं। धइलें आपन पास ई चवन्नी!

दुलीचन्द ज़रा तमीज़ से बात कर, समझा न? इस क़दर मार मारूँगा, समझा न?

बोझावाला काहे मार मारेंगे। कौनों जुरम किहिन है का? अबे-तबे किहे जात हैं। हम तो भला मनई समझ के हजूर-हजूर कहत हैं, मुदा ई .....

केशव ए, बहस मत करो। ये बहुत बड़े आदमी हैं, जानता नहीं? सेठ दुलीचन्द का नाम नहीं सुना क्या? तेरे ऐसे हज़ार नौकर हैं इनके पास!

अचल (बोझा ढोने वाले से) ख़ैर, यह बताओ, तुम कितना चाहते हो आख़िर......

बोझावाला हजूर! हम बारा आना कहिन औ ई, दुइ आना। हम आपन जाय लगैं तो ई हजूर चार आना बढ़ाइन। हम दस आना कहिके जाय लागे तो ई कहिन कि तुम्हार मजदूरी समझ लेयँगे और वाजब दे देयँगे।

केशव अच्छा, आठ आने ले लो।

दुलीचन्द (बीच ही में) नहीं, इसको चार आने से एक पैसा बेशी नहीं मिलेगा। समझा न?

बोझावाला हजूर! कुछ न देयँ।

अचल अच्छा, ये छः आने और लो। (पैसा देता है) जाओ! देखो, आयन्दा ज़बान न लड़ाया करो।

बोझावाला हजूर, सीधे बात करें तो हम ऐसने खिजमत कइ सकत हैं। मुदा अबे-तबे।

दुलीचन्द (उठकर) अबे, मारता हूँ चार तमाचे।

केशव अच्छा, जाओ जी। चार की गिनती चाचा जी को बहुत पसन्द है।

बोझावाला हज़ूर! ग़रीब हैं, मुला आदमी हैं, हज़ूर!

(**प्रस्थान**)

दुलीचन्द (**व्यंग्य से**) आदमी हैं, जानवर से बदतर। समझा न?

अचल चाचा जी! आप थक गये हैं। ज़रा आराम कीजिये। (**ज़ोर से**) अरे मंगल! चाचा जी के लिये पानी लाना।

(**नेपथ्य में मंगल का स्वर—अच्छा, सरकार!**)

केशव पानी क्या शरबत मँगवाओ, चाचा जी बहुत थक गये हैं।

दुलीचन्द (**व्यंग्य से**) क्यों! क्या आप को भी शरबत पीना है? जनाब! शरबत में पैसे ख़र्च होते हैं, समझा न? जब पानी से काम चल सकता है, तब शरबत की क्या ज़रूरत? तुम अपने बाप का पैसा यों ही बरबाद करोगे, मैं जानता हूँ। समझा न?

केशव चाचा जी! आपके आशीर्वाद से शरबत ही पीता हूँ। पानी की जगह पानी और शरबत की जगह शरबत। बाबूजी को ख़ुशी होती है, जब मैं पैसे का अच्छा उपयोग करता हूँ।

दुलीचन्द वाह रे, अच्छा उपयोग! एक दिन शराब पियोगे और कहोगे कि पैसे का मैं अच्छा उपयोग करता हूँ। समझा न? साँप टेढ़ा चले और कहे कि मेरी चाल सबसे अच्छी है, तो अजगर ही तारीफ़ करे, आदमी तो तारीफ़ करने से रहा।

अचल चाचा जी! केशव की बातें तो कालेज की डिबेटिंग सोसायटी के लिये हैं। आप उन पर और लोगों की तरह विचार न करें।

दुलीचन्द तो मेरा घर वह 'डिबेटिंग सोसाइटी' समझता है, समझा न?

(**मंगल का पानी लेकर प्रवेश**)

केशव चाचा जी! पानी पी लीजिये। आप का गला सूख रहा है। (**मंगल से**) सुराही का है न?

दुलीचन्द जाड़े में सुराही का? केशव! तेरा दिमाग़ तो नहीं फिर गया? बूढ़ों से हँसी करता है?

केशव चाचा जी ! मैं आप को बूढ़ा हरगिज नहीं समझता। जो आप को बूढ़ा समझे, वह ख़ुद बूढ़ा।

दुलीचन्द तो फिर मुझसे हँसी क्यों करता है ?

केशव चाचा जी ! मैं ख़ुश रहना चाहता हूँ, और दूसरों को ख़ुश देखना चाहता हूँ। मैं ज़िन्दगी को खेल समझता हूँ, कसरत नहीं।

दुलीचन्द तो मैं कसरत समझता हूँ। सुना अचल ! मैं कसरत समझता हूँ। समझा न ? देखना, इस खेल में कहीं हाथ-पैर न टूट जायँ !

अचल केशव दूसरे के हाथ-पैर तोड़ने की कोशिश में रहता है, चाचा जी ! अपने हाथ-पैर साफ़ बचा लेता है।

दुलीचन्द हाथ-पैर भले ही बचा ले, इम्तहान में उसका सिर न टूटे तो कहना !

केशव चाचा जी, फर्स्ट डिवीज़न का डंडा सिर के पास आते ही तिलक की लकीर बन जाता है, मैं क्या करूँ। अच्छा चाचा जी ! अब आज्ञा दीजिये। (**अचल से**) अचल ! अब मैं जा रहा हूँ।

अचल थोड़ी देर और बैठो न, केशव !

दुलीचन्द उसे ज़िन्दगी का और खेल खेलना है। जाने दो। (**केशव से**) केशव ! फेल भर मत होना, समझा न ? बेचारे बाप का पैसा बरबाद जायगा। तुम्हारा वक़्त तो यों ही जाता है, पैसा न जाना चाहिये।

केशव चाचा जी ! वक़्त नहीं आता, पैसा तो फिर भी आ जाता है। अच्छा, नमस्ते। (**अचल से**) अचल ! नमस्ते (**प्रस्थान**)

अचल नमस्ते !

दुलीचन्द अचल ! तुम जानते हो कि केशव को मैं बिल्कुल पसन्द नहीं करता, फिर भी तुम उसे घर आने देते हो ?

अचल चाचा जी ! केशव अच्छा लड़का है। मेरा मित्र है। हँसना उसका स्वभाव है। मुझे तो वह बहुत पसन्द है।

दुलीचन्द लेकिन मुझे यह पसन्द नहीं कि इसकी संगति में तुम फ़िज़ूलख़र्च बन जाओ। शरबत मँगवाता है। ख़ुद ही न पीना चाहता था ? उसका क्या जाता है, ख़र्च तो मेरा होता है।

अचल मैं समझता हूँ चाचा जी ! कि ख़र्च तो गंगाजी का प्रवाह है। जल तो बहता ही है, इसलिये ख़र्च होना भी ज़रूरी है। हाँ, बरसाती नदी की तरह ख़र्च नहीं होना चाहिये।

दुलीचन्द देखो, मुझसे बहस न किया करो, अचल ! तुम तस्वीरें बनाते हो, तो समझने हो कि मेरे स्वभाव को भी तुम अपने जैसा बना लोगे ?

अचल सो मैं नहीं कहता, चाचा जी ! मैं तो अपने मन की बातें सच्चाई के साथ आपके सामने रख रहा हूँ।

दुलीचन्द लेकिन इस सचाई के साथ तुम्हें मेरा भी ख़्याल रखना चाहिये। समझा न ? और तुम रख सकते हो, यह मैं जानता हूँ। तभी तो मैंने भाई रामस्वरूप जी से कह दिया था कि अचल को मेरे पास भेज दो। घर में कोई लड़का नहीं है। तो अचल आके मेरे घर में ख़ुश रहे। मेरी धन-दौलन को सम्हाले ! समझा न ?

अचल मै तो आपका सेवक हूँ, चाचा जी !

दुलीचन्द सो तो मैं मानता हूँ, अचल ! और कैसे न मानूँगा ? अपना ही घर समझ के तो तुमने इस घर को सजाया है। समझा न ? कमरे में एक से एक अच्छी तस्वीर। और कहीं लेने जाओ तो सौ-सौ रुपये में एक तस्वीर मिलेगी। तुम में तो ये सिफ़त है कि चार पैसे के खर्च से चार रुपये का माल तैयार करते हो ! हाँ (**खुशामदी हँसी**)

अचल यह आपका आशीर्वाद है, चाचा जी।

दुलीचन्द आशीर्वाद तो हुई है, तुम तो अभी और अच्छी-अच्छी तस्वीरें बनाओगे, समझा न ? (**स्मरण करते हुए**) हाँ, जो तुम एक नई तस्वीर बना रहे थे, वो बन गई ?

अचल अभी नहीं बनी, चाचा जी ! आप दिन भर एक-एक दुकान में खोजा मगर ब्रश नहीं मिला।

दुलीचन्द अरे अख़बार में तो रोज छपता है कि ये ब्रश ठीक हैं, वह ठीक है।

अचल (**हँसकर**) चाचा जी ! वह तो दाँतों का ब्रश है। तस्वीर के लिए दूसरा ब्रश लगता है।

दुलीचन्द अरे, यह मैं क्या जानूँ! मैंने कभी कोई तस्वीर थोड़े बनाई है। और अब बुढ़ापे में बनानी भी नहीं है। समझा न? अच्छा अब जाओ तुम......जाओ, आराम करो।

अचल मैं क्या आराम करूँगा। हाँ, आप आराम कीजिये, आज आप बहुत थक गये हैं।

दुलीचन्द अरे, मै तो रोज़ ही थकता हूँ, अचल! कोई नई बात है? तुम ज़रूर आज ब्रश खरीदने के चक्कर में थक गये होगे। मेरा तो यह रोज का काम है। आराम करने से कहीं काम होता है? अगर मैं आराम करता तो आज सेठ दुलीचन्द की यह साख न होती। (ज़ोर देकर) हाँ! समझा न? सेठ दुलीचन्द का ये नाम न होता! लाखों का माल एक मिनट में ले सकता हूँ। समझा न? (**गर्व की मुद्रा**)

अचल यह तो सभी जानते हैं, चाचा जी! अच्छा, यह सन्दूक यहीं रहेगा?

दुलीचन्द (**लापरवाही से**) रखा लेंगे अन्दर। पुराने फटे कपड़े हैं। ऐसी क्या फ़िकर। कीड़े लग जाते, गरम कपड़े हैं न? एक-आध दुशाला भी है। आजकल गरम कपड़े की क़ीमत! शिव-शिव! अरे पहले जितने में एक अच्छी गाय मिलती थी, गाय न? उतने रुपयों में उसकी पूँछ बराबर कपड़ा! चार अँगुल! हाय रे, क्या ज़माना आ गया! अब कुछ दिनों में गरम कपड़ा किराये पर मिलेगा, किराये पर।

अचल सच है, चाचा जी! बुरा ज़माना आ गया है!

दुलीचन्द हाँ। तो पहले सोचा कि दर्ज़ी से कह दूँगा कि उसमें से कुछ अच्छे कपड़े निकालकर अचल के काम के लायक चीज़ें बना दो, समझा न? और यह भी सोचा कि आजकल जाड़े के दिन हैं, ग़रीबों को दे दूँगा। एँ? ज़िन्दगी में कुछ दान-पुन्य भी करना चाहिये।

अचल बहुत अच्छा सोचा, चाचा जी! आपने। ग़रीबों को ही दे दीजिये, अभी मेरे पास कपड़े हैं।

दुलीचन्द खैर, जैसा तुम कहोगे, वैसा ही होगा। लेकिन भाई रामसरूपजी बुरा न मानें, कि बेटे को इतने दिनों घर रखा और एक कपड़ा भी न बनवाया! एँ? एक कपड़ा भी न बनवाया! समझा न?

अचल वे इन बातों को नहीं सोचते, चाचा जी! और मैं भी तो घर ही का लड़का हूँ। जैसे उनका लड़का, वैसे आपका?

दुलीचन्द तुम बहुत अच्छे बेटे हो, अचल! समझा न? बस इतनी बात है, कि उस बेवकूफ केशव को तुम बुलाते हो। मुझे अच्छा नहीं लगता! समझा न? ख़ैर! बुला लो उसे, लेकिन जब मैं बाहर रहूँ। अच्छा, अब तुम जाओ। जाओ, अपनी तस्वीर बनाओ।

अचल अच्छी बात है। मंगल को भेज दूँ?

दुलीचन्द (सोचते हुए) मंगल को? एँ, एँ, अच्छा। नहीं......नहीं, मैं बुला लूँगा, बुला लूँगा मैं। समझा न? तुम जाओ!

अचल बहुत अच्छा! (प्रस्थान)

(अचल के जाने के बाद थोड़ी देर तक दुलीचन्द 'केशव मुरारी, केशव मुरारी' गुनगुनाता है। फिर दरवाज़े तक जाकर देखता है। कहता है—"कोई नहीं, गया! सीधा लड़का है। समझा न? अब जरा देख लूँ।"

शीघ्रता से उठता है और सन्दूक खोलता है। ऊपर का हरा दुशाला निकालने के बाद नोटों के बण्डल निकालता है। उन्हें गिनता है। एक बण्डल हाथ में लेकर—एक हजार,....दो हज़ार, चार हज़ार पाँच सौ और... और...यह पाँच सौ, पाँच हज़ार। कुल पाँच हज़ार। पाँच हज़ार न? एँ...चार हज़ार पाँच सौ...और ये...पाँच सौ, हाँ...ठीक . ठीक...पाँच हज़ार...कम्बख्त इनकमटैक्स वालों की वजह से बैंक में जमा भी नहीं कर सकता। पाँच हज़ार...और कुछ तो नहीं है?

इतने में किसी के आने का खटका होता है। एँ...एँ...कहता हुआ शीघ्रता से नोट समेटने की कोशिश करता है। शीघ्रता से बोल उठता है—) एँ, एँ, जरा वहीं रहना, वहीं रहना...मै...मै कपड़े बदल रहा हूँ...मैं ज़रा कपड़े बदल रहा हूँ।

शीघ्रता से उसी हरे दुशाले में नोट समेट कर तह में अन्दर तक सरका कर सन्दूक में बन्द करता है। फिर ताला बन्द कर कुर्सी पर बैठता है।)

दुलीचन्द (**संतोष की साँस लेकर**) अच्छा! समझा न? कौन—अचल? अन्दर आ जाओ, अचल! अब मैं कपड़े बदल चुका! बद्दल चुका!

(**धीरे-धीरे मंगल का प्रवेश**)

दुलीचन्द एँ, मंगल! तुम हो। (**बनावटी हँसी हँसते हुए**) हँ, हँ, हँ! मैं जरा कपडे बदल रहा था। शाम को रास्ते में बड़ी धूल थी, समझा न? कपड़े धूल से भर गये थे...हाँ...क्या बात है?

मंगल सरकार! हाथ मुंह-धोने के लिए पानी गरम हो गया है।

दुलीचन्द अच्छा...अच्छा...तुम बहुत अच्छे आदमी हो! बहुत अच्छे... और...हाँ...अचल कहाँ है? (**मंगल पैर दबाने बैठ जाता है।**)

मंगल सरकार! यहाँ से उठकर तो वो भीतरी कमरे में चले गये हैं। और अपनी तस्वीर बना रहे हैं। सरकार! अचल बाबू बहुत सीधा आदमी हैं। हाय, हाय, जैसे बिल्कुल साधू-सन्यासी। आज के ज़माने के लड़कों की तरह वो 'सिरगट' भी नहीं पीते। कपड़े भी आप की तरह सीधे-सादे पहनते हैं। आप की तरह पैसे भी ज़्यादा ख़र्च नहीं......

दुलीचन्द (**भौंहें सिकोड़ कर**) हैं...हैं...क्या कहता है कि...

मंगल (**सम्हलकर**) नहीं, नहीं, सरकार! मतलब जे है—सरकार! कि जैसे जरूरी कामों में आप पैसा ख़र्च करते हैं न, वैसे वो भी जरूरी कामों में ही पैसा ख़र्च करते हैं। (**ख़ुशामद के स्वर में**) है न सरकार! बिल्कुल आप की तरह सन्त-महात्मा हैं, सरकार!

दुलीचन्द ठीक है, ठीक है। इस शहर में सेठ दुलीचन्द इस बात के लिए मशहूर हैं, समझा न? कि पैसा किस तरह ख़र्च करना चाहिये।

मंगल सों तो ठीक है...सरकार! मुदा सरकार! अचल बाबू में एक बात है कि दीन-दुखियों को देख के, उनका दिल गंगा जल की तरह हो जाता है। वह! क्या कहना है, सरकार! किसी का दुःख-दर्द वो देख नहीं सकते।

दुलीचन्द (**अन्यमनस्कता से**) हाँ, ठीक है। दीन-दुखियों की मदद करनी चाहिये। अच्छा, तो मैं हाथ-मुँह धो लूँ।

मंगल हाँ, सरकार! पानी गरम है। अचल बाबू ने पहले ही हुकुम करा था कि सरकार आ गये हैं। उनके हाथ-मुँह धोने के लिए पानी गरम हुइ जाय।

दुलीचन्द हाँ...अचल मेरा बहुत ध्यान रखता है। बहुत अच्छा लड़का है। समझा न? मगर तस्वीरें बनाता है, अगर रोज़गार करता तो कितना अच्छा होता, समझा न? ख़ैर, सिखला दूँगा, धीरे-धीरे सब सीख जायगा। मेरा कहना बहुत मानता है, समझा न? अच्छा...अच्छा तुम जाओ.. मैं अभी आता हूँ।

(**मंगल जाता है।**)

दुलीचन्द (**पुकार कर**) देखो...सुनो...(**मंगल लौट कर आता है।**)

मंगल हुकुम, सरकार!

दुलीचन्द देखो...तुम जा रहे हो...अच्छा जाओ, जाओ...हाँ...अपने अचल बाबू को मेरे पास भेजते जाना...समझा न?

मंगल बहुत अच्छा, सरकार! (**प्रस्थान**)

दुलीचन्द (**सोचते हुए**) मंगल कहता है कि दीन-दुखिया को देख के— समझा न? अचल का दिल गंगा-जल की तरह हो जाता है। जैसे मेरा दिल कुछ नहीं होता! अरे, मेरा दिल तो तिरबेनी की तरह हो जाता है, तिरबेनी की तरह...मुझे कोई खुश भर कर ले फिर तिर-बेनी नहाय, खूब नहाय...समझा न? अचल मुझसे भी आगे बढ़ जाय? नहीं...नहीं बढ़ सकता। उसी से पूछूँगा...आता होगा... (**रुककर**) एँ...उसके आने के पहले देख लूँ...सन्दूक का ताला ठीक तरह से बन्द है?

(**उठकर संदूक का ताला देखता है। खींचकर ज़ोर लगाता है।**) हाँ, ठीक है...बिल्कुल ठीक है।

(**अचल का प्रवेश**)

अचल चाचा जी ! आपने मुझे बुलाया ?

दुलीचन्द (सन्दूक के पास से जल्दी उठकर) हँ, हँ, अचल ! आ गये तुम ? यों ही सन्दूक देख रहा था, पुराने गरम कपड़े हैं, ठीक हैं...ठीक हैं समझा न ? तुम्हारे काम आ सकते हैं। नीचे के एक-आध कपड़े को कीड़ों ने खाया है, बाकी सब ठीक है। हँ, हॅ, हँ, दुशाला भी ठीक है। तुम्हें पसन्द आये तो तुम्हीं काम में लाना...!

अचल आपकी जैसी आज्ञा होगी, वैसा ही होगा, चाचा जी !

दुलीचन्द तुम बहुत अच्छे लड़के हो, अचल ! मंगल भी तुम्हारी बड़ी तारीफ़ कर रहा था। अभी आया था। पहले मैं समझा कि तुम आये हो......हँ, हँ...तुम ! समझा न ! बाद में निकला मंगल मनहूस। पर तुम्हारी बड़ी तारीफ़ कर रहा था। कहता था, तुम दीन-दुखियों का दरद नहीं देख सकते...ऍं...नहीं देख सकते...?

अचल (लज्जा के स्वरों में) चाचा जी ! वह तो यों ही बकता है। कभी इसकी तारीफ़, कभी उसकी तारीफ़। हाँ, तो किसलिए आपने मुझे याद किया ? क्या सन्दूक की सफ़ाई करनी है ?

दुलीचन्द नहीं-नहीं बेटा ! इतने छोटे काम के लिए तुम्हें तकलीफ़ दूँगा ? नहीं। हरगिज़ नहीं। और सफ़ाई भी क्या ? पुराने कपड़े हैं। मैं देख ही चुका। समझा न ? एक-आध अँगरखा, एक-आध दुशाला। बस यही। कोई नुमायशी चीजें थोड़े ही हैं। समझा न ? पुराने घर में पड़ी थीं...इधर उठवा ले आया। पुराने सड़े कपड़े ! तुम्हारे तस्वीर की तरह नये थोड़े ही हैं ? हँ, हँ...तुम्हारी तस्वीर बन गई ?

अचल अभी पूरी नहीं हुई, चाचा जी !

दुलीचन्द किसकी तस्वीर है ? लच्छमी जी की होगी !

अचल नहीं, चाचा जी ! लक्ष्मी जी की तस्वीरें बहुत बन चुकी हैं। और अब तो हर काले बाज़ार में उनके मन्दिर पर मन्दिर बन रहे हैं। जो तस्वीर मैं बनाना चाहता हूँ, वह दूसरे तरह की है।

दुलीचन्द किस तरह की ? ज़रा सुनूँ !

अचल वह है नये किस्म की। उसका नाम होगा 'पृथ्वी का स्वर्ग !'

दुलीचन्द (**अट्टहास करके**) पृथ्वी...ई़ का स्वर्ग ! ह, ह, ह, ह, ह, ! पृथ्वी का स्वर्ग ? (**हँसता है।**) अरे, पृथ्वी में स्वर्ग कहाँ ! समझा न ? पृथ्वी में स्वर्ग कैसे आ सकता है ? ग़रीब लोगों की नीयत ख़राब हो गई है। अब तुम्हीं देखो...वो बोझा ढोने वाला ! किस तरह आँखें निकाल के बातें करता था। जैसे खा जायगा ! समझा न ? जैसे हमें खा जायगा ! मैं चार आने दे रहा था, एक बक्स उठाने के लिए ! क्या था ? पिछले ज़माने में यह काम मुफ्त में होता था, बहुत हुआ तो दो पैसे तमाखू पीने के लिए दे दिये... बस...समझा न ? और इस ज़माने में चार आने दे रहा था...चार आने ! फिर भी वो आँखें फाड़ कर खाने को दौड़ता था ! कहता था (**विकृत स्वर से**) हमका त हमार मजूरी चाही ! ऐसी नीयत ख़राब है तो (**साँस लेकर**) ओफ़-ओह ! पृथ्वी में स्वर्ग होगा ? अरे स्वर्ग तो स्वर्ग है, इस दुनिया पर स्वर्ग होने लगे तो दुनियाँ काहे की ? ...एँ...फिर दुनिया काहे की ?

(**साँस छोड़कर**) छोड़ो...छोड़ो इन बातों को, इनमें क्या धरा है ? समझा न ? दुनिया अपने रास्ते चलेगी और स्वर्ग अपने रास्ते ! दोनों अलग—बिल्कुल अलग...तो कुछ बना ?

अचल अभी तक तो नहीं बन सका है, चाचा जी ! लेकिन बना के रहूँगा।

दुलीचन्द अरे, क्या बनाओगे, बेटा ! सीधे-सादे हो—भोले-भाले हो ! समझा न ? जाने क्या-क्या सोच लेते हो ! लेकिन ख़ैर...बनाओ। बच्चा खिलौने से खेलता है, तुम तस्वीरों से खेलो। खेलो...कुछ आना-जाना थोड़े ही है ! समझा न ?

अचल तो फिर मैं जाऊँ ?

दुलीचन्द अच्छा, बेटा ! जाओ। एँ ? नहीं, नहीं, रुको ! बात ये है कि...कि ये सन्दूक यहाँ पड़ी है। समझा न ? यों इस सन्दूक में कुछ है नहीं; यही, एक-आध दुशाला...एक-आध अँगरखा। लेकिन सन्दूक तो सन्दूक है। रास्ते का मकान ! आते-जाते किसी की नज़र पड़

जाय, समझा न ? चुपके से खिसका ले। अगर इसे अन्दर ले जाऊँ तो फिर एक मज़दूर बुलाऊँ ! चार आने के दस आने माँगे। समझा न ?

अचल तो मैं अन्दर कर दूँ इसे ? मंगल को भी बुला लूँ !

दुलीचन्द सो तो होइ सकता है, समझा न ? पर इसे कहाँ रखना है, यह भी तो सोचना है।

अचल अरे, पुराने कपड़ों की सन्दूक है, कहीं भी रखा दी जायगी !

दुलीचन्द अरे, भाई ! तुम तो सीधे आदमी हो ! समझते नहीं ! अरे, भाई ! सन्दूक तो सन्दूक है। लोग शक की निगाह से यों ही देखते हैं ! सेठ दुलीचन्द की सन्दूक। जाने इसमें कितने हजार का माल होगा ! समझा न ? फिर वो बोझा वाला भी देख गया है, सिर पर उठा के लाया है। दस आदमियों से कहेगा कि सेठ दुलीचन्द की सन्दूक बहुत भारी है। समझा न ? आज के ज़माने में लोग यों ही ताक लगाये बैठे रहते हैं। समझा न ? तो इस सन्दूक को देखकर ठीक जगह रखानी पड़ेगी, नहीं तो पुराने घर में ही क्या बुरी थी ! समझा न ?

अचल तो फिर कहाँ रखी जाय ?

दुलीचन्द अभी-अभी तो यहीं रहने दो। मैं हाथ-मुँह धो लूँ, समझा न ? ज़रा लच्छमी जी को फूल चढ़ा दूँ ! तब तक तुम यहीं बैठो ! न हो तो यहीं अपनी तस्वीर बनाओ ! जरा निश्चिन्त हो जाऊँ, समझा न ? फिर देख के रखा देंगे सन्दूक।

अचल बहुत अच्छा, तो मैं अपनी तस्वीर का सामान यहीं ले आऊँ !

दुलीचन्द वाह, वाह ! तुम बहुत होशियार बेटे हो ! यहीं ले आओ ! समझा न ?

अचल अच्छी बात है। मैं आया। (**अन्दर जाता है।**)

दुलीचन्द ठीक इन्तज़ाम हो गया, समझा न ! (**अन्दर आवाज़ देता है।**) अरे, मंगल ! ज़रा पीढ़ा रखना। मैं आ रहा हूँ, समझा न ? बाल्टी में पानी गरम रहे ! बस अभी आया। (**कुछ धीरे अपने आप**)

बहुत धूल में भर गया हूँ ! आज की म्युनिसिपालिटी भी क्या है, धूल...धूल...धूल...छिड़काव तो कभी होता नहीं, गोया पानी मोल बिकता है, मोल...समझा न ? अरे, हाँ (**पुकारकर**) और तौलिया भी रख देना...मंगल ! (**अपने आप**) अँगरखे में भी धूल ! (**झाड़ता है।**) सोने की धूल होती तो क्या बात थी !

(**अचल का प्रवेश**) तुम आ गये अचल ! बहुत अच्छा ! समझा न ? तस्वीर का सामान भी ले आए ? अच्छा। अब यहीं बैठ के तस्वीर बनाओ। ऐसी तस्वीर बनाओ कि दुनिया के लोग कहें, समझा न ? कि सेठ दुलीचन्द का भतीजा तस्वीर खींचने में बिल्कुल राममूर्त्ति है...हाँ...समझा न ? मैं उठता हूँ। ये अँगरखा यहीं रख दूँ...एँ...हाँ...धूल बहुत भरी है...(**अचल से**) अचल ! ये अँगरखा यहीं रख देता हूँ। (**अँगरखा उतारता है।**) अब चलता हूँ। (**पुकार कर**) मंगल ! मैं आ रहा हूँ। (**अपने आप बड़बड़ाते हुए**)....बुढ़ापे का तन भी क्या है ! पैर रखता कहीं हूँ....पड़ता कहीं है ! (**अचल से**) अचल बेटा ! तुम बैठना। मैं अभी दस-पन्द्रह मिनट में आता हूँ। अभी आता हूँ। समझा न ? जय हरी...जय हरी ! (**प्रस्थान-भीतर से ही**) अरे अचल ! वहीं बैठना ! समझा न ? मैं अभी आता हूँ ! चल रे, मंगल ! लोटे में पानी भर दे...जय हरी....जय हरी....!

(**आप ही आप**) वाह, चाचा जी ! बुढ़ापे में हाथ-पैर ढीले हो जाते हैं तो ज़बान मज़बूत हो जाती है।........हाथ-पैर कम चलते हैं तो ज़बान ज़्यादा......(**सोचता है।**) क्या चित्र बनाऊँ ? बूढ़े आदमियों के हाथ-पैर की तरह मेरा ब्रश भी नहीं चलता ! (**अपने आप हँसता है।**) चित्र पूरा करने की कोशिश करूँ ! (**अपने चित्र को देखता है।**) यह पृथ्वी है, इसमें जो आग की लपट है.....यह आग की लपट है......यह आग की लपट......वह किस तरफ से उठे ? इस तरफ से......? (**सोचता है।**) नहीं....नहीं....(**फिर सोचता है।**) यह लपट...यह लपट....!

(नेपथ्य से पास ही किसी स्त्री की सिसकियों की आवाज़। उस ओर ध्यान देते हुए) एक लपट तो इस ओर से आ रही है! खिड़की से देखूँ। **(खिड़की के पास जाकर देखता है।)** स्त्री है! बाल बिखरे....हाथ में बच्चा है....मरा....या ज़िन्दा। **(ज़ोर से पुकारता है।)** अरे....सुनो....इधर आओ! **(स्त्री ने अचल को देख लिया है। अपने प्रति सहानुभूति करने वाले को पाकर वह और ज़ोर से चीख़ पड़ती है।)**

अचल　**(अस्थिर होकर)** मंगल तो चाचा जी के हाथ-पैर धुला रहा होगा। अच्छा, मैं ही देखता हूँ। **(खिड़की के पास फिर जाकर)** हाँ, ठीक है। इसी रास्ते....इसी रास्ते चली आओ। हाँ....हाँ....इसी रास्ते.... आओ।

(भिखारिन सिसकियाँ लेते हुए आगे बढ़ती है।)

अचल　हाय रे, संसार! तुझ में कौन-सा दुख नहीं है। चारों ओर चीत्कार, चारों ओर हाहाकार....तुझ में स्वर्ग कैसे बन सकता है? कैसे बन सकता है! यह कवि की कोरी कल्पना है....कल्पना है!

(भिखारिन का सिसकियाँ लेते हुए प्रवेश)

अचल　हाँ, आओ...आओ...तुम कौन हो? क्या बात है? तुम रोती क्यों हो? एँ, तुम्हे क्या दुख है?

(भिखारिन कुछ नहीं बोलती। वह सिसकियाँ भरती रहती है।)

अचल　बोलो न, बहिन! तुम्हे क्या दुःख है? यह बच्चा तुम्हारा ज़िन्दा है? जिन्दा है न?

भिखारिन　**(सिसकते हुए)** जिन्दा है, पर मरने जा रहा है! **(सिसकियाँ)** मेरा लाल! हाय! मैं इसे ज़िन्दा नहीं रख सकती! यह मर जायेगा कल। मैं इसका मुँह नहीं देख सकूँगी...नहीं देख सकूँगी। **(सिसकियाँ)**

अचल　इस तरह मत घबराओ, बहिन! साफ़-साफ़ बतलाओ। बात क्या है। तुम्हारा बच्चा नहीं मरेगा...नहीं मरेगा।

भिखारिन　मैंने न जाने पूरब जनम में कौन-से पाप किये हैं कि अपने बच्चे के लिये डायन बन रही हूँ! इसके बाप को तो खा लिया, अब इसे खाने जा रही हूँ। **(सिसकियाँ)**

अचल ऐसी बात मत कहो, बहिन ! क्या तुम्हारा बच्चा बीमार है ?

भिखारिन मैं मर जाऊँ तो यह अच्छा हो जाय। मेरे ही भाग ने आग लगा रक्खी है! मेरा बच्चा सुबह तक हँसता रहा। दोपहर के बाद (**सिसकियाँ**) मैंने इसे दूध पिलाया! वही इसे ज़हर हो गया! (**भरे हुए गले से**) ज़हर हो गया! इसका सिर तप रहा है !

अचल तो, उसकी दवा करो। यह लो रुपया ! (**रुपया उसके पास फेंकता है।**) यहाँ से पास ही एक अच्छे वैद्य रहते हैं, उनसे दवा ले लो ! तुम्हारा बच्चा ज़रूर अच्छा हो जायगा ।

भिखारिन बाबू ! तुम देवता हो ! तुम्हारी दया से मेरा बच्चा जरूर अच्छा हो जायगा। भगवान तुम्हारी जय करें। मगर इसे मैं रात की ठंड से कैसे बचाऊँगी ! (**सिसकियाँ**) मेरे पास तो तन ढकने को छोड़ दूसरा कपड़ा नहीं है, बाबू ! और ठंड से यह कैसे बचेगा !

अचल अच्छा, ठहरो बहिन ! मै तुम्हें कपड़ा भी दूँगा। गरम कपड़ा, यह लो, मेरा कोट ले जाओ···(**कोट उतारता है, ठहर कर**) एँ, इससे क्या काम चलेगा ! अच्छा ! तुम्हें एक दुशाला दूँगा। इसी सन्दूक में है। चाचा जी आज ही लाये हैं। इसमें से निकाल दूँगा। (**सन्दूक के पास जाता है। रुक कर**) एँ···? ताला बन्द है। (**भिखारिन से**) ठहरो बहिन ! चाचा जी मुँह-हाथ धो रहे हैं। उनके आते ही, अभी तुम्हें दुशाला देता हूँ। सन्दूक में एक दुशाला भी है पर ताला बन्द है !

भिखारिन मेरे भाग में ही ताला पड़ा है, बाबू ! तो सन्दूक में ताला क्यों न हो !

अचल (**सहसा**) अरे ठहरो···ठहरो, बहिन ! चाचा जी का अँगरखा यहीं है। जेब में चाभी होगी। (**अँगरखे की जेब देखता है।**) यह रही, अभी निकाल कर देता हूँ।

(**शीघ्रता से सन्दूक खोलता है, ऊपर ही हरा दुशाला रखा है। उसकी तहें न खोल कर वैसे ही निकाल कर उसे भिखारिन की तरफ उछाल देता है।**)

भिखारिन बाबू, जुग-जुग जिएँ ! बाबू का बच्चा जुग-जुग जिये !

अचल यह सब कुछ नहीं, जाओ। इस दुशाले से बच्चे को ठीक तरह से ढक लो। इसे ठंड नहीं लगेगी!

भिखारिन भगवान जनम-जनम आप को बड़ा आदमी बनाएँ! आप लाख बरिस जीएँ, बाबू! अब मेरा बच्चा बच जायगा! बाबू! जुग-जुग जिएँ! मेरा बच्चा बच जायगा! **(प्रस्थान)**

अचल **(दुहराकर)** बच्चा बच जायगा! ईश्वर करे, बच्चा बच जाय!

(नेपथ्य से दुलीचन्द की आवाज़)

अँगरखे में मेरी चाबी रह गई। अचल! समझा न? मेरी चाबी रह गई।

(दुलीचन्द का प्रवेश)

दुलीचन्द अँगरखे में मेरी चाबी रह गई! समझा न? मै लक्ष्मीजी की पूजा करने जा रहा था कि......**(खुली हुई सन्दूक पर उसकी नज़र जाती है। सहसा घबरा कर)** अयँ! यह क्या! यह सन्दूक किसने... किसने·· किसने खोली? अरे···(**अचल को झकझोर कर**) यह सन्दूक किसने खोल···डाली!

अचल मै···मैंने···खोली, चाचा जी!

दुलीचन्द अरे···तो···तो···मैं···एक मिनट को गया···और···और···तूने खोल डाली। **(झपट कर सन्दूक के पास जाता है। कपड़े तितर-बितर करते हुए)** अरे, इसका हरा···हरा···हरा···दुशाला कहाँ गया! अरे मेरा हरा दुशाला (**रोते हुए स्वर में**) मेरा हरा दुशाला·········

अचल हरा दुशाला! वह मैंने एक भिखारिन को दे दिया!···

दुलीचन्द **(रुदन के स्वर में)** भिखारिन को दे दिया? कहाँ है, वह भिखारिन! **(दरवाज़े की ओर झपट कर)** कहाँ है, भिखारिन! ग़ायब हो गयी। (**खिड़की के पास दौड़ता है।**) इस खिड़की से भी नहीं दीख रही है! हाय! बाप रे! मैं लुट गया! मैं लुट गया। मेरा हरा दुशाला! **(रोते हुए)** समझा न? मेरा हरा दुशाला **(सिसकता है)** भिखारिन को···दे···दी···या!

अचल चाचा जी, माफ़ कीजिये !

दुलीचन्द तेरी माफ़ी गई भाड़ में ! बुला उस भिखारिन को। हाय। (रोता है)

अचल मुझे क्या पता कि वह भिखारिन कहाँ गई, और मैं नहीं जानता था कि वह हरा दुशाला आप को इतना प्यारा है ! आप ही ने तो कहा था कि पुराने कपड़े हैं और तुम्हारे लिए......

दुलीचन्द तेरे बाप के लिए, गधे...नालायक...बड़ा सीधा बनता है ? समझा न ? अरे देना था तो कोई दूसरा कपड़ा दे देता ? वही दिया, हरा दुशाला ! हाय ! दुनियाँ भर मुझे लूटने के लिए जुटी है !

अचल भिखारिन का बच्चा मर रहा था, चाचा जी !

दुलीचन्द (चीखकर) अरे, कल मरने को हो तो आज मर जाय। और साथ-साथ तू भी मर जा ! (रोते हुए) हाय ! मेरा हरा दुशाला......

अचल वह तो पुराना दुशाला था, कीड़ो से बचाने के लिए...

दुलीचन्द (रोते हुए) कीड़ों से बचाने के लिये लेकिन तुझ जैसे मकोड़े ने तो उसे खा लिया ! हाय रे ! मैं तो लुट गया ! (रोता हुआ) लुट गया !

अचल तो मैं जाता हूँ, भिखारिन को खोजता हूँ।

दुलीचन्द जा भाग और भिखारिन से छीन ले।

अचल दी हुई चीज मैं वापस नहीं ले सकता, चाचा जी !

दुलीचन्द बड़ा बाप का बेटा कहीं का ! यहाँ मैं लुट गया, और यह दी हुई चीज वापस नहीं लेता ! (पुकार कर) अरे, मंगल ! अरे, मंगल ! अरे, दौड़ ! अचल मुझे मारे डाल रहा है। हाय ! हाय ! मार डाला !

अचल मैं ख़ुद यहाँ से चला जाता हूँ। यह हरा दुशाला न हुआ, हज़ारों की दौलत हो गई !

दुलीचन्द (झुँझलाकर) हाँ, हाँ, हो गई ! तू क्या जाने ! तूने उसे देखा नहीं ?

अचल देखा क्यों नहीं ! वह तह किया हुआ ऊपर ही रखा था। वैसे ही उछालकर दे दिया भिखारिन को।

दुलीचन्द (व्यंग्य से रोने के स्वर में) उछालकर दे दिया भिखारिन को! यहाँ मेरी टोपी उछाल दी और कहता है......

(मंगल का प्रवेश। दौड़ता हुआ आता है।)

दुलीचन्द अबे, तू कहाँ मर गया था! मैं, मैं...तुझे......

मंगल सरकार! पूजा के लिये अगरबत्ती लेने चला गया था।

दुलीचन्द मशाल लेने नहीं चला गया! लगा दे तू भी घर में आग! हाय! मैं लुट गया। लुट गया...समझा न......!

मंगल (घबराकर) लुट गया...क्या हो गया, सरकार?

दुलीचन्द उस भिखारिन को पकड़...जा...जल्दी!

मंगल किस भिखारिन को, सरकार?

दुलीचन्द अबे, बाहर देख! उस भिखारिन ने मुझे भिखारी बना दिया! समझा न? और पूछता है किस भिखारिन को।

मंगल (अचल से) कौन भिखारिन, अचल बाबू?

दुलीचन्द अचल बाबू की नानी! देख कोई भिखारिन है? उसी के इशक में इसने हरा दुशाला......

अचल (तीव्रता से) चाचा जी!

दुलीचन्द मुझे भिखारी बनाके अब मुझसे लड़ता है! वह भिखारिन जाने कहाँ...हाय...हाय...मैं लुट...गया!

(भिखारिन का प्रवेश)

दुलीचन्द (चौंककर) ये भिखारिन आ गई...आ गई!

भिखारिन (भरे हुए गले से) यह मैं नहीं लूँगी, बाबूजी, नहीं लूँगी! यह पाप है। इस दुशाले के भीतर ये नोट रखे हैं। मैं इन्हें नहीं लूँगी, बाबूजी!

(नोट के बण्डल ज़मीन पर डाल देती है। दुलीचन्द झपट कर नोट समेटने लगता है।)

दुलीचन्द ये हैं मेरे रुपये...ये हैं मेरे नोट...ये हज़ार...दो हज़ार पाँच सौ...चार हज़ार पाँच सौ...पाँच हज़ार...हाँ...पूरे हैं...! मेरे नोट पूरे हैं...समझा न?

भिखारिन बच्चे को उढ़ाने के लिये दुशाला खोला तो ये नोट नीचे गिर पड़े। ये रुपये लेना पाप है, बाबू जी! किसी पाप से इस बच्चे के बाप नहीं रहे, इन रुपयों से यह बच्चा भी न रहता! ऐसा दान मैं नहीं चाहती, बाबूजी!

मंगल तो तू ले के क्यों भागी इन रुपयों को!

भिखारिन दुशाले के अन्दर लिपटे थे...मैं क्या जानूँ कि इसमें रुपये हैं। दूध तो जहर नहीं हुआ, ये रुपये जरूर जहर हो जाते!

(बच्चा रोने लगता है!) चुप रह बच्चे...चुप रह...अब तू अच्छा हो गया....पहले तो बेहोश-सा पड़ा था....अब तू बच जायगा! (अचल से) बाबू! यह दुशाला भी रख लीजिये....यह भी नहीं लूँगी।

अचल दुशाला मैंने तुझे दे दिया, बहन!....अब उसे नहीं लूँगा!

दुलीचन्द ठीक है, ठीक है....अचल उसे नहीं लेगा....और....और मैं तुझे आठ आना पैसा और भी दे सकता हूँ, आठ आना, समझा न?

(बोझे वाला आता है)

बोझावाला हजूर यू चवन्नी जो आप हमका दीन रहे—यू खोटी है।

दुलीचन्द (बोझे वाले को झिड़कता हुआ) अबे भाग, शोर न कर। मैं यहाँ लुटा जा रहा था....इसके लिये चवन्नी खोटी है। यहाँ मैं बाल-बाल बच रहा हूँ, ये कहता है—(मुँह बनाकर) यू चवन्नी खोटी है। भाग यहाँ से, नहीं तो मारता हूँ चार...तमाचे...

अचल (बोझे वाले से) बोझे वाले! तुम अभी ठहरो!

दुलीचन्द (भिखारिन से) हाँ, तो रुपये लौटाने के बदले मैं तुम्हें आठ आने देता हूँ! समझा न?

भिखारिन मुझे कुछ नहीं चाहिये, बाबूजी! अपने बेटे को आँचल में ही छिपा लूँगी। मेरा फटा आँचल ही उसका दुशाला है।

(सहसा केशव का प्रवेश)

केशव (नेपथ्य से बोलता हुआ आता है।) अचल! तुम्हारा ग्रश मिल

गया, मिल गया। उससे तुम पृथ्वी का स्वर्ग खींच सकते हो (भिखारिन और अन्य व्यक्तियों को देखकर) अयँ, यह क्या?

अचल (दृढ़ स्वर में) 'पृथ्वी का स्वर्ग' यही है केशव! इस भिखारिन में; जो अपने आप रुपये देने चली आई! यही 'पृथ्वी का स्वर्ग' है! यही 'पृथ्वी का स्वर्ग' है, जो काग़ज पर नहीं खिंच सकता। सच्चाई और पाप से घृणा....यही तो स्वर्ग है! (जोर से) मैने 'पृथ्वी का स्वर्ग' देख लिया! अब मैं इस घर से जाता हूँ! चाचा जी! नमस्ते।.... (भिखारिन से) चलो, बहिन! (केशव से) चलो केशव.... (प्रस्थान। पीछे-पीछे भिखारिन और केशव भी जाते हैं।)

दुलीचन्द अरे अचल! सुन तो....ये पाँच हज़ार मिल गए....अब मैं तुझसे नाराज नहीं हूँ....समझा न?

अचल (नेपथ्य से) यही "पृथ्वी का स्वर्ग" है, केशव! यही "पृथ्वी का स्वर्ग है!

(परदा गिरता है।)

रंगीन स्वप्न

पात्र-परिचय

कमल—कालेज का विद्यार्थी और प्रेम का परीक्षार्थी

नन्दन—कमल का मस्त मित्र

प्रभा—कालेज की एक छात्रा

पुलिसमैन

स्थान—विक्टोरिया पार्क का मैदान। चहल-पहल हो रही है। नेपथ्य में दूर से एक रिकर्ड-बज रहा है। 'आने...वाला आ-ए-गा...आ-ए-गा।' धीरे-धीरे स्वर दूर होता जा रहा है।

रंगीन स्वप्न

कमल — (**अपने आप रोमाण्टिक स्वरों में**) आने वाला...आ-ए-गा......आएगा। कितना विश्वास है इन शब्दों में !...विश्वास ! जैसे यह आत्मा की रागिनी है ! साँसों के बोल हैं ! रोम-रोम की पुकार है ! रंगीन स्वप्न है।...रं...गी...न...स्व...प्न...! आनेवाला आएगा ! जैसे दीपक को पतंग के आने पर विश्वास हो ! कली को भौंरे के गूँजने का भरोसा हो ! और...और...इसी जगह विक्टोरिया पार्क में प्रभा...प्रभा के आने का...

नन्दन — (**बीच ही में दूर से आता हुआ स्वर**) अरे कमल ! तुम हो ! दूर से मैंने देखा कि शायद तुम्हीं हो !

कमल — (**झुँझलाए हुए स्वर में आप ही आप**) कम्बख़्त नन्दन को इसी वक्त आना था।

नन्दन — (**हँसते हुए प्रवेश**) क्या सोच रहे हो, दोस्त ! कोरिया की लड़ाई या चीन का हमला ? अब किसी मामले की ख़ैर नहीं। लेकिन अजीब तरह से खड़े हो ! खोये-खोये से। क्या किसी का इन्तज़ार है ?

कमल — (**स्वगत**) तुम्हारे दुश्मनों का ! (**बनावटी हँसी हँसते हुए**) इन्तज़ार ? अरे भाई, किसका इन्तज़ार होगा ! कालेज से लौटा, घर तबीयत लगी नहीं। सोचा, विक्टोरिया पार्क तक हो आऊँ ! चहल-पहल में मन बहल जायगा। मुफ्त में फिल्मी गानों के रिकर्ड सुनने को मिल जायँगे और......

नन्दन — (**बीच ही में**) किसी से मुलाक़ात हो जायगी ! (**शरारत से**) हाँ ?

कमल — नन्दन ! शरारत करने पर अगर नोबल प्राइज़ दिया जाता तो तुम्हें मिलता।

नन्दन — और इन्तज़ार करने पर दिया जाता तो—तुम्हें।

कमल (झुँझलाकर) बार-बार इन्तज़ार! अरे कोई हो भी! और यहाँ पार्क में किसका इन्तज़ार! यहाँ तो सभी आदमी एक-से दिखाई पड़ते हैं। दिन भर की थकावट दूर करने के लिए सभी के हाथ-पैर ढीले रहते हैं जैसे किसी घड़ी का स्प्रिंग खुल गया हो!

नन्दन (हँसकर) अच्छा? लेकिन तुम्हारे दिमाग का स्प्रिंग कसा हुआ मालूम देता है। किसी को देखने के लिए तुम्हारी भौहें ऐसे चढ़ी हैं जैसे साइकिल के पहियों पर टायर चढ़ा हो!

कमल अच्छा, अब मेरा मजाक उड़ाओगे?

नन्दन मज़ाक क्या, सही बात कह रहा हूँ। और दिनों तो तुम कालेज के बाद पहले मेरे यहाँ आते थे—तब कहीं दूसरी जगह जाते थे। आज चोरी-चोरी यहाँ चले आए, बिना मुझसे मिले! इसीलिए कहता हूँ शायद किसी से मुलाक़ात……

कमल फिर वही बात? मुलाकात! अरे कहीं बबूल में भी संतरे के फल लगा करते हैं? इसके लिए क़िस्मत चाहिए… क़िस्मत!

नन्दन तो फिर आज चोरी से तुम यहाँ क्यों चले आए?

कमल चोरी? इसमें चोरी की क्या बात?

(पुलिसमैन का प्रवेश)

पुलिसमैन ए मिस्टर! ये चोरी की बातें क्या कर रहे हो? क्या किसी का जेब काटने की फ़िक्र में हो? ये पार्क है।

नन्दन यह तो मैं भी जानता हूँ कि यह पार्क है लेकिन पुलिसमैन के मानी यह नहीं है कि वह आदमी की इज़्ज़त पर हमला करे।

पुलिसमैन (व्यंग्य से) इसमें इज़्ज़त पर हमला कैसा, साहब? मैंने दूर से सुना कि आपकी बातचीत में दो-तीन बार चोरी का ज़िक्र आया है। मेरा सवाल करना लाज़मी है।

नन्दन शरीफ़ आदमी देखकर सवाल किया जाता है।

पुलिसमैन जी, जो अपने को जितना शरीफ़ साबित करना चाहता है, उस पर उतने ही ज़्यादे शक की गुन्जाइश हो जाती है। आजकल ऐसे शरीफ़ बहुत हैं।

कमल　　(**शान्ति से**) जाओ, भाई ! न हम शरीफ़ हैं, न चोर। औसत क़िस्म के आदमी हैं। चोरी का मामला क्या होगा ! हम लोग यों ही पालिटिक्स पर बहस कर रहे थे कि कोरिया के मैदान में चीन ने चोरी-चोरी अमेरिका पर हमला कर दिया।

पुलिसमैन　अच्छा, ये बात है ?

नन्दन　　हाँ जी, यही बात है। चोरी के मामले में जाकर चीन को पकड़ो।

पुलिसमैन　चीन को ?

नन्दन　　हाँ, चीन के नक़्शे को ही कब्जे में करो।

पुलिसमैन　देखिए, साहब ! आप पुलिस की हँसी नहीं उड़ा सकते।

कमल　　(**ऊबकर**) अमाँ यार ! पीछा भी छोड़ो ? मैं किसी के इन्तज़ार ......(**बात पलटते हुए**) यानी मैं इनसे बातें कर रहा था अपनी पढ़ाई की और आपने चोरी का मामला ही पेश कर दिया ! (**नन्दन से**) हाँ, तो नन्दन वह अपनी नोटबुक मुझे दे देना जिसमें तुमने प्रोफ़ेसर वर्मा की चोरी से बाज़वेल की लिखी हुई जानसन की लाइफ़......

नन्दन　　जानसन की लाइफ ? जानसन की लिखी हुई बाज़वेल की लाइफ़।

पुलिसमैन　(**तीखेपन से**) बातें आप लोग चाहे जितनी बना लें लेकिन आप लोगों पर नज़र रखनो पड़ेगी। समझे, साहब ! (**इतमीनान से**) ठीक है। अभी मैं जाता हूँ। (**प्रस्थान**)

नन्दन　　(**पुलिसमैन के जाने की दिशा में देखते हुए**) गया। ये पुलिस वाले अपने को न जाने क्या समझते हैं ? दुनिया भर के लोग चोर और डाकू हैं। कहो तो ठीक करूँ इसे।

कमल　　जाने भी दो, यार ! ख़ामख़ाँ झगड़ा मोल लेने से क्या फ़ायदा ! हम लोग घूमने निकले हैं, झगड़ा करने नहीं। मैं तो चाहता था कि जितनी जल्दी वह यहाँ से टले, उतना ही अच्छा ! इसलिए चुप रहा। नहीं तो मैं तो उसी वक्त उसे ठीक कर देता जब उसने सवाल किया था।

नन्दन यह पुलिस वाला नया मालूम देता है। अभी हम लोगों से उसे कोई तजुर्बा हासिल नहीं हुआ।

कमल अब हो जायगा। जाने भी दो। अच्छा, तो अब मैं भी जाऊँगा, भाई! इस पुसिल वाले ने शाम का सारा मज़ा किरकिरा कर दिया!

नन्दन खैर, उसने तो कर दिया, लेकिन अब तुम करने जा रहे हो। मालूम होता है, पीछा छुड़ाने की कोशिश कर रहे हो, यार। मुझसे 'गुडनाइट' करके पाँच मिनट बाद यहीं टहलते नज़र आओगे!

कमल अरे, भाई! तुमसे क्या बहाना? मुझे घर ज़रा जल्दी जाना है।

नन्दन क्यों?

कमल तुम्हारे 'क्यों' के मारे मेरी आफ़त है। (**जोर देकर**) यों ही।

नन्दन. अच्छा, तो फिर यों ही चलो। लेकिन पहले मेरे घर होते हुए।

कमल तुम तो मुझे खत्म करके ही चैन लोगे! (**गहरी साँस लेकर**) खैर, चलो। इस बार यही सही।

नन्दन पकड़ गये न? इस बार यही सही। कोई बात है ज़रूर!

कमल तुम भी बिल्कुल बुलडाग की दुम हो! (**रुककर**) लेकिन ठहरो! देखो, वह क्या है!

नन्दन कहाँ?

कमल अरे, वह सामने! जरा आँखें खोलकर देखा करो।

नन्दन वह? (**पार्क में संकेत करता है।**)

कमल अरे, यह देखो!...यह रूमाल! (**नेपथ्य से उठा कर लाता है।**)

नन्दन यह रूमाल? यह रूमाल किसका है?

कमल अब मैं क्या जानूँ कि किसका है!

नन्दन लेकिन है यह बहुत बढ़िया!

कमल रेशमी है!

नन्दन किसका होगा?

कमल होगा किसी का। पार्क में बहुत लोग घूमने आते हैं। गिर गया होगा किसी का भूल से।

नन्दन भूल से?

कमल अब मैं क्या जानूँ ! भूल ही से गिरा होगा। या फिर तुम्हें देखकर किसी ने गिरा दिया होगा !

नन्दन मुझे देखकर या तुम्हें देखकर ? इसे फैलाकर देखो ! शायद इसमें कोई धड़कता हुआ दिल भी मिल जाय।

'एक दिल के टुकड़े हज़ार हुए, एक इधर गिरा, एक उधर गिरा !'

कमल (व्यंग्य से) हँअ्......ज़िन्दगी में कविता के लिए जगह नहीं है, दोस्त !

नन्दन लेकिन ज़िन्दगी कविता से ही बनती है, कमल ! अब यह रूमाल क्या है ! कविता का एक छन्द ही तो है। बिल्कुल 'वरजिन कट'।

कमल हाँ, है तो छोटा ही। किसी कामिनीकौशल का मालूम होता है।

नन्दन पार्क में देखो, कोई है इस जागीर का मालिक !

कमल हो या न हो। लेकिन इसे तो पास रखने की तबीयत होती है।

नन्दन अच्छा, यह बात है ? मर्ज़ काफी दूर तक बढ़ गया है। तब तुम जानते हो कि यह किसका है।

कमल क़तई नहीं। लेकिन अगर कोई भेंट न करे और पड़ा मिल जाय तो उसे अपने पास रखने से भी गये ?

नन्दन (नेपथ्य में इशारा करते हुए) देखो, उसका तो नहीं है।

कमल किसका ?

नन्दन उसी स्त्री का जो चारों ओर अपनी निगाह दौड़ा रही है।

कमल शायद ! पर वह तो कुछ बूढ़ी-सी मालूम देती है। मुमकिन है, उसी का हो ! कहो तो जाकर उसे रूमाल वापस करूँ और उसका नाम पूछूँ।

नन्दन देखो, कमल ! तुम बहुत झूठ बोल चुके। तुम अब तक मुझसे सारी बातें छिपाते रहे। तुम जानते हो, यह रूमाल किसका है।

कमल मैं नहीं जानता।

नन्दन खाओ नरगिस की क़सम।

कमल खाता हूँ।

नन्दन तो फिर मैं जानता हूँ। बतलाऊँ किसका है ?

कमल बतलाओ।

नन्दन अड़तीस अन्दाज़ पार करूँ ?

कमल करो।

नन्दन सम्हल कर सुनना।

कमल सम्हल कर सुनूँगा।

नन्दन तो फिर सुनो।....प्रभा का।

कमल (चीख़कर) प्रभा का ?

नन्दन हाँ, प्रभा का।

कमल कैसे ?

नन्दन इसका हरा रंग उसकी साड़ी से मैच करता है !

कमल मैच करने से क्या हुआ ? हज़ारों हरे रंग की साड़ियाँ और हरे रंग के रूमाल हैं। यह कोई बात नहीं।

नन्दन तो, और बतलाऊँ ?

कमल बतलाओ।

नन्दन इसमें वही सैंट है जो प्रभा हर रोज़ लगाती है ! कहो—हाँ। सारा क्लास महक उठता है।

कमल (सूँघकर) हाँ, सैंट तो वही है। (सोचकर) साड़ी का मैच और वही सैंट 'दि ईवनिंग इन पेरिस।' मानता हूँ। लेकिन अगर उसका यह रूमाल है तो यहाँ आया कैसे ?

नन्दन (लापरवाही से) अपने पैरों चल कर आया होगा।

कमल तुम फिर मज़ाक करते हो, नन्दन ?

नन्दन तो फिर तुम जानो। लेकिन मेरा अनुमान सही है और सही है। क़बूल करो।

कमल (बिखरकर) अब तुमसे क्या छिपाऊँ, नन्दन ! यह मेरे जीवन का रंगीन स्वप्न है।

नन्दन रंगीन स्वप्न हरा होगा। रूमाल हरा है न ?

कमल (तीव्रता से) हँसी मत करो, नन्दन ! बात सही है। यदि यह रूमाल प्रभा का है तो यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है। यह

इतना छोटा है लेकिन इसमें मेरे जीवन का बड़े से बड़ा स्वप्न बाँधा जा सकता है। इसके नन्हें-नन्हें चार कोने मेरे जीवन की चारों दिशाओं को समेटे हुए हैं!

नन्दन अच्छा, बड़े सीरियस बन गए?

कमल तुमने मेरे मन के तार पर ज़ोर से ठोकर मार दी, नन्दन! इसीलिए यहाँ आया था कि किसी बहाने उससे कुछ बातें कर सकूँ। मैंने सुना था कि वह आज अपने भाई के साथ यहाँ आनेवाली थी।

नन्दन तभी तुम खोये-खोये से खड़े थे और मुझसे उड़ रहे थे। बोलो, पकड़े गए न? अच्छा तो फिर तुमने देखा—वह आई?

कमल आई होगी, यह रूमाल उसके आने का सबूत है।

नन्दन हाँ, मुमकिन है, आई हो। तुम तो पुलिस वाले से उलझ रहे थे।

कमल शायद उसी समय वह यहाँ से निकली हो और उसका रूमाल गिर गया हो।

नन्दन धोखे से?

कमल मैं क्या बतलाऊँ, नन्दन! यही तो रहस्य है जो मुझसे आँखमिचौनी खेलता है। मैं आज तक नहीं समझ सका कि यह मेरा रंगीन स्वप्न है या रंगीन सत्य।

नन्दन अच्छा, तो प्रभा को यह रूमाल देकर पूछ लेना कि यह रंगीन स्वप्न है या रंगीन सत्य।

कमल यही करूँगा! लेकिन नन्दन! मेरा मन कहता है कि वह मुझसे असावधान नहीं है। जब मैं इस पार्क में आया था तो मैंने रिकर्ड सुना था—आनेवाला आ-ए-गा, आ-ए-गा। और मेरा मन प्रभा के आने की बात बार-बार दुहरा रहा था।

नन्दन अच्छा, तुम्हारे मन के ये करिश्में हैं!

कमल क्या कहूँ, नन्दन! यह रूमाल तो यहाँ (**हृदय की ओर संकेत करते हुए**) रख लेने की चीज़ है। हृदय के पास। जब कल मैं उसे क्लास में दूँगा, तब उसका उत्तर ही मेरे भाग्य का निर्णय करेगा!

नन्दन ठीक है—लेकिन यह पुलिस वाला फिर किस बात का निर्णय करने के लिए यहाँ आ रहा है ? कमबख़्त !

(पुलिसमैन का फिर प्रवेश)

पुलिसमैन अच्छा, मिस्टर ! आप लोग ही तो हैं, चोरी की बातें करने वाले। क्यों, मिस्टर ! आप लोगों ने कोई हरा रूमाल तो नहीं उठाया ?

कमल (चौंककर) हरा रूमाल ?

पुलिसमैन (दृढ़ता से) जी, हरा रूमाल।

नन्दन (अनजान की तरह) कौन-सा हरा रूमाल ?

पुलिसमैन एक हरा रूमाल इस पार्क में खो गया है।

नन्दन तो इससे हमसे क्या बहस ?

पुलिसमैन मुझे आप लोगों पर शक है। आप लोग चोरी की बातें कर रहे थे। शायद रूमाल की चोरी की ही बात थी। मैं आप लोगों के पाकेट देखूँगा।

नन्दन यह शराफ़त नहीं है।

पुलिसमैन अक्सर शरीफ़ लोग ही ऐसे काम करते हैं। दिखाइये अपने पाकेट।

नन्दन ज़बान सम्हाल कर बोलो। पुलिसमैन हो तो क्या आसमान पर पैर रक्खोगे ! तहज़ीब से पेश आओ।

पुलिसमैन आप हमको डाँटते भी जाते हैं और कहते हैं, तहज़ीब से पेश आओ।

कमल (विनम्रता से) नहीं, भाई ! हम लोग आपको डाँट कैसे सकते हैं ? आप जमादार साहब हैं। हम लोग बेचारे पढ़ने वाले स्टूडेण्ट। आपको डाँट कर हम लोग रहेंगे कहाँ !

पुलिसमैन तो फिर आप लोग बतलाइए कि आपने हरे रङ्ग का रूमाल उठाया है ?

कमल किसका है वह ?

पुलिसमैन होगा किसी का। एक औरत का है। हरा रङ्ग है उसका।

नन्दन हरा रङ्ग औरत का है या रूमाल का ?

पुलिसमैन (तीव्रता से) देखिए मिस्टर, मैं आपको ताक़ीद करता हूँ कि आपके हक़ में अच्छा नहीं होगा। उस औरत ने अभी मुझसे कहा कि उसका हरे रङ्ग का रूमाल यहीं कहीं खो गया है। उसमें पाँच रुपये का एक नोट भी था।

कमल (सहसा) उसमें पाँच रुपये का नोट कहाँ था ?

पुलिसमैन (खुश होकर) ये रहा। तो जनाब ने वह रूमाल उठाया है। पकड़े गये न ? फिर निकालिये वह रूमाल अपने पाकेट से।

कमल हम लोगों के पास वह रूमाल नहीं है।

पुलिसमैन नहीं है ? (देखते हुए) अच्छा, आपके पाकेट में वह हरे रङ्ग का कोना-सा क्या नज़र आता है ! निकालिए उसे।

कमल (घबराहट से) कैसा कोना ? कैसा रूमाल ?

पुलिसमैन अरे, वह हरे रङ्ग का कोना जो आपके कोट की भीतरी जेब से झाँक रहा है।

कमल यह ? यह मेरे दोस्त का रूमाल है।

पुलिसमैन दोस्त का ?

कमल जी, दोस्त का।

नन्दन दिखला दो, कमल ! इनको अपने दोस्त का रूमाल हरे रङ्ग का। दैट पार्टिङ्ग प्रैजेण्ट।

कमल (रूमाल निकाल कर) देख लीजिये, यह रूमाल है। मेरे दोस्त का।

पुलिसमैन (रूमाल लेकर) हाँ, यही तो रूमाल है, जिसे मैं खोज रहा था। मैंने ठीक समझा था कि आप लोग रूमाल को चुराने की बात ही कर रहे थे। अच्छा, जनाब ! बँधा हुआ पाँच रुपये का नोट कहाँ है ? निकालिए उसे भी।

कमल कैसा पाँच रुपये का नोट ?

पुलिसमैन जो इसमें बँधा हुआ था और जिसे खोल कर आपने रख लिया।

कमल मैंने रख लिया ?

पुलिसमैन जी हाँ, आपने रख लिया। निकालिये नहीं तो ले चलूँगा थाने।

नन्दन (**बिगड़ कर**) कैसी बातें करते हो जी! यह सरासर झूठ है। यह रूमाल इनके दोस्त का है।

पुलिसमैन दोस्त का?

कमल जी, हाँ, दोस्त का। और मेरा दोस्त रूमाल में रुपये नहीं रखता। पर्स में रखता है।

पुलिसमैन उस दोस्त का क्या नाम है?

नन्दन (**कमल से**) कमल! क्या नाम है उसका?

कमल उसका नाम?...अच्छा-सा तो नाम है।...यानी उसका नाम है...

पुलिसमैन (**बीच ही में**) चोर! निकालिये पाँच रुपये और चलिये थाने।

कमल जमादार साहब, यह आप क्या कर रहे हैं? क्या कर रहे हैं आप?

नन्दन (**दूसरी ओर देखकर**) अच्छा आप? आप कहाँ से आ गईं?

(**प्रभा का प्रवेश**)

प्रभा हाँ, मैं हूँ प्रभा! यह रूमाल मेरा है।

कमल आपका?

नन्दन आपका ही?

प्रभा जी, मेरा ही। (**पुलिसमैन से**) आप मेरा रूमाल मुझे दें।

पुलिसमैन आपका रूमाल...आपको?

प्रभा जी, मेरा रूमाल...मुझको। यह मेरा रूमाल है।

पुलिसमैन अरे, यह हरा रूमाल है। यह तो उस बुढ़िया का है जिसने इसमें पाँच रुपये बाँध रक्खे थे।

नन्दन (**हँस कर**) यह रेशमी रूमाल और बुढ़िया? अरे उसका रूमाल तो हरे खद्दर का होगा।

(**सम्मिलित हँसी**)

पुलिसमैन हरे खद्दर का?

नन्दन जी हाँ, हरे खद्दर का। बुढ़ियों में रेशमी रूमाल रखने का फैशन कभी दुनियाँ में नहीं रहा।

पुलिसमैन देखिए, मज़ाक रहने दीजिये ।

प्रभा इस मज़ाक में मेरा रेशमी रूमाल किसी दूसरे का नहीं हो जाता ।

पुलिसमैन तो यह आपका है ?

प्रभा जी हाँ, मेरा । मैं अपने भाई के साथ इस रास्ते होकर बाज़ार जा रही थी । वह यहीं गिर गया । बाद में मुझे ध्यान आया तो......

पुलिसमैन लेकिन इसका क्या सबूत कि यह आपका है । ये मिस्टर तो कह रहे हैं कि उनके दोस्त का है जिनका नाम भी इन्हें नहीं मालूम ।

प्रभा उनका कहना भी सही हो सकता है लेकिन यह रूमाल मेरा है ।

पुलिसमैन इसका सबूत ?

प्रभा सबूत ? देखिए रूमाल । इसके कोने पर सुनहरे धागे से लिखा हुआ है...नमस्ते । देखिए ।

पुलिसमैन देखूँ ? यह कोना रहा । (पढ़ते हुए) न...म...स्ते...। धागा भी सुनहरा ही है । ठीक है, आपका है । अच्छा साहब, लीजिए अपना रूमाल । माफ़ कीजिये । नमस्ते ।

प्रभा नमस्ते । अब मैं जाऊँ ?

पुलिसमैन जी हाँ, जाइये ।

नन्दन आपने बड़ी आसानी से यह रूमाल दे दिया ! यह तो इनके दोस्त का...

पुलिसमैन ख़ामोश रहिये, आप ! आप लोगों पर चोरी का इल्ज़ाम है ।

प्रभा जी नहीं, इसमें किसी का भी दोष नहीं है । रूमाल मेरे हाथ से गिर गया था । न वह गिराया गया और न चुराया गया ! यहाँ किसी बात का कोई मतलब नहीं निकलता ।

नन्दन जी ?

प्रभा जी हाँ, कोई मतलब नहीं निकलता । आप लोग हवा में उड़ने की कोशिश न करें । नमस्ते ।

(प्रभा जाना चाहती है ।)

पुलिसमैन आप जा रही हैं । नमस्ते...सुनिए, अब से आप रूमाल उठाने वाले

इन शरीफ़ों से बचते रहिए। एक गाना भी है— बचते रहना, बचते रहना, बचते रहना जी।

कमल ज़बान सम्भालो, नहीं तो बुरा होगा, समझे ! तुमने समझ क्या रक्खा है ? मैं इन बातों को सुनने का आदी नहीं हूँ।

प्रभा शान्त रहिए। झगड़ा किस बात का ? (पुलिसमैन से) छोड़ दी जाए इन्हें। इन लोगों का कोई कुसूर नहीं है। नमस्ते।

कमल (दबे कंठ से) धन्यवाद। नमस्ते !

पुलिसमैन जाइये, साहब ! छोड़ दिया। आप लोग साफ़ बच गए। आयंदा किसी का रूमाल न उठाया कीजिए। अपना भी नहीं।

नन्दन अब बहस की ज़रूरत नहीं है। सोच-समझ कर यहाँ से चले जाओ !

पुलिसमैन मिस्टर ! तुम्हारे कहने की ज़रूरत नहीं है। मुझे ख़ुद उस बुढ़िया का रूमाल खोजना है। (गहरी साँस लेकर) यह हरा रूमाल भी कितने धोखे की चीज है ! (जँभाई लेकर गुनगुनाते शब्दों में) बचते रहना ...बचते रहना...बचते रहना जी।

(पुलिसमैन का प्रस्थान; कुछ देर निस्तब्धता)

नन्दन कमल !

कमल क्या है ?

नन्दन सब कुछ गया। प्रभा, पुलिसमैन और वह शैतान रूमाल !

कमल (खोया हुआ-सा) शैतान रूमाल !

नन्दन और बुख़ार के बाद एक कमज़ोरी छोड़ गया !

कमल कैसी ?

नन्दन प्रभाजी ने कहा कि आप लोग हवा में उड़ने की कोशिश न करें। गोया हम आदमी नहीं, एरोप्लेन हैं।

कमल (हँसकर) अरे, हम लोग एरोप्लेन क्या होंगे। ख़ुद ही तो हम लोगों को बातों में उड़ाया करती हैं।

नन्दन रूमाल के साथ ?

कमल और वह भी अपने साथ लेती गईं !

नन्दन दरअसल। ख़ुद गईं और उनके साथ रूमाल भी गया। मुझे तो दाग़ का एक शेर याद आ रहा है :

होशो हवासो ताबो तवाँ दाग़ जा चुके।
अब हम भी जाने वाले हैं सामान तो गया।

इसको यों कहना चाहिये—

अब हम भी जाने वाले हैं रूमाल तो गया।

कमल हाँ, यही बात है! चलो, तो चलें।

नन्दन अब रह क्या गया यहाँ। लेकिन कमल मुझे बड़ा रंज है कि धोखे की चीज ही निकला यह रूमाल!

कमल धोखे की चीज थी, तभी तो हाथ से निकल गया!

नन्दन हाँ, हाथ से लौटाने का मौक़ा भी नहीं दिया उसने। तुम जब क्लास के बाद लौटाते तो तुम्हें धन्यवाद मिलता, एक नीची नज़र मिलती और शायद एक या आधी मुस्कान भी।

कमल छोड़ो भी! अब फ़ायदा क्या इस रंगीन स्वप्न को दुहराने से।

नन्दन हाँ, रंगीन स्वप्न ही रहा। रंगीन स्वप्न ठहरता भी इतनी ही देर है, दोस्त!

कमल अगर ऐसा होना था तो, अच्छा होता, रूमाल हाथ में आता ही नहीं!

नन्दन आना था तो आया और जाने वाला था तो गया!

कमल ठीक है, भाग्य की बात! इस पर अब सोचना फ़िज़ूल है।

नन्दन जब तुम पार्क में आये थे तो तुमने सुना था—आने वाला आ-ए-गा। अब जब हम लोग पार्क से बाहर चल रहे हैं तो रूमाल जाने की बात पर मैं यह गाना चाहता हूँ :—(गाते हुए) जा-ए-गा, जा-ए-गा जाने वाला जा-ए-गा!

(गीत का स्वर धीरे-धीरे धीमा पड़ जाता है।)

[परदा गिरता है।]

अट्टहास
(Laughter)

१. फ़ैल्ट हैट

२. रूप की बीमारी

फ़ैल्ट हैट

पात्र-परिचय

आनन्द मोहन—आयु ४० वर्ष; गृहस्वामी

शीला—आयु ३५ वर्ष, गृहस्वामिनी

अविनाश—आयु १८ वर्ष, आनन्दमोहन का भतीजा

शम्भू—आयु २५ वर्ष, अविनाश का नौकर

मनकू—आयु ५० वर्ष, खोमचे वाला

स्थान—हमारे देश का कोई भी नगर

समय—संध्या, साढ़े पाँच बजे

(एक सुसज्जित ड्राइंग-रूम। कुर्सियाँ ढंग से रक्खी हुई हैं। कुर्सियों के बीचोबीच एक छोटी-सी टेबिल है, जिस पर एक टेबिल-क्लाथ पड़ा है। कमरे में एक क्लॉक है, जिसमें ६ बजने में १० मिनट बाकी हैं।

परदा उठने पर आनन्द मोहन अशांत चित्त से कमरे में टहल रहे हैं। यद्यपि वे चालीस वर्ष के हैं तथापि उनका शरीर स्वस्थ और सुन्दर है। ऐसा ज्ञात होता है कि वे यौवन की अन्तिम सीढ़ी पर चढ़ कर पीछे की ओर देख रहे हैं। अभी उनके जीवन से अन्यमनस्कता काफ़ी दूर है। वे हल्के बादामी रंग का सूट पहने हुए हैं। पैरों में पॉलिश से चमकता हुआ ब्राउन 'शू' है। सफ़ेद क़मीज़ के ऊपर गहरे चॉकलेट रङ्ग की टाई उभर कर उनके वेश-विन्यास की सजीवता चारों ओर बिखेर रही है। टहलते हुए वे बायीं ओर प्रायः देख लिया करते हैं। शब्दों पर ज़ोर देकर वे बायीं ओर देखते हुए आवाज़ देते हैं।

...... मिला या नहीं ?

(एक क्षण शान्ति रहती है, फिर बाईं ओर के नेपथ्य से कोमल ध्वनि में नारी के कंठ से उत्तर आता है।)

......नहीं !......

आनन्द (किंचित झुँझलाकर) क्यों मिलेगा ! (घड़ी की ओर देखकर) छः बज रहे हैं और अभी तक नहीं मिला ! अजीब परेशानी है ! (फिर कुछ ज़ोर के स्वर में) सोने के कमरे में देखो......(फिर टहलने लगते हैं। कुछ रुककर) मिला ? नहीं मिला।

(एक क्षण बाद उसी ओर के नेपथ्य से) नहीं।

आनन्द (अस्थिर होकर) कौन शैतान उसे खा गया ! जब मैं कहीं जाने के लिए तैयार होता हूँ, तभी ग़ायब। मुझे घर में इतनी लापरवाही

अच्छी नहीं मालूम देती। चाहे मेरे पचास काम रुक जायँ लेकिन घर की रफ़्तार में कोई फ़र्क नहीं आएगा। (**रुककर**) वहाँ देखो बाथरूम में। लेकिन वहाँ क्या होगा! (**फिर टहलने लगते हैं।**) यहाँ मुझे जाने की जल्दी है, वहाँ घर का कोना-कोना चोर बना हुआ है! यह घर क्या है, मेरी तकलीफ़ों का कारख़ाना है, जिसमें रोज़ नई मुसीबत गढ़-छील कर मेरे लिए निकाली जाती है। (**झुँझला कर**) आफ़त है......!! (**नेपथ्य की ओर देख कर**) वहाँ मिला बाथ-रूम में?

(**नेपथ्य में रुआसे स्वर से**) मैं क्या करूँ? मुझे मिलता ही नहीं।

आनन्द (**अभिनय-सा करते हुए**) तो सारे घर में आग लगा दो! देखता हूँ, इस मकान में मैं आराम से नहीं रह पाऊँगा। किसी तरह भले आदमी की इज्ज़त बनाए हुए हूँ, वह भी मिट्टी में मिल जायगी! आज यह ग़ायब, कल वह ग़ायब। इस तरह ग़ायब होने का सिलसिला रहा तो मेरी ज़िन्दगी ही कहीं ग़ायब न हो जाय....!

(**शीला का प्रवेश। ३५ वर्ष की आयु में भी वह आकर्षक है। हल्की नीली साड़ी में उसका गौरवर्ण आकाश में चाँदनी की तरह खिला हुआ है। उत्तरदायित्व की गम्भीरता में वह जीवन की विनोदप्रियता बादल में रजत-रेखा की भाँति सजाए हुए है। वह कुछ झुँझलाहट की संकुचित भौंहों के नीचे परिहास की स्मिति सावधानी से छिपाये हुए है। कृत्रिम क्रोध की भंगिमा में नीची दृष्टि किए हुए आत्मीयता के इठलाते शब्दों में कहती है :**)

मै क्या करूँ! मुझे तो मिलता ही नहीं। (**कमरे में चारों ओर खोजने की दृष्टि डालती है।**)

आनन्द (**रुष्ट होकर**) तो सारे घर में आग लगा दो!

शीला आग लगाने से तो वह मिलेगा नहीं। और लोग क्या कहेंगे कि एक छोटी-सी चीज़ के पीछे सारा घर जला दिया।

आनन्द तो फिर तुम चाहती क्या हो? यह घर सराय बना रहे? मैं ख़ुद

अपने घर में अजनबी बन जाऊँ ? अपनी ही चीज़ों के पीछे घण्टों परेशान होऊँ ? और तुम मामूली ढंग से आकर कह दो, मैं क्या करूँ !

शीला (परेशानी से) तो बतलाइए, मैं क्या करूँ ?

आनन्द वह करो जिससे मैं घर से निकल जाऊँ।

शीला उससे मुझे क्या मिल जायगा ?

आनन्द आराम ! (आँखें फाड़कर) ज़िन्दगी भर के लिए आराम ! जब तक मैं हूँ तब तक मुझे परेशानी और तुम्हें भी परेशानी ।

शीला मैं तो परेशानी दूर करने की ही कोशिश करती हूँ और बतलाइए, मैं क्या करूँ ?

आनन्द उफ़-ओह, अब यह भी मैं बतलाऊँ कि तुम क्या करो ! एक आदमी शादी किसलिए करता है ? इसलिए कि घर का इन्तज़ाम ठीक रहे। सब चीजें आसानी से वक्त पर मिल जायँ, घर यतीमख़ाना न बने, नहीं तो ईंट, पत्थर, चूना किसे अच्छा लगता है ? मैं बाहर का काम करूँ, तुम अन्दर का काम करो। 'डिवीज़न आव् लेबर', लेकिन मालूम होता है कि घसियारे की तरह मैं ही घास काटूँ और मैं ही उसे बेचूँ। ख़ैर, बेचूँगा !

शीला देखिए, आप तो नाराज़ हो गये ! मैं माफ़ी माँगती हूँ। मैं अभी खोज देती हूँ ! आप शान्त हो जायँ, सोचिए ज़रा, आप नाराज़ होकर बाहर जायँगे तो देखने वाले आपको क्या कहेंगे ? आप बैठ जाइए कुर्सी पर, मैं खोज देती हूँ ।

(**शीला आनन्द को कुर्सी पर बिठलाती है। आनन्द अन्यमनस्कता से बैठते हैं।**)

आनन्द (**कुर्सी पर बैठते हुए**) अच्छी बात है। देखता हूँ, कैसे खोजती हो।

(**शीला कुर्सी के आगे-पीछे खोजती है।**)

आनन्द (**हाथ पर सिर टेककर**) इतना सुन्दर फैल्ट हैट लाया था ! चार रोज भी नहीं लगा पाया ! (**चौंक कर**) अरे हाँ, उसमें तुमने आलू तो नहीं रख दिए ? सामान के कमरे में जाकर देखो।

शीला (खोजते-खोजते रुक कर रुखता से) आप मुझे समझते क्या हैं ?

आनन्द क्या बतलाऊँ, क्या समझता हूँ ? अभी पिछले हफ़्ते ही तो तुमने मेरे पुराने हैट में आलू रक्खे थे।

शीला मैंने रक्खे थे, या तुम्हारे भतीजे अविनाश के नौकर शम्भू ने ?

आनन्द यह तो तुम कहोगी ही। लेकिन मैं यह पूछता हूँ कि क्या फ़ेल्ट हैट भी आलू-चुकन्दर रखने की चीज है ?

शीला यह शम्भू से पूछिये, जिसने आलू रक्खे थे। आपको तो मुझ पर विश्वास ही नहीं होता। क्या मैं इतनी नासमझ हूँ कि आपके फ़ेल्ट हैट में आलू रक्खूँ ? क़ुसूर करे नौकर और झिड़की सहूँ मैं।

आनन्द अच्छी बात है, मान लेता हूँ कि शम्भू ने ही उसमें आलू रक्खे थे, लेकिन फिर उसे मोची के सुपुर्द किसने किया ? तुमने, या शम्भू ने ? कह दो, शम्भू ने।

शीला शम्भू ने क्यों, मैंने दे दिया मोची को। बरसों का पुराना हैट, दस जगह धब्बे !

आनन्द आलुओं के रखने से धब्बे न पड़ेंगे तो क्या उसमें चार चाँद लग जायँगे ?

शीला चार चाँद के लायक था ही नहीं वह हैट। इतना मैला-कुचैला ! उस रोज शम्भू आया था, मैं काम में लगी थी। उसने आलुओं को जमीन में पड़े देखा, चुपके से आपके हैट में सजाकर रख दिया।

आनन्द (व्यंग्य से) सजाकर रख दिया ! उन पर चाँदी का वर्क भी नहीं चढ़ा दिया ?

शीला शम्भू से कहिए, आया तो हुआ है। कहिए तो भेज दूँ उसे आपके पास।

आनन्द मेरे पास किसी को भेजने की ज़रूरत नहीं। मैं तो यही कहता हूँ, और बार-बार कहता हूँ कि अगर मेरा नया हैट मिल जाय तो उसमें फिर कभी आलू न सजाये जायँ। मैं भला आदमी हूँ, मेरे हैट में आलू नहीं रहेंगे।

शीला यह भी नौकर से कह दीजिए। मैं तो मूर्ख हूँ, नालायक़ हूँ।

(गला भर आता है।)

आनन्द (कुर्सी से उठकर) उफ़-ओह! तुम बुरा मान गईं!

शीला नहीं, नहीं। मैं मूर्ख हूँ, नालायक़ हूँ......(आँखों से एक आँसू)

आनन्द (पास आकर) अरे, अरे, यह क्या तमाशा है। कोई देखेगा तो क्या कहेगा? मुझे बहुत दुःख है कि मेरे कहने से तुम्हारे दिल को चोट पहुँची। लेकिन क्या करूँ, मेरा स्वभाव ही कुछ ऐसा-वैसा हो गया है। मुझे माफ़ कर दो। हँसो, ज़रा हँसो!

शीला मुझसे मत बोलिए।

आनन्द तुम्हें मेरी क़सम, शीला! तुम्हें मेरी क़सम अगर न हँसो तो।

(शीला आँसू पोंछते हुए मुस्कुरा देती है।)

आनन्द शाबाश! तुम बहुत अच्छी हो!

शीला क्या अच्छी हूँ, हमेशा तो बुरा कहते रहते हैं।

आनन्द नहीं, तुम मेरे कहने का मतलब नहीं समझीं। तुम भला मेरे हैट में आलू रख सकती हो? तुम? इतनी अच्छी शीला! तुम?

शीला आप ही तो कहते हैं।

आनन्द नहीं, मैं तुमसे नहीं कहता, तुमसे नहीं कहता। मैं तो यह कहता हूँ ...यानी मेरे कहने का मतलब यह है कि...यानी मैं यह कहना चाहता था...कि...मैं...तुम नहीं समझी।

शीला हाँ, हाँ, आप कहिये तो...

आनन्द यानी मेरे कहने का मतलब यही है कि अगर नौकर मेरे हैट में आलू रखने की शुभकामना करे, यानी रखे तो...

शीला तो...तो क्या?

आनन्द तो (सोचकर) तो (शीघ्रता से) उस पर 'डायरेक्ट ऐक्शन' लिया जाय।

शीला 'डायरेक्ट ऐक्शन' क्या?

आनन्द उफ़-ओह! अब 'डायरेक्ट ऐक्शन' का मतलब समझाऊँ? सारी

दुनियाँ 'डायरेक्ट ऐक्शन' का मतलब समझती है और तुम नहीं समझतीं।

शीला मैं आपके मुँह से सुनना चाहती हूँ।

आनन्द अरे भाई, 'सिविल डिसओबीडियन्स' जानती हो ?

शीला अच्छा मान लीजिए, जानती हूँ।

आनन्द तो 'डायरेक्ट ऐक्शन' उसी का भाई है, यानी बड़ा भाई है।

शीला तो फिर शम्भू पर कैसा 'डायरेक्ट ऐक्शन' लिया जाय।

आनन्द इस तरह डायरेक्ट ऐक्शन लिया जाय कि...अच्छा, बाबा। किसी तरह न लो। जाने दो उस पुराने हैट की बात। अब तो सवाल नये हैट का है। उसे कहाँ पाऊँ ? पुराना तो मोची के हाथ चला गया, नया न जाने किसके हाथ लगा होगा ?

शीला आप बार-बार पुराने हैट का गुण गाते हैं। वह था ही किस काम का ? हीरे-मोती तो उसमें टँके नहीं थे ! और ऐसे धब्बों वाला हैट आप लगाते तो आपके एटीकेट में फ़र्क न आता ? मैंने उसे मोची को देकर आपकी इज़्ज़त बचाई।

आनन्द बहुत अच्छा किया, मेरी इज़्ज़त बची रह गई। मैंने तो यह समझा था कि तुमने मोची को इसलिए दे दिया है कि वह चमड़ा-वमड़ा लगा कर फिर मेरे सिर पर दुरुस्त कर दे।

शीला आप हर एक बात को बुरे अर्थ में लेते हैं।

आनन्द मैं बुरे अर्थ में नहीं लेता, शीला ! मैं तो मामूली-सी बात कह रहा हूँ और नई चीज़ के खो जाने का सदमा किसे नहीं होता ?

शीला मुझे इस बात का बहुत दुःख है। मैं आपके सामने ही उसे खोज देती, लेकिन अभी तो आपको जाना है।

आनन्द लेकिन अब बग़ैर हैट के मैं कहीं जाऊँगा नहीं।

शीला (**मचलते हुए**) देखिए इस वक्त कहाँ खोजूँ, वह तो मिलता ही नहीं।

आनन्द मैं कुछ नहीं जानता, तुम जानो।

शीला आप उसे कहीं भूल तो नहीं आए ?

आनन्द (दृढ़ता से) मैं चाहे अपना सिर कहीं भूल आऊँ, लेकिन इतना अच्छा हैट नहीं भूल सकता और फिर उसे अभी तीन-चार रोज़ हुए, लाया था। इतना सुन्दर हैट! कितना बढ़िया रेशम का फ़ीता लगा हुआ था उसमें! लेकिन इसे तुम क्या समझो...हिन्दू स्त्री क्या समझे कि हैट में क्या 'चार्म' रहता है। एक बैरागी को कोई क्या समझाए कि ताजमहल क्या चीज़ है!

शीला (मुस्कुराकर) तो आपका यह ताजमहल किसी दूकान में फिर नहीं मिल सकता?

आनन्द (तीव्रता से) मुझसे मज़ाक भी करती हो और माफ़ी भी माँगती हो! यहाँ मेरा हैट खो गया है और तुम्हें मज़ाक सूझ रहा है।

शीला आपने ही तो ताजमहल की बात कही और दोष मुझे दे रहे हैं! मैं तो कह रही थी कि दूसरा नया हैट भी तो ख़रीदा जा सकता है!

आनन्द अब हैं कहाँ दूकान में और हैट....? दो ही हैट बचे थे। वह मैं ले आया। एक अपने लिए और दूसरा अविनाश के लिए। एक ही रंग और एक ही साइज़ के थे।

शीला अविनाश के लिए फिर कभी ले आते। या फिर कोई दूसरा हल्का ले आते। अभी दोनों हैट आपके काम आते।

आनन्द जो दूसरों के बच्चों की ज़िम्मेदारी लेता है, वही जानता है। अपने हैट से हल्का हैट लाता तो उसमें भी बुराई थी। जैसा हैट मेरा हो, वैसा ही हैट उसका भी हो। जो रंग मेरे हैट का हो, वही रंग उसके हैट का भी हो, नहीं तो अविनाश के पिता श्यामकिशोर कहते कि मेरे लड़के को ग़ैर समझा। (लापरवाही से) ख़ैर, कोई बात नहीं। मेरे भाग्य में नया हैट लगाना लिखा ही नहीं था। इसके लिये कोई क्या करे? क्या तुम करो और क्या अविनाश? भाग्य में ही लिखा था कि मेरे हैट के बारे में तुमसे लापरवाही हो जाय, मेरी चीज़ों से नफ़रत हो जाय!

शीला आप तो मुझे ख़ामख़ा दोष देते हैं!

आनन्द　मैं दोष नहीं देता, शीला ! लेकिन मैं तुमसे आख़री बार कहे देता हूँ, तुम्हें मुझसे भले ही नफ़रत हो, लेकिन मेरी चीज़ों से मेरे कपड़ों से, मेरे हैट से तुम्हें नफ़रत नहीं करनी होगी। मुझसे नफ़रत करने में पैसों का सवाल नहीं है, लेकिन मेरी चीज़ों से नफ़रत करने में पैसों का सवाल है।

शीला　लेकिन मुझे तो किसी से नफ़रत नहीं है। आप से, न आपकी चीज़ों से।

आनन्द　(शीघ्रता से) तो फिर इसका क्या मतलब है कि इस तरह मेरा हैट खो जाय ?

शीला　हैट खो नहीं सकता, कहीं न कहीं मिल ही जायगा। जायगा कहाँ, मिल जायगा।

आनन्द　लेकिन कब ? मुझे मिस्टर ब्राउन के यहाँ जाना है, साढ़े छः बजे। वे मेरा रास्ता देख रहे होंगे। यहाँ हैट ही ग़ायब है !

शीला　तो अभी बग़ैर हैट के ही चले जाइए !

आनन्द　(घूरकर) जी, जैसे मैं एटीकेट जानता ही नहीं। किसी हिन्दुस्तानी से मिलना होता तो बात दूसरी थी, किन्तु मिस्टर ब्राउन हैं पूरे ऐंग्लोइंडियन। उनके सामने एटीकेट हर चीज़ में बरतना पड़ता है। वे भी तो बिल्कुल 'टिपटॉप' रहते हैं। वे क्या कहेंगे कि मैं बिना हैट के ही उनके पास चला गया, जैसे मेरे पास हैट ही नहीं है !

शीला　कह दीजिएगा कि जल्दी में हैट घर पर ही रह गया। कल मिल जाने पर दिखला दीजियेगा कि मेरे पास भी नया फ़ेल्ट हैट है ! न मिले तो अविनाश का लेते जाइएगा। मैं अविनाश से कहकर उसका हैट ले लूँगी।

आनन्द　(मुस्कुराकर) तुम भी बिल्कुल हिन्दुस्तानी बातचीत करती हो। मिस्टर ब्राउन से यह सब कहने की ज़रूरत ही क्या है ? हैट नहीं है, तो नहीं है।

शीला　तो फिर आप इतने परेशान क्यों होते हैं और फिर······(मुस्कुराकर) आप बिना हैट के इतने अच्छे लगते हैं कि···

आनन्द (हँसकर) अच्छा, यह बात है! जाओ, अब मैं मिस्टर ब्राउन के यहाँ जाऊँगा ही नहीं। (कुर्सी पर आराम से बैठ जाते हैं।)

शीला और मिस्टर ब्राउन आपका रास्ता देखेंगे।

आनन्द (लापरवाही से) देखने दो।

शीला तो फिर वे आपको भी पूरा हिन्दुस्तानी समझेंगे। कहकर भी आप अपना वादा पूरा नहीं करते।

आनन्द कैसे वादा पूरा करूँ? तुम जो ऐसी बातें कर देती हो कि मैं वादा-आदा सब भूल जाता हूँ। लाख रुपये की बात तो यह है शीला! कि मैं अगर तुम पर नाराज़ भी होना चाहूँ तो तुम मुझे नाराज़ नहीं होने देतीं। ऐसी बातें कर देती हो कि ज्वालामुखी पर्वत भी हिमालय बन जाता है।

शीला (हँसकर) तो आप ज्वालामुखी पर्वत से हिमालय बन गए हैं। लेकिन हिमालय तो कभी हैट लगाता नहीं है।

(आनन्द और शीला दोनों हँस पड़ते हैं।)

आनन्द (दुहराकर) हिमालय हैट नहीं लगाता...अब तो मैं मिस्टर ब्राउन के यहाँ जा ही नहीं सकता। लो, तुम भी बैठो।

शीला मुझे बैठने की फ़ुर्सत कहाँ? मुझे आपका हैट खोजना है। और फिर अविनाश का नौकर शम्भू आया है, उसे नमक देना है।

आनन्द (आश्चर्य से) नमक देना है? कैसा नमक?

शीला मैं क्या जानूँ! अविनाश ने नमक मँगवाया है।

आनन्द क्या 'नमक-सत्याग्रह' करेगा? अरे अब 'इंटेरिम गवर्नमेंट' आ गई है। सबसे पहले 'नमक का कर' ही हटाया जायगा। लेकिन वह नमक क्यों चाहता है?

शीला कहिए तो मैं उससे पूछ लूँ?

आनन्द तो फिर तुम बैठोगी नहीं?

शीला आपको मिस्टर ब्राउन के यहाँ जाना है। वे क्या कहेंगे कि आप अपनी बात नहीं रखते।

आनन्द (उठकर) मैं जाने को तो चला जाऊँ, लेकिन जैसा मैंने कहा कि मिस्टर ब्राउन ज़रा एटीकेट के ज़्यादा पाबन्द हैं। मैं उनके सामने किसी प्रकार भी अपना मज़ाक नहीं उड़वाना चाहता।

शीला मजाक क्यों उड़ायेंगे? आप हिन्दू हैं, अँग्रेज तो हैं नहीं। बिना हैट के आपकी ज़ात तो चली नहीं जायगी?

आनन्द ज़ात आजकल रही कहाँ, जो चली जायगी? लेकिन जब किसी ख़ास फ़ैशन के कपड़े पहनो तो अच्छी तरह पहनना चाहिए। नहीं तो सब छोड़ देना चाहिए। अब तुम्हीं सोचो, अगर इस सूट के साथ फ़ेल्ट हैट न रहे तो कैसा लगे?

शीला (अभिनय-सा करते हुए) जैसे चन्द्रमा के ऊपर से एक काला बादल हट गया है!

आनन्द (हँसते हुए) अच्छा, तो तुम भी कविता करने लगीं, क्या कहना है!

शीला आपने पूछा तो मैंने बतलाया।

आनन्द नहीं शीला! यह है कि अगर मेरे सिर पर, इस सूट के साथ फ़ेल्ट हैट न रहे तो ऐसा मालूम होगा जैसे मै किसी कालेज का स्टूडेएट हूँ, या किसी स्टूडियो का ऐक्टर।

शीला तो इसमें बुराई क्या है? स्टूडेएट या ऐक्टर बुरे आदमी तो होते नहीं।

आनन्द उन्हें बुरा कौन कहता है? लेकिन उनकी बराबरी मै नहीं कर सकता। स्टूडेएट या ऐक्टर का कलेजा (हाथ से बतलाकर) इतना बड़ा होता है! सौ से प्रेम करने का नाटक करते हुए वे एक से भी प्रेम नहीं करते। जी, इतना हौसला मुझ में नहीं है।

शीला (मुस्कुराकर) आप तो ऐसी बातें करते हैं जैसे आप कभी स्टूडेएट रहे ही न हों।

आनन्द मेरी क्या पूछती हो, शीला! मैं तो जब स्टूडेएट था तब प्रेम से कोसों दूर था और सबसे बड़ी बात तो यह है कि पूरे डेढ़ बित्ते की चोटी रखता था। नये फ़ैशन की लड़कियाँ चोटी वालों से प्रेम नहीं

करतीं। लम्बी चोटी वाला प्रेम की बातें समझ ही नहीं सकता और फिर ख़ुद उनके पास डेढ़ हाथ की लम्बी चोटी रहती है, बिल्कुल काली नागिन जैसी !

शीला (व्यंग्य से) कभी डसा है उस नागिन ने आपको ?

आनन्द (लापरवाही से) मुमकिन है, डसा हो लेकिन ज़हर नहीं चढ़ा। अगर चढ़ता तो फिर तुमसे शादी न करता।

शीला (कटुता से) तो अब कर लीजिये अपनी दूसरी शादी !

आनन्द (मुस्कुराकर) अंगूर के बाद बेर अच्छे नहीं लगते, शीला !

शीला (क्लश करते हुये) अच्छा, यह बात है ! तो अब आप चाहते हैं कि मैं भीतर चली जाऊँ।

आनन्द अच्छा, इतनी-सी बात पर ? नहीं, नहीं, तुम क्यों जाओ ! मैं तो बाहर जा ही रहा हूँ। बस, आख़ीर में एक बात कहकर जाता हूँ कि ......भई बुरा मत मानना।

शीला नहीं, नहीं, आप कहिए।

आनन्द कहूँ ?

शीला हाँ, हाँ, कहिए।

आनन्द वह यह कि...अच्छा, नहीं कहता !

शीला कहिये न।

आनन्द वह यह कि...यदि मेरा नया फ़ेल्ट हैट भविष्य के किसी मोची के भाग्य से मिल जाय तो उसमें फिर कभी...आलू...

शीला (बीच ही में) फिर वही बात ? क्या मैं घर से चली जाऊँ ?

आनन्द उफ़ ओह, तुम तो बहुत जल्दी तलवार खींच लेती हो ! मेरी बात पूरी सुनी नहीं और मोरचा तैयार हो गया। अरे, मैं नौकर के बारे में कह रहा था कि उससे.........

शीला (बीच ही में) देखिए. आप हैट लगाना ही छोड़ दजिए।

आनन्द क्यों, क्या मुझे हैट अच्छा नहीं लगता ?

शीला अच्छे लगने, न लगने की बात नहीं है। हैट से लड़ाई-झगड़ा होता है।

आनन्द तो फिर क्या लगाऊँ ?

शीला गांधी टोपी लगाइये। अब कांग्रेस मिनिस्टरी भी आ गई है गांधी टोपी की शोभा ही दूसरी होती है।

आनन्द फिर उसमें फ़ेल्ट हैट के बनिस्बत और अच्छी तरह से आलू रक्खे जा सकते हैं।

शीला हाँ, अगर आलू रख भी दिये जायँ तो बाद में वह धुलाकर काम में भी लाई जा सकती है।

आनन्द ठीक, तब तो उस टोपी में आलू ही अधिक रक्खे जायँगे। मेरे सिर पर वह कम आ पायेगी। अच्छा, देखा जायगा। अभी तो इसी तरह जाता हूँ। आज मिस्टर ब्राऊन के यहाँ नहीं जाऊँगा। यों ही टहल कर लौटता हूँ। मिस्टर ब्राऊन के यहाँ कहला दूँगा कि आज नहीं आऊँगा।

शीला नही, नहीं, आप ज़रूर जाइये।

आनन्द अच्छी बात है। (**प्रस्थान करते हैं। कुछ चलकर रुकते हुए**) लेकिन हाँ, तब तक मेरा नया हैट खोज रखना।

शीला कोशिश करूँगी।

(**आनन्द मोहन का प्रस्थान। कुछ देर तक शीला आनन्द मोहन के जाने की दिशा में देखती रहती है, फिर गहरी साँस लेकर कमरे में खोजती है।**) कहाँ है हैट ? रखते भी तो ऐसी जगह हैं, जहाँ हैट बनानेवाले को भी न मिले। (**कमरे के कोने और कुर्सियों के पीछे देखती है।**) छोटा-सा हैट और इतनी बड़ी बात ! (**झुँझलाकर**) मैं भी देखती हूँ। (**पुकारकर**) शम्भू, ओ शंभू !

शंभू (**नेपथ्य से**) जी सरकार !

शीला इधर तो आ ज़रा ! (**स्वगत**) यह कम्बख़्त सारी लड़ाई की जड़ है। अभी ठीक करती हूँ। हैट में आलू रक्खे यह बेवक़ूफ़ और पीसी जाऊँ मैं............!

(शम्भू का प्रवेश । आयु २५ वर्ष। घुटने तक धोती और लम्बा कुरता पहने हुए है । सिर पर छोटा-सा साफ़ा जो बेतरतीबी से लपेट लिया गया है । कन्धे पर एक मैला-सा अँगौछा । उसके कपड़ों पर धब्बे और गन्दगी के निशान हैं। आकर लम्बा-सा सलाम करता है ।)

शीला क्यों रे, तूने आलू क्यों रक्खे ?

शंभू (**कान पर हाथ रखकर**) सरकार, आलू तो हम देखबै नहीं किये । हमका तो निमक के बरे भेजे हैं बिनास भैया ।

शीला अरे, मैं आज की बात नहीं कहती । पिछले हफ़्ते तूने साहब की टोपी में आलू रक्खे थे ।

शंभू (**उत्साह से**) तो काहे न रख देईं, सरकार ? ऐसन बड़का-बड़का आलू रहे । भुइयाँ माँ परा रहें । माछी-ऊछी ओकरे उप्पर बैठत रहें । आप तो मालिक हैं, मालिक ओका थोरौं उठाइ सकित हैं ? आप तो आँखिन ते देखि लइहैं । उठावा तो हमका चाही, सरकार !

शीला (**व्यंग्य से**) तूने अच्छा उठाया !

शंभू (**हाथ हिलाकर**) हम तो आपन अक्किल ते कहिन कि ई सरकारी माल है । ओहिका सम्हार के धइ देईं । कोऊ उठाय न ले जाय । नहीं तो ऊ हमरे मत्थे जाई । सरकार जब मँगिहैं तब कहाँ ते पाउब ?

शीला अरे, तो उठाकर किसी बरतन में रख देता । साहब की टोपी में क्यों रख दिये ?

शंभू (**समझाते हुए**) अब सरकार, ईमाँ कौन बात ? जब हम तरकारी-उरकारी लियै के बरे बजार जात हैं, तो आपन साफा माँ नाहीं बाँधत ? तौ अँगौछा रहा तो उहि माँ बाँध लीन और जो अँगौछा नाहीं रहा, तौ आपन साफा माँ बाँध लीन । आपन साहब साफा-उवाफा बँधतै नाहीं । टोपी उनके रही । हम ओही माँ धइ दीन सजाय के । बिनास भैयो ऐसन करत है ।

शीला (हँसकर) जैसा तू, वैसा अविनाश। लेकिन हैट में आलू रखना चाहिए ?

शंभू अब यहि माँ कौनो बात बिगिड़ी नाहिन। जैसन हमार साफा ओसने साहब क टोपी।

शीला तो तू साहब को भी अपनी तरह समझता है ?

शंभू (आतंक से) अरे सरकार, साहब बड़वार मनई आँय, उनके चरन कै धूरि क बिरोबरी हम कइ सकित है ? कहाँ राजा भोज, अउ कहाँ गंगू तेली ! (हँसता है।)

शीला तेरे कहने का मतलब तो यही है कि जब साहब तरकारी खरीदने के लिए जायँ, तो वे भी अपनी टोपी में तरकारी रख लें।

शंभू (हाथ जोड़कर) ऊ काहे खरीदै जायँ, हम मनई काहे के बरे हैं, सरकार ? हम नौकर अही। हमका जौन हुकुम देयँ, हम ले आउब जाय। ऊ आपन बँगलवा माँ बैठ क सिगरेट-उगरेट पिएँ, कुरसिया पै बैठें। हम मनई कै काम आय बजार-उजार करै का।

शीला (झुँझलाकर) तू बातें समझ ही नहीं सकता। देख, आलू रखने से उनकी टोपी में धब्बे लग जायँ तो फिर कौन जवाब दे ?

शंभू अब सरकार, कसस उनका जवाबु देई। ऊ सरकारी अफसर आँय, मुदा धब्बा पड़े माँ कौन दोस है ? पहिरै का चीज माँ तो धब्बा-उब्बा पड़िन जात है। हमरो कपड़ा माँ देखें, सैकरन धब्बा पड़िगे हैं। (अपने कपड़े दिखलाता है।) बड़ाका धब्बा होय, और हुकुम होय तो उहि का सबुन्याय देई, छूट जाई।

शीला गधा कहीं का ! साबुन लगाने से साहब की टोपी ठीक बनी रहेगी ?

शंभू (आतंक से) अब सरकार, सरकारी टोपी की बात हम कहि नाईं सकत। आपन हिन्दुस्तानी टोपी जौन अहै, ऊ ऐसन होत है कि जै फेरा धोवा जाय 'तै फेरा उज्जर होइ जात है। और सरकार, कसूर की बात होय तौ माफी दीन जाय। अरे हाँ, सरकार, हमार अकिल तो हमरे लायक है, आप ते का कही !

शीला तुझसे बात करना ही फ़िज़ूल है। जा, अपना काम कर।

शम्भू काली मिरिच कहवाँ धइ दीन है ?

शीला काली मिर्च ? काली मिर्च का क्या करेगा ?

शम्भू बिनास भैया के बरे चाही।

शीला अभी तो कह रहा था कि अविनाश ने नमक मँगवाया है। अब काली मिर्च की बात कह रहा है।

शम्भू हम कहिन कि निमक तो मँगवइबे केहिन हैं, साथै माँ काली मिरिचइऊ लेत जाई। कोऊ चीज खाए माँ निमक के साथ काली मिरिच अलगै मजा देई।

शीला तू हर बात में अपनी अक़्ल लगाया करता है, चल मैं अभी आती हूँ।

शम्भू (**अलग**) सेवा खुसामदों की बात पै सरकार गुसियाय जात हैं हमार ऊपर। ई हमार भागै खोट आय ससुर।

शीला वहाँ अलग क्या बक रहा है ?

शम्भू सरकार मन माँ सोचित अही कि निमक और काली मिरिच का कंटरोल तो न होई ?

शीला (**हँसकर**) सबसे बड़ी अक़्ल वाला तो तू ही है। सबसे पहले स्वराज तुझी को मिलेगा। जा, अन्दर जाकर नमक पीस।

(शम्भू शैतानी दृष्टि से देखता हुआ जाता है।)

शीला (**परेशानी से**) यह नौकर है अविनाश का। सीधी बात कहो, उल्टी समझता है। और फिर अक़्लमन्दी से समझाता है। मूर्खता यह करे और सज़ा मिले मुझे। कहीं इसी ने तो उनके नये हैट से बाज़ार का कोई काम नहीं लिया ? ठहरो पूछती हूँ उससे...

(शीला शम्भू को फिर पुकारना चाहती है कि उसी समय दरवाज़े पर आवाज़ होती है।) चाचाजी !

शीला कौन ?

(**आवाज़**) अविनाश !

शीला ओ अविनाश ! आओ, चले आओ।

(अविनाश का प्रवेश। आयु १८ वर्ष। अँग्रेज़ी पोशाक में बड़ी सजधज के साथ आता है। बढ़िया सूट और टाई। बाल ढङ्ग से सँवारे हुए।)

अविनाश चाचाजी नहीं हैं क्या ? गुड ईवनिंग, चाचीजी !

शीला अब तू पढ़-लिखकर यही कहेगा ? गुड ईवनिंग, गुड मारनिंग। रहन-सहन के साथ आत्मा भी बेच डाली है क्या ?

अविनाश आत्मा भी कभी बिकती है, चाचीजी ? बिकती है मूँगफली। **(नेपथ्य की ओर देखकर जोर से)** अन्दर ले आओ। चाचीजी, कोई बात तो नहीं है ? ओ मनकू !

(मनकू, खोम्चेवाला, अविनाश के हैट में लबालब मूँगफली भरकर लाता है। शीला इस विचित्र दृश्य को देखकर चौंक उठती है।)

शीला यह क्या ?

अविनाश **(मनकू से)** वहीं रहो, वहीं रहो। अन्दर फ़र्श बिछा हुआ है, गन्दा हो जायगा। ला, मुझे दे। **(मनकू के हाथ से अविनाश मूँगफली भरा हैट लेता है और शीला की ओर देखकर)** रख दूँ इस टेबिल पर ? **(बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये हुये)** बहुत अच्छी मूँगफली भूनता है मनकू। **(मनकू से)** ये लो दो आने पैसे। **(पॉकेट से पैसे निकालकर देता है।)** रोज़ इसी तरह भूना करो, समझे ?

मनकू **(पैसे लेकर सलाम करता हुआ)** बहुत अच्छा, सरकार ! चीनिया बादाम तो सब मेवन माँ फ़िश्ट गिलास है, बाबू ! **(शीला की तरफ़ देखकर)** सलाम, सरकार ! **(अविनाश की तरफ़ देखकर शीला की तरफ इशारा करते हुए)** इनहू का हमार गाहक बनाय देयँ !

शीला चलो, मुझे नहीं चाहिये तुम्हारी चीनिया बादाम। इन्हीं अपने बाबू को खिलाओ।

अविनाश चख के देखो, चाची ! (**मनकू से**) अच्छा, अभी जाओ मनकू ! फिर कभी इनसे कहूँगा ।

(**मनकू सलाम करके जाता है ।**)

शीला यह कौन-सा स्वाँग है ? फ़ेल्ट हैट में मूँगफली ! यह है तो तेरा ही हैट ?

अविनाश और किसका है, चाची ? अभी परसों ही तो आया है । चाचाजी ने नया ख़रीदा है मेरे लिए ।

शीला और उसकी तू यह इज़्ज़त करता है ! कितने दिन चलेगा ?

अविनाश अरे चाची ! इस्तेमाल ही के लिए तो सब चीज़ें होती हैं । यह हैट ज़िन्दगी भर तो काम देगा नहीं । और मूँगफली जैसी चीज़ !

शीला वाह रे, तेरी मूँगफली ! हैट में नौकर आलू रखता है और मालिक मूँगफली !

अविनाश तो क्या शम्भू ने कभी हैट में आलू रखे थे ?

शीला अरे, अभी चार-छः रोज़ हुए, तरकारी बेचने वाली आई थी । एक सेर आलू दे गई । शम्भू वहीं पास बैठा था । शम्भू ने पास में कोई बर्तन न देख तेरे चाचाजी के फ़ेल्ट हैट में ही आलू रख दिये । तेरे चाचाजी मुझ पर नाराज़ हो रहे थे कि फ़ैल्ट हैट भी कोई आलू रखने की चीज़ है !

अविनाश वाह, बड़े मज़े की बात है । चाचाजी कहाँ हैं ?

शीला इसी बात पर झुँझलाते हुए कहीं बाहर चले गए हैं ।

अविनाश कब तक आएँगे ?

शीला मैं क्या बतलाऊँ, कब तक आएँगे ? उनका हैट भी खो गया है । मुझे खोजने के लिए कह गए हैं ।

अविनाश कौन-सा नया हैट ? जो अभी-अभी मेरे हैट के साथ आया है ?

शीला हाँ, हाँ, वही ।

अविनाश खो गया है ? कहाँ ?

शीला अब यह क्या पता ? कहीं भूल आए होंगे !

अविनाश　तो चाची, अब देखिए। उन्हें हैट का क्या सुख मिला? अभी आया, अभी खो गया! और मेरे लिए तो एक नहीं, हज़ार सुख। हैट का हैट और तश्तरी की तश्तरी!

शीला　तेरे ही गुन देख-देखकर तो शम्भू हैट में आलू रखता है।

अविनाश　ख़ैर, शम्भू तो बेवक़ूफ़ है। उसकी क्या बातें करती हैं। लेकिन मैं तो यह कहता हूँ, चाची! कि फ़ेल्ट हैट चाहे आलू रखने की चीज़ न हो, लेकिन इसमें मूँगफली बड़ी सफ़ाई के साथ रक्खी जा सकती है। जब हम लोग सिनेमा हाल में बैठते हैं तो फ़िल्म देखने के साथ मूँगफली खाने में जो आनन्द आता है, उसका वर्णन शेक्सपियर भी नहीं कर सकता! और फिर सिनेमा के बीच-बीच में मूँगफली तोड़ने की जो आवाज़ होती रहती है, वह न-खाने वालों के मन में हलचल मचाती रहती है! फिर भुनी हुई ताज़ी मूँगफली की सुगंधि तो...वह भी बरसात के दिनों में! बस, कुछ न पूछो, चाची!

शीला　(**मुस्कुराकर**) अरे, चुप भी रहेगा मूँगफली वाले, मूँगफली न हुई, अमृत हुआ!

अविनाश　उससे भी ज़्यादा, चाची! अमृत में वह सुगंधि और सोंधापन कहाँ? और फिर जब सिनेमा हाल के बीच में हम बैठे हों, हमारी गोद के बीच में फ़ेल्ट हैट हो, फ़ेल्ट हैट के बीच में ताज़ी मूँगफली रक्खी हो और मूँगफली के बीच मे अपने और साथ बैठने वाले दोस्तों के हाथ हों तो फिर सिनेमा का आनन्द चौगुना हो जाता है! तुम खाओ न चाची! ये ताज़ी मूँगफली!

शीला　मुझे नहीं खाना, तुझे ही मुबारक रहें ये मूँगफली। तो क्या इतनी मूँगफली लेकर सिनेमा जा रहा है?

अविनाश　और क्या? तुम्हें लेने आया हूँ, चाची!

शीला　मुझे नहीं जाना। अपने चाचाजी को ले जा।

अविनाश　चाचाजी चलें तो और भी अच्छा! लेकिन तुम ज़रूर चलो, चाची! और हाँ, अगर चाचाजी न चलें तो उनका रेन कोट ले चलिए। बादल उठे हुए हैं।

शीला न चाचाजी जायेंगे, न मैं जाऊँगी, सच्ची बात यह है। तू उनका रेन कोट भले ही ले जा।

अविनाश लेकिन चाची! तुम्हें तो ज़रूर ही चलना चाहिए। चार्ली चैपलिन का पिक्चर है!

शीला तू किस चार्ली चैपलिन से कम है! तुझे ही देखकर मैं सिनेमा देख लेती हूँ। देख ले, चार्ली चैपलिन फ़ैल्ट हैट में मूँगफली ले जा रहा है।

अविनाश अब चाची! यह मूँगफली न ले जाऊँ तो सिनेमा का सच्चा आनन्द कैसे आए? और फिर इतनी ताज़ी मूँगफली, जाना-पहचाना हुआ आदमी है। उसने सामने ही ताज़ी मूँगफली भून दीं। मनकू है न! जो अभी आया था। सिनेमा के सामने के खोम्चे वाले तो कई दिनों की बासी मूँगफली रखते हैं। शम्भू से मैंने कह दिया था कि नमक की पुड़िया भी साथ ले चलना। शम्भू आया था?

शीला हाँ, बैठा हुआ है अन्दर, तुम्हारी राह देख रहा है, या फिर नमक पीस रहा होगा! काली मिर्च भी माँग रहा था?

अविनाश (**प्रसन्न होकर**) काली मिर्च भी? अच्छा, है कुछ-कुछ होशियार!

शीला उसकी होशियारी का क्या कहना! तू, शम्भू और मूँगफली सब एक दूसरे से बढ़कर हैं, किस-किस की तारीफ़ करूँ?

अविनाश तुम किसी की तारीफ़ न करो, चाची! मूँगफली खाके देखो। तब तक मैं अन्दर जाकर शम्भू को देखूँ और हाथ-मुँह भी धो लूँ। मूँगफली इस टेबिल पर रक्खी रहने दूँ तो कोई हानि तो नहीं है?

शीला क्या हानि है! मूँगफली रेंग कर हैट के बाहर तो जायँगी नहीं?

अविनाश वे तो रेंग कर सिर्फ़ एक ही तरफ़ जाती हैं...पेट की तरफ़! अच्छा तो मैं जल्दी हाथ-मुँह धो लूँ। (**शीघ्रता से प्रस्थान**)

शीला (**हैट की ओर देखकर**) हैट में मूँगफली! आजकल के लड़के अजीब हैं! नये-नये फ़ैशन निकालते हैं। अब वे आवेंगे तो दिखलाऊँगी कि हैट में मूँगफली भी रक्खी जाती है...! (**सोचकर**) लेकिन उनका हैट तो खोजा ही नहीं। आते ही वे फिर हैट की बात

ले बैठेंगे। चलूँ, खोजूँ। खोजने के लिए कह गए थे। अविनाश को रेन कोट भी दे दूँ!

(शीला कुर्सियों के आसपास फिर देखती हुई अन्दर की ओर दृष्टि डालती है। अन्दर की ओर देखते-देखते शीला अन्दर चली जाती है। एक क्षण के लिए निस्तब्धता। फिर शीला की आवाज़—'शम्भू, क्या अविनाश हाथ-मुँह धोने बाथरूम में गया है?' शम्भू का उत्तर—'हाँ, सरकार! बाथे माँ गवा हैं।' फिर कुछ निस्तब्धता। इसी क्षण में आनन्द मोहन का प्रवेश। वे हैट में मूँगफली रक्खी देखकर द्वार पर ही ठिठक जाते हैं।)

आनन्द (**क्रोध और आश्चर्य से**) ओह, यह बात है! मिले कहाँ से! मेरे हैट में तो मूँगफलियाँ रक्खी जाती हैं! उस रोज आलू रक्खे गए थे, आज मूँगफलियाँ रक्खी हुई हैं। गोया मेरा हैट न हुआ, टोकरा हुआ। आज मूँगफली है, कल मूँग की दाल रक्खी जावेगी। वाह री शीला, अच्छी अक़्ल है तेरी! फिर कह देगी (**मुँह बना कर**) शम्भू ने रक्खी हैं! अच्छा, देखता हूँ! (**जोर से क्रोधभरे स्वर में**) शीला...! शीला...!

(**नेपथ्य से**) आई।

आनन्द (**चिढ़ कर**) आई! आई!! मैं तुम्हें देखता हूँ! यह मेरी और मेरे हैट की इज़्ज़त है! यहाँ मेरा हैट घर के कामों में इस्तेमाल किया जाता है, वहाँ मैं उसे खोजने में घन्टों परेशान होता हूँ! मैं आज दिखला दूँगा कि...(**शीला का प्रवेश**)

शीला (**आकर प्रसन्नता से**) मैं नहीं बताऊँगी, मैं नहीं, लेकिन (**रुक कर**) आप बहुत जल्दी लौट......!

आनन्द (**क्रोध से**) जी, इसीलिए बहुत जल्दी लौट आया हूँ कि देखूँ, आप मेरे हैट में कितनी सफ़ाई के साथ मूँगफली रखती हैं!

शीला लेकिन...

आनन्द (**बीच ही में**) फिर वही लेकिन ? मै तो 'लेक्निन', 'लेकिन' सुनते हैरान हूँ। फिर कहोगी (**मुँह बनाकर**) लेकिन शम्भू ने उसमें मूँगफली रख दीं !

शीला सुनिये तो......

आनन्द क्या सुनूँ ? मेरा तो ख़ून खौल उठता है, जब देखता हूँ कि तुम भी मेरे साथ धोखा करती हो। इधर मेरे हैट में मूँगफली रख दीं और उधर कह दिया कि वह तो मुझे मिलता ही नहीं।

शीला लेकिन आपका हैट...

आनन्द (**फिर बीच में**) जी, मेरे हैट से भी आप सेवा लेना चाहती हैं ? क्या मेरी सेवाओं से आपका मन सन्तुष्ट नहीं होता ? लेकिन मैं अब इसे आपकी सेवा में नहीं रहने दे सकता। यह अब मेरे किस काम का रह गया ? इसे भी किसी मोची को दे दो ! यह भी जाय, मैं ही इसे ख़त्म कर दूँ, इस तरह...

(**आनन्द टेबिल पर मूँगफली से भरे हुए अविनाश के हैट को ज़मीन पर फेंक देता है और उसे पैरों से कुचल देता है।**)

आनन्द (**क्रोध में दाँत पीसते हुए**) इस...तरह...इस...तरह...

शीला (**घबरा कर**) ओह, अविनाश का हैट !

आनन्द (**एक क्षण में अप्रतिभ होकर**) अविनाश का हैट ? (**ज़ोर से**) कैसा अविनाश का हैट ?

शीला यह हैट अविनाश का है।

आनन्द अविनाश का है ? तुमने मुझसे कहा क्यों नहीं ?

शीला आपने मुझे कहने ही नहीं दिया। जब-जब मैं बोली, आपने बीच ही में टोक दिया।

आनन्द (**अव्यवस्थित होकर**) लेकिन अविनाश का हैट यहाँ आया कैसे ?

शीला अविनाश सिनेमा जा रहा है। यहाँ आया हुआ है। उसी का हैट...

आनन्द तो ! यह अविनाश का हैट है ? मेरा नहीं ?

शीला जी नहीं, आपका नहीं।

आनन्द (सोचते हुए) हाँ, मेरा हैट तो खो गया था। फिर ?

शीला (चिन्तित होकर) मैं क्या बतलाऊँ !

आनन्द (सोचते हुए) मेरा हैट खो गया था ?

शीला जी हाँ, मैं उसे अभी तक खोज रही थी।

आनन्द फिर मिला ?

शीला क्या बतलाऊँ !

आनन्द क्या मतलब ?

शीला (मुस्कुरा कर) पहले मुँह मीठा कराइये तब बतलाऊँगी।

आनन्द (प्रसन्न होकर) यानी मिल गया ! (कुछ मुस्कुराहट के साथ) कहाँ मिले महाशय ?

शीला नहीं बतलाती।

आनन्द तुम्हें मेरी क़सम शीला बतला दो, तुम्हें मिठाई खिलाऊँगा, बतला दो।

शीला अभी तो आप नाराज़ हो रहे थे।

आनन्द अब ज़िन्दगी में कभी नाराज़ नहीं होऊँगा, शीला ! चाहे तुम मेरे हैट में आलू, चुकन्दर या मूँगफली क्यों न रक्खो !

शीला (तीव्रता से) फिर आपने मेरा अपमान किया ?

आनन्द अच्छा लो, नहीं करता ! पर जल्दी बतलाओ।

शीला अच्छा सोच लूँ...

आनन्द अरे यह अविनाश का हैट मेरी जान खा रहा है, जल्दी बतला दो !

शीला (चौंक कर) ओ, अविनाश का हैट ! अच्छा तो फिर सुनिये...

आनन्द हाँ, हाँ, कहो...कहो न...

शीला रेन कोट के नीचे।

आनन्द रेन कोट के नीचे ?

शीला हाँ, रेन कोट के नीचे। अविनाश सिनेमा देखने जा रहा है। उसने कहा—'बरसात के दिन हैं। मुझे चाचाजी का रेन कोट चाहिए।' जैसे ही मैंने खूँटी पर से रेन कोट उठाया वैसे ही उसके नीचे से हैट महाशय 'टप्प' से गिरे !

आनन्द (**चिन्तित प्रसन्नता से**) कहाँ छिपा था कम्बख़्त ?
शीला आपने ही हैट के ऊपर रेन कोट टाँग दिया होगा।
आनन्द (**सोचते हुए**) हाँ, हाँ, याद आया। मैंने ही अन्धेरे में जल्दी से रेन कोट टाँगा था। मैं क्या जानता था कि यह रेन कोट हैट के ऊपर टँग जायगा !
शीला लेकिन अब अविनाश के हैट का क्या होगा ?
आनन्द मैंने तो उसे पैरों से कुचल दिया !
शीला कुचल ही नहीं दिया, उसका सब शेप-वेप भी तोड़ दिया।
आनन्द तो बतलाओ मैं क्या करूँ ?
शीला और जैसा आप कहते हैं, आजकल फ़्लेट हैट मिलते भी नहीं।
आनन्द हाँ, कहीं नहीं मिलते।
शीला और अविनाश क्या कहेगा ? अगर उसे मालूम हुआ कि आपने उसके हैट को पैरों से कुचल दिया, तो वह क्या समझेगा ? समझेगा कि आप पागल हो गये हैं, या शराब पी गये हैं ?
आनन्द ऐसा ज़िन्दगी में कभी नहीं हो सकता, शीला ! लेकिन इस वक़्त क्या किया जाय ? मेरी तो सारी इज़्ज़त गई ! (**चिन्तित मुद्रा में कुर्सी पर बैठ जाते हैं**)
शीला लेकिन जो कुछ करना है, जल्दी ही कीजिए। अविनाश न जाने किस वक़्त आ जाय ?
आनन्द (**सहसा उठकर**) हाँ, न जाने किस वक़्त आ जाय ! क्या कर रहा है अविनाश ?
शीला अन्दर है। यह तो कहिये, हाथ-मुँह धो रहा है, नहीं तो कब का यहाँ आ जाता।
आनन्द तो फिर......
शीला फिर क्या ?
आनन्द (**सोचते हुए**) फिर...तो फिर...मेरा हैट ..
शीला (**चंचलता से**) हाँ, आपका हैट...आपका हैट...ले आऊँ ?

आनन्द हाँ, लेती आओ। दोनों एक ही रंग के हैं, एक ही साइज़ के। अविनाश को मालूम भी नहीं होगा कि...

शीला (शीघ्रता से) तो फिर मैं जल्दी ही ले आती हूँ।

आनन्द हाँ, तब तक मैं मूँगफली बीनता हूँ। दरवाज़ा बन्द करती जाना। (शीला जाती है। पुकार कर) और देखो! (शीला लौटकर आती है।) अगर मुमकिन हो सके तो अविनाश को बातों में उलझा लेना।

(शीघ्रता से शीला दरवाज़ा बन्द करके जाती है। आनन्द दरवाज़े की तरफ़ रह-रह कर देखते हुए एक एक मूँगफली समेटते हैं। समेटते हुए कहते जाते हैं—वाह री क़िस्मत...! वाह रे भाग्य...! वाह रे फ़ेल्ट हैट...! कुछ क्षणों में शीला फ़ेल्ट हैट लेकर आती है, और दरवाज़े की ओर देखती हुई आनन्द मोहन को देती है।)

शीला (व्यग्रता से) जल्दी कीजिए...जल्दी कीजिए...अविनाश कंघी करके आना ही चाहता है।

आनन्द (प्रसन्नता से) तो बात भी बन गई! अब देर क्या है? कुचला हुआ हैट कुर्सी के पीछे डाल दो। (अपना हैट मूँगफली से भर कर टेबिल पर पूर्ववत् रख देते हैं। शीला कुचला हुआ हैट कुर्सी के पीछे डाल देती है।)

शीला (व्यंग्य से) अब आपने अपने ही हाथों मूँगफली रक्खीं अपने हैट में! (व्यंग्य की मुस्कुराहट)

आनन्द चुप रहो, शीला! इस वक्त यहाँ तो मेरा हैट जा रहा है और तुम्हें आवाज़ कसने की पड़ी है!

शीला आप ही सोचिए!

आनन्द देखो, बातचीत का ढंग बदलो। (ज़ोर देकर दबे स्वर में) बदलो... बदलो...सिनेमा की बातें करो।

शीला (इठला कर) देखिए, आप सिनेमा देखने चले जाइये न? बेचारा अविनाश आया है।

आनन्द (प्रभुता से) तुम्हें जाना हो तो चली जाओ। मैं नहीं जाऊँगा, टिरोन पावर का ऐक्टिंग देखने।

शीला (**दबे स्वर में ज़ोर देकर**) टिरोन पावर नहीं, चार्ली, चार्ली चैपलेन।

आनन्द नहीं-नहीं, मैं नहीं जाऊँगा! चार्ली चैपलेन की ऐक्टिंग देखने!
(**अविनाश का प्रवेश**)

अविनाश (**आते ही।**) नमस्ते, चाचा जी! (**रुक कर सकुचित स्वर में**) देखिये, माफ़ कीजिये! मेरे पास एक ही रुमाल था। इसलिए मूँगफली...

आनन्द रूमाल हो चाहे न हो, लेकिन मैं तुमसे सख्त नाराज़ हूँ। मेरी नज़र से हट जाओ तुम...तुम मुझे समझते क्या हो?

अविनाश चाचा जी, माफ़ कीजिये।

आनन्द मै तुमसे कुछ नहीं कहता तो इसके माने यह हैं कि तुम अपनी बेहूदगी में बढ़ते ही जाओ! मैं भाई श्यामकिशोर को लिखूँगा कि तुम हाथ से बाहर हुए जाते हो।

अविनाश (**नम्रता से**) चाचा जी, मुझे माफ़ कीजिए (**शीला से**) चाचीजी! आप मुझे एक रूमाल दे दीजिए। मैं मूँगफली उसमें बाँध लूँ।

आनन्द नहीं, नहीं, उसी हैट में रहने दीजिए। यहाँ मैं आपके लिए अपने हैट जैसा अच्छे से अच्छा हैट लाऊँ, आप उसकी यह इज़्ज़त करें! उसमें मूँगफली रखें! इतना अच्छा नया हैट मूँगफली रखने के लिए है?

शीला चलिए, जाने दीजिए। ऐसी ग़लती आयंदा कभी न होगी। मैं रूमाल लाये देती हूँ।

आनन्द (**तीव्रता से**) कोई ज़रूरत नहीं रूमाल लाने की। तुम्हीं ने उसे दुलार करके इतना बदतमीज़ बना दिया है, नहीं तो अविनाश इतना अच्छा लड़का था कि मुझे उस पर गर्व होता था। मैं उसे देखकर ख़ुश हो जाता था, लेकिन इस वक्त वह अपने पिता और मुझे क्या, ख़ुद अपने को धोखा दे रहा है।

शीला चलिये, अब वह माफ़ी माँगता है, उसे माफ़ कर दीजिए।

अविनाश चाचाजी ! मैं माफ़ किये जाने लायक़ भी नहीं हूँ। मुझे सज़ा दीजिए।

आनन्द दरअसल तुम्हें सज़ा मिलनी चाहिये। तुम्हें आज से कोई कपड़े नहीं मिलेंगे। तुम हैट लगाने लायक़ भी नहीं हो; क्योंकि तुम हैट की इज़्ज़त करना नहीं जानते। अब तुम यह हैट नहीं ले जाने पाओगे, समझे ?

अविनाश जैसी आज्ञा ! मैं नहीं ले जाऊँगा।

आनन्द हाँ, मैं इसे किसी मोची को दे दूँगा। शीला ! जिस मोची को पुराना हैट दिया था, उस मोची को यह नया हैट भी दे देना। समझीं। (शीला कुछ नहीं बोलती।)

अविनाश तो फिर मुझे इजाज़त दीजिए, मैं जाऊँ ?

आनन्द मैंने सुना है, तुम सिनेमा जाने वाले हो ?

अविनाश जी नहीं, मैं सिनेमा नहीं जाऊँगा।

आनन्द नहीं, नहीं, ज़रूर जाइये। पढ़ने-लिखने की क्या ज़रूरत है ! हो चुकी पढ़ाई ! अब पढ़-लिख कर क्या करोगे ?

अविनाश जी नहीं, मै जाकर पढ़ूँगा।

आनन्द यह नशा आज ही तक रहेगा, या आगे भी चलेगा ?

अविनाश मैं वचन देता हूँ कि आगे भी चलेगा।

आनन्द आगे भी चलेगा ! ठीक है, लेकिन मुझे आशा तो नहीं है। अगर आगे चल सकता है तब तुम सिनेमा देखने जा सकते हो।

अविनाश मेरी इच्छा नहीं है।

आनन्द बेहतर है। लेकिन मैं तुम्हारे मनोरंजन में बाधा नहीं डालना चाहता। यदि जाना चाहो तो तुम सिनेमा आज जा सकते हो।

अविनाश चाचीजी अगर साथ चलें तो...

आनन्द हाँ, अगर तुम्हारी चाचीजी जाना चाहें तो जा सकती हैं।

शीला नहीं, मैं नहीं जाऊँगी, अविनाश !

आनन्द अच्छा, तो तुम अकेले ही जाओ।

अविनाश जो आपकी आज्ञा ! (**जाने के लिए प्रस्तुत होता है।**)

आनन्द ठहरो। (**अविनाश रुक जाता है।**)

(**आनन्द अपने जेब से रूमाल निकालता हुआ**) यह रूमाल लो, इसमें अपनी मूँगफली बाँधो।

अविनाश मुझे मूँगफली की ज़रूरत नहीं है।

आनन्द मेरा हुक्म है, बाँधो।

(**अविनाश आनन्द से रूमाल लेकर हैट में रखी हुई मूँगफली बाँधता है।**)

शीला मैं बाँध दूँ ?

आनन्द तुम ठहरो, उसे बाँधने दो।

(**अविनाश रूमाल में मूँगफली पूरी तरह बाँध लेता है।**)

अविनाश अब मैं जाऊँ ?

आनन्द नहीं। अपना हैट सिर पर लगाओ।

अविनाश इस हैट के लायक़ मैं नहीं हूँ।

आनन्द मैं तुम्हें इस हैट के लायक़ बनाता हूँ। उठाकर पहनो।

(**अविनाश हैट पहनता है।**)

आनन्द अब हैट उतारकर हाथ में रख लो। कमरे में हैट लगाना एटीकेट के ख़िलाफ़ है।

(**अविनाश हैट उतारता है।**)

आनन्द आयंदा मुझे इस तरह की हरकतें नहीं देखना चाहिये, समझे ?

अविनाश मैं वचन देता हूँ।

आनन्द अच्छा, जाओ। शम्भू को भी ले जाओ। रेनकोट सम्हाल कर रखना। आजकल मेरी चीज़ें बहुत खो रही हैं। मेरी आँखों के सामने ही मेरी चीज़ें चली जा रही हैं !

अविनाश शम्भू यहीं रहेगा। कुछ काम करना है। मैंने उससे कह दिया है। आगे जो आप आज्ञा दें और रेनकोट तो मैं कभी नहीं भूल सकता।

आनन्द　अच्छी बात है, शम्भू को रहने दो।

अविनाश　चाचीजी ! प्रणाम करता हूँ। (**आनन्द से**) प्रणाम करता हूँ !

आनन्द　जाओ। (**अविनाश का प्रस्थान।**)

(**अविनाश के जाने के बाद आनन्द और शीला एक-दूसरे को देखते हैं।**)

शीला　(**मुस्कुरा कर**) आपने तो अविनाश को एक मिनट में ही ठीक कर दिया।

आनन्द　मैं यह कैसे देख सकता हूँ कि हमारे देश के लड़के इस तरह बिगड़ते चले जायँ ! न उन्हें समय का लिहाज़ हो, न सम्बन्धियों का ! न अपना, न अपनी चीज़ों का !

शीला　लेकिन आपका हैट मिलकर भी खो गया !

आनन्द　तो कोई चीज़ मुझे खोकर भी मिल गई !

शीला　यह मैं मानती हूँ, लेकिन आपके हैट का साइज़ और रंग एक न होता तो आज बड़ी मुश्किल पड़ती।

आनन्द　ये सब ईश्वर के करिश्मे हैं, शीला ! वह कौन-सी बात कहाँ ले जाकर जोड़ता है। मैं जो अपनी बराबरी के कपड़े अविनाश को पहनाता था, ईश्वर ने उसे इसी क्षण के लिए निश्चित किया था। मेरी ज़िम्मेदारी की सचाई का यह राज़ निकला। कौन-सी बात किसलिए होती है, यह जान लेना आसान बात नहीं है।

शीला　(**मंत्रमुग्ध होकर**) यह बात आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। सचमुच आज यह रहस्य मालूम हुआ।

आनन्द　लेकिन अपना नया फ़ेल्ट हैट और चलते-चलाते एक नया रूमाल खोकर !

शीला　(**एक गहरी साँस लेकर**) ख़ैर, जाने दीजिए। लेकिन (**कुचला हुआ हैट कुर्सी के पीछे से उठाते हुए**) अब इसका क्या होगा ?

आनन्द　(**प्रसन्नता से**) हाँ, हाँ, अब इस हैट में तुम आलू और चुकन्दर ख़ूबसूरती के साथ ख़ूब रख सकती हो !

शीला (मुस्कुराकर) लेकिन एक शर्त पर !

आनन्द (विस्मय से) वह क्या ?

शीला आलू और चुकन्दर इसमें यह समझ कर रखवाऊँगी कि यह आपका ही हैट है !

आनन्द (विनोद से) हाँ, हाँ, मेरा ही हैट, मेरा ही हैट समझ कर । अब एक गांधी टोपी का इन्तज़ाम करो ।

(अट्टहास)

(परदा गिरता है ।)

रूप की बीमारी

पात्र-परिचय

सोमेश्वरचन्द्र—नगर के धनी सेठ हैं। इनके पास पूर्वजों की अर्जित लाखों की सम्पत्ति है। इनकी आयु लगभग ५० वर्ष की है। इनके एक ही लड़का है; उसका नाम है रूपचन्द्र। इसे वे बहुत प्यार करते हैं। एक मात्र यही उनके बुढ़ापे का सहारा है। वे उसके लिए सब कुछ कर सकते हैं। इससे बढ़कर वे संसार में किसी चीज को अच्छा नहीं समझते। पुत्र-प्रेम के सम्बन्ध में शायद वे ईसा की शताब्दियों में दशरथ के नवीन संस्करण हैं।

रूपचन्द्र—श्री सोमेश्वरचन्द्र के पुत्र। आधुनिक सभ्यता के पूरे मानने वाले हैं। वे आजकल एम० ए० के विद्यार्थी हैं। अपने पिता के प्रेम और औदार्य से पूर्ण लाभ उठाने की प्रतिभा उनमें है। आयु लगभग २४ वर्ष होगी।

डॉक्टर दास गुप्त—इनका पूरा नाम मुझे नहीं मालूम। ये लण्डन के एल० आर० सी० पी० हैं। मरीजों से बात करने में विशेष दिलचस्पी लेते हैं। उन्हें बीमारियों को अच्छा करने का तजुरबा भी खूब है। बंगाली होने से भाषा का उच्चारण कभी-कभी वे बड़े हास्योत्पादक ढङ्ग से करते हैं, लेकिन इसमें उन बेचारे का क़ुसूर ही क्या? नगर में लोगों का उन पर पूर्ण विश्वास है। आयु लगभग ४५ वर्ष होगी। बन्द कॉलर का कोट, चश्मा और हाथ में छड़ी उनकी विशेषता है।

डॉ० कपूर—कपूर इनका असली नाम है और 'सरनेम' भी कपूर है। इसलिए लोग कपूर दो बार न कहकर एक ही बार कहते हैं, यों शैतान लड़के तीन या चार बार कपूर कहकर इनको चिढ़ाते हैं। ये बिल्कुल अप-टु-डेट हैं। क्लीन शेव। सूट और टाई के रंग का सामञ्जस्य इनकी रुचि है। हिन्दुस्तानी में

काफ़ी अँगरेज़ी बोलते हैं। ये भी मशहूर डाक्टर हैं। उमर यों बहुत नहीं है, यही ४० के लगभग होगी।

हरभजन } ये दोनों श्री० सोमेश्वर के नौकर हैं। दोनों बड़े मेहनती हैं,
जगदीश }
लेकिन अपने मालिक को प्रसन्न नहीं कर पाते। बड़ी सञ्जीदगी के साथ काम करते हैं। दोनों की उमर में कोई ख़ास अन्तर नहीं है। दोनों लगभग ३०-३५ वर्ष के होंगे। हिन्दुओं के घर की परम्परागत वेश-भूषा ही उनकी वेश-भूषा है। हाँ, धनी मालिक के नौकर होने के कारण उनके कपड़े अपेक्षाकृत अधिक साफ़ हैं।

स्थान—इलाहाबाद का जार्ज टाउन।

समय—संध्या।

रूप की बीमारी

सोमेश्वरचन्द्र के मकान का भीतरी भाग। कमरा सजा हुआ है। दीवारों पर चित्र लगे हुए हैं। सामने शङ्कर-पार्वती का एक बहुत बड़ा चित्र है। कमरे के बीचोबीच एक ख़ूबसूरत पलँग बिछा हुआ है जिसमें आगे-पीछे बड़े शीशे लगे हुए हैं। पलँग पर तकिये के सहारे रूपचन्द्र आराम से टिककर बैठा है। वह कमर तक रेशमी चादर ओढ़े हुए है। वह बीमार है, उसकी मुख-मुद्रा से मलीनता टपक रही है।

सिरहाने एक छोटी टेबुल है जिस पर दवाइयाँ, दवा पीने का ग्लास, एक टाइमपीस घड़ी और थर्मामीटर रखा है। पास की दूसरी टेबुल पर कुछ फल रखे हैं। मेंटल-पीस पर फूलदान तथा मिट्टी के खूबसूरत खिलौने सजे हुए हैं। दोनों कोनों पर महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू के बस्ट सुशोभित हैं। उनकी विरुद्ध दिशा में लेनिन और स्टेलिन के चित्र हैं। पलँग के समीप तीन-चार कुर्सियाँ पड़ी हैं। कमरे में अगरबत्ती की हल्की सुगन्धि महक रही है।

रूपचन्द्र के पिता श्री० सोमेश्वर चिन्तित मुद्रा में कमरे के एक सिरे से दूसरे तक टहल रहे हैं। पुत्र की बीमारी ने उन्हें बहुत अव्यवस्थित बना दिया है। वे बात-बात पर झल्ला भी उठते हैं। अपने प्यारे पुत्र की बीमारी बेचारे पिता के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप होकर जैसे कमरे के वातावरण का निर्माण कर रही है। इस समय दिन के तीन बजे हुए हैं।

सोमेश्वरचंद्र (**कमरे में टहलते हुए**) बुढ़ापे में भी चिन्ताएँ पीछा नहीं छोड़तीं! सोचता था—तुम्हारी पढ़ाई के बाद सारा काम तुम्हें सौंपकर आराम से शंकर का भजन करूँगा; लेकिन पूर्वजन्म के पाप कहाँ जायेंगे? चिन्ता-चिन्ता-चिन्ता! रोज़ कोई न कोई चिन्ता सिर पर सवार है! आज सिर दर्द तो कल पेट में दर्द (**ठहरकर**) तुम बीमार हो गये! रूप! तुम क्या समझो, मेरे दिल का क्या हाल हो रहा है? कितनी मुश्किलों से तुम्हें इतना बड़ा किया है! आँखों के तारे की

तरह तुम्हें बचाया है ! तुम्हारी माँ के जाने के बाद मैं तो और भी कमज़ोर हो गया, जैसे हाथ-पैर टूट गये ! मैं अकेला आदमी। रोज़गार भी सँभालूँ और तुम्हें भी देखूँ ! और क्यों न देखूँ ? तुम्हारी माँ जैसे मेरे दिल में बैठकर बार-बार कह रही है—मेरे रूप को अच्छा रखना, मेरे रूप को अच्छा रखना...। रक्खूँगा। इधर तुम बीमार हो गये ! अब मैं क्या करूँ ! रूप ! तुम अच्छे हो जाओ—जल्द अच्छे हो जाओ । मैं तुम्हारे लिए सब कुछ करने के लिए, तैयार हूँ।...(**गहरी साँस लेकर**) आज तुम्हारा टेम्परेचर कितना था रूप ? (**थर्मामीटर उठाता है** ।)

रूपचन्द्र (**धीरे स्वर में**) नाइण्टी-नाइन प्वाइण्ट सिक्स।

सोमेश्वर (**दुहराकर अशान्ति से**) नाइण्टी-नाइन प्वाइण्ट सिक्स! इन कम्बख्त डॉक्टरों की जेबों में रुपये भरा करूँ और मेरे रूप की तबीयत ठिकाने पर न आये ! इन डॉक्टरों के लिए कोई सज़ा भी तो क़ानून ने नहीं बनाई। रोगी की ज़िन्दगी के साथ रुपये का सौदा करते हैं। ये डॉक्टर नहीं, बीमारी के वकील हैं। रुपये खाकर बीमार को भी खा डालने का हुनर सीखे हुए हैं। रोज़गारी कहीं के ! अगर यह दलाली करते हैं तो मुझसे करें, मेरे रूप के पीछे क्यों पड़े हुए हैं ! उसे अच्छा कर दें, फिर मुझसे निबट लें ! (**टेबुल पर फलों को देखकर**) रूप ! रूप !! आज तुमने फल-वल कुछ खाये ? ये टेबुल पर कैसे हैं ? (**पुकारकर**) जगदीश ! जगदीश !!

जगदीश (**बाहर से**) आया हुज़ूर ! (**जगदीश का प्रवेश** ।)

सोमेश्वर तुम बाज़ार से फल-वल लाये थे ?

जगदीश सरकार, लाया था।

सोमेश्वर ये फल कैसे हैं ? (**टेबुल पर रखे हुए फलों की ओर संकेत** ।)

जगदीश सरकार, ये कल के हैं।

सोमेश्वर ये रूप को क्यों नहीं खिलाये गये ?

रूपचन्द्र बाबू जी ! मुझसे खाये ही नहीं गये।

सोमेश्वर (झल्लाकर) खाये कैसे जायँ ? बासी और सड़े फल भी कहीं खाये जा सकते हैं ! बाज़ार की सबसे सड़ी चीज़ मेरे यहाँ लाई जायगी ! इन कम्बख्त नौकरों से भी कहीं कोई अच्छा काम हुआ है ? गोया मेरे घर के पैसे बाज़ार में फेकने के लिए हैं ! (एक फल को हाथ में लेकर) ये देखो ! आज नहीं तो कल ज़रूर सड़ जायँगे । इन्हें कोई खाकर और बीमार पड़े ! ठहरो; मैं यह सब तुम्हारी तनख्वाह से काटूँगा । आयन्दा देखता हूँ कि तुम ठीक फल लाते हो या नहीं ! आज बाज़ार से ताज़े फल लाये थे ?

जगदीश लाया था, सरकार !

सोमेश्वर क्या-क्या लाये थे ?

जगदीश सेव, सन्तरे, अनार, अंगूर ।

सोमेश्वर और मौसम्मी नहीं लाये ?

जगदीश सरकार ! मिली ही नहीं ।

सोमेश्वर (व्यंग्य से) मिली ही नहीं । मिले कैसे ? जब आप लोग मेहनत करें तब न मिले ? बेगार जैसा काम ! मिली ही नहीं—तुमने खोज की थी ?

जगदीश सरकार ! बहुत खोजी, मिली ही नहीं ।

सोमेश्वर कहाँ खोजी ?

जगदीश कटरे में !

सोमेश्वर (दुहराकर) कटरे में ! चौक तो जा ही नहीं सकते ! जनाब के पैरों में दर्द होता है । चौक जाने में पैर घिस जायँगे । आप लोग हैं किस मर्ज़ की दवा ? चलिये बैठिये घर पर । तमाखू पीजिए । मैं जाऊँगा फल लेने !

जगदीश सरकार ! दवा भी लानी थी, इसलिए चौक नहीं जा सका ।

सोमेश्वर (चिढ़कर) अरे, तो क्या तुम्हीं अकेले घर में नौकर हो ? हरभजन से कह दिया होता । वह सुअर कहाँ मर गया था ? यह दवा ले आता । कहाँ है हरभजन ?

जगदीश सरकार ! फल धो रहा है।

सोमेश्वर बुलाओ उसे। (**जगदीश जाता है।**) इन बेईमानों से सौ बार समझाकर कहो; लेकिन इन लोगों की अक़्ल में बात समाती ही नहीं। कहाँ-कहाँ के नौकर मेरे यहाँ इकट्ठा हुए हैं। गोया मेरा मकान यतीमख़ाना है। खायेंगे ! भर पेट, लेकिन काम ? काम, रत्ती भर भी नहीं।

रूपचन्द्र (**शान्ति से**) जाने दीजिए, बाबू जी।

सोमेश्वर तुम्हें तकलीफ़ जो होती है, बेटा ! एक रोज़ की बात हो तो जाने भी दूँ ! रोज़-बरोज़ ये लोग सिर पर चढ़ते चले जाते हैं। गोया हम लोगो का सर इन्हीं लोगों से बकझक करने के लिए...(**जगदीश हरभजन को लेकर आता है।**) क्यों रे, हरभजन ! क्या कर रहा था ?

हरभजन सरकार ! फल धो रहा था।

सोमेश्वर दस घण्टे तक फल ही धोये जायँगे ?

हरभजन सरकार ! छोटे सरकार के पैर मींजकर अभी तो गया था।

सोमेश्वर अभी तो गया था ! बड़े भोले हैं जनाब ! जैसे इनसे कोई क़ुसूर हो ही नहीं सकता ! फल कैसे धो रहे हो ?

हरभजन सरकार, बहुत अच्छी तरह से धो रहा हूँ।

सोमेश्वर (**पुनः दुहराकर**) बहुत अच्छी तरह से धो रहा हूँ। गधे कहीं के ! मैं पूछता हूँ पानी में परमेगनेट पोटास मिलाया है ?

हरभजन हाँ सरकार, रोज़ 'परमेनग पुटास' मिलाता हूँ। आज भी मिलाया है।

सोमेश्वर ख़ाक मिलाया है। मैं तो इन लोगों से हार गया ! आओ, फल ठीक करो। (**हरभजन जाता है।**) जगदीश, अभी डॉक्टर नहीं आये ?

जगदीश नहीं, सरकार !

सोमेश्वर अभी क्यों आयेंगे ? रास्ता देखिए, इन्तज़ार कीजिए, दस घण्टों तक। बिना दस बार नौकर गये, नाज़ ही नहीं उठते। मैं तो मरा

जा रहा हूँ इन डॉक्टरों के मारे। गोया लाट साहब हैं! एम० बी० बी० एस० क्या हो गये हैं, जैसे दुनिया भर के चचा हैं। दवा से फ़ायदा हो चाहे न हो, फ़ीस लेंगे और बेचारे रोगी को पीस लेंगे। (**ठहर कर**) रूप! इन डॉक्टरों ने तुम्हें बहुत तङ्ग किया लेकिन बतलाओ, मैं क्या करूँ? तुम इस बार अच्छे हो जाओ, फिर देख लूँगा इन सारे डॉक्टरों को। (**फिर ठहर कर**) और तुम उदास रहते हो तो जैसे मेरा रोयाँ-रोयाँ दुखी हो जाता है। तुम हँसा करो, जरा खुश रहा करो। फिर देख लूँगा एक-एक डॉक्टर को! तुम खुश तो हो जाओ। (**हँसने का अभिनय कर**) हाँ, हाँ, ज़रा (**रूपचन्द्र मुस्कुरा देता है।**) वाह-वाह, क्या कहना! अब तुम बिल्कुल अच्छे हो जाओगे! अरे हरभजन! जरा फल तो ला!

हरभजन (**भीतर से**) लाया! हुज़ूर!

सोमेश्वर अरे जल्दी ला। मेरा रूप अब बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा। हरभजन बहुत अच्छे फल धोता है। फलों को धोकर पाव भर तो गन्दा पानी निकालता है! जगदीश! तुम बाहर बैठो! जैसे ही डॉक्टर आयें, मुझे ख़बर दो। समझे?

जगदीश बहुत अच्छा सरकार! (**जाता है।**)

सोमेश्वर फल खाने से बहुत फ़ायदा होता है। वह क्या कहलाता है? विटा-मिन! हाँ, विटामिन, क्यों रूप? (**रूप सिर हिलाता है।**) मैं तो कुछ जानता नहीं। इन्हीं कम्बख़्त डॉक्टरों ने न जाने क्या-क्या खोजकर निकाला है! (**हरभजन फल लेकर आता है।**) वाह, हरभजन, तू बहुत अच्छे फल धोता है। ला, मैं अपने हाथ से तेरे छोटे सरकार को कुछ खिलाऊँ। (**कुर्सी पर बैठ जाते हैं।**)

रूपचन्द्र बाबू जी! खाने की तबीयत नहीं होती।

सोमेश्वर नहीं रूप! देखो हरभजन ने कितने अच्छे फल धोये हैं! मेरी तक खाने की तबीयत होती है। अच्छा, ये लो अपने हाथ से तुम्हें अंगूर खिलाऊँ। देखो, यह अंगूर की कैसी छोटी-छोटी गोलियाँ हैं! (**रूप को अपने हाथ से अंगूर खिलाते हैं। प्रसन्नता से**) एक

बार बड़े दिनों में मैंने कलक्टर साहब को डाली दी। डाली में बड़े अंगूरों को देखकर कलक्टर साहब के मुँह में पानी आ गया। झट से तीन चार अंगूरों को मुँह में डालते हुए साहब ने कहा—वेल सेठ साहब, तुम गोली में हमारा शराब लाया है! (दोनों हँसते हैं। हरभजन भी मुस्कुराता है। हरभजन से) हरभजन, तुम बाहर बैठो। डॉक्टर साहब आयें तो ख़बर देना। अच्छा, तुम बहुत अच्छा फल धोते हो। समझे?

हरभजन बहुत अच्छा, सरकार! (बाहर जाता है।)

सोमेश्वर क्यों रूप, कल से तुम्हारा जी कुछ हल्का है?

रूपचन्द्र (मलीनता से) नहीं, बाबू जी!

सोमेश्वर (खड़े होकर) कैसे होगा! हिन्दुस्तानी जिस्म में अँगरेज़ी दवा कितना फ़ायदा कर सकती है? वह तो मन नहीं मानता, नहीं तो वैद्यों को बुलाता। और अगर वैद्य बेवकूफ़ न होते तो इन डॉक्टरों मुँह भी न देखता। मुँह देखकर सौ बार नहाता।

(हरभजन का प्रवेश)

हरभजन सरकार! डॉक्टर साहब आये हैं।

सोमेश्वर कौन डॉक्टर?

हरभजन डॉक्टर दास गुप्ता।

सोमेश्वर और डॉक्टर कपूर नहीं आये?

हरभजन अभी तो नहीं आये, सरकार!

सोमेश्वर (चिढ़कर) अभी क्यों आयेंगे? अच्छा, बुलाओ इन्हीं को।

(हरभजन जाता है।)

सोमेश्वर रूप! तुम साफ़-साफ़ क्यों नहीं कह देते कि इस दवा से फ़ायदा नहीं होता। देख रहा हूँ, दस रोज़ से तुम बीमार हो। तबीयत में दवा से कुछ तो आराम होना चाहिए।

(हरभजन के साथ डॉक्टर दास गुप्ता का प्रवेश)

सोमेश्वर आइये डॉक्टर साहब ! आज फिर टेम्परेचर नाइण्टी नाइन प्वाइण्ट सिक्स है !

दास गुप्ता **(टेबुल पर अपना बैग रखते हुए)** की हुआ ? धिरे-धिरे तो नारमाल होगा। हाम बोला जे दवाई ठिक टाइम पर देने शे शाब ठिक होने शकेगा। **(रूप से)** तुम दवा पिया ?

रूपचन्द्र हाँ, डॉक्टर साहब ! आठ बजे और बारह बजे की दो ख़ूराकें तो पी चुका।

सोमेश्वर हरभजन ! ये घड़ी ठीक मिली है या नहीं ?

हरभजन सरकार ! अनवरसीटी के घन्टे से मिलाई थी।

सोमेश्वर यूनीवर्सिटी के घन्टे से ! वह घड़ी अक्सर बन्द भी तो हो जाती है ! आज शाम को स्टेशन से मिलाकर लाओ, समझे !

हरभजन बहुत अच्छा सरकार !

दास गुप्ता **(अपने कोट से घड़ी निकालकर)** नेहीं, टाइम ठिक है। तीन आधा बाजता है।

रूपचन्द्र कितना, साढ़े तीन ?

दास गुप्ता हाँ, येई बात।

रूपचन्द्र इस वक़्त रोज़ मुझे हरारत बढ़ जाती है।

सोमेश्वर हाँ, डॉक्टर साहब ! ज़रा मेहरबानी करके देखिए। मेरे रूप को बड़ी तकलीफ़ है।

दास गुप्ता आच्छा, हम अबी टेम्परेचर लेते। **(थर्मामीटर रूप के मुँह में लगाते हैं।)** तूमरा हाथ देखाओ।

(रूप हाथ आगे बढ़ाता है। डॉ० साहब नाड़ी देखते हैं। आधे मिनट तक निस्तब्धता रहती है। सोमेश्वरचन्द्र कभी रूप और कभी डॉक्टर के मुँह की तरफ़ देखते हैं। आध मिनट बाद डॉ० साहब थर्मामीटर रूप के मुँह से निकाल कर देखते हैं।)

सोमेश्वर **(उद्विग्नता से)** क्यों डॉक्टर साहब, कितना टेम्परेचर है ?

दास गुप्त (थर्मामीटर को हरभजन के हाथ में देते हुए) खबरदारी से धो लाओ (सोमेश्वर से) जासती नेई। दुइ प्वाइण्ट बाड़ा हय। पाल्श (Pulse) तो ठिक है बेशी दिन नाहीं लगेगा।

सोमेश्वर डाक्टर साहब ! दस दिन तो हो गये इस फ़िकर में।

दास गुप्त शेठ शाहब, घाबराने से की होता ? (रूप से) रूप शाहब, तूमरा पेट का दरद ?

रूपचन्द्र यह तो वैसा ही है। और कुछ बढ़ता नज़र आता है।

सोमेश्वर (रुखता से) देखिए, डाक्टर साहब ! दस दिन से आप लोग दवा कर रहे हैं ! मैं तो फ़िकर से मरा जा रहा हूँ। कुछ आराम ही नहीं होता ! इधर इनकी पढ़ाई अलग चौपट हो रही है। इसी साल एम० ए० में बैठना है। ऐसी बीमारी में कहीं एम० ए० हो सकता है ? आप लोग मेहरबानी करके इन्हें जल्द अच्छा कर दें। आप तो देखते हैं, मैं रुपया पानी की तरह बहा रहा हूँ। फिर भी तबियत वैसी की वैसी।

दास गुप्त डॉक्टर कोपूर आया था ?

हरभजन नहीं, सरकार ! अभी तक तो नहीं आये ?

दास गुप्त अबी जाके बोलाओ।

हरभजन बहुत अच्छा, सरकार ! (जाता है।)

सोमेश्वर इसीलिए मैंने दो-दो डॉक्टरों को तकलीफ़ दी कि वे आपस में समझ-बूझ कर दवा करें। (इस भय से कि कहीं डॉक्टर साहब को बुरा न लग जावे) आप तो अपनी-सी बहुत करते हैं; लेकिन तबीयत को जाने क्या हो गया कि आप जैसे डॉक्टरों की दवा भी फ़ायदा नहीं पहुँचाती ! मैं तो चिन्ता से, डॉक्टर साहब ! आधा हो गया हूँ। चाहता था, रूप की पढ़ाई ख़त्म हो तो इनको काम सौंप कर आराम से शिवशङ्कर का भजन करता लेकिन पूर्वजन्म के पाप कहाँ जायँगे ! चिन्ता-चिन्ता-चिन्ता। घर छोड़कर ऋषिकेश चला जाऊँ तो सब ठीक हो जाय।

दास गुप्त आप रिशीकेश केयों जाता ? रूप बाबू अभी ठिक होता।

सोमेश्वर नहीं, डॉक्टर साहब ! अब मैं दुनिया से ऊब गया हूँ। बाप-दादों की कमाई हुई लाखों रुपये की जायदाद अब मुझसे नहीं सँभलती। दिन भर बक-झक करता हूँ; लेकिन कुछ होता नहीं। सँभालें आपके रूप बाबू। मैं अगर जायदाद ख़राब कर दूँ तो ईश्वर के सामने और अपने बाप-दादों के सामने क्या मुँह दिखाऊँगा ? अपनी बेवकूफ़ी से अगर रुपया बरबाद करूँ तो रूप बाबू का हक़ मारता हूँ। अब तो जितनी जल्दी हो, मैं इस दुनिया से उठ जाऊँ तो अच्छा। शिवशङ्कर ! मुझे उठा लो ! (**शङ्कर जी के चित्र की ओर देख कर हाथ जोड़ते हैं।**)

दास गुप्त अरे, आप कैशी कोथा बोलते ? आप तो बहुत होशियार है। हज्जार का लाख तो आप ही किया है। अबी तो आपका उमर बहूत है !

सोमेश्वर अजी, सब हो चुका। आप मेरे रूप को अच्छा कर दें। आप शहर के मशहूर डॉक्टर हैं, इसलिए आपके हाथ में रूप को सौंपा है।

(**हरभजन के साथ डॉक्टर कपूर का प्रवेश।**)

हरभजन सरकार ! डॉक्टर साहब रास्ते ही में मिल गए।

कपूर गुड ईवनिङ्ग सेठ साहब ! गुड ईवनिङ्ग डॉक्टर ! आई वाज़ इन दि वे।[१] क्या तबीयत कुछ ज़्यादा ख़राब है ? (**रूप की ओर देखकर**) गुड ईवनिङ्ग मिस्टर रूप !

(**गुड ईवनिङ्ग का शिष्टाचार**)

कपूर क्यों, क्या तबीयत कुछ ज़्यादा नासाज़ है ?

दास गुप्त नाहीं, शेठ शाहब घाबराते।

कपूर मिस्टर रूप ! यू आर क्वाइट आल राइट।[२] टेम्परेचर लिया ?

दास गुप्त हाँ, दुइठो प्वाइंट जासती राहा। नाइंटी नाइन प्वाइंट एट्।

सोमेश्वर लेकिन आपकी दवा पीते हुए इस बुख़ार को बढ़ना क्यों चाहिए ?

---

[१] मैं रास्ते ही में था।

[२] तुम बिलकुल अच्छे हो।

रूपचन्द्र और पेट का दर्द भी कुछ ज़्यादा मालूम होता है।

कपूर हाँ, बढ़ना तो नहीं चाहिये! इसकी दवा दे दी गई थी।

रूपचन्द्र वह दवा चार बजे सुबह की थी। मुझे नींद आ गई थी। वह ख़ूराक मैं पी नहीं सका।

दासगुप्त आछा-आछा, जागाना ठिक नेई था। शो तो ठिक राहा।

कपूर लेकिन जागने पर तो मेडिसिन लेनी चाहिए थी। मेडीसिन निगलेक्टेड, इम्प्रूवमेण्ट निगलेक्टेड।[1]

सोमेश्वर ख़ैर, डॉक्टर कपूर! अब दवा दे दीजिए।

कपूर आप फ़िज़ूल घबराते हैं। आपके घबराने से रोगी की तबीयत और ख़राब होगी।

सोमेश्वर तो आप जल्दी से जल्दी इसे अच्छा कर दें।

कपूर आप इतमीनान रखिए। हैव फेथ आन अस।[2] डॉक्टर दास गुप्ता को कितना तजुरबा है। एल० आर० सी० पी० हैं। इन्होंने हज़ारों केसेज़ अच्छे किए हैं। शहर की आधी जिन्दगी इन्हीं के हाथों में है और मैं भी १२ वर्षों से मरीज़ों को देखता आ रहा हूँ। इनकी तबीयत आज नहीं तो दो-तीन दिनों में अच्छी हो जायगी।

सोमेश्वर देखिए, जब आप ऐसा कहते हैं तो मुझे इतमीनान होता है।

कपूर होना चाहिए। आप चिन्ता कर खुद अपनी तबीयत खराब न कर लें! आप ये सब बातें हम लोगों पर छोड़ दीजिए। आप अपना काम देखिए। मैं तो देखता हूँ कि आप पिछले ७-८ दिनों से अपना सारा काम छोड़े हुए बैठे हैं।

सोमेश्वर मैंने तो बहुत से ज़रूरी काग़ज़ात भी नहीं देखे।

कपूर तो फिर उन्हें देखिए। अपना सब काम चलाइए। जब आपने मिस्टर रूप को हम लोगों के सिपुर्द कर दिया है तो अब आप बिल्कुल बेफ़िक्र हो जाइए। हम लोग कुछ बाक़ी उठा न रक्खेंगे।

---

[1] दवा छोड़ी, तबीयत का सुधार गया।

[2] हम पर विश्वास रक्खें।

दास गुप्त ठिक बोला, जे हाम लोग बाकी उठाय न राखेंगे।

कपूर और फिर मिस्टर रूप की बीमारी भी कोई ऐसी सीरियस नहीं है। आप अपने काम का इतना हर्ज़ क्यो करते हैं? सुना है, आपने दूकान जाना भी छोड़ दिया।

सोमेश्वर हाँ, जाया भी तो नहीं जाता।

कपूर नहीं, जाइये अवश्य, दुनिया में तो बीमारियाँ चला ही करती हैं। कोई हमेशा तो तन्दुरुस्त रहा नहीं, कभी न कभी तो बीमार पड़ेगा ही। आप दूकान जाइये, अपना काम देखिए। फिर थोड़ी देर बाद आप आ जाइयेगा।

दास गुप्त हाँ, फिर आने शाकता।

सोमेश्वर अच्छा तो ठीक है। अगर मेरा रूप अच्छा रहे तो मैं क्यों इतना परेशान होऊँ।

कपूर तो सेठ साहब, परेशान होने की कोई बात नहीं है।

सोमेश्वर तो फिर मैं कुछ कागज़ात देख लूँ? सात रोज़ से देखने की फ़ुरसत भी नहीं मिली। दलाल लोग यों ही भटक कर चले जाते हैं। कभी यहाँ तक चक्कर लगाते हैं।

कपूर आप तो उनसे दूकान पर ही निबट लिया कीजिये।

दास गुप्त हाँ, आप जाने शाकते। हम डाक्टर कोपूर शे बातें करूँगा।

कपूर हाँ, तब तक हम लोग म्युचुअल कंसल्टेशन करते हैं। आप अपना काम कीजिये। जिस नतीजे पर पहुँचेंगे आपको बतला देंगे।

सोमेश्वर हाँ, डॉक्टर साहब! आप लोग खूब होशियारी से कंसल्टेशन कर लें। मुझे भी इतमीनान हो जायगा। अच्छा, तो मैं जाऊँ?

कपूर हाँ, ज़रूर। आप इतमीनान से अपना काम कीजिये!

दास गुप्त ज़ोरूर, काम तो ज़ोरूर देखने होता, भाई।

सोमेश्वर अच्छा तो रूप! मैं थोड़ी देर के लिए काम देख आऊँ? चला जाऊँ? ये दोनों डॉक्टर तुम्हारे पास हैं।

रूपचन्द्र हाँ, बाबू जी! जाइये।

सोमेश्वर अच्छा रूप ! तो मैं जाता हूँ।

(रूप को देखते हुए सोमेश्वर का प्रस्थान । एक क्षण बाद फिर लौटते हैं।)

सोमेश्वर देखिए डॉक्टर साहब ! आप लोग ख़ूब ध्यान से कंसल्टेशन कीजिये । मुझे अपने रूप के बारे में पूरा इतमीनान हो जाय ।

कपूर हम लोग बड़ी सावधानी से कंसल्टेशन करेंगे ।

दास गुप्त फारक पाड़ने नेई शाकता !

सोमेश्वर अच्छा रूप ! मैं अभी आता हूँ । जाऊँ ?

रूपचन्द्र जाइए, बाबूजी ! मेरी तबीयत यों बुरी नहीं है ।

सोमेश्वर वाह, रूप, जब मैं तुम्हारे मुँह से यह सुनता हूँ तो मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहता । अच्छा, जाता हूँ ।

(रूप की ओर देखते हुए सोमेश्वर का प्रस्थान । भीतर से सोमेश्वर की आवाज़—)

अरे हरभजन ! ओ हरभजन !! अरे चल इधर । काम वग़ैरह कुछ देखना भी है या नहीं ? ये कमबख़्त नौकर मेरे किसी काम के नहीं हैं ।

(हरभजन भीतर से—आया सरकार ! आया ।)

कपूर पूअर फ़ादर ! कितने अफ़ैक्शनेट फ़ादर हैं !

दास गुप्त बहूत । रूप को तो बाहूत भालो बाशते ।

रूपचन्द्र सचमुच मुझको बहुत प्यार करते हैं । रात-दिन मेरी चारपाई के पास ही रहते हैं । ऐसे फ़ादर बहुत कम होंगे ।

कपूर आप उनके इकलौते बेटे भी तो हैं ?

दास गुप्त हाँ, एकाकी ।

रूपचन्द्र फिर जब से मेरी माँ की डेथ हुई है तब से तो और भी इनका प्रेम मुझ पर बढ़ गया है ।

दास गुप्त ऐशा होना शाभाविक है ।

कपूर यू मस्ट रेसपेक्ट यूअर फ़ादर इम्मेंसली। मिस्टर रूप, ही इज़ वरदी आव दैट।[1]

रूपचन्द्र दैट आई डू![2]

दास गुप्त बिलकूल ठिक है।

कपूर अच्छा तो मैं, मिस्टर रूप, तुम्हें ज़रा एग्ज़ामिन कर लूँ?

रूपचन्द्र ज़रूर।

(कपूर अपना स्टेथेसकोप निकाल कर रूप के चेस्ट की जाँच करते हैं और अँगुली से चेस्ट की आवाज़ लेते हैं।)

दास गुप्त हाम तो काल जाँच लिया था। कोई ऐसा बात नेई!

कपूर हाँ, कोई ऐसी बात नहीं है। अच्छा दर्द कहाँ होता है?

रूपचन्द्र पेट में।

दास गुप्त दारद किश जागा से निकालता?

कपूर याने किस जगह से शुरू होता है?

रूपचन्द्र (पेट पर अँगुली रखकर उसे घुमाते हुए) यहाँ से उठ कर ऊपर की तरफ़ जाता है, डॉक्टर साहब!

कपूर कल क्या खाया था?

रूपचन्द्र वही जो आपने बतलाया था। फ़ूटजूस और बार्ली वाटर।

दास गुप्त पेट कुछ भारी मालूम देता?

रूपचन्द्र कुछ-कुछ।

कपूर मोशन हुआ था?

रूपचन्द्र कुछ-कुछ।

दास गुप्त ये दर्द 'कालीक' होने शाकता।

कपूर लेकिन 'कालीक' समझना कठिन है। 'कालिक' में तो बावेल्स में 'ग्रिपिंग पेन' होना चाहिये। ऐसा तो नहीं है?

रूपचन्द्र कभी-कभी ऐसा नहीं होता।

---

[1]तुम्हें अपने पिता का बहुत आदर करना चाहिए। मि० रूप! वे इसके योग्य हैं।

[2]यह तो मैं करता ही हूँ।

कपूर शार्प और स्पेसमोडिक पेन तो नहीं है ?

रूपचन्द्र नहीं।

कपूर तब 'स्पेसमोडिक कालिक' नहीं है। के की तबीयत तो नहीं होती ?

रूपचन्द्र नहीं।

कपूर तब "बिलियस कालिक' भी नहीं है। अच्छा, खट्टी डकार तो नहीं आती ?

रूपचन्द्र नहीं।

कपूर तब 'फ्लेटुलेंट कालिक' भी नहीं।

दास गुप्त आछा, पेट के अन्दर जोलान तो नहीं मालूम देता ?

रूपचन्द्र नहीं।

कपूर तब 'इन्फ्लेमेटरी कालिक' भी नहीं है। रात में दर्द ज़्यादा रहता है कि दिन में ?

रूपचन्द्र रात में बढ़ जाता है। पेट में मरोड़-सी होती है।

कपूर क़ब्ज़ से हो सकती है। 'एक्सीडेंटल कालिक' हो सकता है।

रूपचन्द्र नहीं, खाया तो जाता नहीं। खाता ही नहीं, क़ब्ज़ कहाँ से होगा ?

कपूर खाया न जाय तो क्या क़ब्ज न होगा ?

दास गुप्त आछा, पेट दाबाने शे दारद हालका पड़ता है ?

रूपचन्द्र कुछ कुछ। रात में तो पेट के बल ही सोता हूँ ?

दास गुप्त (हाथ पर हाथ मार कर) ओ! बीमारी को धार लिया। अब केधर जाता है। 'इन्फ्लेमेटरी कालिक' तो नाहीं है।

कपूर फिर 'कालिक' का कौन-सा टाइप हो सकता है, डॉक्टर ? कुछ सोच सकते हैं ?

दास गुप्त आछा, मिस्टर रूप! ये दारद डाओने शाइड हाय या बायाँ शाइड ?

कपूर आइ मीन, राइट और लेफ़्ट साइड !

रूपचन्द्र राइट साइड।

कपूर (सोचते हुए) लेकिन डॉक्टर! फ़ीवर भी तो है। अगर 'इन्फ्लेमेटरी कालिक' नहीं है तो फ़ीवर तो 'कालिक' में हो ही नहीं सकता।

दास गुप्त लेकिन जाशती फ़ीवर तो नहीं है। नाइन्टी नाइन प्वाइन्ट शिक्श, क्यों मिस्टर रूप ?

रूपचन्द्र नइन्टी नाइन प्वाइन्ट एट् !

दास गुप्त ओ एक ही हाय ! देखूँ तुमरा पेट (पेट देखते हैं।) ओ, बावेल्श ठिक नेईं किया। डाओने तरफ़ एबडोमेन टेण्डर हाय। 'एक्शीडेण्टल कालीक' होने शाकता।

कपूर लेकिन डॉक्टर ! मैं आप से डिफ़र करता हूँ। फ़ीवर होने से 'इन्फ़्ले-मेटरी कालिक' के सिम्पटम्स हो सकते हैं।

दास गुप्त लेकिन पेट में जोलान तो नाहीं है। शीरफ़ फीमर होता हाय।

रूपचन्द्र हाँ, फ़ीवर तो हमेशा रहता है।

दास गुप्त आच्छा, तो 'हेपेटिक' होने शाकता। गाल-डॉक्ट में श्टोन होने शाकता।

कपूर ओ यह, यही हो सकता है। नाऊ आइ कम्पलीटली एग्री विद् यू।[१] यही है, 'हैपेटिक कालिक' है।

दास गुप्त देख के हाल मालूम कार लिया। जोदि 'एक्शीडेण्टल' नेईं तो 'हैपेटिक' तो होने होगा। तूम हमको फीवर का याद दीलाया तो हाम बोल दिया जे 'हैपेटिक कालीक' ही होने शाकता। उसमें हाल-का फीवर होने होता, डॉक्टर कोपूर !

कपूर ठीक है, तब तो परगेटिव मेडीसंस देना ही नहीं चाहिये।

दास गुप्त ओ नो। उहेन कालीक रान्श इन्टू शाच कांडिशांश पारेगेटिब शूड नाट बी गिउभेन।[२] (रूप से) मिश्टर रूप ! पेन दो तारा होता। ईन्फ़्लेमेटरी दाबाने शे बाढ़ता, इरीटेठीभ दाबाने शे घाटता। ये दारद कोल्ड, रियूमेटिज़्म, आर इनाडाइजेशन शे होने होता। जोदि जाइन्ट में होता तो गाऊट आर टुबरकुलार भी होता। खाली फेट में

---

[१] अब मैं आप से बिल्कुल सहमत हूँ।

[२] जब कालीक ऐशा होता तो पारगेटिव नाहीं देना होता।

होने शे एशीडिटी आर डिशपेपशीया होने होता। शारे बादन में होने से इन्फ्ल्यूएंजा। शारे बादन में होता ?

रूपचन्द्र जी नहीं, सिर्फ़ पेट में।

दास गुप्त तो तिन तारा का दारद होने शाकता। (अपनी अँगुलियों पर गिनते हुए) एक्शीडैंटल होते शाकता, इन्फ्लेमेंटरी होने शाकता आर हैपेटिक होने शाकता। हक शोचता जे हैपेटिक होने शाकता। शार ऊलिघम मूर बोलता जे ऊहेन एभर पेन इज़ डेंजिरस देयर इज़ जानरली फिभर।[1]

कपूर तो फिर हम लोग बग़ल के कमरे में डिसाइड करें क्या ट्रीटमेंट होना चाहिए।

दास गुप्त हाँ चोलिए।

(जाने को उद्यत होते हैं।)

रूपचन्द्र (आग्रह से) नहीं. डॉक्टर साहब ! आप लोग यहीं डिसाइड कीजिए कि आप मेरा ट्रीटमेंट कैसा करेंगे।

दास गुप्त तुम 'नारभस' तो नहीं होगा ?

रूपचन्द्र मैं बच्चा तो हूँ नहीं। एम० ए० में पढ़ता हूँ। मेरी तो आप लोगों की बातों में दिलचस्पी ही बढ़ रही है।

कपूर आलराइट, डॉक्टर ! यहीं डिसाइड करें। कोई ऐसी बात तो है नहीं। मिस्टर रूप इज़ इन् एज्यूकेटेड यङ्ग मैंन।[2]

दास गुप्त ओ कोई बात नेई ! डिशाइड कारने शाकते।

कपूर ठीक है, तो इनका एलमेंट 'हैपेटिक कालिक' है। (सोचते हैं।) लेकिन डॉक्टर ! अगर 'हैपेटिक कालिक' होने से माल डक्ट में स्टोन है तब तो आपरेशन करना होगा।

रूपचन्द्र (घबराकर) क्या आपरेशन ?

---

[1] जाब दारद खतरनाक होता तो बुखार होने होता।

[2] मिस्टर रूप, पढ़े-लिखे युवक हैं।

कपूर　　हाँ, हैपेटिक कालिक' है तो आपरेशन तो करना ही होगा। क्यों डॉक्टर ?

दास गुप्त　जोरूर, 'हैपेटिक' का शराल दबाई नाहीं है। आपरेशन कारने होता।

रूपचन्द्र　(अपने स्थान पर ही कुछ विचलित होकर) ओह, आपरेशन !

दास गुप्त　हाँ आपरेशन, आप डारते क्यों ?

रूपचन्द्र　क्या बिना आपरेशन के अच्छा नहीं हो सकता ?

दास गुप्त　जाब हैपेटिक होता तो आपरेशन जोरूरी कराना होता, भाई !

रूपचन्द्र　ओह ! मुझे छोड़ दीजिए। आप लोग जाइए। मैं यहीं मर जाऊँगा। ओह, आपरेशन ! आपरेशन !!

कपूर　　आप ऐसी बातें क्यों करते हैं ? सेठ सोमेश्वर साहब ने कहा है कि आपके अच्छा करने में कोई बात उठा न रक्खी जावे।

रूपचन्द्र　ओह, अब तो मैं बे मौत मरा।

कपूर　　आप इतना क्यो घबराते हैं मिस्टर रूप ? देखिए, आप पढ़े-लिखे आदमी हैं। आपको इतना 'नरवस' होना अच्छा नहीं मालूम देता आपरेशन कितनी अच्छी चीज़ है। जो बीमारी हजार दवाओं से अच्छी न हो बस आपरेशन से 'ओपन' कर सब चीज़ आँख से देख कर खट-खट अच्छा कर दिया। और अब तो दुनिया में आपरेशन से क्या-क्या नहीं होता !

दास गुप्त　आपरेशन शे चक लांग निकाल के फेंक देता। शरीफ़ एक लांग से आदमी ज़िन्दा रहने शाकता। ओ बाबा ! आपरेशन शे हड्डी निकाल के लोहा लगा देता।

कपूर　　यू शुड अण्डरस्टैण्ड आल दिस मिस्टर रूप।[1]

रूपचन्द्र　यह तो सब ठीक है; लेकिन आपरेशन टल नहीं सकता ?

दास गुप्त　हाम टालने शाकता, लेकिन बीमारी बढ़ाने का बात होगा। आपको परेशानी भी होगा और टाका भी खरच होगा।

---

[1] मिस्टर रूप, यह आपको समझना चाहिए।

कपूर आपरेशत में थोड़े दिनों की तकलीफ़ होगी फिर जिंदगी भर के लिए आराम। आपरेशन करा लीजिये।

रूपचन्द्र ओह, अब क्या करूँ!

कपूर आपके करने की कुछ ज़रूरत नहीं। मैं सेठ सोमेश्वर साहब को सब कुछ समझा दूँगा। वे सब बात समझ जायँगे। जिस बात में आप जल्द अच्छे होंगे, उसी की सलाह वे भी देंगे!

रूपचन्द्र मैं अपनी जान लतरे में नहीं डालना चाहता।

कपूर ख़तरे में कैसे? हम लो तो हैं। अगर बीमार लोग यही समझने

कपूर लगें तो फिर हम लोगों का प्रोफ़ेशन तो गया!

रूपचन्द्र तो क्या अपना प्रोफ़ेशन चलाने के लिए आप लोग आपरेशन करते हैं?

दास गुप्त जे बात नेई। हाम तो दुनियाँ को आराम देने वाश्ते आपरेशन करते।

रूपचन्द्र मुझे ऐसा आराम नहीं चाहिए।

कपूर तो फिर आप बीमार रहिए। पढ़ना-लिखना चौपट कीजिए। अपने फ़ादर को 'वरीड' रखिये। पैसा फूँकिये और डॉक्टरों की फ़ीस दीजिए।

रूपचन्द्र मैं इस सब के लिए तैयार हूँ।

कपूर फिर आपरेशन के लिए तैयार क्यों नहीं हैं?

रूपचन्द्र यों ही।

कपूर माफ़ कीजिए, हम लोग आपकी बात नहीं मान सकते। अगर पेशेण्ट के कहने पर डॉक्टर चले तो वह डॉक्टरी कर चुका।

दास गुप्त हाँ, शो तो नाहीं होने शाकेगा।

कपूर सुनिए, मिस्टर रूप! या तो आप हम लोगों की बात मान आपरेशन कराइए या फिर हमारा 'गुडबाई'। हम सेठ सोमेश्वर साहब से सब कुछ कह देंगे। फिर आप जानिए और आपका काम। ताज्जुब की बात है कि आप इतने इज्युकेटेड होकर इस तरह नासमझी की बातें करते हैं। आइ एम रीयली वैरी सॉरी।[1]

---

[1] मुझे सचमुच बड़ा दुःख है।

रूपचन्द्र तो बिना आपरेशन के काम नहीं चलेगा ?

कपूर नहीं। अगर आप हम पर फ़ेथ नहीं रखते तो फिर आप से कुछ नहीं कहना।

दास गुप्त आप शे की बोलूँ, रूप ! हम नेई जानता था जे आप इतना काचा आदमी हाय !

रूपचन्द्र आपरेशन कराना ही होगा ?

कपूर हम लोगों की राय में।

रूपचन्द्र अच्छा, तो फिर एक बात.........(रुक जाता है।)

दास गुप्त बोलिए, बोलिए, रुक केयों गिया ?

कपूर हाँ, कहिए न ?

रूपचन्द्र देखिए...(फिर रुक जाता है।)

कपूर क्या...?

रूपचन्द्र बाबू जी कहाँ है ?

कपूर वे काम करने गये हैं। शायद दूकान पर।

रूपचन्द्र नहीं, देख लीजिए।

कपूर (पुकारकर) जगदीश।

जगदीश (आकर) जी।

कपूर सेठ साहब इस वक्त कहाँ हैं ?

जगदीश दूकान की तरफ़ गये हैं। अभी दस मिनट में आने को कह गये हैं।

रूपचन्द्र देखो, जगदीश ! तुम भी जाओ।

कपूर इसे क्यों भेज रहे हैं ? किसी काम की ज़रूरत हुई तो ?

रूपचन्द्र नहीं इस वक्त कोई काम नहीं है। देखो, जगदीश ? बाबूजी से कहना कि आते वक्त ताज़ी मोसम्मी लेते आवें।

जगदीश बड़े सरकार ने कहा था, यहीं रहना।

रूपचन्द्र नहीं, तुम जाओ। क्या तुम मेरे कहने पर नहीं जाओगे ?

जगदीश नहीं, सरकार ! जाऊँगा।

रूपचन्द्र तो तुम जाओ।

जगदीश बहुत अच्छा (जाता है।)

कपूर बहुत फल तो रक्खे हैं ! अंगूर, अनार वग़ैरह ।
रूपचन्द नहीं, मेरी मोसम्मी खाने की इच्छा है ।
कपूर अच्छा, वह क्या बात है जो आप कहना चाहते थे ?
रूपचन्द जगदीश गया ?
कपूर (सामने की खिड़की के समीप जाकर देखते हुए) हाँ, वह जा रहा है ।
रूपचन्द्र देखिए, डॉक्टर साहब मै एक बात कहूँ ।
दास गुप्त बोलिए ना ।
कपूर आप तो ड्रामा कर रहे हैं ।
रूपचन्द्र ड्रामा नहीं । देखिए, मैं बिल्कुल बीमार नहीं हूँ । (उठ कर बैठ जाता है ।)
कपूर (साश्चर्य से) अच्छा !
दास गुप्त (आश्चर्य से) आच्छा ?
रूपचन्द्र देखिए, डॉक्टर साहब ! मैं बिल्कुल बीमार नहीं हूँ । टेम्परेचर तो यूँ ही बिस्तर में पड़े-पड़े हो गया । यों मैं बिल्कुल अच्छा हूँ ।
कपूर फिर यह बीमारी का स्वाँग क्यों रचा है ? सब को फ़िक्र में डाल रक्खा है ?
दास गुप्त ये की बात भाई ? ऐसा तो हाम शुना नेई ।
कपूर गुड फ़ार नथिंग । सब को मुफ़्त की चिन्ता !
रूपचन्द्र डॉक्टर साहब, मैं ही बहुत चिन्ता में हूँ । (उठ खड़ा होता है ।) शरीर से मैं बिल्कुल अच्छा हूँ, लेकिन मन से बहुत दुखी, बहुत दुखी !
कपूर अच्छा !
दास गुप्त ये की बात ?
रूपचन्द्र सुनिए, आप लोग मेरी दवा क्या करेंगे ? (टहलता हुआ) कोई बीमारी भी हो ! मैं आपरेशन की बात सुनकर अपने भेद को नहीं छिपा सका, आपसे कहना ही पड़ा । मुफ़्त में मैं अपना पेट नहीं कटवा सकता ।

कपूर अरे, तो हम लोगों को क्या मालूम !

रूपचन्द्र मैंने बीमारी का बहाना किया है, यह जानते हुए भी कि बाबूजी का बहुत रुपया ख़र्च हो रहा है। लेकिन मैं लाचार हूँ। कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है।

कपूर ऐसी क्या बात है, आख़िर ?

रूपचन्द्र मैं वह नहीं बतलाना चाहता।

दास गुप्त बाबा, हाम तो ये रोकम केश कोभी नाहीं देखा।

रूपचन्द्र तो अब देख लीजिए।

कपूर लेकिन आप बतलाना क्यों नहीं चाहते ? बीमार हैं, बीमार नहीं भी हैं ! फ़िक्र है, लेकिन फ़िक्र की बात आप छिपाना भी चाहते हैं। यह बात क्या है ?

रूपचन्द्र इसलिए कि आप लोग कोई मेरी मदद नहीं कर सकते।

कपूर यह आप कैसे कह सकते हैं ?

दास गुप्त बाबा, हामरा अकिल तो काम नेई करता !

कपूर हम लोग पेशेण्ट की मदद हर प्रकार से करने के लिए तैयार हैं। मालूम तो होना चाहिए।

रूपचन्द्र तो क्या आप मदद कर सकते हैं ?

कपूर क्यों नहीं। अगर हमारे बस की बात हो तो क्यों नहीं करेंगे ?

रूपचन्द्र नहीं, आप मदद नहीं कर सकते।

कपूर तो फिर कोई बात नहीं, हम लोगों को अब यहाँ से चले जाना चाहिए।

रूपचन्द्र अच्छी बात है, फिर मुझे भी लेटना चाहिए; बीमार होना चाहिए।

दास गुप्त की बोलते, रूप बाबू ! ठेकाने की कोथा बोलो।

रूपचन्द्र डॉक्टर साहब ! मैं बिल्कुल सच बोल रहा हूँ। मेरी तबीयत अच्छी नहीं है।

दास गुप्त ताभी हम लोग आया।

रूपचन्द्र आप लोग तो आपरेशन करने आये हैं। यह दवा नहीं है।

कपूर मैं भी कुछ नहीं समझ सकता। अच्छी बात है, तो हम लोग सेठ साहब से क्या कहें ?

रूपचन्द्र यही कि रूप बीमार है। उसकी दवा होनी चाहिए।

दास गुप्त ये तूम की बोलता, बाबू ?

रूपचन्द्र ठीक-ठीक तो कह रहा हूँ कि मैं बीमार हूँ।

कपूर अभी आप कह रहे थे कि मैं बीमार नहीं हूँ।

रूपचन्द्र हूँ भी और नहीं भी। आप लोग मेरी सहायता कर ही नहीं सकते।

कपूर कुछ कहेंगे भी आप !

रूपचन्द्र अच्छा तो सुनिये......(सोचता है।)

कपूर (सोचते हुए) आपने कैसी समस्या हम लोगों के सामने रक्खी है, कुछ समझ में नहीं आती !

दास गुप्त तो जब सेठ साहब पूछेगा तो हाम ये बोल देगा जे रूप बाबू बीमार नेई है।

रूपचन्द्र कोई बात नहीं। आप मेरी इतनी लम्बी बात सुनकर भी कुछ नहीं समझ सके, तभी तो मैं कहता हूँ कि डॉक्टर लोग प्रेम की गर्मी को थर्मामीटर से नापना जानते हैं। उनके पास दिमाग़ होता है, दिल नाम की कोई चीज़ नहीं होती।

कपूर सचमुच, डॉक्टर दास ! यह बात मेरी समझ में आ रही है।

दास गुप्त तुम भी रूप बाबू की तारा बोलते, डाक्टर कोपूर ?

कपूर नहीं डाक्टर, रूप बाबू के कहने में सचाई है।

रूपचन्द्र और देखिए, डाक्टर दास गुप्ता ! बाबू जी से ऐसा कहकर आप मुझे बहुत सदमा पहुँचायेंगे। आप मेरा नुक़सान तो करेंगे ही, आप अपना भी बहुत नुक़सान करेंगे।

दास गुप्त की रोकम ?

रूपचन्द्र आपकी इतनी लम्बी फ़ीस बन्द हो जायगी।

दास गुप्त लेकिन जब आप बीमार नेई तब हम फोकट में फीश केयों लेगा ?

रूपचन्द्र फोकट क्यों ? आप अपनी दवा कीजिए। आप सिर्फ़ आहरेशन भर न करें। मैं बीमार बना रहूँ, आप मुझे अपनी दवा दीजिए। आप को दवा की क़ीमत मिलेगी और आपके आने की फ़ीस !

दास गुप्त लेकिन सेठ साहब का टाका तो खारच होता !

रूपचन्द्र वह रुपया मेरा है। मैं ही तो उनका 'एअर' हूँ। वे मेरे लिए ही तो अपना रुपया छोड़ेंगे ? मेरे सिवा उनका और कौन है ? माँ है ही नहीं। सारे घर में मैं अकेला हूँ। उनका इकलौता लड़का जिसके लिए वे जान देते हैं।

कपूर मिस्टर रूप ! आपकी सारी बातें मेरी समझ में आ गईं। मैं आपसे पूरी सिमपैथी रखता हूँ। लेकिन जब आप बीमार नहीं हैं तब आपके फ़ादर से फ़ीस लेना मेरा कानशंस अलाऊ नहीं करता।

(**कपूर और दास गुप्त सुनने के लिए शान्त मुद्रा में होते हैं।**)

रूपचन्द्र कहूँ.........(**रुक कर**) अच्छा जाने दीजिए, मुझे बीमार ही रहने दीजिए !

दास गुप्त आप बोलते केयों नहीं ? हम आपनी दवा में कोई बात उठा नहीं राखेंगे ?

रूपचन्द्र दवा की बात नहीं है, डॉक्टर साहब !

कपूर तो फिर बतलाइए न ?

रूपचन्द्र आप...कु...सु...म...को जानते हैं ?

कपूर कुसुम...?

दास गुप्त कु...शू...म ?

रूपचन्द्र हाँ, कुसुम, ओह ! कितना अच्छा नाम है ! (**दास और कपूर एक-दूसरे को देख कर मुस्कुराते हैं।**)

रूपचन्द्र आप लोग मुस्कुराएँ नहीं, मैं सच कहता हूँ...!

कपूर क्या ?

रूपचन्द्र इसी तरह मेरी सहायता करना चाहते हैं ?

कपूर मैं इन बातों में क्या सहायता कर सकता हूँ मिस्टर रूप ?

दास गुप्त हाम कि कोरेगा, बाबा ! ऐशा डॉक्टरी हम नाहीं किया।
रूपचन्द्र अब कीजिए। अभी आप लोगों के सामने लम्बी ज़िन्दगी है।
कपूर ठीक है, लेकिन अब मैं जान गया कि यह बीमारी हम लोगों से नहीं सँभल सकती।
रूपचन्द्र अब जब आपने यह बात मुझसे कहला ली है तो पूरी ही सुनाऊँगा और आपको मेरी मदद करनी ही होगी।
कपूर आलराइट, दैन गो आन।
रूपचन्द्र तो आप कुसुम को नहीं जानते ? (कुर्सी पर बैठता है।)
कपूर नहीं, मैं नहीं जानता।
रूपचन्द्र जिसने म्युज़िक कानफ्रेंस में पारसाल फ़र्स्ट प्राइज़ पाया था।
दास गुप्त हें, वो तो हामरे बाड़ी के पाश रेहता है।
कपूर अच्छा ! मुझे भी याद पड़ता है कि मैंने उसका गाना सुना था। उसने वायलीन भी अच्छा बजाया था शायद।
रूपचन्द्र हाँ, वायलीन, वायलीन लाजवाब बजाती है वह।
कपूर इसमें क्या शक है ?
रूपचन्द्र मैं ..मैं चाहता हूँ कि...
कपूर क्या चाहते हैं आप...?
रूपचन्द्र मैं चाहता हूँ कि वह वायलीन फिर एक बार बजावे···
दास गुप्त तो बीमार काहे को पड़ा ?
रूपचन्द्र मैं चाहता हूँ कि वह बीमारी में एक बार मुझे अपना वायलीन सुनावे। एक बार वह मुझे अपना संगीत सुना जाय, ख़ासकर मेरी बीमारी में...।
कपूर लेकिन आप बीमार तो नहीं हैं।
रूपचन्द्र नहीं हूँ, लेकिन हूँ, शारीरिक रूप से नहीं, मानसिक रूप से।
कपूर तो आप सिर्फ गाना सुनना चाहते हैं या और कुछ···?
रूपचन्द्र मैं पहले गाना सुनना चाहता हूँ, डॉक्टर ! (उठ खड़ा होता है।) ओह, जब वह गाती है तो मालूम होता है जैसे दुनिया फूल की तरह नरम होकर हिल रही है। एक-एक राग जैसे अंगूर की बेल है

जिसमें मिठास के फल झूल रहे हैं। उसके वायलीन के तार जैसे जीती-जागती भावना की लहरें हैं, जो दुनिया को लपेट कर खुद उसमें लिपट जाती हैं। (**भावावेश में आँखें बन्द कर लेता है**) वह संगीत।

दास गुप्त ये कोविता है, बाबा !

रूपचन्द्र उसका ध्यान ही कविता है, डॉक्टर ! आप लोग शायद यह नहीं समझ सकते। चीर-फाड़ करने वाले सुन्दरता को क्या समझें? वे तो सुन्दरता को काट कर रख देना जानते हैं। हड्डी जोड़ने वाले कहीं दिल जोड़ सकते हैं ?

कपूर तो क्या आप समझते हैं कि डॉक्टरों के पास दिल नहीं होता ? वे क्या पत्थर के बने हुए हैं ?

रूपचन्द्र दिल होता है, लेकिन उस दिल में सिर्फ़ ख़ून ही रहता है। उसमें होना चाहिये एक पूरी दुनिया, जिसमें—हँसी-हँसी का वसन्त आता है और आँसू की बरसात होती है। जिसमें किसी से मिलने की चाँदनी निकलती है और न मिलने का अँधेरा होता है।

दास गुप्त ई बात हाम नाहीं सोमझा। फिर से बोलो !

रूपचन्द्र क्या बोलूँ, जो लोग प्रेम की गर्मी को थर्मामीटर से नापते हैं, उनसे क्या बोलूँ ?

कपूर तो क्या आप समझते हैं कि हम लोग प्रेम करना जानते ही नहीं ?

रूपचन्द्र प्रेम ? प्रेम की जब उमंग उठती है तो आप लोग उसे लोशन से धो डालते हैं। और वह लोशन से धुलते-धुलते चाहे जो कुछ रह जाय, प्रेम नहीं रह पाता। आप लोगों के दिमाग़ में किसी सुन्दरी को देखकर उसके 'स्केलिटन' की भावना आ जाती होगी। उसकी बोली सुनते समय आप लोग 'टानसिल्स' की बात सोचते होंगे। उसके केशों के नीचे 'स्कल' होता है, यह आप लोग सोचते हैं या नहीं ?

कपूर आपकी बात सुन कर तो मुझे अपनी नसों की पुरानी दुनिया याद आ रही है। मैं आप के दर्द को महसूस कर रहा हूँ।

रूपचन्द्र तब तो आपको मुझसे सहानुभूति होनी चाहिए और मेरी सहायता करनी चाहिए।

कपूर ज़रूर, ज़रूर। अच्छा, आप अपनी पूरी बात बतलाइए।

दास गुप्त फिर तो हम भी शुनूँगा।

रूपचन्द्र देखिए, मैं जो बीमार बना था, वह इसलिए कि वह आकर मुझे गाना सुना जाय। मैं ऐसी परिस्थिति लाता कि उसे आना ही पड़ता। वह आती, मुझे गाना सुनाती।

कपूर फिर आपने ऐसा क्यों नहीं किया ?

रूपचन्द्र आप लोग मेरा आपरेशन करने लगे! मेरे पेट काटने की बात सोचने लगे तो मुझे असली बात ज़ाहिर कर ही देनी पड़ी।

दास गुप्त शांगीत शुनने शे की होता ?

रूपचन्द्र मुझे शान्ति मिलती। मैंने तो उसे जान ही लिया है। अगर वह भी मुझे पहचान सकती!

कपूर तो आप चाहते हैं कि यह पहचान दूर तक बढ़ जाय ?

रूपचन्द्र शायद।

कपूर तो मालूम होता है कि आप उसे चाहने लगे हैं।

रूपचन्द्र मुमकिन है।

कपूर चाहने का मतलब क्या है ?

रूपचन्द्र चाहने का मतलब ? एक आदमी क्यों हँसता है, क्यों रोता है ? उसे प्यास क्यों लगती है ? ठण्ड में वह गरम कपड़े क्यों पहनता है ? गर्मी में वह पङ्खा क्यों करता है ? उसे भूख क्यों लगती है ?

दास गुप्त ये तो नेचर का नेशेशिटी है।

रूपचन्द्र मेरी यही नेसेसिटी है, डॉक्टर! मैं इससे ज़्यादा क्या बतलाऊँ कि मेरे दिल में उसकी चाह है। मुझे उसके रूप की बीमारी है।

कपूर ठीक है, मैं समझ सकता हूँ, मिस्टर रूप! एक्सीडेंट देखिए, रूप को रूप की बीमारी है!

रूपचन्द्र इसे यों कहिए तो ठीक है कि रूप, रूप की बीमारी में कुरूप हो रहा है।

दास गुप्त (महज़ कुछ बोलने के लिए) तो उशको चिकेन शूप पीने होगा।

रूपचन्द्र डॉक्टर साहब, आप बहुत बड़े डॉक्टर हैं।

कपूर अच्छा तो ये बात है।

रूपचन्द्र हाँ, डॉक्टर कपूर! यही मेरी चाह है।

कपूर लेकिन इस चाह का नतीजा?

रूपचन्द्र अगर मुमकिन हो सका तो……

कपूर आप शादी करेंगे उससे?

रूपचन्द्र मुझे कोई आपत्ति न होगी।

कपूर तो आप तो शादी यूँ ही कर सकते थे। उसके लिए इतने बीमार पड़ने की ज़रूरत ही क्या थी।

रूपचन्द्र डॉक्टर! मै ऐसी शादी नहीं करना चाहता। अन्धों की तरह। एक तो मै शादी करना ज़रूरी समझता ही नहीं, ऐसा नेचर भी कहता है; लेकिन चूँकि मैं इण्डिया में हूँ, शादी की रस्म होनी ही चाहिए। मैं समाज की परवाह नहीं करता। मैं सिर्फ़ ख़्याल रखता हूँ अपने ओल्ड फ़ादर का। अगर मैं शादी न करूँगा तो उनको हद दर्जे का सदमा पहुँचेगा। मै उनका एकलौता बेटा हूँ। उनकी सारी उम्मीदें मुझ पर ही हैं। ऐसी हालत में प्रेम और विवाह को मुझे मिला देना है। यों मैं इन दोनों को अलग-अलग रखने का पक्ष-पाती हूँ।

कपूर यू आर डूइङ्ग ए ग्रेट सेक्रिफ़ाइस दैन![1]

रूपचन्द्र यही समझिए! उधर देखिए! (**लेनिन के चित्र की ओर संकेत करता है।**) लेनिन! इसने मैरिज इन्स्टीट्यूशन की यूज़लेसनेस को समझा है। मैं तो कहता हूँ कि इस बदलते हुए ज़माने में शादी से अच्छे सिटीज़न पैदा न होंगे। प्रेम से अच्छे सिटीज़न पैदा होंगे। ख़ैर, इण्डिया अभी रशा नहीं हो सकता। मैं प्रेम और विवाह में समझौता करूँगा।

---

[1] तब तो तुम बहुत बड़ा आत्म-बलिदान कर रहे हो।

दास गुप्त अब हाम शमझा जे तूम बहूत होशियार है, रूप बाबू !

रूपचन्द्र इसलिए डॉक्टर साहब, मैं चाहता हूँ कि कुसुम भी धीरे-धीरे मुझे अच्छी तरह समझ जाय। मैं तो उसे अच्छी तरह समझता ही हूँ। बिना आपस में एक-दूसरे को समझे शादी, शादी नहीं, वह दिल की शादी नहीं, दुनिया को दिखलाने की शादी है। अगर वह भी मुझे पहचान सकी तो मेरी इच्छा पूरी होगी !

दास गुप्त लेकीन उशका माँ-बाप नेई है। उशका मामा जोरूर है !

रूपचन्द्र इसीलिए मुझे उसके साथ विवाह करने में आसानी होगी। क्या डॉक्टर साहब, आप मेरी मदद नहीं कर सकते ? क्या आप सिर्फ़ शरीर ही अच्छा कर सकते हैं, हृदय अच्छा नहीं कर सकते ?

कपूर (**सोचते हुए**) आपने कैसी समस्या हम लोगों के सामने रक्खी है, कुछ समझ में नहीं आती !

दास गुप्त तो जाब शेठ साहब पूछेगा तो हाम बोल देगा जे रूप बाबू बीमार नेई है।

रूपचन्द्र कोई बात नहीं। आप मेरी इतनी लम्बी कहानी सुनकर भी कुछ नहीं समझ सके, तभी तो मैं कहता हूँ कि डॉक्टर लोग प्रेम की गर्मी को थर्मामीटर से नापना जानते हैं। उनके पास दिमाग़ होता है, दिल नाम की कोई चीज़ नहीं होती।

कपूर सचमुच डॉक्टर दास, यह बात मेरी समझ में आ रही है।

दास गुप्त तुम भी रूप बाबू की तारा बोलता, डॉक्टर कोपूर ?

कपूर नहीं डॉक्टर, रूप बाबू के कहने में सचाई है।

रूपचन्द्र और देखिए, डॉक्टर दास गुप्त ! बाबू जी से ऐसा कहकर आप मुझे बहुत सदमा पहुँचायेंगे। आप मेरा नुक़सान तो करेंगे ही आप अपना भी बहुत नुक़सान करेंगे।

दास गुप्त की रोकम ?

रूपचन्द्र आपकी इतनी लम्बी फ़ीस बन्द हो जायगी !

दास गुप्त लेकिन जब आप बीमार नेई तब हम फोकट में फीस केयों लेगा ?

रूपचन्द्र फोकट क्यों ? आप अपनी दवा कीजिए। आप सिर्फ़ आपरेशन भर

न करें। मैं बीमार बना रहूँ, आप मुझे अपनी दवा दीजिए। आप को दवा की क़ीमत मिलेगी और आपके आने की फ़ीस !

दास गुप्त लेकिन शेठ साहब का टाका तो खारच होता !

रूपचन्द्र वह रुपया मेरा है। मैं ही तो उनका 'एअर' हूँ। वे मेरे लिए ही तो अपना रुपया छोड़ेंगे ? मेरे सिवा उनका और कौन है ? माँ है ही नहीं। सारे घर में मैं अकेला हूँ, उनका इकलौता लड़का जिसके लिये वे जान देते हैं।

कपूर मिस्टर रूप ! आपकी सारी बातें मेरी समझ में आ गईं। मैं आपसे पूरी सिमपैथी रखता हूँ। लेकिन जब आप बीमार नहीं हैं तब आपके फ़ादर से फ़ीस लेना मेरा कानशंस अलाऊ नहीं करता।

रूपचन्द्र अगर आपकी सिमपैथी मुझसे है तो आपको मेरी मदद करनी चाहिए। आपका मुझ पर बहुत एहसान होगा। उसे मै शायद ज़िन्दगी भर न भुला सकूँ। डॉक्टर दास गुप्ता ! मैं उसे आजीवन नहीं भुला सकूँगा।

दास गुप्त शो तो ठिक हाय।

कपूर अच्छा, अगर मदद की जाय, तो किस तरह की मदद की जाय ?

रूपचन्द्र देखिए, आप बाबू जी से यह सब कुछ न कहें। आप यही कहे कि रूप बीमार है। उसकी दवा होनी चाहिए। फिर बीमार रह कर मै कोई रास्ता निकालूँगा कुसुम से मिलने का। आप लोग दवा कीजिए और अपनी फ़ीस लीजिए। जितने दिनों तक मेरी दवा होगी उतनी ही ज़्यादा फ़ीस आपको मिलेगी।

दास गुप्त ऐशा तो बाबा ! मुझशे नाहीं होने शाकेगा।

रूपचन्द्र न सही, लेकिन सोच लीजिए। डॉक्टर दास गुप्ता ! ऐसे मौक़े बार-बार नहीं आते। डॉक्टर कपूर ! ऐसे मौक़े बार-बार नहीं आते।

दास गुप्त शो तो ठिक है। तो इश पर भी कांशल्टेशन कार लो, डॉक्टर !

कपूर मैं तो तैयार हूँ। अगर इससे रूप बाबू का भला होता है तो मुझे कोई ऑबजेक्शन नहीं है। अभी तक हम 'बाडी' का ट्रीटमेंट करते

थे, अब 'माइंड' का करेंगे ! हम लोग फ़ीस लेंगे तो क्या दवा न देंगे ? लेकिन असली बात तो आप किसी से न कहेंगे ?

दास गुप्त आप तो नाहीं बोलेगा ?

कपूर मैं क्यों कहने चला ? मिस्टर रूपचन्द्र की इच्छा पूरी हो, हम लोगों को ख़ुशी होगी।

दास गुप्त हामेरा भी ख़ुशी होगा। बाबा, पेशेण्ट आच्छा हो, हामरा तो येई बात।

रूपचन्द्र मैनी-मैनी थैंक्स डॉक्टर। आई शैल नेवर फ़ारगेट युअर काइंड-नैस।[1] अच्छा तो मैं अब लेटता हूँ। आप बाबू जी से यही कहें कि तबीयत अभी थोड़े दिन और ख़राब रहेगी। ऐसी बीमारी इतनी जल्दी अच्छी नहीं होती। हाँ, एक बात अगर आप लोग कह सकें तो यह भी कह दीजिए कि इनको अच्छा करने के लिए संगीत सुनना बहुत जरूरी है। जब वे पूछेंगे कि कैसा प्रबन्ध करना चाहिए, तो आप कुसुम का नाम ले दीजिए। अगर आप यह कह सकें तो सारा मामला ही सुलभ जाय। और मैं इस बात के लिए तैयार हूँ कि आप बड़ी से बड़ी क़ीमत पर यह काम कर सकें।

दास गुप्त जे कोई बात नेई, हामरा बाड़ी के पाश ओ रेहता है। हाम उशको बोल देगा जे तूमरा को बिमार का काष्ट दूर करना ऊचित। ओ आ जाइगा।

रूपचन्द्र डॉक्टर साहब ? आप मेरी यही दवा करें !

कपूर ठीक है, आपने जैसा कहा, वैसा मैं सेठ साहब से कह दूँगा। आप कोई फ़िक्र न करें।

रूपचन्द्र थैंक्स, तो मैं अब लेटता हूँ।

(रूपचन्द्र पलँग पर मुस्कुराते हुए लेटता है और फिर कमर तक चादर ओढ़ लेता है।)

कपूर तो अब कालिक की दवा तो न दी जाय ?

---

[1] अनेकानेक धन्यवाद, डॉक्टर ! मैं आप की कृपा कभी नहीं भूलूँगा।

रूपचन्द्र देखिए, अगर आप शर्बत बना कर भेजेंगे तो मैं पी लूँगा। और कोई दवा भेजने पर मैं उसे पीने के बहाने तकिए पर या नीचे गिरा दूँगा। दवा की क़ीमत तो मिलेगी ही। शर्बत के लिए क़ीमत कुछ बढ़ा लीजिये, फ़ीस बदस्तूर! और देखिए, मेरे बिल्कुल अच्छे हो जाने पर प्रेज़ेन्ट!

कपूर बिल्कुल अच्छे हो जाने पर......

रूपचन्द्र आप बिल्कुल अच्छे हो जाने का मतलब समझते हैं?

कपूर हाँ, समझता हूँ।

दास गुप्त (हँसते हुए) फीर 'हैपेटिक कालीक' का आपरेशन नेही होगा?

रूपचन्द्र अब आप मेरे दुश्मनों का आपरेशन करें।

कपूर तो मिस्टर रूप, अब आप को दर्द कहाँ होता है?

रूपचन्द्र (हँस कर) पेट के कुछ ऊपर जहाँ दिल है।

(सब हँसते हैं। जगदीश आता है।)

जगदीश डॉक्टर साहब, सरकार आ रहे हैं।

कपूर हाँ; हम लोगों ने कंसल्टेशन भी कर लिया।

दास गुप्त बहुत आछा कांशल्टेशन!

(सोमेश्वर का मोसम्मी का थैला लिए हुए प्रवेश।)

सोमेश्वर (आते ही) रूप! मैं आ गया! मैं आ गया! (**कपूर से**) कहिए डॉक्टर साहब! आप लोगों ने कंसल्टेशन किया? कैसा है मेरा रूप? कब तक अच्छा हो जायगा? कोई ख़ास बात तो नहीं है?

कपूर नहीं, कोई ख़ास बात नहीं है। हम लोगों ने काफ़ी कंसल्टेशन किया; रूप बाबू की तबीयत ख़राब जरूर है, लेकिन कोई ज़्यादा ख़राब नहीं है।

दास गुप्त फ़िकर का ज़ोरूरत नेई, शीगेर आछा होगा। थोरा दीन लागेगा। कोई बात नेई।

सोमेश्वर (**शान्ति की साँस लेकर**) ओह डॉक्टर। अब मुझे सच्ची शान्ति मिली। आप लोगों ने सचमुच मुझको बचा लिया। नहीं तो रूप की चिन्ता मुझे खाये जाती थी। अब बहुत अच्छा है। (**मोसम्मी**

की गठरी पर दृष्टि जाती है।) देखिए, मैं अपने रूप के लिए कैसी अच्छी-अच्छी मौसम्मी लाया हूँ। बिल्कुल ताज़ी। **(हाथ में मौसम्मी लेते हुए)** बाज़ार से अपने हाथ से चुनकर। रूप! देखो ये मोसम्मी। अब तुम बिल्कुल अच्छे हो गए; डॉक्टरों ने एक आवाज़ से कह दिया कि कोई बात नहीं। **(कपूर से)** डॉक्टर साहब! आपने ध्यान से तो कंसलटेशन किया है? **(डॉक्टर दास गुप्त से)** डॉक्टर साहब! कोई बात रह तो नहीं गई? डिसकशन तो ठीक हुआ?

दास गुप्त डीशकाशन तो बेशी हुआ, लेकिन बात ठिक है। फिकर केयों कारते? 'एक्शीडेंटल कालीक' में कोई बात नेई होता।

कपूर हाँ, 'एक्सिडेंटल कालिक' में ज़्यादा घबराना नहीं चाहिये। पेशेंट के मन में शान्ति होनी चाहिये।

सोमेश्वर मैं तो रूप से कहता हूँ कि शान्त रहे। ख़ुश रहे। लेकिन वे हमेशा उदास रहते हैं। **(मौसम्मी दिखला कर)** रूप! ये मौसम्मी देखो, अच्छा हुआ तुमने जगदीश से कहला भेजा कि ताज़ी मौसम्मी चाहिये। ये देखो मैं अपने हाथ से ताज़ी मौसम्मी लाया हूँ। ज़रा ख़ुश हो जाओ रूप! तुम्हारी मौसम्मी खोजने में ही तो थोड़ी देर लग गई, नहीं तो मैं और पहले आ जाता।

दास गुप्त ओ कोई बात नेई।

कपूर अच्छा हुआ, थोड़ी देर लग गई। क्यों रूप?

रूपचन्द्र हाँ, ताज़ी मौसम्मी खाने को मिलेगी।

सोमेश्वर मैं जानता हूँ, मेरे रूप को मौसम्मी बहुत अच्छी लगती है। ये कमबख़्त नौकर क्या जानें कि मेरे रूप को क्या अच्छा लगता है! लाते हैं अनार, अँगूर, केले। क्यों रूप! तुम्हें मौसम्मी अच्छी लगती है न?

रूपचन्द्र हाँ, बाबू जी!

सोमेश्वर बस, तो तुम अब खुश हो जाओ। अब तुम उदास मत रहना।

कपूर यह उदासी एक तरह से दूर हो सकती है!

सोमेश्वर कैसे ? जल्दी बतलाइये डॉक्टर ! मैं उसका इन्तज़ाम करूँगा ।

कपूर वह ऐसे कि इन्हें गाना सुनाया जाय ।

सोमेश्वर तो घर में रेडियो तो है ।

कपूर रेडियो का गाना···

दास गुप्त जे बात तो हम शोचा नेई ।

रूपचन्द्र बाबूजी ! रेडियो की आवाज़ मुझे अच्छी नहीं लगती । कुछ दबी हुई-सी मेटेलिक-सी होती है । और जब रेडियो सामने बजता है तो मालूम होता है जैसे मुरदे से आवाज़ निकल रही है । रेडियो से मुझे डर-सा लगता है ।

सोमेश्वर ना, ना ! तब रेडियो को फेंको ! अरे जगदीश ! जगदीश !

जगदीश (आकर) जी सरकार !

सोमेश्वर देखो, मुनीम जी से कह देना कि आज से रेडियो नहीं बजायेंगे, जब तक कि मेरा रूप बीमार है । समझे, रेडियो बन्द करके रख दें ।

जगदीश बहुत अच्छा, सरकार ! (जाता है ।)

सोमेश्वर ये रेडियो भी बहुत बुरी चीज है । सन्दूक के भीतर से आवाज़ आती है । सचमुच डरने की बात है । और जाने कैसी-कैसी आवाज़ !

दास गुप्त कोभी-कोभी शीटी भी मारता है !

कपूर जैसे कोई स्पिरिट आवाज़ ऊँची-नीची करके चीख़ रही है ।

सोमेश्वर इसके बारे में ज़्यादा बाते करना ठीक नहीं । मेरे रूप को बीमारी में डर लगता है ।

रूपचन्द्र हाँ, बाबूजी !

सोमेश्वर डरने की कोई बात नहीं है, रूप ! इसीलिए तो मैं तुम्हारे साथ हरदम रहता हूँ । बीमारी में डर और भी बढ़ जाता है ! जिस्म के साथ मन भी तो कमज़ोर हो जाता है ! मैं इसीलिए तुम्हारे पास ही रहता हूँ ।

हरभजन (आकर) सरकार, बाहर कुछ दलाल आपसे मिलना चाहते हैं ।

सोमेश्वर (झुँझलाकर) मैं कहता था न कि दलाल आते होंगे । इन कम्बख़्तों

को यही वक़्त मिलता है जब मैं अपने रूप के पास रहता हूँ। अभी दस मिनट के लिए दूकान पर था, तब नहीं आये। बेईमान कहीं के! जाके कह दो, इस वक़्त मैं अपने रूप से बातें कर रहा हूँ। जानते नहीं, रूप बीमार है?

हरभजन सरकार! मैंने तो कहा था; लेकिन उन्होंने कहा कि ज़रूरी काम है।

सोमेश्वर मेरे लिए सबसे ज़रूरी काम इस वक़्त रूप की बीमारी को अच्छा करना है।

दास गुप्त आप जाने शाकते।

सोमेश्वर अजी डॉक्टर साहब! आप भी क्या कहते हैं! मैं अपने रूप को इस वक़्त नहीं छोड़ सकता। अभी आया हूँ और अभी चला जाऊँ? रुपये से रूप मुझे ज़्यादा प्यारा है देखो, हरभजन! उनसे कहो कि जब तक रूप अच्छा न हो जाय तब तक उनके आने की ज़रूरत नहीं है।

हरभजन बहुत अच्छा, सरकार! (जाता है।)

सोमेश्वर ये लोग भी अजीब खोपड़ी के आदमी हैं! जानते हैं कि मेरा बेटा बीमार है, तब भी दुश्मन की तरह सिर पर सवार रहना चाहते हैं।

कपूर जाने दीजिये। हमें तो रूप को अच्छा करना है म्यूज़िक सुना कर।

सोमेश्वर हाँ, तो डाक्टर साहब! क्या करूँ? रेडियो रूप को अच्छा नहीं लगता। फिर क्या इन्तज़ाम करें? ग्रामोफ़ोन?

रूपचन्द्र बाबू जी! उसको सुनते-सुनते तो ऊब गया। वही गाना बार-बार सुनो। कालेज की पढ़ाई की तरह एक ही बात दस बार पढ़ो, दस बार रटो।

सोमेश्वर फिर बतलाइए, क्या किया जाय, डॉक्टर? सङ्गीत सुनाना बहुत ज़रूरी है, डॉक्टर?

कपूर बहुत ज़रूरी है। अगर आप चाहते हैं कि मिस्टर रूप जल्दी ही अच्छे हो जायँ।

सोमेश्वर मै तो यही चाहता हूँ, भाई! जल्दी से जल्दी यही चाहता हूँ! कोई

अच्छा गाता हो उसे बुलाया जाय ? क्या आप कोई ऐसा इन्तज़ाम कर सकते हैं, डॉक्टर कपूर ?

कपूर (सोचता हुआ) मैं ? मैंक्या इन्तज़ाम करूँ ? (सिर खुजला कर) हाँ, याद आया पारसल म्यूज़िक कानफ्रेंस में एक लड़की ने बहुत अच्छा गाया था। उसे ही फ़र्स्ट प्राइज़ मिला था। सब से अच्छी गाने वाली वही ठहराई गई थी ! ओह मारवलस ! वायलीन भी फ़र्स्ट क्लास बजाती है। अगर वह गाना सुना सके तो ये बहुत जल्द अच्छे हो सकते हैं।

सोमेश्वर उसके सिवा क्या और कोई अच्छा गाना नहीं गाता !

कपूर यों गाने वाले तो बहुत हैं, लेकिन......

सोमेश्वर मेरे कहने का मतलब यह कि कोई अच्छा गाने वाला हो जो रात-दिन यहीं रह सके और मेरे रूप को जब चाहे तब अच्छा गाना सुना सके !

कपूर हाँ, ये भी हो सकता है; लेकिन 'मेल वायस' 'फ़ीमेल वायस' को पा नहीं सकती। लड़की के गाने में जो मिठास होती है, वह किसी लड़के के गाने में नहीं हो सकती। वह तो गाना ही दूसरा हो जाता है।

दास गुप्त 'फ़ीमेल वायेश' तो चोमत्कार होता। ओ बीमारी ठिक कारने शाकता।

कपूर इसीलिए मैंने 'सजेस्ट' किया, यों आप चाहे जिसको बुलावें।

सोमेश्वर नहीं; डॉक्टर साहब, अगर आप किसी लड़की का गाना 'सजेस्ट' करते हैं तो उसी का इन्तज़ाम होगा। रूप की तबीयत अच्छी हो जानी चाहिए।

कपूर इसीलिए मैंने कहा। म्यूज़िक इन ए फ़ीमेल थ्रोट बिकम्स ए डिवाइन मिलोडी।[1] मेरे कहने का मतलब यह है कि गाने की ब्यूटी तो 'फेयर थ्रोट' में ही है। वह आदमियों की ज़्यादती है कि वे औरतों के इस आर्ट पर कब्ज़ा करें।

---

[1]स्त्री के कंठ में गाना स्वर्गीय संगीत हो जाता है।

दास गुप्त न्यू जानरेशन तो इश पर आन्दोलन कारने शाकता !

सोमेश्वर तो आपके कहने का मतलब यह है कि गाना किसी लड़की को गाना चाहिए !

कपूर हाँ, मैं तो यही सोचता हूँ, यह समझता हूँ।

सोमेश्वर और गाना वही लड़की गाये ? क्या नाम बतलाया उसका आपने, डॉक्टर कपूर ?

कपूर **(दास गुप्त से)** क्या नाम है डॉक्टर उसका ?

दास गुप्त ओ ··नाम ? नाम तो विसृत हो गया। **(सिर खुजलाता है।)**

रूपचन्द्र मैं गाना नहीं सुनूँगा। आप मेरे सिर में **(कपूर की ओर देखकर)** जवाकुसुम तेल ही डाल दीजिए। गाना-वाना छोड़िए।

कपूर **(जवाकुसुम नाम सुन कर)** यह कुछ नहीं, अगर अच्छा होना है तो जो मैं कहता हूँ, वह करेंगे या अपने मन की ? हाँ, याद आया, उसका नाम है कुसुम।

सोमेश्वर क्या नाम बतलाया कुसुम ? तो वह कैसे आवे ?

कपूर कोई मुश्किल बात नहीं है। उसके माँ-बाप तो कोई हैं नहीं, उसके मामा को एक ख़त लिख दीजिए। वह चली आयेगी ! लिख दीजिए कि उसे ५) दिन मेहनताना दिया जायगा।

सोमेश्वर ५) क्या अपने रूप को अच्छा करने के लिए १०) दे दूँगा ! उसके मामा का क्या नाम, डॉक्टर कपूर ?

कपूर डॉक्टर दास गुप्त जानते होंगे।

दास गुप्त ओ तो हामरे बाड़ी के पास ही रेहता। उसका नाम है धोनपात चाँद।

सोमेश्वर ओ धनपतचन्द। मै तो उनको जानता हूँ। मेरे दूकान से पहले उनका हिसाब-किताब रहता था। लेकिन उनका दिवाला निकल गया। अब तो बहुत ग़रीब हैं।

कपूर अच्छा ये बात है ? तब तो ५) या १०) दिन पर वे बहुत जल्द राज़ी भी हो जायँगे।

सोमेश्वर हाँ, राज़ी हो सकते हैं। बहुत ग़रीब हैं। मुझे तो बड़ा रञ्ज है उनके लिए, अपनी जात-बिरादरी के लोग हैं ?

कपूर ओ, ऐसी बात है ? तब तो इस तरह आप अपने बिरादरी के एक भाई की मदद भी करेंगे।

सोमेश्वर हाँ, यह बात ठीक है। वाह डॉक्टर साहब ! क्या कहना है ! आपने कितना अच्छा नाम बतलाया ! वाह, क्या कहना है ! हमारा काम निकलेगा और बिरादरी के एक भाई की मदद भी हो जायगी। कुसुम बेटी से कह दूँगा कि बेटी ! तू इतना काम कर दे। इसको अपना ही घर समझ।

कपूर हाँ, यही कहना चाहिये। आप एक ख़त अभी लिख दीजिए। **(डॉक्टर कपूर रूपचन्द्र की ओर देखते हैं।)**

रूपचन्द्र बाबूजी ! तबीयत तो कुछ सुनने की होती नहीं है, लेकिन अगर डॉक्टर कहते हैं तो सुनना पड़ेगा। ख़ैर, सुनूँगा।

सोमेश्वर रूप ! तुम जल्दी अच्छे हो जाओगे। अच्छा, तो मैं अभी लिख देता हूँ ? **(पुकारकर)** जगदीश, ओ जगदीश !

जगदीश **(आकर)** कहिए, सरकार !

सोमेश्वर ज़रा, काग़ज़ क़लम तो ले आ।

जगदीश बहुत अच्छा, सरकार ! **(जाता है।)**

दास गुप्त नाम है धोनपात चाँद, लेकिन गोरीब हाय।

कपूर लोग अपनी हसरत नाम रख के ही मिटा लेते हैं।

सोमेश्वर इनके बाप-दादे तो अच्छे पैसे वाले थे लेकिन अब दिन ख़राब आ गये।

(जगदीश काग़ज़, क़लम और दावात लेकर आता है।)

सोमेश्वर इन बेवकूफ़ों से कोई काम ही नहीं होता। काग़ज़ लाने को कहा तो इतना छोटा काग़ज़ लाया है ! अरे, दवाई की पुड़िया नहीं बनाना, चिट्ठी लिखना है। कहाँ-कहाँ के जाहिल नौकर मेरे यहाँ इकट्ठे हुए हैं !

कपूर हाँ, और देखिए सेठ साहब ! आप अपने नौकरों पर नाराज़ बहुत होते हैं। इससे रूप बाबू की शान्ति में भी गड़बड़ होती है।

सोमेश्वर (**घबड़ा कर**) ओ, ऐसी बात है ? नहीं-नहीं, मैं नाराज़ नहीं होऊँगा ! ओ जगदीश, अब मैं तुम लोगों पर नाराज़ नहीं होऊँगा, भाई !

जगदीश बहुत अच्छा, सरकार !

सोमेश्वर और देखो, हरभजन कहाँ है ? उससे भी कह दो कि अब मैं नाराज नहीं होऊँगा।

जगदीश बहुत अच्छा, सरकार !

सोमेश्वर अरे तो जाकर कहते क्यों नहीं ? यहीं खड़े-खड़े 'बहुत अच्छा सरकार !' बक रहे हो ! (**जगदीश जाने को उद्यत होता है।**) धीरे-धीरे क्यों जाते हो ? जल्दी जाओ। (**चिढ़ कर**) इन कमबख्तों के मारे (**नाराज़ होने की भूल का स्मरण कर डॉक्टरों की ओर देखते हुए**)..... अरे भैया जगदीश ! (**जगदीश लौट कर आता है।**) कह देना। इतनी जल्दी कहने की ज़रूरत नहीं है, भैया ! क्या करूँ, मेरी तो नाराज़ होने की आदत-सी पड़ गई है !

दास गुप्त शो ठीक होने शाकेगा।

कपूर बस, आप ख़त लिख दीजिये। गाने का इन्तज़ाम हो जायगा, इधर हम लोग साथ-साथ दवा देंगे तो बहुत जल्दी आराम हो जायगा।

रूपचन्द्र और क्यों डॉक्टर ! पेट के दर्द में आपरेशन की ज़रूरत तो नहीं पड़ेगी ?

सोमेश्वर (**चौंक कर**) आपरेशन......!

कपूर नहीं-नहीं, जब मन की बेचैनी मिट जायगी तो पेट का दर्द आपसे आप घट जायगा। आपके संगीत सुनने का इन्तज़ाम जल्द ही होना चाहिए। सेठ साहब......?

सोमेश्वर नहीं-नहीं, मैं अभी ख़त लिखता हूँ। (**बैठकर घबराहट में ख़त लिखना चाहते हैं।**)

दास गुप्त मन में बेचैनी होने शे बिमारी बाढ़ने शाक्ता। बाढ़ेगा नेईं। हाम दावा भी देगा।

सोमेश्वर बस दवा ही दीजिए। आपरेशन नहीं, गाना सुनाइये। दवा दीजिये, बस। डॉक्टर कपूर! घबराहट में मुझसे ठीक नहीं लिखा जाता, आपही मेरी तरफ़ से लिख दीजिये।

कपूर हाँ-हाँ, लाइये मैं लिख दूँ। (**ख़त लिखते हैं।**)

रूपचन्द्र यह संगीत क्या रोज़-रोज़ सुनना पड़ेगा बाबूजी? बड़ी मुसीबत है।

सोमेश्वर (**बड़े प्रेम से**) रूप! अच्छे होने के लिए सुनना पड़ेगा। सुन लो बेटा, डॉक्टर लोग कहते हैं। मैं कहाँ कहता हूँ? रूप! सिर्फ़ थोड़े दिन की बात है। फिर तो ज़िन्दगी भर के लिए अच्छे हो जाओगे।

रूपचन्द्र अच्छी बात है। बाबूजी! जैसा कहोगे, करूँगा! आपकी आज्ञा से बाहर तो जा ही नहीं सकता।

सोमेश्वर वाह, क्या कहना है। मेरा बेटा रूप! मेरा प्यारा बेटा रूप!!

कपूर लीजिए, दस्तख़त कर दीजिए।

सोमेश्वर (**पढ़ कर**) वाह, कितना अच्छा लिखा है, डॉक्टर! अब तो वह ज़रूर आ जायगी (**दस्तख़त करता है। कपूर से**) वाह, कितना अच्छा लिखा—'मैं उसको अपनी ही बेटी समझूँगा।' आप बहुत अच्छी चिट्ठी लिखते हैं, डॉक्टर साहब! क्या डॉक्टरी में ये भी बतलाया जाता है।

कपूर (**मुस्कुरा कर**) ऐसी कोई बात नहीं। अच्छा, अब इसे भिजवा दीजिए।

सोमेश्वर वह मैं अभी भिजवाता हूँ। (**पुकार कर**) जगदीश!

जगदीश (**आकर**) सरकार!

सोमेश्वर देखो, तुम लाला धनपतचन्द का मकान जानते हो?

जगदीश जी, सरकार! जिनका दिवाला निकल गया था?

सोमेश्वर हाँ, वही। जानते हो अब वे कहाँ रहते हैं?

जगदीश जी, करनलगंज में......

सोमेश्वर (**मुँह चिढ़ाकर**) करनलगंज में! और कह दे कमाण्डरगंज में! अबे, अब उसका नाम बदल गया है। अब जवाहर गंज है। गधे कहीं के! अभी तक अँगरेज़ों के राज में रहते हैं। कहाँ-कहाँ के जाहिल और कमबख़्त......(**अपनी भूल स्मरण कर कोमल स्वर में**) नहीं, भैया जगदीश! हाँ, हाँ, उसी पुराने करनलगंज में! हाँ, वहीं! यह चिट्ठी उन्हीं के हाथ में देना। ज़रूरी है, समझे?

जगदीश जी सरकार!

सोमेश्वर जाओ। (**जगदीश जाता है।**)

सोमेश्वर (**सन्तोष की साँस लेकर**) अब कहीं चैन मिला। अब मेरा रूप बहुत जल्दी अच्छा हो जायगा, क्यों डॉक्टर?

कपूर अभी कुछ दिन तो लगेंगे, फिर बिल्कुल अच्छे हो जायँगे। बहुत दिनों के लिए!

दास गुप्त (**प्रसन्नता से**) हामरा डॉक्टरी मामूली हाय?

सोमेश्वर नहीं, डॉक्टर साहब! आप लोगों ने ही तो रूप को अच्छे करने की तरकीब निकाली है।

कपूर अब रूप की बीमारी अच्छी हो जायगी।

रूपचन्द्र जब आप लोगों ने मुझे अच्छे करने की इतनी कोशिश की है तो ऐसा लगता है कि मैं अभी से अच्छा होने लग गया हूँ।

सोमेश्वर (**प्रसन्नता से झूम कर**) क्या कहना है! क्या कहना है!!

(**पर्दा गिरता है।**)

अतिरंजना
(Caricature)

१. कवि पतंग

कवि पतंग

पात्र-परिचय

कवि पतंग—कल्पना-कानन-केसरी कवि। दुबला-पतला शरीर जिसमें सुकुमारता ने नीड बना रक्खा है। लंबे केश जो कल्पना की भाँति लहरा कर कंधों पर विश्राम कर रहे हैं। पतला कंपित कण्ठ जिसकी वाणी में तारों की झनकार और मीड़ भरी हुई है। लम्बी उँगलियाँ जो बोलते समय आकाश में थिरकने लगती हैं जैसे वे सितार के पर्दों पर चढ़-उतर रही हैं। बोलते समय वे इतने तन्मय हो जाते हैं जैसे अभी उठ कर नाचने लगेंगे। यों प्रत्येक समय उनका कोई न कोई अंग अवश्य फड़कता है। बातचीत करते समय 'अहा' का प्रयोग अनेक बार करते हैं। माथे में चन्द्र बिन्दु, आँखों में अञ्जन, मुख में पान, क्लीन शेव। रेशम का लम्बा कुरता, उस पर एक लहराता हुआ दुपट्टा, भूमि को स्पर्श करती हुई ढीली धोती और पैरों में चप्पल। आयु ३० वर्ष।

अनंग—एक साहित्य-सेवी। एक मासिक पत्र का सम्पादक, सुलझा हुआ व्यक्ति जिसे वार्तालाप करने की कला आती है।

राम बदल—कवि पतंग का नौकर जो स्वयं विनोदशील है।

स्थान—कवि पतंग का काव्य-कक्ष जिसमें वीणापाणि सरस्वती की प्रतिमा बीच में रक्खी है और दीवालों पर अनेक चित्र लगे हुए हैं जिनमें अधिकतर स्त्रियों के हैं। प्रत्येक चित्र पर मालाएँ सजी हैं और सरस्वती की प्रतिमा के समीप अगरु धूप का पात्र है जिससे सुगंधित धुआँ निकलता है। एक ओर एक तख़्त बिछा हुआ है जिस पर नरम क़ालीन और तकिया है। उसके समीप एक छोटा टेबिल और आसपास दो कुर्सियाँ हैं। टेबिल पर एक तश्तरी में कुछ ताज़े फल रक्खे हुए हैं। सामने खिड़की है जिससे पश्चिम का आकाश दीख रहा है।

कवि पतंग

कवि पतंग तख्त पर घुटनों के बल बैठे हुए शून्य में देख कर मुस्कराते हैं। फिर अपनी उँगलियों को कंपित कर धीरे-धीरे उठाते हुए अत्यन्त मधुर और सुकुमार कण्ठ से कविता गुनगुनाते हैं—

पतंग **(भौंहों पर बल देकर स्वर भरते हुए)**

जीवन की गोधूली में
जब गायें लौट रही हों
तब उनके गले लिपट कर
घंटी सी बजती जाओ

(हाथ इस ओर करते हुए) घंटी सी बजती आओ!
(हाथ उस ओर करते हुए) घंटी सी बजती जाओ!
(फिर इस ओर करते हुए) घंटी सी बजती आओ!
ओ मेरी कविता प्रेयसी
घंटी सी बजती आओ!
(ध्यान मग्न होकर) घंटी...सी...बजती...

(बाहर से आवाज़) पतंग जी! पतंग जी! क्या पतंग जी हैं?

पतंग **(ध्यान में डूबे हुए)** अहा! ओ मेरी कविता प्रेयसि!
घंटी सी बजती जाओ!
(हाथ इस ओर कर) घंटी सी बजती आओ!
तब उनके गले लिपट कर...
घंटी...सी...बजती......

(बाहर से फिर आवाज़) अरे पतंग जी! पतंग जी! कहीं कट तो नहीं गए?

पतंग **(रुक कर)**...एँ

(फिर वही आवाज़) मैंने कहा...कहीं कट तो नहीं गये ?

पतंग **(कोमल स्वर में)** अहा ! जीवन ही तो एक पतंग है । मुक्त आकाश में उड़ती है । कभी इस ओर—कभी उस ओर...दिशाओं की गहराई में डूबी रहती है । खींचता हूँ तो पास आती है ढील देता हूँ तो दूर जाती है । थिरकती हुई...मचलती हुई...कल्पना की डोर से दूर...बहुत दूर...

(बाहर से फिर आवाज़) अरे...तो क्या पतंग जी नहीं है ?

पतंग **(ध्यान से कान उस ओर करके सुकुमारता से)** हूँ, अवश्य हूँ और जीवन की मरुभूमि में जल रहा हूँ ?

(कुछ ज़ोर से काँपती हुई आवाज़ में) कौन सज्जन हैं ?

(बाहर से) अरे भाई, मैं हूँ अनंग !

पतंग अहा ! अनंग जी ! अनंग !

(स्वर से) शिव ने तुमको भस्म किया,

हाँ, भस्म कर दिया, किया अनंग !
मैं फिर तुमको दूँगा अंग !
मै फिर तुमको दूँगा अंग !

(बाहर से) अच्छा फिर मैं जाता हूँ ।

अनंग नहीं, नहीं, जाना कैसा ! सूर्य उदय होता है, अस्त होता है । फूल आते हैं, चले जाते हैं, पर तुम कैसे जाओगे ! अभी तो तुम आए ही नहीं ! मै द्वार खोलता हूँ...अपने हृदय की भाँति ।

(दरवाज़ा खोलता है) आइए...आइए...अनंग जी !

(अनंग का प्रवेश)

अनंग **(आते हुए)** मैं तो वापस जा रहा था, कवि जी ! पुकारते-पुकारते हैरान हो गया, कोई उत्तर ही नहीं मिल रहा था !

पतंग अहा ! उत्तर का प्रश्न क्या ! किस-किस प्रश्न का उत्तर मिलता है । **(अभिनय करते हुए)** इतना फैला हुआ आकाश, वह भी मौन है । सुगन्धि में खिले हुए पुष्प—वे भी मौन हैं । रेशम सी चाँदनी का

चीर बढ़ाने वाला चन्द्रमा—वह भी मौन है और प्रेयसी के नेत्र... (**रहस्यमयी मुस्कुराहट से**) एँ ? प्रेयसी के नेत्र ? वे कहते तो सब कुछ हैं पर वे...वे...भी मौन हैं ! मौन...मौन...(**हाथ फैला कर**) मौन ! (**चौंक कर**) एँ...बैठिये...बैठिये...(**लज्जित होकर**) एक बार एक सुन्दरी महिला यहाँ आई थी...मैं भावना में इतना डूब गया कि उन्हें बिठलाना ही भूल गया ! जब वे खुद ही बैठ गईं तो मैंने लज्जित होकर कहा—जो मूर्ति आँखों में बैठ सकती है, उसे मैं इस पुराने वार्निश की कुर्सी पर क्या बिठलाता ! (**लज्जित हँसी**)

अनंग खैर, कोई बात नहीं, मैं भी खुद ही बैठ जाता हूँ भले ही मेरी मूर्ति !......

पतंग आपकी मूर्ति ! आप श्याम हैं तो क्या आपकी मूर्ति साधारण है ? अहा ! एक वह श्याम था जिसके पीछे राधा और गोपियाँ आँसू बहाते-बहाते संसार से चली गईं ! (**करुण स्वर से**) हाय ! चली गईं पर श्याम मधुपुरी से नहीं आए ! गाते-गाते सूरदास की आँखें अंधी हो गईं पर श्याम मधुपुरी से नहीं आए ! गोकुल की गलियाँ सूनी हो गईं, यमुना का तीर शून्य हो गया, कदम्ब की छाया सूनी हो गई, बंशी का हृदय सूना हो गया पर श्याम मधुपुरी से नहीं आए !...पर आप ? आप तो मेरे यहाँ आ गए !

अनंग आप में गोपियों से अधिक आकर्षण है, कवि जी ! इसीलिए आ गया ! मैं कवि तो नहीं हूँ पर कह सकता हूँ कि आपकी ये आँखें दो खुली हुई पाकेट डिक्शनरियाँ हैं। नाक जैसे लेडीज़ फ़ाउन्टेनपेन हैं। ये बाल जैसे मुक्त वृत्त की लम्बी लहराती हुई पंक्तियाँ हैं। यह लम्बा कुरता जैसे मेरे मासिक पत्र का अग्रलेख है ! और यह धोती जैसे एक खंड काव्य है !

पतंग धन्य-धन्य ! पर मेरी नश्वर वस्तुओं से साहित्य की उपमा मत दीजिये, अनंग जी ! साहित्य तो सरस्वती का वरदान है और ये वस्त्र......

अनंग दर्जी और धोबी का वरदान है ! अपने-अपने क्षेत्र में सब महान्

हैं, कवि जी! ख़ैर, जाने दीजिये। देखिये मैं दो काम लेकर आपके पास आया हूँ।

पतंग दो काम अहा! पाप और पुण्य, सुख और दुख, सूर्य और चन्द्र, प्रकाश और अंधकार सदैव दो ही की तो सत्ता है।

मै और तुम!

अहा!

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है तो तेरा।

तेरा तुझको सौंपते क्या लगेगा मेरा।

मेरा तेरा—तेरा मेरा।

अनंग ठीक है, तो तेरा-मेरा हो जाय! पहला काम तो यह है कि मैं यह जानने के लिए आया था कि आप कलकत्ते के कवि-सम्मेलन में जा रहे हैं या नहीं।

पतंग अहा! कितना सुन्दर अनुप्रास है! कलकत्ते का कवि-सम्मेलन! इसी अनुप्रास के अनुपम अन्वेषण पर मुझे कलकत्ते जाना पड़ेगा। आप भी तो उसे सुशोभित करेंगे।

अनंग जी नहीं, मैं नहीं जा सकूँगा। फिर मैं कवि तो नहीं हूँ। साधारण ढंग से साहित्य-सेवा करता हूँ। फिर भी संयोजक महोदय राम-खिलावन जी निमंत्रण भेज रहे हैं।

पतंग अहा! निमंत्रण का मूल्य तो प्राणों से भी देना उचित है। 'मौन निमंत्रण' के सम्बन्ध में आपने पढ़ा होगा।

अनंग यह तो सही है लेकिन हमारे यहाँ कवि-सम्मेलन इतने अधिक होते हैं कि उनके निमंत्रणों से टेबिल भर जाती है। अच्छे-अच्छे निमंत्रण पत्रों को मैं 'बुक मार्क' बना लेता हूँ। लेकिन 'बुक मार्क' भी कितने बनाऊँ? प्रति सप्ताह आते रहते हैं।

पतंग यह तो भगवती भारती की अर्चना है। प्रतिक्षण कवि-सम्मेलन हों तो और भी पुण्य की बात होगी।

अनंग कवि जी! कवि-सम्मेलनों की जैसी बाढ़ आ रही है उसे देखते हुए यह असम्भव नहीं है कि प्रतिक्षण कवि-सम्मेलन हो। मैं तो

कवि-सम्मेलनों पर एक लेख लिखना चाहता हूँ। इसलिए सभी कवि-सम्मेलनों के निमन्त्रण-पत्र इकट्ठे करता जाता हूँ। मेरे पास आँकड़े हैं।

पतंग साधु ! साधु !

अनंग क्या आप जानते हैं कि पारसाल जितने कवि-सम्मेलन हुए थे वे कब और किसलिए हुए थे ?

पतंग भगवती सरस्वती की सेवा गणना करने योग्य नहीं है !

अनंग लेकिन मैंने गणना की है। सुनिये ! पारसाल जितने निमन्त्रण मेरे पास आए उनमें साठ प्रतिशत नुमायश यानी प्रदर्शिनी में होने वाले कवि-सम्मेलन थे।

पतंग अहा, प्रदर्शिनी में ! तब तो कवि-सम्मेलन सार्थक हुए। संसार ही एक प्रदर्शिनी है और प्रदर्शिनी में कवि-सम्मेलन होना एक संसार में कवि-सम्मेलन होने के समान है।

अनंग जी हाँ, कवि-सम्मेलन ऐसे संसार में होते हैं जहाँ जादू के खेल होते हैं। बिना हाथ-पैर की मिस रोडा का सर बोलता है, मोटर साइकिल मौत के कुएँ में दौड़ती है। लिपस्टिक, चूड़ियाँ और गुब्बारे बिकते हैं। तो उसमें कविता के गुब्बारे उड़ना अच्छा ही है।

पतंग अहा ! आपने कविता को गुब्बारे की कितनी सुन्दर उपमा दी ! कविता भावनाओं की साँस से अनुप्राणित होकर व्योम में विहार करती है। कविता ! तुम धन्य हो !

अनंग कविता ! तुम सचमुच धन्य हो ! साठ प्रतिशत नुमायशी कवि-सम्मेलनों के बाद पच्चीस प्रतिशत कवि-सम्मेलन सेठों की थैलियों में उलझे रहते हैं।

पतंग अहा ! इस प्रतिशत ने सरस्वती और लक्ष्मी में मैत्री करवा दी। धन्य हो, पच्चीस प्रतिशत कवि-सम्मेलनों ! तुम धन्य हो !

अनंग जी हाँ, धन्य तो हैं ही। सेठ जी एक्ट्रेसों पर ख़र्च करने के साथ-साथ ही कवियों पर भी कुछ ख़र्च कर देते हैं।

पतंग सत्य, मुझे भी स्मरण हो आया। पिछले वर्ष मुझे तावड़ी जी का निमन्त्रण मिला था।

अनंग देखिये, मैंने कहा न ? तो पचासी प्रतिशत कवि-सम्मेलन तो ऐसे हुए। अब रह गये पन्द्रह प्रतिशत। तो इनमें पाँच प्रतिशत सोशल गैदरिंग के, पाँच प्रतिशत सभा-सोसाइटी में आने वाले डेलीगेटों के मनोरंजन के लिए, और पाँच प्रतिशत ब्याह, शादी और जनेऊ के।

पतंग अहा, ब्याह, शादी और जनेऊ के !

अनंग हाँ, बड़े आदमी—लक्ष्मीपुत्र क्या नहीं कर सकते ? पुराने-ज़माने के उत्सव अब 'आउट आफ़ डेट' हो गये, इसलिए कवियों को अब उनकी कमी पूरी करनी चाहिये।

पतंग अनंग जी ! कवि तो संसार के अहा ! सभी अभावों की पूर्ति करता है। जहाँ रवि की गति नहीं है, वहाँ कवि की गति है। कठिनाई तो यही है, अनंग जी ! कि कवि संसार की सृष्टि करने वाला ब्रह्मा होकर भी दरिद्र है ! इसलिए जो सेठ कवियों की सेवा करते हैं, वे धन्य हैं। अहा ! कवियों की सेवा ब्रह्मा की सेवा है।

अनंग लेकिन पतंग जी ! सेठों का विश्वास पुण्य में नहीं है, अपना नाम कमाने में है।

पतंग अहा, खेतों में उलटे-सीधे बीज भी जम जाते हैं। कवियों की सेवा तो होती है, भाव चाहे जो हो।

अनंग ठीक है, इस बहाने कवियों को लाभ हो जाता है।

पतंग लाभ तो होना ही चाहिये, अनंग जी ! उनके लाभ का और कोई साधन भी संसार में नहीं है। आकाश के असीम क्षेत्र में जिसकी सत्ता है, वह रेडियो भी बड़े कवियों की वाणी अंगीकार करता है। छोटे कवियों की वाणी बच्चे के झूले की तरह यहाँ-वहाँ डोलकर रह जाती है।

अनंग वह उपमा आपकी बड़ी अच्छी रही !

पतंग धन्यवाद ! लीजिए सिगरेट-पान कीजिये।

अनंग — जी नहीं, मैं सिगरेट नहीं पीता। वह तो आप जैसे कवियों को ही शोभा देती है। सफल कवि और सिगरेट, दोनों का साथ अच्छा है।

पतंग — (**गम्भीरता से**) हाँ, बड़े कवियो के साथ सिगरेट उसी प्रकार निवास करती है जैसे ईश्वर के साथ माया का निवास है।

अनंग — यह आपने ठीक कहा ! माया भी धुएँ की तरह है। उसका आकार हमेशा बनता-बिगड़ता रहता है। कवि जी ! आप तो सिगरेट के प्रेमी हैं ?

पतंग — सत्य, मैं सिगरेट का पान अवश्य करता हूँ। विशेषकर भगवती सरस्वती की आराधना करते समय।

अनंग — यानी कविता लिखते समय ?

पतङ्ग — सत्य, कविता की रचना करते समय। सिगरेट का धूम्र ही वह सोपान है जिस पर पैर रख कर सरस्वती देवी कवि की लेखनी में प्रवेश करती हैं।

अनंग — इसका रहस्य भी कुछ-कुछ मेरी समझ में आ रहा है।

पतङ्ग — आप धन्य हैं ! फिर तो यह रहस्य जानने के कारण आप भी रहस्य-वादी हैं।

अनंग — रहस्यवादी होऊँ अथवा न होऊँ लेकिन यह बात मेरी समझ में आती है कि पहले ज़माने में देवी-देवताओं को यज्ञ का धुआँ बहुत प्रिय था। अब यज्ञ तो हो ही नहीं सकते। घी की जगह डालडा भी इतना नहीं मिल सकता कि उससे यज्ञ हो। अगर मिल भी जाय तो लोग उसे खायें या यज्ञ में होम करें। तो आपकी सरस्वती देवी को सिगरेट के धुएँ से ही संतोष करना पड़ता है।

पतङ्ग — आपका यह कथन भी सत्य हो सकता है।

अनंग — तो फिर आप कलकत्ते जा रहे हैं ?

पतङ्ग — कलकत्ता बड़ा नगर है, वहाँ कवि-सम्मेलन चाहे तो प्रतिदिन अव-तार ले सकता है।

अनंग — इस कवि-सम्मेलन के सभापति कौन होंगे ?

पतंग — सभापति ? नगर के लक्ष्मीपुत्र श्री-श्री अमोलक चन्द जी बागड़िया।

अनंग जिन पर इनकम टैक्स का मामला चला था ?

पतंग किन्तु वे निर्दोष थे। मुक्त हुए। उन्होंने बहुत-सी संस्थाओं को दान दिया। उसी सफलता पर बधाई देने के लिए यह कवि-सम्मेलन है।

अनंग अच्छा, तो कवि-सम्मेलन की एक कोटि, यह भी निकली। 'बधाई-दिलावन कवि सम्मेलन।' तब तो आप बधाई देने वाली कविता वहाँ ज़रूर पढ़ेंगे।

पतंग बधाई तो आनन्द की बात है, और कविता और आनन्द अलग-अलग नहीं हैं। कविता में रस और रस में लोकोत्तर आनन्द। फिर उन्होंने मेरी भेट भी पूरी दी।

अनंग अच्छा, कितनी ?

पतंग प्रथम श्रेणी के तीन टिकट और २०१ रुपये ऊपर से।

अनंग ये तीन फ़र्स्ट क्लास के टिकट कैसे ?

पतंग दो तो स्वयं के लिए और एक तानपूरा बजाने वाले के लिए।

अनंग तानपूरा बजाने वाले के लिए ?

पतंग सत्य, यह तो आपको ज्ञात है कि मैं स्वर से अपनी कविता पढ़ता हूँ। तो अहा, अब मैंने यह अनुभव किया है कि यदि कविता के साथ अहा ! तानपूरा बजाऊँ तो सारे कवि-सम्मेलन में मेरी कविता ही सर्वश्रेष्ठ करतल-ध्वनि प्राप्त करेगी।

अनंग हाँ, यह बात तो ठीक है, कविता और संगीत का अटूट सम्बन्ध है।

पतंग और अनंग जी, मैंने कविता और तानपूरे पर अनेक प्रयोग भी किये हैं जिनमें अहा, मैं पूर्ण सफल हुआ हूँ।

अनंग कैसे प्रयोग ?

पतंग मैंने मुक्त वृत्त की कविता को तानपूरे से मिला दिया है। मैं मुक्त वृत्त भी स्वर से पढ़ सकता हूँ और तानपूरे से उसकी सङ्गति भी जमा लेता हूँ।

अनंग वाह ! क्या कहना है ! तो फिर सुनाइये न ?

पतंग ध्यान तो इस समय नवीन काव्य रचना का है किन्तु आपका अनुरोध है तो फिर कविता ही सुना दूँगा। **(ध्यान में)** अहा, सुनिए !

(तानपूरा छेड़ते हैं) है तो मुक्त वृत्त किन्तु किस ढंग से मैंने उसे तानपूरे पर जमाया है **(स्वर भरते हैं)** आ···आ···आ···आ···ा···ा···ा···
(स्वर में गुनगुनाते हैं) ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ ऊँ
(तानपूरा के साथ कविता प्रारम्भ करते हैं)
मेरी प्रेयसि !···मेरी प्रेयसि !
मेरी प्रेयसि ! मेरी प्रेयसि !
तुम शोभा की नव नहर
लहर कर आती हो, आती हो,

अनंग — ठीक है, सरकार की स्कीम भी नहर बनाने की है। भाखरा नांगल प्रोजैक्ट तो 'फाइव ईयर प्लैन' में है। यह युगवाणी है।

पतंग — अहा ! आप चतुर्मुखी आलोचना के अवतार है। सुनिए (**दुहराते हुए**) मेरी प्रेयसि ! मेरी प्रेयसि !

तुम शोभा की नव नहर
लहर कर आती हो !
गाती हो !
बुलबुल में कुछ गाती हो !

अनंग — यह बुलबुल कहाँ से आयी ?

पतंग — यों पुरानी बुलबुल उर्दू और फ़ारसी कविता में हैं पर यहाँ बुलबुल याने बुलबुला। यह नया प्रयोग है। अहा, लहर में बुलबुला होता है न जीवन की तरह ? एक क्षण मे फूटने वाला। और सुनिये—
तुम हो चम्पे की कली
विजन बन की वल्लरियाँ झूम रहीं, झूम रहीं
शोभा की नरगिस घूम रहीं।

अनंग — अच्छा, ये नरगिस ? फ़िल्म एक्ट्रेस ?

पतंग — मेरी कविता के शब्द अनेक अर्थ देते हैं। अहा ! कामधेनु हैं, चाहे जितना दूध दुह लीजिए। तो सुनिए। **(फिर तानपूरा छेड़कर)**
शोभा की नरगिस घूम रहीं,
नयनों में झूम रहीं,

मेरी प्रेयसि ! मेरी प्रेयसि !

(तानपूरा बजता रहता है)

अनंग — अहा, धन्य हैं आप। नहर और नरगिस में अनुप्रास भी है। आप घर और बाहर दोनों जगह ही महान हैं। इसी महानता में मेरा दूसरा काम भी पूरा कर दीजिए।

पतंग — **(तानपूरा बजाना बन्द करते हुए)** आज्ञा कीजिए।

अनंग — आपसे अपने मासिक पत्र के मुख-पृष्ठ के लिए एक कविता चाहिए !

पतंग — धन्य हैं, आप ! यदि कविता लेने के लिये आए हैं। पहले आप तांबूल स्वीकार कीजिए। उसमें भी वही अरुणिमा है, राग है, जो कविता में है। **(पुकारकर)** अरे राम परिवर्तन ! ओ राम परिवर्तन ! **(नेपथ्य में)** आया, बाबू जी !

अनंग — राम परिवर्तन ! यह किसका नाम है ?

पतंग — मेरे सेवक का नाम है ! यों तो उसका नाम रामबदल है, किन्तु वह नाम मुझे अच्छा नहीं लगा। मैंने रामबदल को बदलकर राम परि-वर्तन रख लिया ! अर्थ तो वही है। राम परिवर्तन सुनने में अच्छा लगता है ! आपको भी अच्छा लगता होगा। **(तान पूरा अलग रखते हैं।)**

अनंग — बहु अच्छा। ऐसे दस नौकर रख लें तो राम के दस परिवर्तन हो जायँ।

(रामबदल का प्रवेश)

पतंग — देखो, सामने की पान-पीठ से पान ले आओ !

रामबदल — पान-पीठ ! ई केकर नाम है, बाबूजी !

अनंग — अरे विद्यापीठ नाम, तूने नहीं सुना। उसी तरह पान-पीठ है। अरे पान की दूकान।

रामबदल — सरकार, ऐसन कहें तो हम समझी। कतेक डब्बल का लाई !

पतंग — अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की संख्या का।

अनंग — चार पैसे का ले आ !

रामबदल — हमार मालिक ऐसनै बानी बोलत हैं कि दस मिनट तो हमका समझे

में लाग जात है। एक मिलट के काम और दस मिलट समझै का चाही ! मुदा काव कही, मालिक भला मनई अहैं।

पतंग मालिक नहीं—स्वामी ! स्वामी !

(**रामबदल का पतंग को देखते 'सामी-सामी' कहते हुए प्रस्थान**)

पतंग कितना प्रयत्न करता हूँ कि यह सेवक वाणी की पवित्रता समझे। अहा ! यह वाणी जो मानव की दिव्य विभूति है, वीणापाणि का वरदान है !

अनंग सत्य है, कवि जी ! धीरे-धीरे समझ जायगा। हाँ, तो कविता के विषय में बात कर रहा था—मुझे कविता चाहिए।

पतंग अनंग जी ! वह कवि धन्य हैं जिसके द्वार पर पत्र-सम्पादक कविता लेने आता है। अहा ! सूर्य पूर्व दिशा के द्वार आता है, कहता है, कि मुझे उषा चाहिये ! मेरे समान ऐसे कितने कवि हैं जो भाग्यशाली हैं। बहुत से कवियों की रचनाएँ शकुन्तला की भाँति महाराज दुष्यन्त के राज-कक्ष से लांछित होकर लौट आती हैं !

अनंग आप ता कविता में ही बात करते हैं ! आपकी कविता तो द्रौपदी है जिसे पाँच-पाँच पत्र-सम्पादक चाहते हैं।

पतंग (**हँसकर**) पर उसके पीछे महासमर तो नहीं होगा !

अनंग आलोचना के तीर तो चलेंगे ही, महाभारत हो या न हो !

पतंग मैंने आपके लिये ही अपनी पुस्तक में बहुत-सी कविताएँ लिखकर रक्खी हैं। जितनी आप चाहें, ले सकते हैं। देखिये, मैं अभी देता हूँ। (**अपनी नोट बुक आलमारी में खोजते हैं। वह नहीं मिलती।**) आएँ ! (**चिन्तित होकर दूसरी जगह खोजते हैं। शीघ्रता से काँपते हुए इस जगह और उस जगह। कुर्सियों के आगे-पीछे और तख़्त के नीचे भी झाँककर देखते हैं। प्रत्येक बार 'हाय-हाय' कहते हैं। अनंग उठकर कुतूहलपूर्वक उसे देखते हैं।**)

अनंग क्या हुआ, कवि जी ! आपकी पुस्तक कहाँ है ?

पतंग (**करुण स्वर में**) कहाँ है ! हाय ! मेरी पुस्तक कहाँ है ! किसने उसका अपहरण किया !

अनंग अपहरण ?

पतंग हाय ! यह काव्य की सरिता किस दिशा में बह गई ! हाय ! वह काव्य की चिड़िया किस दिशा में उड़ गयी ! हाय ! वह काव्य की शकुंतला किस वन में चली गयी ! इस धूप दान का धूम ही तो उसे कहीं नहीं उड़ा ले गया !

अनंग क्या पुस्तक कहीं खो गई है ? आपने कहाँ रक्खी थी ?

पतंग हाय ! मैंने अच्छी-भली उसे सँभालकर रक्खी थी ! उन पुस्तकों के पीछे ! क्या जानता था कि वह नहीं मिलेगी ! इस तरह इतनी जल्दी वह अन्तर्धान हो जायगी ! हाय ! मैं अपने कलेजे में लेखनी भौंककर आत्म-हत्या करूँगा ! (**आँखों से आँसू पोंछते हैं ।**)

अनंग आत्म-हत्या करने से आपकी अमर लेखनी टूट जायगी । देखिए, आप इतना दुःख न करें । आपने अपने भावों में डूबकर अपनी पुस्तक कहीं रख दी होगी । बाद में मिल जायगी !

पतंग (**स्वस्थ होकर**) आप सच कहते हैं ? मिल जायगी । फिर से कहिए एक बार कि मिल जायगी ।

अनंग हाँ, हाँ, जल्द ही मिल जायगी ।

पतंग वीणापाणि ! मेरी कविता-पुस्तक जल्दी मिल जाय ! मैं अपनी कविता-पुस्तक का वियोग सहन नहीं कर सकता । हाय मेरी कविता-पुस्तक ! तुम कहाँ हो ! तुम्हारी हर एक पंक्ति कितनी सुन्दर थी ! अनंग जी ! मैंने चार-चार बार काटकर एक-एक पक्ति लिखी थी । जैसे प्रथम परीक्षा में चार बार अनुत्तीर्ण होकर मैं पाँचवीं बार उत्तीर्ण हुआ था । तो आप सत्य ही कहते हैं कि मेरी कविता-पुस्तक मुझे मिल जायगी ?

अनंग आप धैर्य रक्खें, मैं कहता हूँ कि आपकी कविता-पुस्तक आपको मिल जायगी ।

पतंग धन्य हैं, आप ! धन्य हैं ! अगर आप पत्र-सम्पादक न होकर पत्थर होते तो मैं आपको देवता बनाकर आपकी पूजा करता । अस्तु ! पूजा तो मैं अब भी करूँगा !

अनंग तब मैं नैवेद्य के रूप में कविता ही ग्रहण करूँगा । (**स्मरण कर**) हाँ, मेरे आने के पहले आप एक कविता गुन-गुना तो रहे थे । अभी वही कविता दे दीजिये !

पतंग वह कविता नहीं थी, अनंग जी । वह मंत्र था, मंत्र ! साधारण मंत्रों के अक्षर तो अनमिल और बिना अर्थ के होते हैं । मेरे मंत्र के अक्षर मिले हुए और अर्थ से भरे हुए, जैसे अंगूर में रस ।

अनंग अच्छा तो आप मंत्र पढ़कर रस चख रहे थे ! तो फिर मुझे चले जाना चाहिए था । मेरे रहने से आपके मंत्रों में बाधा पड़ी । मंत्रों के भाव कहीं बिगड़ न गए हों !

पतंग भाव ?

अनंग जी हाँ, आजकल सभी चीजों के भाव बिगड़ रहे हैं ।

पतंग अहा, तब तो भाव बिगड़ने से भाव-भंगी का दृश्य होगा ।

अनंग किस भंगी का ?

पतंग भंगी का नहीं, भाव-भंगी का । उसमें कितना बल है, अहा । कितना सौंदर्य है । भाव-भंगी जीवन का सौंदर्य है, इसी भाव-भंगी में मैं मंत्र पढ़ रहा था । सरस्वती देवी की आराधना में ।

अनंग क्या आपकी पत्नी का यही नाम है ? सरस्वती देवी ! उनकी आराधना......

पतंग (**आँखें फाड़कर**) पत्नी ? मेरे पास पत्नी कहाँ है ? अनंग जी ! पत्नी और कविता में चूहे-बिल्ली का सम्बन्ध है । पत्नी आई कि कविता गई । पत्नी नहीं है, तो कविता आनन्द से उछलती है, कूदती है । निकलती है, बिल में समा जाती है (**स्मरण कर**) आयँ, कहीं मेरी कविता-पुस्तक तो किसी बिल में नहीं समा गई !

अनंग आपके लम्बे केशों को देखकर कविता को कहीं पत्नी का भ्रम न हो गया हो !

पतंग मेरे लम्बे केश ! अहा ! ये तो कविता की लम्बी लकीरें हैं जो विधाता ने मेरे मस्तक के समीप गूँथ दी हैं। अहा ! कविता की लम्बी लकीरें।

अनंग तो फिर आपका सिर न हुआ, महाकाव्य हुआ, जिसमें अनगिनती कविता की लकीरें हैं।

पतंग आप समझे नहीं, अनङ्ग जी ! मैं जब इन्हें हाथ से सहलाता हूँ तो कविता बहुत शीघ्र बन जाती है।

अनंग हाँ, तो वह कौन-सी कविता है जो आप मंत्र की तरह पढ़ रहे थे ?

पतंग आप उसे सुनना चाहेंगे, अहा ! बड़ी सुन्दर उपमाएँ हैं—सुनिये !

अनंग सुनाइए !

पतंग **(तानपूरा फिर उठाकर स्वर भरते हुए)** जीवन की गोधूली में..... **(रुककर)** हाय ! मेरी कविता की पुस्तक खो गई !

अनंग वह मिल जायगी !

पतंग अनंग जी ! बार-बार उसकी हूक मेरे हृदय में उठती है ! मैं कैसे धैर्य धारण करूँ !

अनंग धैर्य तो धारण करना ही होगा।

पतंग तो आपके कहने से मैं धैर्य धारण करता हूँ। धैर्य धारण करने के बाद सुनाता हूँ, वह मंत्र—

अनंग हाँ, सुनाइए—

पतंग **(फिर स्वर भरते हैं।)**
जीवन की गोधूली में—
जब गाएँ लौट रही हों !

अनंग वाह ! कितना स्वाभाविक चित्र है—जब गाएँ लौट रही हों। वाह ! दिन भर की थकी हुई गाएँ किस तरह लौट रही हैं—जंगल से लौट रही हैं—नदी से लौट रही हैं—कहाँ-कहाँ से लौट रही हैं—कितना स्वाभाविक चित्र है—जब गाएँ लौट रही हों !

पतंग (उत्साह से) जीवन की गोधूली में
जब गाएँ लौट रही हों
तब उनके गले लिपटकर

अनंग उनके गले लिपटकर—वाह ! गले से लिपटने का कितना सुन्दर चित्र है—इच्छा होती है आपके गले से लिपट जाऊँ !

पतंग तब उनके गले लिपटकर
अभी थोड़ी देर रुकने का कष्ट करें। पहले कविता-मंत्र सुन लें।
हाँ, तो **(तानपूरा छोड़ते हुए)**
घंटी-सी बजती जाओ

अनंग वाह ! घंटी-सी बजती जाओ ! घंटी-सी ! घंटी-सी ! वाह ! आपने वीणा नहीं कही, बाँसुरी नहीं कही, घंटी कही। वाह ! गले में घण्टी। घंटी-सी बजती जाओ ! इसके आगे मन्दिर का घण्टा कोई चीज़ नहीं है, कवि जी !

पतंग **(फिर दुहराते हैं)** तब उनके गले लिपटकर
घंटी सी बजती जाओ !
ओ मेरी कविता-प्रेयसि !
ओ मेरी कविता-प्रेयसि !

(रामबदल कागज़ की पुड़िया में पान लेकर आता है। वह धीरे-धीरे आकर तख्त पर पान की पुड़िया रखता है।)

पतंग दुष्ट कहीं का ! कविता में बाधा डाल दी ! और पान इस पुड़िया में लाकर देता है ? अरे पान-पात्र में लाता ! ले जा इसे। पान-पात्र में ले आ। इधर मैं कविता पढ़ूँ, कविता को पुकारूँ और तू इस पुड़िया में पान लाए। पान न हुआ, चूरन की गोली हुई। इस पुड़िया में इस सड़ी-सी पुड़िया में......(**पुड़िया देखते हुए**) आयँ, मेरी कविता ! मेरी कविता-पुस्तक का एक पन्ना पान की पुड़िया बना हुआ, यहाँ कैसे। यही तो है मेरी कविता, मेरे ही हाथों से लिखी हुई। मेरी कविता-पुस्तक का पन्ना ?

अनंग उसी खोई हुई कविता-पुस्तक का ?

पतंग (**करुण शब्दों में**) अरे उसी कविता-पुस्तक का। हाय! हाय!!

अनंग देखिए, मैंने कहा था न कि आपकी कविता आपको मिल जायगी! और जब आपने पुकारा—'ओ मेरी कविता-प्रेयसि!' तो कविता आ गई!

पतंग (**अधिक करुण स्वर में**) हाय! मेरी कविता-पुस्तक! यही तो है!

अनंग ओफ़! आपकी वाणी में कितना बल है, कितना प्रभाव है! कहते ही कविता आ गई!

पतंग अरे, उस पान वाले के पास मेरी कविता की पुस्तक कैसे पहुँची! ओ! राम परिवर्तन! ये पानवाला मेरी कविता की पुस्तक कैसे पा गया!

रामबदल बाबू! एक दिन पान वाला दाम के खातिर हियन आवा रहा। आप रहेन नाहीं। ऊ दाम नाही पावा तो किताबै लएगवा होई!

पतंग अरे, तो तूने उसे रोका क्यो नहीं? हाय! मेरी कविता-पुस्तक...।

अनंग आपको प्रसन्न होना चाहिए, पतंग जी! कि जनता में आपकी कविता के पृष्ठ पान के साथ हाथों-हाथ पहुँच रहे हैं! यह तो आपकी कविता का प्रचार है।

पतंग (**रुदन स्वर में**) देखता हूँ, मैं उस प्रचार करने वाले को! हाय! मेरी कविता-पुस्तक! हाय! मेरी कविता-पुस्तक! देखता हूँ उस पान वाले को (जाता हुआ) मेरी कविता पान की पुड़िया बने? मेरी कविता का इतना अपमान! मैं कवि हूँ, शाप दे सकता हूँ। ओ मेरी कविता की सरस्वती! उस पान वाले के वंश में कभी ऐसा व्यक्ति न हो जो तुम्हारी कविता को छू भी सके। उसकी दूकान पर प्रलय के बादलों की वर्षा हो। उसकी दूकान ही ज्वालामुखी बन जावे। मैं, अपनी अँजुली में जल भरकर नहीं, नहीं, लेखनी की स्याही भरकर, अभी उसको शाप दूँगा।

(**प्रस्थान**)

अनंग अजी, सुनिये तो, कवि जी! कहाँ जा रहे हैं? ज्वालामुखी का लाल रंग तो उसके पान में पहले से ही है! अरे, पतंग जी!

(**पीछे-पीछे प्रस्थान**)

पतंग (**नेपथ्य से**) अब मैं कवि-सम्मेलन में क्या जाऊँगा! पहले उस पान-वाले की दूकान जाऊँगा। उस अभागे को शाप दूँगा कि भविष्य में पान बाँधने के लिए उसे साधारण काग़ज भी प्राप्त न हो! अपनी अंजुलि में 'स्वान इंक' भर कर उसे शाप दूँगा। हाँ, अभी शाप दूँगा! कहाँ है, मेरी प्यारी 'स्वान इंक!'

रामबदल (**मुस्कुरा कर**) ढील माँ पड़ गयन, हमार पतंग बाबू!

(**प्रस्थान**)

(**परदा गिरता है**)

नमस्कार की बात

पात्र-परिचय

सेठ चैनसुखदास—चित्रपट के निर्माण में लगे हुए धन-सम्पन्न व्यवसायी
मधुलता—एक अभिनेत्री
राजीव—एक अभिनेता

स्थान—बम्बई-स्थित किसी स्टूडियो के समीप का भवन
समय—७ बजे, संध्या

नमस्कार की बात

'एक सजा हुआ कमरा जिसमें प्रकाश और वायु की यथेष्ट गति है। दीवारों पर महात्मा गांधी तथा अभिनेता एवं अभिनेत्रियों के चित्र सजे हुए हैं। फ़र्श पर अच्छे कारपेट तथा ऊनी नमदे बिछे हुए हैं। बीच में सोफा-सेट सजा हुआ है जिसकी बनावट अत्यन्त आधुनिक ढंग की है और जो पालिश से चमक रहा है। सेठ के बीच में एक गोल टीपाय है जिस पर अर्धनग्न स्त्री की संगमरमर की बनी हुई एक छोटी-सी मूर्ति है। दरवाज़ों पर हल्के रंग के जालीदार परदे लगे हुए हैं। सारे कमरे में एक प्रातःकालीन पवित्रता है।

कुछ हटकर कोने में एक आल्मारी है जिसमें कला पर लिखी हुई सुनहली जिल्दों को मोटी-मोटी पुस्तकें हैं। सामने मेण्टलपीस है, उसके नीचे अँगरेज़ी ढंग की लोहे के छड़ों से सुसज्जित एक अँगीठी। उसके दोनों ओर एक-एक आरामकुर्सी पड़ी हुई है। स्टेज के बायें ओर एक खिड़की है जो रेक्टेंगुलर है जिसमें आक्टागनल शीशे लगे हुए हैं। खिड़की से वायु का झोंका, बटन दबाने पर एनक्लोज़िंग केस से निकलनेवाले गुड्डे की तरह कमरे में आ जाता है।

कमरे के सामनेवाली दीवाल पर मोटे और कलात्मक अक्षरों में उत्कीर्ण है 'संसार ही रंगमंच है'। मेण्टलपीस पर सेठ चैनसुखदास और दो-तीन अभिनेत्रियों के फ़ोटो हैं। दाहने-बायें कोने में छोटी-छोटी तिपाइयों पर चीनी मिट्टी के दो सफ़ेद हाथी रखे हुए हैं।

सितम्बर के महीने की शाम है। परदा उठने पर सेठ चैनसुखदास टहलते हुए दीख पड़ते हैं। वे ५० वर्ष के भरे हुए बदन के आदमी हैं। रेशमी कुरते के ऊपर नीले रंग की जवाहर वास्कट है। मलमल की धोती और पंप शू।

बाल आधे से अधिक सफेद हो गये हैं जो ढंग से सँवारे हुए हैं। पाकेट से घड़ी की चेन लटक रही है। पान खाये हुए हैं। रह-रहकर वे एक छोटी-सी डिब्बी से नस्य सूँघ लेते हैं।

उनके सामने काउच पर मधुलता बैठी हुई है। १८ वर्षीया युवती। भाव भंगिमा में वह सुन्दरी कही जा सकती है। हलके हरे रंग की रेशमी साड़ी है और पीले रंग का ब्लाउज। बालों में फूल गुँथे हुए हैं। माथे में कुंकुम बिन्दु है। भौहें काली रेखा से सुडौल हैं। गले में हलकी-सी सोने की चेन है और हाथ में पतली रेशमी चूड़ियाँ। वह राजस्थानी चप्पलें पहने हुए है।)

चैनसुखदास (टहलते हुए) तो आज मैं तुमसे बहुत ज़रूरी बातें करना चाहता हूँ! (चुटकी में लेकर नस्य सूँघते हैं।)

मधुलता (मुस्कुरा कर) कीजिए।

चैनसुखदास (रूमाल से नाक का नस्य झाड़ते हुए) मिस मधुलता! आप शायद नहीं जानतीं कि मैं चित्रपट के व्यवसाय में क्यों आया? इसलिए नहीं कि मैं इस लाइन में रुपयों से अपनी तिजोरियाँ भर लूँ। वैसा तो मैं शेयर मार्केट में भी कर सकता हूँ और किया भी है; सेठ चैनसुखदास का नाम कौन नहीं जानता! लेकिन फ़िल्म लाइन में आने का मेरा ख़ास मतलब यही था कि मैं अपने देश की कला को अजन्ता और एलोरा की गुफाओं से निकालकर नगर-नगर में फैला दूँ। मैं देश के प्राचीन गौरव को एक बार फिर से जगाना चाहता हूँ। संसार देखे कि हमारे देश में कलाकारों ने कला को कितनी गहराई से परखा है। आप समझ रही हैं, मिस मधुलता? यह संसार ही रंगमंच है। (दीवाल की ओर संकेत)

मधुलता जी, आप कहते चलिए।

चैनसुखदास इसीलिए मैंने महात्मा बुद्ध का चित्र बनाया, हर्षवर्धन का चरित्र उपस्थित किया, चाणक्य की राजनीति चित्रित की, अब राज्यश्री का चित्र तैयार कर रहा हूँ; जिसके लिए मैंने आपको विशेष रूप से पसन्द किया है।

मधुलता जी।

चैनसुखदास मालूम होता है कि आप मेरी बातें ध्यान से नहीं सुन रही हैं! **(नस्य सूँघते हैं।)**

मधुलता मैं तो बहुत ध्यान देकर सुन रही हूँ। लेकिन इन बातों को तो मैं अनेक बार सुन चुकी हूँ।

चैनसुखदास आप क्या, और लोग भी सुन चुके होंगे; लेकिन हमारे देश के लोग सिर्फ़ सुनना जानते हैं, सुनकर काम करना नहीं जानते। मैं तो कहते-कहते थक गया हूँ लेकिन लोग सुनते-सुनते नहीं थके।

मधुलता आप किसी के मन की क्या जानें?

चैनसुखदास **(मुस्कुरा कर)** यही जानने के लिए तो मैं अपना सारा काम छोड़ कर यहाँ आया हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि आप क्या समझती हैं! मेरा यह ख़्याल आपको पसन्द है?

मधुलता मैने कभी अपनी नापसन्दी तो ज़ाहिर नहीं की।

चैनसुखदास ओ हो, नापसन्दी ज़ाहिर न करना एक बात है और पसन्दी ज़ाहिर करना दूसरी बात! मेरी तो अभिलाषा थी कि आप मेरे इस प्रस्ताव पर प्रसन्नता से झूम उठतीं कि मै अपनी समस्त सम्पत्ति देश के प्राचीन गौरव को सजीव करने में समर्पित करने जा रहा हूँ और आपको हीरोइन का पार्ट देने जा रहा हूँ।

मधुलता यह आप की कृपा है!

चैनसुखदास यह मेरी कृपा नहीं। आह समझिये, मिस मधुलता! यह आपकी सुन्दरता और कला की परीक्षा है। आपको यह दिखलाना होगा कि आपके अभिनय में प्राचीन सभ्यता दीपावली की भाँति जगमगा रही है। आपकी मुस्कान में देश का मनुष्य हँस रहा है और आप के आँसू में देश की नारी रो रही है। आप जिस ओर देखती हैं उस ओर सुख और शान्ति के फूल खिल उठते हैं। इस गम्भीर ज़िम्मेदारी को समझती हैं?

मधुलता यह गम्भीर ज़िम्मेदारी प्राचीन काल के मनुष्यों ने ही तो सँभाली थी। मैं भी सँभाल सकूँगी। यह कोई असम्भव कार्य तो नहीं है।

चैनसुखदास मैं यह सुनकर प्रसन्न हूँ। आपसे मुझे ऐसी ही आशा है। इसीलिए तो मैंने आपको राज्यश्री के पार्ट के लिए चुना है। बस, मैं यही कहना चाहता था कि आप अपनी ज़िम्मेदारी समझें। बस, मैं अब चलूँ (**नस्य फिर लेते हैं।**) मैंने आपका बहुत समय लिया। (**चलने को उद्यत होते हैं।**)

मधुलता (**खड़े होकर**) मैं आपको नमस्कार करती हूँ। (**दोनों हाथ जोड़ती है।**)

चैनसुखदास नमस्कार (**दो क़दम चलकर फिर लौटते हैं।**) लेकिन एक बात मुझे और कहना था। आप मुझसे अधिक शिष्टाचार न करें! जी? (**संकेत करते हुए**) यह संगमरमर की प्रतिमा भी कोई शिष्टाचार करती है?

मधुलता शिष्टाचार! यानी?

चैनसुखदास चिष्टाचार......शिष्टाचार यानी...ऊपरी दिखावे का व्यवहार!

मधुलता मैं ऊपरी दिखावे का व्यवहार कब करती हूँ?

चैनसुखदास यानी आप नहीं करतीं...लेकिन यह करती हैं न कि—यानी यही उठना-बैठना।

मधुलता उठना, बैठना?

चैनसुखदास (**हिचकिचाकर**) यानी यही—मेरे आने पर उठना-बैठना...

मधुलता तो अपने से उम्र में बड़ों का आदर करना......

चैनसुखदास तो मैं उम्र में इतना बड़ा कहाँ हूँ। यही कुछ बड़ा हूँ! और बाल तो आजकल बहुत झूठ बोलते हैं। इस पर न जाइये। उस छोटे राजीव को ही देखिए न! उसके भी दो-चार बाल सफ़ेद हो गये हैं। अभी कल का लड़का!

मधुलता इस सम्बन्ध में मैं क्या कह सकती हूँ!

चैनसुखदास तो आप कुछ न कहें। यही तो मैं चाहता हूँ कि आप इस सम्बन्ध में कुछ न कहें—कुछ न सोचें।

मधुलता मुझे सोचने का अवकाश ही नहीं है।

चैनसुखदास ओहो! मुझे कितनी प्रसन्नता है कि आपने अपनी गंभीर ज़िम्मेदारी

में अपने को इतना अधिक लीन कर लिया है कि आपको और कुछ सोचने का अवकाश ही नहीं है ! इस सम्बन्ध में मुझे एक कहानी याद आ गई ।

मधुलता (**व्यंग्य से**) वह भी कह डालिए—

चैनसुखदास (**उत्साह से**) हाँ, बसरा में एक स्त्री थी। उसका नाम राबेआ था। उसने एक बार कहा—रसूल को मैंने एक बार सपने में देखा। रसूल ने पूछा—ऐ राबेआ, तू मुझसे आत्मीयता रखती है ? राबेआ ने जवाब दिया—ऐ अल्लाह के रसूल ! कौन है जो तुमसे मैत्री नहीं रखता ? लेकिन ईश्वर के प्रेम में मैं इतनी लीन हो गई हूँ कि दूसरों के लिए मेरे मन में मित्रता या शत्रुता का स्थान ही नहीं रह गया।' उसी तरह आप हैं। (**नस्य लेते हैं।**)

मधुलता अच्छी कहानी है।

चैनसुखदास ठीक है न ? इसलिए राजीव से आत्मीयता का सवाल ही नहीं उठता। और मैं तो ऐसा हूँ कि मैं कलाकारों का बड़ा आदर करता हूँ। आप कलाकार हैं तो मैं आपकी कला की पूजा करता हूँ, आपकी पूजा करता हूँ। आपकी सिद्धि ही मेरी साधना है। इस क्षेत्र में गांधी जी मेरे आदर्श हैं। गांधी जी। (**गांधी जी के चित्र के समीप जाते हैं।**)

मधुलता यह आपकी महानता है।

चैनसुखदास मेरी महानता क्या है, मधुलता ! लेकिन मैं इसमें विश्वास रखता हूँ कि कलाकारों को जीवन की समस्त सुविधाएँ देनी चाहिए और यह तभी सम्भव हो सकता है जब उनसे आत्मीयता का सम्बन्ध रक्खा जाय। यानी जब उन्हें अपना लिया जाय। (**हिचकते हुए**) यानी आप मेरी बात समझती हैं न, मिस मधुलता ?

मधुलता जी ! उनसे आत्मीयता का सम्बन्ध रक्खा जाय यानी उन्हें अपना लिया जाय !' यह बात मैं नहीं समझी !

चैनसुखदास इसमें कौन-सी उलझन है ? (**नस्य लेते हैं।**) आत्मीयता का

सम्बन्ध तभी हो सकता है जब उन्हें अपना लिया जाय। यानी उन्हें वही सुविधाएँ देनी चाहिए जो—

मधुलता कैसी सुविधाएँ?

चैनसुखदास (**हँसकर नस्य की डिब्बी मेज़ टेलपीस पर रखते हुए और गद्गद् होकर हाथ मलते हुए**) मालूम होता है, आपका कलाकारों के जीवन से अधिक परिचय नहीं है। कोई बात नहीं, धीरे-धीरे हो जायगा। मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप आत्मीयता के सिद्धांत को नहीं समझीं या मेरे व्यक्तिगत दृष्टिकोण को?

मधुलता दोनो को।

चैनसुखदास (**लज्जित होकर**) कोई बात नहीं। ये बातें तो धीरे ही धीरे समझ में आती हैं। अब आपके लिये मैंने अपने राज-निवास के सामने का ही बँगला निश्चित कर दिया है। धीरे-धीरे आप कलाकारों के आदर्शों को समझ जायँगी। अच्छा, अब मैं जाना चाहूँगा। (**चलते हैं, लेकिन फिर रुक कर**) हाँ, एक बात और है। मैं यह आत्मीयता का सम्बन्ध अपने ही सम्बन्ध में कह रहा हूँ, क्योंकि मै ही आपकी कला के साधन जुटा सकता हूँ जिससे आप देश-विदेश में आदर और सम्मान पा सकती हैं। कुछ दिनों में आप करुणा का अभिनय करने वाली सबसे बड़ी अभिनेत्री हो सकती हैं, दमयन्ती का अभिनय कर सकती हैं! दमयन्ती का—राज्यश्री का। ऐसे आदमियों की आत्मीयता से क्या लाभ जो आपको अपनी कला के मार्ग से दूर कर देते हैं?

मधुलता ऐसे कौन से आदमी हैं?

चैनसुखदास (**सोचते हुए**) अब मैं ही ऐसे नाम गिनाऊँ? (**सहसा**) जैसे राजीव को ही लीजिये। कल का लड़का जो अभी इण्टरमीडिएट कालेज से लौटा है। बिल्कुल सीधा-सादा! वह तो कहो कि मेरे मित्र का लड़का है और देखने में सुन्दर है—यों ही थोड़ा-सा। मैंने मित्रता के लिहाज़ से उसे पार्ट दे रक्खा है। पार्ट क्या दे रक्खा है एक चांस दिया है। अगर कुछ काम कर गया और फ़िल्म चौपट

नहीं हुआ तो ठीक है, नहीं तो ऐसे सौ राजीव आवेंगे। ऐसे कल के छोकरों से आत्मीयता बढ़ाने से आपकी कला का क्या विकास होगा? इसीलिए मैंने कहा कि ऐसे आदमियों से आप दूर ही रहें। और……

मधुलता देखिये, शायद आपको देर हो रही है!

चैनसुखदास देर? मुझे क्या होगी? मैं किसी का नौकर तो हूँ नहीं। सेठ चैनसुखदास के दर्जनों नौकर हैं।

मधुलता (मुस्कुराकर) आप उन नौकरों में मुझे तो शामिल नहीं करते?

चैनसुखदास (हँसकर उत्साह से) आपको? अरे आपको अपना नौकर! ओहो, यह बड़ी मज़ेदार बात कही आपने! आपका नौकर तो मैं हूँ! कलाकारों का सबसे बड़ा सेवक! इसीलिए तो अपनी आत्मीयता की बात आपसे कह रहा हूँ! आपसे—केवल आप से ही।

मधुलता जी!

चैनसुखदास अब मैं बहुत प्रसन्न हुआ कि धीरे-धीरे आप मुझे समझती जा रही हैं। अब मुझसे नमस्कार न कीजिएगा! अपनों से क्या नमस्कार? अच्छा, तो अब मैं जाऊँगा। कोई भी बात हो, आप मुझसे कहें—और मुझसे नमस्कार न करें...(**हँसते और गद्गद् होते हुए**) हँ, हँ, अपनों से क्या नमस्कार...अपनों से क्या नमस्कार...(**कहते-कहते प्रस्थान। सेठ साहब अपने नस्य की डिब्बी भूल जाते हैं।**

मधुलता (**सिर से अपना हाथ टेककर**) अपनों से क्या नमस्कार! इस संसार में कौन अपना है और कौन पराया! और सेठ साहब के अनुसार मुझे अपनी रुचि का कोई अधिकार नहीं। (**ठंडी साँस लेती है। फिर आलमारी से अपनी पुस्तक निकालने जाती है। मेंटलपीस पर सेठ साहब की नस्य की डिब्बी देखकर उठाती हुई।**) अरे! यह यहीं रह गई! नस्य की डिब्बी! मैं भी इसे सूँघूँ? (**खोलती है।**) उफ़्, कैसी बदबू है! (**बन्द कर रख देती है।**) अपना पार्ट देखूँ! (**कापी निकाल कर पढ़ते-पढ़ते अभिनयात्मक ढंग से**) दुःखमय मानव जीवन! उसे अभ्यास पड़ जाता

है, इसीलिए सबके मन में तीव्र विराग नहीं होता! जिसे कभी ठोकर न लगी, वह एक ही धक्के में लड़खड़ा जाता है! पर तुम इतने दुर्बल होगे, यह मैं न जानती थी! (**दुहराकर**) यह मैं न जानती थी! (**फिर करुण स्वर में कराहकर**) यह मैं न जानती थी!!

(**राजीव का प्रवेश। वह कुरता, वास्कट, पैजामा और पेशावरी चप्पल पहने हुए है। देखने में सुन्दर है लेकिन अपने वेश-विन्यास में कुछ लापरवाह है। वह सीधा-सादा "आत्मीयता" का मतलब नहीं समझता! इंटरमीडिएट पास कर अभी फ़िल्म-लाइन में आया है। बोलने में बेतकल्लुफ़ी है।**)

राजीव — क्या नहीं जानती थीं, मधुलता!

मधुलता — (**प्रसन्नता से उठकर**) ओह! तुम हो, राजीव! आओ। बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रही थी। आज तो सेठ चैनसुखदास ने सब कुछ कह डाला!

राजीव — सब कुछ, यानी?

मधुलता — तुम कुछ नहीं समझते, राजीव! सुनो, ऐसे कहा—(**नस्य की डिब्बी अदा के साथ खोल कर उसमें से एक चुटकी नस्य लेकर सूँघते हुए**) मेरी महानता क्या है, मधुलता! लेकिन मैं इसमें विश्वास रखता हूँ कि कलाकारों को जीवन क. समस्त सुविधाएँ देनी चाहिये और यह तभी सम्भव हो सकता है जब उनसे मैं ख़ुद आत्मीयता का सम्बन्ध रक्खूँ! (**हिचकते हुए**) यानी...आप मेरी बात समझीं न मधु...लता जी!

(**दोनों जोर से हँस पड़ते हैं।**)

राजीव — अच्छा, आपने तो सेठ चैनसुखदास का ही पूरा अभिनय कर दिया!

मधुलता — (**हँसकर**) ओह, वे तो ऐसी-ऐसी बातें करते हैं कि उसकी एक पूरी फ़िल्म बन जाय! वे क्यों राज्यश्री के और मेरे पीछे पड़े हुए हैं। कहते हैं—राजीव से आत्मीयता का सम्बन्ध मत रक्खो!

राजीव — मुझसे?

मधुलता　हाँ, तुमसे—भला यह भी कभी सम्भव हो सकता है ?

राजीव　क्यों, क्यों नहीं हो सकता ?

मधुलता　कैसी बातें करते हो ? कैसे हो सकता है !

राजीव　कैसे ? बिल्कुल आसान ! मैं यहाँ आया ही न करूँगा !

मधुलता　तुम्हें मेरे पास आने की इच्छा न होगी ?

राजीव　जब सेठ जी नहीं चाहेंगे तो मेरी इच्छा कैसे होगी ?

मधुलता　इच्छा भी किसी के कहने पर चलती है ?

राजीव　मेरी तो ख़ूब चलती है। वे कहते हैं, गाना गाओ, मैं गाना गाता हूँ—वे कहते हैं, आँखें बन्द करो, मैं आँखें बन्द कर लेता हूँ। वे कहेंगे, मधुलता से मत मिलो—मैं नहीं मिलूँगा।

मधुलता　और अगर मैं कहूँ कि मुझसे मिलो तो ?

राजीव　तो मैं सेठ जी से पूछूँगा कि मिस मधुलता ऐसा कहती हैं—मैं क्या करूँ !

मधुलता　तो तुम उनके पक्के नौकर हो ! वे कहें, अपने हाथ से अपने गाल पर एक तमाचा लगाओ, लगाओगे ?

राजीव　एक बार सोचूँगा कि लगाऊँ या न लगाऊँ !

मधुलता　तो इस बात पर भी सोचो ! हाँ, तुम्हें अपना पार्ट याद हो गया ? आओ, बैठो !

(**मधुलता काउच पर बैठती है और राजीव बग़ल की कुर्सी पर**) तुम्हारा पार्ट तो देवगुप्त का है ?

राजीव　हाँ, देवगुप्त का—अभी पूरी तरह याद नहीं हो पाया !

मधुलता　क्यों ?

राजीव　मुझे सुरमा से प्यार करना है। प्यार करने का अभिनय अभी ठीक ढङ्ग से नहीं बन पड़ रहा है।

मधुलता　(**मुस्कुराकर**) प्यार करने का अभिनय ? प्यार भी अभिनय की वस्तु है ? क्या तुम प्यार नहीं कर सकते ?

राजीव　क्यों नहीं कर सकता ?

मधुलता　तुमने कभी किसी से प्यार किया है ?

राजीव क्यों नहीं ! अपनी बिल्ली से प्यार किया है; और अब सुरमा से प्यार करना पड़ रहा है ।

मधुलता करना पड़ रहा है ? मैं पूछ रही हूँ, तुमने कभी किसी से जीवन में प्यार किया है ?

राजीव (सोचते हुए) मैंने प्रयत्न नहीं किया ।

मधुलता प्यार के लिए भी प्रयत्न करना पड़ता है ?

राजीव तो क्या प्यार शक्कर की गोली है कि मुख में आई और घुल गई ?

मधुलता (मुस्कुरा कर) शक्कर की नहीं—मक्खन की !

राजीव यह घुल कैसे जाती है ?

मधुलता (व्यंग्य से) सेठ चैनसुखदास की नस्य की डिब्बी से । लो, इससे वह घुल जायगी । (डिब्बा देने के लिए उठाती है ।)

राजीव अच्छा, यह नस्य की डिब्बी आपके पास आई कैसे ? मैंने ध्यान ही नहीं दिया ! लाइए (लेकर) मै उन्हें यह दे दूँगा ।

मधुलता हाँ, यह दे दीजिएगा और साथ ही अपना पार्ट भी !

राजीव पार्ट भी ? क्यों ?

मधुलता आप सुरमा से प्यार का अभिमय नहीं कर सकते ।

राजीव क्यों नहीं कर सकता, मैं कोशिश करूँगा ।

मधुलता किस तरह की कोशिश करेंगे आप ?

राजीव प्रेम के सम्बन्ध में सैकड़ों पुस्तकें पढ़ूँगा । सारी लायब्रेरी !

मधुलता लायब्रेरी की पुस्तकों से आप प्रेम करना सीखेंगे ?

राजीव क्यों ? कौन-सा विषय है, जो पुस्तकों में नहीं है ?

मधुलता कम से कम प्रेम करना तो पुस्तकों से नहीं आ सकता !

राजीव तो कैसे आ सकता है ?

मधुलता मैं सिखला सकती हूँ ।

राजीव आप !

मधुलता हाँ, मैं ।

राजीव कैसे ?

मधुलता आप शायद न सीख सकें !

राजीव मैं सीख के रहूँगा। अभ्यास करने से क्या नहीं होता। मैं अभ्यास करूँगा!

मधुलता प्रेम में अभ्यास नहीं होता!

राजीव तो बिना अभ्यास के कोई चीज़ आ भी नहीं सकती! मैंने कठिन काम भी अभ्यास से कर डाला है। पिंगपांग खेल ही ले लीजिये।

मधुलता पिंगपांग? आप पूरे किंगकांग हैं!

राजीव जी?

मधुलता कुछ नहीं।

राजीव तो फिर मुझे प्रेम करना सिखलाइए।

मधुलता सीखना ही चाहते हैं?

राजीव अवश्य, नहीं तो सुरमा का प्रेम का अभिनय कैसे कर सकता हूँ?

मधुलता (**अपना 'पर्स' गिरा कर**) देखिए, मेरा 'पर्स' गिर पड़ा, उठा दीजिए।

राजीव (**शीघ्र ही उठा कर**) यह लीजिए!

मधुलता (**लेकर चिढ़ाते हुए**) यह लीजिए! आप कुछ भी नहीं सीख सकते।

राजीव क्यों, क्या 'पर्स' देने में कुछ ग़लती हो गई?

मधुलता पत्थर से गिरने में भी कोई ग़लती होती है?

राजीव मैं कुछ समझा नहीं!

मधुलता आप सेठ चैनसुखदास के पास जाइये और उनसे समझिये!

राजीव उनसे तो मैं बहुत कुछ समझा हूँ। और यों मैं प्रेम की बहुत-सी बातें जानता हूँ। आहें भर सकता हूँ, तारे गिन सकता हूँ—एक, दो, तीन, चार। चाँद को गाली दे सकता हूँ। बिस्तर पर करवटें बदल सकता हूँ। कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़। रोते हुए गाना गा सकता हूँ। और प्रेम में क्या चाहिये?

मधुलता कुछ नहीं, आप सचमुच बहुत प्रेम कर सकते हैं। आप मेरा पार्ट भी

सेठ चैनसुखदास को वापस दे दीजियेगा। मै कोई पार्ट नहीं करूँगी, लीजिये।

राजीव अरे, यह क्या! मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।

मधुलता (**आदेश के स्वरों में**) लीजिए।

राजीव (**आतंकित होकर ले लेता है।**) अच्छा!

मधुलता आपने मेरी उँगलियों को क्यों दबा दिया?

राजीव (**सरलता से**) मैंने नहीं दबाया!

मधुलता तो क्यों नहीं दबाया?

राजीव (**जिज्ञासा के स्वरों में**) उँगलियाँ दबाने से क्या होता है!

मधुलता तुम्हारा सिर! राजीव! तुम जाओ—यहाँ से चले जाओ! मेरे सिर में दर्द हो रहा है।

राजीव कहीं 'नस्य' सूँघने से तो सिर में दर्द नहीं हो गया? आपने सेठ जी का अभिनय करते हुए उसे सूँघा था।

मधुलता जाओ, अपने सेठ जी के पास और चाहो तो तुम भी सूँघ डालो सेर भर।

राजीव (**अट्टहास करते** हुए) मैं! हाँ, सूँघने का अभ्यास करूँ तो क्या नहीं कर सकता! आप कहेंगी तो अभ्यास करूँगा।

मधुलता जाओ, राजीव! मेरे सिर में दर्द हो रहा है। (**बैठ जाती है।**)

राजीव तो मैं अभी सेठ जी से कह कर डॉक्टर बुलवाता हूँ। क्या हो गया, अभी-अभी! आप इतनी बातें करती हैं, तभी तो सिर में दर्द हो जाता है। (**नेपथ्य की ओर देखकर**) अरे, सेठ जी तो यहीं आ रहे हैं। (**उत्सुकता से सेठजी की ओर बढ़ते हुए**) सेठ जी!

(**सेठ चैनसुखदास का प्रवेश। वह राजीव को देखते ही क्रुद्ध हो जाते हैं।**)

चैनसुखदास राजीव! तुमने अपना पार्ट याद किया? तुम यहाँ-वहाँ घूमने के बहुत शौक़ीन हो गये हो! मैं तुम्हें यहाँ रहने न दूँगा, अगर सीधे तरीक़े से पेश नहीं आए। मैं जितनी तुम्हारे साथ भलाई

करूँ, तुम उतनी ही मूर्खता से काम करते हो! तुम्हें पार्ट याद हो गया?

राजीव (**डरते हुए सहम कर**) जी, याद तो हो गया है लेकिन सुरमा से जो प्रेम का एक्टिंग करना है, उसके बारे में इनसे पूछने के लिए आया था तो इनका सिर दर्द करने लगा।

चैनसुखदास एँ! मिस मधुलता के सिर में दर्द हो रहा है? क्यों मिस मधुलता? (**राजीव को डाँटकर**) तुम इतनी बातें इनसे करते क्यों हो? जाओ यहाँ से। अपना पार्ट याद करो।

(**राजीव का शीघ्र प्रस्थान**)

चैनसुखदास क्या आपके सिर में सचमुच दर्द है, मिस मधुलता? आपने मुझसे क्यों नहीं कहा? मैं अभी अच्छे से अच्छा डॉक्टर बुलवा दूँ। तब तक यदि तुम्हें कुछ संकोच न हो तो मैं ही कुछ सेवा...

मधुलता जी नहीं, सेठजी! मेरे सिर में दर्द नहीं है। राजीव से बात नहीं करना चाहती थी, मैंने बहाना किया था।

चैनसुखदास (**प्रसन्न होकर**) ओह, तुम बहुत अच्छी हो, मिस मधुलता! मेरे मन की बात कितनी जल्दी और कितनी अच्छी तरह से समझती हो! तुम सचमुच ही मधुलता हो! मैं तुम्हें कुछ उपहार देना चाहता हूँ!

मधुलता (**नीरसता से**) सेठ जी, मुझे उपहार कुछ नहीं चाहिए! इस समय अपने पार्ट के सम्बन्ध में सोचने के लिए मैं एकान्त चाहती हूँ।

चैनसुखदास ज़रूर, ज़रूर! मैं फिर आ जाऊँगा। मैं तो अपनी नास की डिब्बी भूल गया था। उसके बिना मुझे बड़ी तकलीफ़ होती है। यहाँ रह गई है?

मधुलता आपको देने के लिए राजीव ले गया है।

चैनसुखदास राजीव ले गया? ख़ैर, मेरे पास दूसरी डिब्बी भी है। (**उसे खोलकर नस्य सूँघते हुए**) कलाकार यदि नास सूँघें तो उनकी कला में मस्ती आ जाय!

मधुलता (**व्यंग्य से**) नास से उनका सर्वनाश ही हो जायगा!

चैनसुखदास (हँसकर) ओहो ! क्या बात कही है ! वाह ! (रुककर) तुम एकान्त चाहती हो ! लो, मैं जाता हूँ, अभी जाता हूँ ! (आगे बढ़ते हैं, रुककर) देखिये, नमस्कार मत कीजिएगा । अपनों से शिष्टाचार कैसा ? हँ, हँ, शिष्टाचार कैसा ! हँ-हँ शिष्टाचार कैसा ! (गद्गद् हँसी)

मधुलता नमस्कार !

चैनसुखदास आप नमस्कार करती है ! अच्छा, यह भी सही ! आपका नमस्कार भी मुझे अच्छा लगता है ! नमस्कार......नमस्कार......!

(हँसते हुए जाते हैं । मधुलता शून्य में देखती रहती है ।)

(परदा गिरता है ।)

एक तोले अफ़ीम की क़ीमत

पात्र-परिचय

१. मुरारी मोहन, बी० ए०—नये विचारों का नवयुवक और लाला सीताराम अफ़ीम के व्यापारी का पुत्र—आयु २१ वर्ष ।

२. कुमारी विश्वमोहिनी—एनीबैसेंट कालेज में सेकंड ईयर की छात्रा—आयु १८ वर्ष ।

३. रामदीन—लाला सीताराम का नौकर आयु ४० वर्ष

४. जोखू—चौकीदार आयु ५० वर्ष

एक तोले अफ़ीम की क़ीमत

समय—रात के दस बजे के बाद। लाला सीताराम की दूकान, उसी में एक सजा हुआ कमरा। एक बड़ा टेबुल। उस पर काग़ज, क़लम, दावात आदि सुसज्जित हैं। टेबुल के आस-पास दो-तीन कुर्सियाँ रखी हुई हैं। बग़ल में एक बेंच जिस पर कारपेट बिछा हुआ है। दीवाल पर दो-तीन फ़ोटो लगे हुए हैं जिनमें एक मकान के मालिक सीताराम का और दूसरा उनकी पत्नी का है, जो अब इस संसार में नहीं हैं। दोनों के बीच में श्री लक्ष्मी जी का एक चित्र लगा हुआ है। दाहिनी ओर एक साइनबोर्ड है, जिसमें, 'लाला सीताराम, अफ़ीम के व्यापारी लिखा हुआ है। दीवाल पर कुछ ऊँचाई से एक क्लॉक टँगी हुई है, जिसमें दस बज कर पन्द्रह मिनट हुए हैं। क्लॉक के बग़ल में कैलेंडर है।

(मुरारी मोहन लाला सीताराम का लड़का है—नये विचारों में पूर्ण रीति से रँगा हुआ। वह इसी वर्ष बी० ए० पास हुआ है। उम्र २१ वर्ष। देखने में सुन्दर! साफ़ कमीज़ और धोती पहने हुए है। टेबुल पर बिखरे हुए काग़ज़ ठीक करने के बाद वह कुर्सी पर बैठकर अख़बार देख रहा है। चिन्ता की गहरी रेखाएँ उसके मुख पर देखी जा सकती हैं। वह किसी समस्या के सुलझाने में व्यस्त मालूम देता है। दो-एक बार अख़बार से नजर उठा कर दीवाल की ओर शून्य दृष्टि से देखने लगता है।)

मुरारी मोहन (एक क्षण अख़बार की ओर देखकर पुकारते हुए) रामदीन!

रामदीन (बाहर से) सरकार!

(रामदीन का प्रवेश। घुटने तक धोती, गञ्जी और पगड़ी पहने हुए है। बड़ा बातूनी है लेकिन है समझदार। आकर नम्रता से खड़ा हो जाता है।)

मुरारी मोहन रामदीन ! बाबू जी जाते वक़्त कुछ कह गये हैं ?

रामदीन (**हाथ जोड़ कर**) कोई ख़ास बात नाहीं, सरकार ! कहत रहे कि मुरारी भैया को देखते रहना, तकलीफ़ न हो। नहीं तो रामदीन, तुम जानो, ऐसन कहत रहे सरकार !

मुरारी मोहन (**लापरवाही से**) ऐसा कहा ? (**हँसकर**) हँ्ः, मुझे क्या तकलीफ़ होगी, रामदीन ? कब आने को कहा है ?

रामदीन सरकार ! परसों साम के कहा है। बहुत जरूरी काम है, नाहीं तो काहे जाते सरकार ?

मुरारी मोहन परसों आएँगे ? कौन तारीख़ है ? (**कैलेंडर की ओर देखता है।**) १५ जुलाई ! (**ठंडी साँस लेकर**) ख़ैर।

रामदीन (**मुरारी को चिंतित देखकर**) सरकार ! जल्दी काम खतम होय जाय तो जल्दी आय जाँय। कोई बात है, सरकार ?

मुरारी मोहन (**लापरवाही से**) कोई बात नहीं। बाबूजी गये किसलिए हैं, तुम्हें मालूम है ?

रामदीन (**हाथ झुलाकर**) ए लो सरकार ! आप लोग न जानें ? हम गरीब मनई सरकार के काम को का समझें ? हाँ, कहत रहे कि अफ़ीम अब बढ़ाय गई है। गाजीपुर से नवा कारबार चालू भवा है। यही बरे जाना पड़ गवा।

मुरारी मोहन मुझसे तो बातें ही न हो सकीं। मैं समझा, किसी से कुछ तय करने के लिए गये हैं। मेरी आजकल कुछ ज़्यादा फ़िकर मालूम होती है।

रामदीन काहे न होय, सरकार ? अब आपै तो हैं, और कौन है, सरकार ?

मुरारी मोहन अच्छा। (**घड़ी की ओर देखकर**) रामदीन ! अब जाओ तुम, दस बज चुके।

रामदीन सरकार ! हमका तो हुकुम है कि–यहीं दुकान में सोना। सरकार !

मुरारी मोहन नहीं जी, तुम घर जाओ। मैं तो हूँ। मैं कोई बच्चा नहीं हूँ। मैं अकेला ही सोऊँगा। किसी का डर है क्या ? और फिर चौकीदार तो है ही !

रामदीन सरकार ! नाराज होऍगे, सरकार ! मैं भी यहीं पड़ रहौंगा ।

मुरारी मोहन क्यों, क्या तुम्हारे घर में कोई नहीं है ?

रामदीन है काहे नाहीं, सरकार ? तेजी है, तेजी कै माँ है । ओकरे तबियत सरकार ! कल्हि से कछु दिक है ।

मुरारी मोहन तब तो तुमको जाना चाहिये ।

रामदीन हाँ, सरकार ! बहुत दिक है । मुदा बड़े सरकार नराज..... ।

मुरारी मोहन नहीं, मैं कह दूँगा ! यह क्या बात कि घर में लोग बीमार हों और तुम यहाँ पड़े रहो !

रामदीन (**हाथ जोड़कर**) वाह, सरकार ! आप दीन-दयालू हैं । काहे न होंय, सरकार ? आप तौ दीन की परवस्ती......

मुरारी मोहन ख़ैर, यह कोई बात नहीं ।

रामदीन (**हाथ जोड़कर**) तौ सरकार ! मैं (**रुक कर** , जाँव...!

मुरारी मोहन हाँ; सुबह ज़रा जल्दी आ जाना ।

रामदीन बहुत अच्छा, सरकार ! सरकार की का बात...!

(**रामदीन अपना बिस्तरा उठाकर जाने को तैयार होता है ।**)

मुरारी मोहन (**सोचता हुआ**) क्यों जी, रामदीन ! तुम्हारी शादी कब हुई थी ?

रामदीन (**संकुचित होता हुआ**) हैं, हैं सरकार ! सादी ? तेजी कै माँ की सादी ? सरकार ! जमाना गुजर गवा (**बिस्तरा ज़मीन पर रखता हुआ**) अब तौ तेजी कै सादी कै फिकर है । सरकार ! आपई करेंगे । (**दाँत निकालता है ।**)

मुरारी मोहन अच्छा, बहुत दिन बीत गए ! और रामदीन ! तुमने शादी के पहले तेजी की माँ को तो देखा होगा ?

रामदीन राम कहो, सरकार ! हम तो उहि का तब जाना जब तेजी का जलम होय का बखत आवा । सरकार ! भरे घर माँ कौन केका देखत है ? मा-बाप सब्बै तौ रहै । जब लौं तेजी कै माँ से मुलाखात का बखत आवै, तब लौ घर में अँधियार होय जात रहा । औ सरकार ! आपन मेहरिया का मुँह देखै से का ? देखा तौ ठीक, न देखा तौ ठीक ।

जब ऊ का अपनाय लिहिन तब सरकार ! भली बुरी सब्बै ठीक है। हैं, हैं।

(नम्रता और हास्य का मिश्रण)

मुरारी मोहन बड़ा ज्ञानी है ! और ये शादी लगाई किसने थी ?

रामदीन अब सरकार ! बापै लगाइन, हमार काहे माँ गिनती ? ऊ हमसे कहवाइन—सब ठीक है। हम हूँ आपन मुँडिया हलाय दिहिन। सादी कै बात तौ सरकार ! बापै के हाथ में रहा चाही। ऊ कहिन कै रामदीन कै सादी होई, हम समझा ठीक है। तौ सादी न करत ? सरकार !

मुरारी मोहन तुम लोग क्या समझो कि शादी किसे कहते हैं ?

रामदीन सरकार ! आप लोग पढ़े-लिखे हन। अब आप न जानी तो का हम जानी ? हमार शादी तो सरकार ! गुजर-बसर के लायक है। आप लोगन की सरकार ! रुजगार जैसन सादी होवत है। अब तौ सरकारौ की सादी होई। हाँ, (**सिर हिलाता है।**)

मुरारी मोहन (**दृढ़ता से**) मेरी शादी नहीं होगी रामदीन…! अच्छा, अब जाओ तुम।

रामदीन काहे न होई, सरकार !

मुरारी मोहन कुछ नहीं; तुम जाओ।

रामदीन सरकार कै सादी तो अस होई कि सगर दुनिया तरफराय जाई। अच्छा तौ सरकार ! जाई नँ ? राम-राम (**कमरे में लगी हुई लक्ष्मी जी की तस्वीर को भी प्रणाम करके जाता है।**) जय लक्ष्मी जी !

मुरारी मोहन (**व्यंग्य से**) बड़ा भगत है !

(**रामदीन के जाने पर मुरारी कुछ क्षणों तक दरवाज़े की ओर देखता हुआ बैठा रहता है। फिर उठकर दरवाज़ा ऊपर और एक क्षण खड़े रह कर सोचते हुए नीचे से भी बन्द करता है। दो लेम्पों में से एक लेम्प बुझा देता है। कुछ देर सोचता है।**)

मुरारी मोहन अब ठीक है। पीछा छूटा शैतान से! यहीं सोना चाहता था! बाबूजी का मुँहलगा नौकर है न? अब बेखटके अपना काम करूँगा। (**सोचता है**) मेरी शादी···शादी होगी। किसी जंगली जानवर से, अब सह नहीं सकता! बाबूजी सोचते क्यों नहीं कि हम लोगों के पास भी दिल होता है! हम लोग भी हसरत रखते हैं! मालूम हो जायगा कि मैं सच कहता था या मज़ाक करता था। मेरी लाश बतलायेगी। ठीक है···आज आत्महत्या करनी ही होगी, तभी मेरा पीछा छूटेगा···क़िस्मत की बात कि दुकान की सब अफ़ीम ख़त्म हो जाय लेकिन क्या मुरारी अपने काम में चूक सकता है? एक तोला अलग निकाल कर रख ही तो ली। (**मेज़ के ड्राअर में से अफ़ीम निकालता है।**) यह है! मै ग्रेजुएट हूँ। पिता जी के कहने से मैं अपने 'कल्चर' को 'किल' नहीं कर सकता। 'मैरिज—इज़ एन ईवेंट इन लाइफ़'[1] यह गुड़ियों की शादी नहीं है। वे दिन गये, जब रामदीन की शादी हुई थी (**सोचता है।**) इट इज़ बेटर टु किल वन् सैल्फ़ दैन टु किल वंस सोल।'[2] बहुत 'रिवोल्ट' किया, लेकिन कुछ नहीं। अब सुबह लोग देखेंगे कि मुरारी अपने विचारों का कितना पक्का है···! मेरी लाश की शादी करेंगे उसी अनकल्चर्ड लकड़ी के साथ! ओफ़्, कितना दर्द है! (**अपनी माँ की फ़ोटो की ओर देखकर**) माँ! तुम तो दुनिया में नहीं हो, नहीं तो मुमकिन् है कि अपने मुरारी को बचा सकतीं, अच्छा, तो मैं भी सुबह तक तुम्हारे पास पहुँचता हूँ। तो अब...(**सोचता है।**) खा जाऊँ (**कुर्सी पर बैठकर अफ़ीम की पुड़िया खोलता है। थोड़ी देर सोचता है।**) नहीं, बेंच पर लेटकर खाना अच्छा होगा। लोग समझेंगे कि मैं सो रहा हूँ। जगाने की कोशिश करेंगे; मज़ा

---

[1] **विवाह जीवन की एक प्रमुख घटना है।**

[2] **आत्म-हनन की अपेक्षा आत्म-हत्या अच्छी है।**

आयगा। लेकिन मुझे क्या !! (**बेंच पर लेटता है और गोली हाथ में ऊपर उठाता है।**) मुरारी ! तुम भी अपने विचारों के कितने पक्के हो ! अपने सिद्धान्तों के लिए ज़िन्दगी को ठोकर मार दी ! अब खा जाऊँ ? वन्, टू (**उठकर**) अरे, मैंने पत्र तो लिखा ही नहीं। मेरे मरने के बाद मुमकिन है, पुलिस वाले बाबू जी को तंग करें ? करने दो, मुझे भी तो उन्होंने तंग किया है। (**सोचकर**) लेकिन नहीं, मरने के बाद भी क्या दुश्मनी ! अच्छा लिख दूँ ! (**अफ़ीम की गोली को मेज़ पर रखकर बैठता है और पत्र लिखते हुए पढ़ता है।**) 'बाबू जी ! आप एक गँवार लड़की से मेरी शादी करने जा रहे हैं। मैंने बहुत विरोध किया लेकिन आप अपना इरादा नहीं बदल रहे हैं। मैं अपने सिद्धान्तों की हत्या नहीं कर सकता, अपनी ही हत्या कर रहा हूँ ! आपका आदेश तो स्वीकार नहीं कर सका, आपकी अफ़ीम अवश्य स्वीकार कर रहा हूँ। क्षमा कीजिये। मुरारी मोहन !' बस, ठीक है। इसी टेबुल पर लैटर छोड़ दूँ। अब चलूँ, अपना काम करूँ ? (**अफ़ीम की गोली मेज़ पर से उठाता है। उसकी ओर देखते हुए**) मेरी अमृत की गोली अफ़ीम ! ए स्कारलेट फ़ेयरी आफ़ ड्रीम्स !! तेरे व्यापार ने विदेशों में धन बरसा दिया है। आज तेरा यह व्यापार मुझ पर मौत बरसा दे ! होमर ने तेरी तारीफ़ की है। ट्राय की सुन्दरी हेलन ने मेनीलास की शराब में तुझे ही तो मिलाया था। अब तू मेरे ख़ून में मिल जा ! बस, दुनिया ! तुझे मेरा आख़िरी सलाम !! आगे से प्रेम की क़ीमत समझ ! चलूँ.........? (**हाथ उठाकर**) चियरियो ! (**बेंच पर लेट जाता है, खटका होता है। मुरारी चौंक कर उठता है।**) कौन ? (**कोने की ओर देखता हुआ**) ये चूहे शैतान किसी को मरने भी नहीं देते। ये क्या समझें कि स्यूसाइड कितनी सीरियस चीज़ है ! अच्छा, शान्त ! मुरारी अब जा रहा है। (**फिर लेट जाता है**) वन...... टू......(**सोचकर**) क्या मैं कुछ डर रहा हूँ ? लेकिन मुझे मरना

ही होगा ! मुझे मरना ही होगा ! (**दरवाज़े पर खट् खट् की आवाज़ होती है। मुरारी उठकर**) कौन है ? रामदीन ? (**फिर खट्खट् की आवाज़ होती है।**) अरे ! बोलता क्यों नहीं ? (**फिर खट्-खट् की आवाज़**) जा, मैं नहीं खोलूँगा। (**फिर खट्खट् की आवाज़**) खोलना ही पड़ेगा ! (**अफ़ीम की गोली और ख़त उठाकर मेज़ की दराज़ में रखता है।**) ठहर ! (**मुरारी दरवाज़ा खोलता है। आश्चर्य से**) अच्छा, आप कौन ! आइये।

(**एक अठारह वर्षीया लड़की का प्रवेश। नाम है विश्व-मोहिनी। अस्त-व्यस्त वेश-भूषा जैसे दौड़कर आ रही है। देखने में अत्यन्त सुन्दर, बाल कुछ बिखर कर सामने आ गये है। सिर से साड़ी सरक गई है। वस्त्रों में कालेज की 'ध्वनि' है। उद्भ्रान्त-सी है।**)

मुरारी मोहन आप कौन हैं ?

विश्वमोहिनी लाला सीताराम जी कहाँ हैं ?

मुरारी मोहन बाहर गये हुए हैं ?

विश्वमोहिनी बाहर गये हैं ? (**सोचते हुए कुछ धीरे**) अच्छा है, वे नहीं हैं !

मुरारी मोहन (**दुहराते हुए**) अच्छा है, वे नहीं हैं ? क्या मतलब ?

विश्वमोहिनी कुछ नहीं।

मुरारी मोहन किस काम से आप आई हुई हैं ?

विश्वमोहिनी मुझे कुछ अफ़ीम चाहिये।

मुरारी मोहन आपको ? क्यों ?

विश्वमोहिनी ज़रूरत है ! बहुत ज़रूरत है।

मुरारी मोहन दुःख है, सारी अफ़ीम ख़त्म हो गई। बाबूजी उसी के लिए ग़ाज़ी-पुर गये हुए हैं।

विश्वमोहिनी कब तक लौटकर आएँगे ?

मुरारी मोहन परसों।

विश्वमोहिनी परसों ? बहुत देर हो जायगी। (**अनुनय के स्वरों में**) थोड़ी भी नहीं है ? कुछ तो जरूर होगी। मुझे बहुत ज़रूरत है।

मुरारी मोहन इस समय ? आधी रात को ?

विश्वमोहिनी हाँ, मेरी माता जी बीमार हैं। अफ़ीम खाती हैं। उनकी सारी अफ़ीम ख़त्म हो गई है। उन्हें नींद नहीं आ रही है। नींद न आने से उनकी तबियत और भी ख़राब हो जायगी।

मुरारी मोहन मुझे बहुत दुःख है, लेकिन अफ़ीम तो नहीं है।

विश्वमोहिनी (**प्रार्थना से**) देखिए, आपकी मुझ पर बड़ी कृपा होगी यदि आप खोजकर थोड़ी सी दे दें। इतनी बड़ी दुकान में क्या थोड़ी सी भी अफ़ीम न होगी ?

मुरारी मोहन (**सोचते हुए**) अच्छा, बैठिये खोजता हूँ। (**मेज़ की दराज़ खोलता है, दराज़ की ओर देखते हुए**) आपका परिचय ?

विश्वमोहिनी (**कुर्सी पर बैठते हुए**) परिचय और अफ़ीम से क्या सम्बन्ध ?

मुरारी मोहन आपका नाम लिखना होगा। अफ़ीम देते वक्त नाम लिखना होता है।

विश्वमोहिनी अच्छा, नाम लिखना होगा ? (**कुछ ठहर कर**) तो फिर मुझे नहीं चाहिये।

मुरारी मोहन इसमें हिचक की क्या बात है ? आप तो अपनी माता जी के लिए ले जा रही हैं। (**दराज़ बन्द करता है।**)

विश्वमोहिनी हाँ, हाँ, मैं उन्हीं के लिए ले जा रही हूँ ! लेकिन रहने दीजिए, मैं फिर मँगवा लूँगी।

मुरारी मोहन लेकिन आप तो कह रही है कि आपकी माताजी को अभी अफ़ीम चाहिये। बिना इसके उन्हें नींद ही न आयेगी।

विश्वमोहिनी हाँ, नींद नहीं आयेगी। ख़ैर, लिख लीजिए मेरा नाम। (**धीरे से**) मुझे चिन्ता किस बात की ?

मुरारी मोहन क्या कहा आपने ?

विश्वमोहिनी कुछ नहीं।

मुरारी मोहन क्या नाम है आपका ?

विश्वमोहिनी विश्वमोहिनी।

मुरारी मोहन (**एक कागज़ पर लिखते हुए**) नाम तो बहुत सुन्दर है! क्या आप पढ़ती हैं?

विश्वमोहिनी जी हाँ, एनी बैसेंट कालेज में सेकण्ड इयर में पढ़ती हूँ।

मुरारी मोहन (**लिखता है**) अच्छा, आपके पिता जी?

विश्वमोहिनी कुछ और बतलाने की ज़रूरत नहीं है। आपके पिताजी मेरे पिताजी को अच्छी तरह जानते हैं। आप दीजिए अफ़ीम, मुझे जल्दी ही चाहिये। माँ की तबीयत ख़राब है। देर हो रही है।

मुरारी मोहन अच्छा, तो कितनी चाहिए?

विश्वमोहिनी इससे मालूम होता है कि अफीम काफ़ी है। यही, एक तोला बहुत होगी।......हाँ, एक तोला। (**सोचती है**।)

मुरारी मोहन एक तोले का क्या कीजिएगा? (**आल्मारी खोलता है**।)

विश्वमोहिनी क्या एक तोले से कम में काम चल जायगा?

मुरारी मोहन आपकी बातें कुछ समझ में नहीं आ रही हैं।

विश्वमोहिनी अच्छा, तो एक तोला ही दे दीजिए।

मुरारी मोहन शायद मेरे पास एक ही तोला है। मुझे भी उसकी कुछ ज़रूरत है। पर मालूम होता है। 'युअर नीड इज़ ग्रेटर दैन माइन'[1] अच्छा तो लीजिए। (**आल्मारी से निकाल कर पुड़िया में एक गोली देता है। आल्मारी बन्द करता है**।)

विश्वमोहिनी (**शीघ्रता से लेकर**) धन्यवाद, एक ही तोला है? कितने की हुई?

मुरारी मोहन यों ही ले लीजिए, आपसे कुछ न लूँगा।

विश्वमोहिनी नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।

मुरारी मोहन आपने रात में इतनी तकलीफ की है। फिर आपकी माँ की तबीयत ख़राब है, उनके लिए चाहिये। आपसे कुछ न लूँगा।

---

[1] आपकी आवश्यकता मेरी आवश्यकता से अधिक है।

विश्वमोहिनी (टेबुल पर एक रुपया रखते हुए) मैं अपने ऊपर ऋण नहीं छोड़ सकती।

मुरारी मोहन आप यह क्या कह रही है?

(विश्वमोहिनी एक क्षण में वह गोली खा लेती है। मुरारी हाथ से रोकने की व्यर्थ चेष्टा करता है। विश्वमोहिनी गिरना चाहती है। मुरारी सम्हाल कर बेंच पर लिटाता है। स्वयं पास की कुर्सी पर बैठ जाता है।)

मुरारी मोहन (व्यग्रता से) यह क्या किया?

विश्वमोहिनी (शिथिलता से) आत्महत्या।

मुरारी मोहन अरे, तो मेरे यहाँ क्यों?

विश्वमोहिनी (शान्ति से) आप पर कोई आँच न आयेगी। मैंने पत्र लिख कर रख छोड़ा है। (एक पत्र निकाल कर देती है।) घर में मरने की जगह नहीं है। इतने लोग भरे हैं। चौबीसों घण्टों का साथ। डाक्टर बुलवाकर वे लोग मुझे मरने न देते। इसलिए आपके यहाँ आना पड़ा।

मुरारी मोहन मैं भी तो डाक्टर बुलवा सकता हूँ?

विश्वमोहिनी ओह, ईश्वर के लिए—मेरे लिए—मत बुलवाइये!

मुरारी मोहन (लापरवाही से) न बुलवाऊँ? आपका यह पत्र पढ़ सकता हूँ?
(विश्वमोहिनी आँखों से स्वीकृति देती है।)

मुरारी मोहन (पत्र पढ़ता है।) 'पिता जी! धृष्टता क्षमा कीजिये। विवाह के लिए आपको अपनी सारी जमींदारी बेचनी पड़ती। ६,०००) आप कहाँ से लाते? आप तो भिखारी हो जाते! इससे अच्छा यही है कि मैं भगवान् की शरण में जाऊँ। अब आप निश्चिन्त हो जाइए। आह, यदि मेरे बलिदान से हिन्दू समाज की आँखें खुल सकतीं! आपकी, विश्वमोहिनी।' (गहरी साँस लेकर) कितनी भयानक बात!

विश्वमोहिनी क्षमा कीजिये। लेकिन मेरी मृत्यु की आवश्यकता है। हिंदू-समाज बहुत रूखा है। (कुछ रुककर) ओह, आप कितने कृपालु हैं? मेरी अन्तिम इच्छा आपने पूरी की। मेरी आपसे एक और प्रार्थना है।

मुरारी मोहन बतलाइये!

विश्वमोहिनी आपका विवाह हो गया?

मुरारी मोहन जी नहीं।

विश्वमोहिनी तो सुनिये, जब आप विवाह करें तो अपने विवाह में दहेज़ का एक पैसा न लें। किसी बालिका के पिता को भिखारी न बनावें। आप मेरी प्रार्थना मानेंगे? मेरी अन्तिम प्रार्थना मानेंगे?

मुरारी मोहन मानूँगा, जरूर मानूँगा।

विश्वमोहिनी ओह, आप कितने अच्छे हैं! मैं अपने प्रथम और अन्तिम मित्र का नाम जान सकती हूँ?

मुरारी मोहन धन्यवाद। मेरा नाम मुरारी मोहन है।

विश्वमोहिनी कितना अच्छा नाम है! मुरारी मोहन···मुरारी मोहन·········· विवाह में एक पैसा न लेना, मुरारी मोहन!

मुरारी मोहन लेकिन मैं विवाह करना ही नहीं चाहता।

विश्वमोहिनी क्यों?

मुरारी मोहन (सोचता है) जब आपने अपना सारा रहस्य मेरे सामने खोल दिया है तब अपनी बात कहने में मुझे भी क्या संकोच? देखिये, पिताजी मेरा विवाह एक बेपढ़ी और गँवार लड़की से करना चाहते है।

विश्वमोहिनी अपने पिताजी को आप समझा नहीं सकते?

मुरारी मोहन पिताजी समझना ही नहीं चाहते। इसी से मैं भी आज ही—अभी ही—आत्महत्या करने जा रहा था! इसी बैंच पर जिस पर आप लेटी हैं।

विश्वमोहिनी (चौंककर) तो मैं···?

मुरारी मोहन (बीच ही में) मैं तो मरने जा ही रहा था कि आप आ गईं।

विश्वमोहिनी आत्म-हत्या न करना, मुरारी मोहन! मैं ही अकेली काफ़ी हूँ। (कुछ रुक कर) लेकिन अफ़ीम......अफ़ीम का कुछ असर मुझे मालूम नहीं पड़ रहा अभी तक?

मुरारी मोहन तो जल्दी क्या है?

विश्वमोहिनी मैं जल्दी मरना चाहती हूँ। अफ़ीम का असर क्यों नहीं हो रहा है?

मुरारी मोहन न होने दीजिये।

विश्वमोहिनी अफ़ीम खाऊँ और उसका असर न हो?

मुरारी मोहन (**लापरवाही से**) असर क्यों होगा? आपने अफ़ीम खाई ही कहाँ है?

विश्वमोहिनी (**चौंक कर**) नहीं? अरे! तो क्या आपने मुझे अफ़ीम नहीं दी?

मुरारी मोहन नहीं। मैं जानता था कि आप आत्महत्या करने जा रही हैं। मैं ऐसे को अफ़ीम क्यों देता? मैंने नहीं दी।

विश्वमोहिनी (**विस्फारित नेत्रों से**) तो फिर क्या दिया? (**उठकर बैठ जाती है।**)

मुरारी मोहन काली हर्र की एक गोली। (**आल्मारी की ओर संकेत करता हुआ क्रीड़ापूर्वक**) बाबू जी की दवाओं की आल्मारी से।

विश्वमोहिनी (**किंचित क्रोध से**) आप बड़े वैसे हैं! आप मेरा अपमान करना चाहते हैं? मैं मरना ही चाहती हूँ। मुझे अफ़ीम चाहिये।

मुरारी मोहन (**जैसे बात सुनी ही नहीं**) अफ़ीम के बदले हर्र की गोली! ज़रा मेरी सूझ तो देखिये!

विश्वमोहिनी रखिये अपने पास आप अपनी सूझ। इस समय शहर की सब दूकानें बन्द हो गई हैं, नहीं तो मैं आपकी अफ़ीम की परवा भी न करती।

मुरारी मोहन तो न करें।

विश्वमोहिनी लेकिन मुझे अफ़ीम चाहिये।

मुरारी मोहन (**खड़े होकर**) देखिये ! सिर्फ़ एक तोला अफीम बाकी है जो दराज़ में रखी हुई है। (**दराज़ की ओर संकेत**) अगर मैं वह आपको दे दूँ तो फिर मै(**'मैं' पर ज़ोर**) आत्महत्या किस चीज से करूँगा ?

विश्वमोहिनी आप ? आत्महत्या नहीं कर सकते। मै करूँगी।

मुरारी मोहन नहीं, मै करूँगा।

विश्वमोहिनी यह हो ही नहीं सकता। आपकी परिस्थितियाँ सुधर सकती हैं, मेरी नहीं।

मुरारी मोहन नहीं आपकी परिस्थितियाँ सुधर सकती हैं; मेरी नहीं। उठाइये, अपना यह रुपया।

विश्वमोहिनी नहीं, दीजिये मुझे अफ़ीम।

मुरारी मोहन नहीं दूँगा।

विश्वमोहिनी नहीं देंगे तो मैं……

मुरारी मोहन क्या करेंगी आप ?

विश्वमोहिनी (**मुट्ठी बाँधते हुए विवशता से**) ओह, मैं क्या करूँ ? (**उठकर दराज़ खोलना चाहती है।**)

मुरारी मोहन (**रोकते हुए**) मुझे माफ़ कीजिये। ज़रा आप अपने को सम्हालिये। 'हैव पेशेंस गुड गर्ल।' सब मामला सुलझ जायगा।

विश्वमोहिनी कैसे ? (**बैठती है।**) नहीं सुलझ सकता। संसार स्वार्थी है, पापी है। नहीं।

मुरारी मोहन सारा संसार स्वार्थी नहीं है। पापी नहीं है, शान्त हो देखिये। उठाइये, अपना यह रुपया।

विश्वमोहिनी अच्छा, आप आत्महत्या तो न करेंगे ?

मुरारी मोहन तो क्या करूँ ?

विश्वमोहिनी मैं क्या जानूँ ?

मुरारी मोहन तो आप एक काम कर सकती हैं। आपके पिता जी मेरे पिता

जी को जानते ही हैं। उनके द्वारा मेरे पिता जी से कहला दें कि अगर मैंने कभी शादी की तो मैं बिना दहेज के करूँगा। यदि ऐसा न होगा तो इस समय तो नहीं, उस समय अवश्य आत्म-हत्या कर लूँगा।

विश्वमोहिनी अवश्य। मुझे विश्वास है कि मेरे पिता जी का कहना आपके पिता जी ज़रूर मान जायँगे। नहीं तो उनको ऐसी घटनाएँ देखने के लिए तैयार रहना चाहिये।

मुरारी मोहन अच्छा तो उठाइये, अपना यह रुपया। हर्र की गोली की क्या क़ीमत ?

विश्वमोहिनी (**रुपया उठाकर**) अच्छा, लीजिये। (**सोचती है।**) यह बतलाइये कि आपको यह कैसे मालूम हुआ कि मैं आत्महत्या करने के लिए अफ़ीम ले रही हूँ। मैंने तो अपनी माँ की बीमारी की ही बात कही थी।

मुरारी मोहन मैं जानता था। आपकी उखड़ी-उखड़ी-सी बातें। नाम बताने से इंकार करना। वग़ैरह, वग़ैरह। कुछ इस ढङ्ग से आपने कहा कि मुझे शक हो गया। अफ़ीम खाने के लिए अनुभव की ज़रूरत है। कच्चा आदमी खा ही नहीं सकता, मैं जानता हूँ। मैंने आपको हर्र की गोली दे दी, आपने ले ली। अफ़ीम और हर्र में कोई तमीज़ ही नहीं !

विश्वमोहिनी और आपको वक्त पर हर्र की गोली मिल भी गई !

मुरारी मोहन मिलती क्यों न ? आत्म-हत्या करने वालों से कभी-कभी ईश्वर भी डर जाता है। (**हास्य**)

(**चौकीदार की आवाज़ सड़क पर होती है—'जागते रहो।'**)

मुरारी मोहन चौकीदार कह रहा है—जागते रहो। और कितनी देर जागते रहें ? ग्यारह तो बज गये होंगे।

विश्वमोहिनी जीवन भर।

मुरारी मोहन जीवन ! कितना बड़ा जीवन ! दुख-दर्द से भरा हुआ। पढ़ने

की चिन्ता, कमाने की चिन्ता, स्त्री की चिन्ता, प्रेम की चिन्ता···
(**चौंककर**) ओह, मैं कहाँ की बात ले बैठा। हाँ, मैं आपको मकान भिजवा दूँ।

विश्वमोहिनी चली जाऊँगी। नौकरानी को बाहर बरानदे में छोड़ आई हूँ।

मुरारी मोहन शायद इसलिए कि आपकी आत्महत्या की ख़बर लेकर घर जाती।

विश्वमोहिनी हाँ, लेकिन जैसा मैंने कहा—आप पर आँच न आती। उसकी गवाही और मेरा पत्र आपको निरपराध ही साबित करते।

मुरारी मोहन तो क्या आपकी नौकरानी को मालूम था कि आप आत्महत्या करने जा रही हैं?

विश्वमोहिनी बिल्कुल नहीं। लेकिन वह यह कह सकती थी कि मैं यहाँ अपने मन से आई थी। आप तो निरपराध ही रहते। यही साबित होता।

मुरारी मोहन धन्यवाद। अब क्या साबित होगा?

विश्वमोहिनी यही, आप इतने कृपालु हैं······

मुरारी मोहन (**बीच ही में**) कि आधी रात तक किसी को रोक सकता हूँ। अच्छा, ठहरिये। मैं इन्तज़ाम करता हूँ। (**पुकारता है।**) चौकीदार!

चौकीदार (**बाहर से**) आया हुजूर!

विश्वमोहिनी चौकीदार को क्यों पुकार रहे हैं?

मुरारी मोहन आपको गिरफ़तार कराने के लिए, पुलिस में ख़बर भेजना है। आप आत्महत्या करना चाहती थीं।

विश्वमोहिनी बुलवाइये पुलिस को। मैं भी आपको गिरफ़तार करा दूँगी। आप भी आत्महत्या करना चाहते थे। अफ़ीम आपके पास है या मेरे पास?

मुरारी मोहन मेरी तो अफ़ीम की दुकान ही है। साइनबोर्ड देख लीजिये। (**साइनबोर्ड की तरफ़ इशारा करता है।**) लाला सीताराम—अफ़ीम के व्यापारी। (**चौकीदार का प्रवेश**)

चौकीदार (सलाम करता है।) कहिये, हुज़ूर!

मुरारी मोहन जोखू! पहरा देने के लिए तुम आ गये?

चौकीदार हाँ, हुज़ूर! ग्यारह बज गये।

मुरारी मोहन देखो, इन्हें इनके घर पहुँचा दो। ये अपना घर बतला देंगी। बाहर बरामदे में इनकी नौकरानी होगी। उसे भी लेते जाना। आज दावत में कुछ देर हो गई।

चौकीदार बहुत अच्छा, हुज़ूर! (सलाम करता है।)

विश्वमोहिनी मैं खुद चली जाऊँगी।

मुरारी मोहन ओ, मुझे खुद साथ चलना चाहिये।

विश्वमोहिनी (लज्जित होकर) मेरा मकान थोड़ी ही दूर है। आपको ज्यादा तकलीफ़ न होगी।

मुरारी मोहन कुछ तकलीफ़ों में आराम ही मिलता है। जोखू! तुम जाओ।

चौकीदार हुज़ूर! एक बात है।

मुरारी मोहन क्या?

चौकीदार हुज़ूर! पहरा देते देते थक जाता हूँ। कुछ अफ़ीम हो तो मिल जाय।

मुरारी मोहन कितनी चाहिये?

चौकीदार हुज़ूर जितनी दे दें।

मुरारी मोहन तोला भर है।

चौकीदार (खुश होकर) क्या कहना, हुज़ूर! एक हफ़्ते तक चंगा रहूँगा।

मुरारी मोहन (मेज़ की दराज़ खोल अफ़ीम निकाल कर देते हुए) अच्छा लो, होशियारी से पहरा देना।

चौकीदार (सलाम करता है।) अब हुज़ूर मैं अकेला सारे शहर का पहरा दे सकता हूँ। (बाहर जाता है।)

विश्वमोहिनी इसका नाम नहीं लिखा?

मुरारी मोहन दूकान का पहरेदार है। जाना-पहचाना हुआ आदमी, फिर नाम तो बड़े आदमियों के लिखे जाते हैं।

विश्वमोहिनी क्योंकि वे ही ज़्यादातर आत्महत्या करने की बात सोचते हैं।

मुरारी मोहन (**लज्जित होकर**) जाने दीजिये, इन बातों को । (**गहरी साँस लेकर**) चलो, पीछा छूटा अफ़ीम से। छोटी-सी चीज़, पर कितना बड़ा असर ? सिर्फ़, एक तोला अफ़ीम !

विश्वमोहिनी (**मुस्कुराकर**) और उसकी भी क़ीमत नहीं मिली !

मुरारी मोहन मिली न ! बहुत मिली, आप मिल गईं !!

(**विश्वमोहिनी प्रसन्नता में लज्जा मिला देती है । दोनों जाने को प्रस्तुत हैं । परदा गिरता है ।**)

परिहास
(Parody)

१. आँखों का आकाश

आँखों का आकाश

पात्र-परिचय

अविनाश—एक सुन्दर नवयुवक जिसका विवाह तीन महीने पहले सुलेखा से हुआ है।

सुलेखा -एक सुन्दर नवयुवती जिसका विवाह तीन महीने पहले अविनाश से हुआ है।

स्थान—इलाहाबाद में टैगोर टाउन।

आँखों का आकाश

[विवाह के अनन्तर प्रेम और आत्मीयता की उष्णता से सजग एक कमरा। कमरे की चमक-दमक में दाम्पत्य सुख की किरण अव्यक्त होकर भी सभी वस्तुओं पर आलोक डाल रही है। रेशम के परदे। दीवाल पर राधा कृष्ण और रोमियो जूलियट के मिलन-चित्र, एवं प्रकृति के सुन्दर दृश्य हैं। फर्श पर कालीन बिछा हुआ है। एक नये डिजाइन का ड्राइङ्ग रूम सूट रेशमी कवर से सजा हुआ कमरे के बीचो-बीच में है। सूट के बीच में एक पालिश की हुई बरमा टीक की टीप्वॉय है, जिस पर गुलाब और चमेली के फूलों का फूलदान सजा हुआ है। एक बड़ी घड़ी जिसमें शाम के सात बजे हैं। उसके नीचे केलेंडर है जिसमें सितम्बर मास का पृष्ठ है।

इस समय कमरे में अविनाश और सुलेखा हैं। अविनाश सिल्क का कुरता और धोती पहने हुए हैं। बिजली के प्रकाश में अविनाश का कुरता उदय होते हुए सूर्य की किरणों की तरह चमक रहा है। बाल ग्लिसरीन से सँवारे हुए और वस्त्र ईवनिंग अव् रोज़ेज़ की सुगंधि लिए हुए। सुलेखा आबेरवाँ की साड़ी और नीले रंग का ब्लाऊज़ पहने हुए है। बालों में लहर और सुगंधि जो संभवतः जैसमिन की है। हलके और नये डिजाइन के आभूषण जिनमें मूल्य की अपेक्षा शोभा अधिक है। नेत्रों में श्याम-रेखा और माथे में हलका कुम्कुम बिन्दु। मुख पर परिव्याप्त स्मिति और कपोल-कूप। हाथों में एक रेशमी चूड़ी जो ओपल की भाँति अनेक रङ्गों की किरणें फेंक सकती है।

दोनों का विवाह हुए अभी तीन महीने हुए हैं और दोनों विवाह-सुख की नींद से आलसमय जागरण की अवस्था में हैं। दोनों के स्वप्न और सत्य फूल और काँटों पर झूलते हुए चले जा रहे हैं।

सुलेखा सोफा पर बैठी हुई मोजा बुन रही है। उसकी दृष्टि स्थिर और नीचे है और अविनाश कमरे में कुछ गुनगुनाता हुआ टहल रहा है।]

अविनाश (स्वर से टहलते हुए) तुम्हारी आँखों का आकाश;
सरल आँखों का नीलाकाश,
खो गया मेरा खग अनजान......!

सुलेखा (मोजा बुनते हुए) क्या खो गया जी ?

अविनाश (स्वर से, जरा जोर से) खो...गया...मेरा...खग...अनजान !
(सुलेखा मौन है और सुनने में लीन है।)

अविनाश (अभिनय करते हुए) कवि कहता है कि मेरा मन रूपी पक्षी खो गया !

सुलेखा अच्छा ! पक्षी खो गया ! कहाँ ?

अविनाश आँखों के नीले आकाश में।

सुलेखा आँखो में भी नीला आकाश है ?

अविनाश आँखों में श्याम पुतली है न ? वह इतनी सुन्दर और व्यापक है कि उसमें मन रूपी पक्षी खो गया !

सुलेखा उफ़् ओह, यह आँखों की पुतली की लम्बाई-चौड़ाई है। इन क़वियों की लम्बी-चौड़ी बातों को क्या कहूँ ! लेकिन आँखों की पुतली तो काली होती है, नीली नहीं।

अविनाश नीली भी हो सकती है।

सुलेखा नीली तो अँगरेज़ लड़कियों की होती है। अच्छा, कवि यहाँ किसी अँगरेज़ तरुणी ही को लक्ष्य करके क़ह रहा है।

अविनाश सम्भव है !

सुलेखा सम्भव क्या, यही है। अच्छा ये कवि महोदय कौन हैं ?

अविनाश कवि ? कवि पं० सुमित्रानन्दन पंत हैं।

सुलेखा पंडित सुमित्रानन्दन पंत ! अच्छा, अच्छा यह बतलाइए, ये कवि वे तो नहीं हैं जिनके हम लोगों की तरह लम्बे-लम्बे बाल हैं ?

अविनाश हाँ, वही। लेकिन क्या तुमने उन्हें कभी देखा है ?

सुलेखा देखा तो नहीं। किसी पुस्तक में उनकी तसवीर अवश्य देखी है। बड़ी-बड़ी आँखें हैं, लम्बी नाक है, पतले ओंठ हैं।

अविनाश तुमने तो बड़े ध्यान से उनकी तसवीर देखी है!

सुलेखा सुना था, वे बड़े भारी कवि हैं। देखो न, तुम्हें भी तो उनकी कविताएँ याद हैं!

अविनाश हाँ, वे हमारे होस्टल में एक बार आये थे। मुझसे उनकी अच्छी जान-पहचान हो गई है। उन्होंने यही कविता सुनाई थी, बड़े स्वर से।

सुलेखा अच्छा, और यह तो बताओ इनका विवाह हुआ, या नहीं?

अविनाश अपना विवाह हो जाने पर तुम्हें सब के विवाह की चिंता है!

सुलेखा (**लज्जित होकर**) नहीं, यह बात नहीं है। यों ही पूछती हूँ कि उनका विवाह हुआ या नहीं।

अविनाश सुनते हैं, नहीं हुआ।

सुलेखा क्यों?

अविनाश अब मैं यह क्या जानूँ! अपनी-अपनी इच्छा है, नहीं किया होगा।

सुलेखा हैं तो बड़े सुन्दर!

अविनाश हाँ, कोई भी युवती इनसे विवाह कर सकती थी।

सुलेखा युवती या युवक?

अविनाश (**कौतूहल से**) युवक!

सुलेखा हाँ, जब मैंने पहले इनकी तसवीर देखी तो ज्ञात हुआ कि कोई आजकल के फ़ैशन की लड़की है। बाद में जब नीचे नाम पढ़ा तो मालूम हुआ कि कवि महोदय हैं।

अविनाश (**किंचित हँसी के साथ**) ठहरो, मैं पंडित सुमित्रानन्दन को यह लिखूँगा!

सुलेखा मेरा उनसे परिचय ही नहीं, वे मुझसे कहेंगे ही क्या?

अविनाश क्यों? तुम उनके एक परिचित पाठक की पत्नी हो, यही मैं उन्हें लिख दूँगा।

सुलेखा लिख दो। एक तो वे मुझ पर नाराज होंगे नहीं। यह तो एक सरल विनोद है। और अगर मुझ पर नाराज होने के लिए वे यहाँ आये भी तो मैं उन्हें चाय पिला दूँगी। बस, वे प्रसन्न हो जावेंगे।

अविनाश (प्रेम से) तुम बहुत अच्छी हो, सुलेखा! कोई तुम से नाराज रह ही नहीं सकता!

सुलेखा (मुँह बनाकर) चलो, अब यह प्रशंसा चली।

अविनाश नहीं सुलेखा, मैं अपने हृदय की बात कहता हूँ। मुझी को देखो, जब से हम लोगों का विवाह हुआ है तब से एक बार भी हम लोगों में कहीं अनबन हुई है?

सुलेखा मैं रही ही यहाँ कितने दिन हूँ?

अविनाश यह बात दूसरी है लेकिन उलझने वाली तबियत का तो एक दिन में पता चल जाता है।

सुलेखा यह बात तो सही है।

अविनाश फिर क्यों न कहूँ कि तुम बहुत अच्छी हो? और फिर तुम मुझे समझती हो और मैं तुम्हें समझता हूँ। (**कुर्सी पर बैठ जाता है। उसी स्वर में**) जो लोग अपने [illegible] की शिकायतें करते हैं, वे बेवकूफ़ हैं। मिलकर रहना नहीं जानते। हम लोगों की तरह रहें तो समझें कि जीवन की फुलवारी में फूल ही फूल हैं, काँटा एक भी नहीं!

सुलेखा सच है।

अविनाश सच है न?

सुलेखा लेकिन यह तुम्हारे ही स्वभाव का परिणाम है कि मेरा मन इतना प्रेममय हो गया है कि वह काँटों में भी फूल की कल्पना कर लेता है।

अविनाश नहीं, यह तो तुम्हारे हृदय की उदारता है कि तुम ऐसा कहती हो। पर सचमुच हम लोगों का जीवन ऐसा ही है जैसा इस फूलदान में लगे हुए चमेली और गुलाब के फूल का, जिनके एक-एक काँटे बीनकर अलग कर दिये गये हैं।

सुलेखा यह हम लोगों का भाग्य है !

अविनाश नहीं, सुलेखा ! वास्तव में तुम ऐसी सुलेखा हो जिसने मेरे जीवन का चित्र इतना सुखमय खींच दिया है !

सुलेखा ओह ! (बुनना छोड़कर) आपसे यह बात सुनकर मैं कितनी सुखी हूँ !

अविनाश मैं तो यह कहना चाहता हूँ, सुलेखा ! कि जब से विवाह जैसा सम्बन्ध संसार में स्थापित हुआ, तब से हम लोगों से अधिक सुखी शायद कोई भी नहीं होगा !

सुलेखा तुम कितने सुन्दर हो, अविनाश ! जैसे मेरा सुख साकार होकर मेरे सामने है और मैं उसकी आँखों से आँखें मिलाकर कह रही हूँ कि तुम मेरे हो और मैं तुम्हारी हूँ।

अविनाश और सुलेखा ! यदि तुम मुझसे पूछो तो मैं कहूँ कि विद्यार्थी जीवन के मेरे सारे स्वप्न जैसे तुम्हारे मधुर रूप में चित्रित हो गए हैं और मै कह रहा हूँ कि संसार में किसी के स्वप्न सच्चे नहीं होते, किन्तु केवल मेरे ही स्वप्न सच्चे हुए हैं ! अथवा मैं यह कहूँ कि मेरा सत्य ही मेरे विद्यार्थी-जीवन में स्वप्न बनकर खेल रहा था, आज वह तुम्हें पाकर अपने असली रूप में आ गया।

सुलेखा अविनाश ! अगर कोई लहर से पूछे कि तूने तट को छूकर कितना सुख पाया तो वह मेरी ओर संकेत कर देगी ।

अविनाश ओह, तुम कितनी अच्छी कल्पना कर सकती हो। सुलेखा ! यदि तुम चाहो तो कवि हो जाओ।

सुलेखा जिस तरह भाषा भावों को पाकर कविता बन जाती है, उसी तरह तुम्हें पाकर मैं धन्य हो गई !

अविनाश मैं फिर कहता हूँ, तुम कविता बहुत अच्छी लिख सकती हो, सुलेखा ! प्रयत्न करके देखो। तब प्रत्येक कवि-सम्मेलन में मैं तुम्हारे साथ जाकर कितना गौरवान्वित होऊँगा! लोग मेरी ओर संकेत करके कहेंगे कि ये कवयित्री सुलेखा के पति हैं। सुलेखा ! तुम मेरे सौभाग्य का अनुमान नहीं कर सकतीं। मैं तुम्हारी कविता की नोट-बुक अपने

ही पास रक्खूँगा और जब तुम कविता पढ़ने समय संकेत से अपनी नोट-बुक मुझ से माँगोगी तब मैं अपने चारो ओर देखकर लोगों की आँखों से आँखें मिलाकर मौन भाषा में कहूँगा कि तुम लोग मेरी ही पत्नी की कविता सुनने के लिए इतने उत्सुक हो और तब मैं तुम्हारी ओर कविता की नोट-बुक बढ़ा दूँगा। उस समय तुम अनुमान कर सकोगी कि वसंत भी कोकिल के स्वर से उतना सुखी नहीं होगा जितना मैं तुम्हारी कविता सुनकर।

सुलेखा (**मुस्कुराकर**) तुम मुझे आदर देते हो, अविनाश! अन्यथा जो कुछ भी मैं होऊँगी वह तुम्हारे ही गुणों से शक्ति प्राप्त करके हो सकूँगी। तुम मुझे अब लज्जित कर रहे हो, अविनाश!

अविनाश नहीं, सुलेखा! तुम वास्तव में देवी हो! तुम्हें पाकर मै धन्य हूँ! तुम्हारे ही गुणों से मेरा जीवन सुखी होगा। देखो, हम लोगों का विवाह हुए तीन महीने हुए। यह सितम्बर है। (**कैलेंडर की ओर दृष्टि**) हम लोगों का विवाह जुलाई में हुआ था। (**सुलेखा सिर हिलाती है।**) तब से हम लोगों में कोई मन बिगाड़ने वाला विवाद नहीं हुआ, कोई लड़ाई नहीं हुई। प्राय: विवाद और संघर्ष इन्हीं तीन महीनों में हुआ करते हैं और वह समय अब निकल गया और हम लोग एक-दूसरे के अब भी उतने ही समीप हैं जितने विवाह के दूसरे दिन थे।

सुलेखा उससे भी अधिक, अविनाश!

अविनाश हाँ, सचमुच उससे भी अधिक!

सुलेखा ओह......!

अविनाश (**चौंककर**) क्यों यह ठंडी साँस कैसी? क्या बात है?

सुलेखा ऐसी ही।

अविनास (**उद्विग्नता से**) तो जल्दी बतलाओ, जल्दी बतलाओ!

सुलेखा (**ठंडी साँस लेकर मुस्कुराते हुए**) तुम बहुत दूर बैठे हो!

अविनाश (**हँसते हुए**) ओह, तुम बहुत नटखट हो, मैं तो घबरा गया! (**पास आकर बैठता है।**) अब तो ठीक है!

सुलेखा हाँ, अब ठीक है।

अविनाश सुलेखा! हम लोगों में कभी संघर्ष नहीं होगा?

सुलेखा कभी नहीं। बात यह है कि संघर्ष तो तब होता है जब तुम्हारी कोई बात मुझे अच्छी न लगे और मैं उसे पत्थर की तरह उछालकर तुम्हारे ही पास लौटा दूँ या तुम्हें मेरी कोई बात अच्छी न लगे और तुम मेरा तिरस्कार कर दो। लेकिन जब तुम्हारी बात मुझे काँटे की तरह लगते हुए भी मेरे हृदय में फूल की तरह समा जाय तो फिर विवाद का कोई अवसर ही नहीं आ सकता।

अविनाश तुम कितनी अच्छी तरह से परिस्थितियों को समझती हो सुलेखा! हम लोगों के वैवाहिक जीवन का सूत्र कितनी दृढ़ता से बँधा हुआ है! राधा-कृष्ण की तरह या रोमियो-जूलियट की तरह!

(चित्रों की ओर संकेत करता है।)

सुलेखा अनेक विपत्तियों से जर्जर होने पर भी प्रेम वैसे ही बना रहा, बल्कि और भी बढ़ गया! यही प्रेम तो जीवन की सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

अविनाश सुलेखा! तुम्हारे प्रत्येक शब्द में जैसे एक तारा जगमगा उठता है और जब तुम देर तक मुझसे बातें करती हो तो जैसे मेरे चारों ओर एक आकाश-गंगा-सी बहने लगती है!

सुलेखा और बीच बैठे हुए तुम कौन हो? चन्द्रमा?

अविनाश और तुम? चाँदनी?

सुलेखा तुम बहुत सुन्दर हो, अविनाश!

अविनाश तुम बहुत कोमल-स्वभाव हो, सुलेखा! हम लोग अलग होकर भी मिले रहेंगे। लहरों की तरह अलग-अलग होकर भी साथ ही साथ बहते रहेंगे। हम और तुम और तुम और हम। क्यों सुलेखा? क्या हम और तुम एक-दूसरे से कभी रुष्ट हो सकते हैं?

सुलेखा कभी नहीं!

अविनाश चाहे मेरी कोई बात कभी तुम्हें बुरी भी क्यों न लगे?

सुलेखा हाँ, फिर भी। जैसे अब यही उदाहरण लो! मैं मोज़ा बुन रही थी और तुम कविता पढ़ रहे थे! दूसरी कोई स्त्री होती तो कहती—

कविता मत पढ़ो, मैं काम कर रही हूँ। कोई बिगड़े-दिमाग़ की होती तो कहती—शोर मत करो, मेरे काम में गड़बड़ होती है। लेकिन मैंने एक शब्द भी नहीं कहा।

अविनाश तो क्या तुम्हें मेरा कविता पढ़ना अच्छा नहीं लगा?

सुलेखा नहीं, यह बात नहीं है, लेकिन···बात यह है कि···यानी जब कोई काम करता है न; तो काम···ही अच्छा लगता है। काम में कविता कहाँ सूझती है? कविता तो लोग समय से पढ़ते हैं···यानी कविता समय से पढ़ी जाती है। (**हिचकिचाकर**) यानी आप मेरी बात समझे न!

अविनाश तो कविता पढ़ने का कौन-सा समय है?

सुलेखा कविता पढ़ने का? कविता पढ़ने का समय···मान लीजिये, मैं लॉन पर बैठी हूँ, पान खा रही हूँ, मोज़ा बुन···नही नहीं अपने बाल सँवार रही हूँ, उस समय कविता पढ़नी चाहिये, यानी वह समय कविता पढ़ने का है। अब मैं यहाँ काम रही हूँ, लेकिन कोई बात नहीं। मैंने आपत्ति तो नहीं की न···?

अविनाश आपत्ति की बात नहीं है। बात है कविता सुनने की। यह भी तो समझना चाहिये कि जब मैं कविता पढ़ रहा हूँ तो उस समय कोई काम हाथ में लेना ही नहीं चाहिये। इधर मैं कविता पढ़ रहा था और उधर तुम मोज़ा बुनने बैठ गईं।

सुलेखा तो मैं बैठी तो तुम्हारे सामने ही रही। उठकर तो कहीं गई नहीं! तुम कविता पढ़ते रहे, मैं सुनती रही। मैंने तुम्हें कविता पढ़ने से तो नहीं रोका, और काम भी क्या? तुम्हारे लिए ही तो मोज़ा बुन रही थी!

अविनाश धन्यवाद!

सुलेखा धन्यवाद! क्या मैं कोई गैर हूँ जो तुम मुझे धन्यवाद दे रहे हो?

अविनाश ग़ैर तो मैं तुम्हें नहीं कह रहा। मैं तो शिष्टता के नाते कह रहा हूँ।

सुलेखा जिसका तात्पर्य यह है कि अगर मैं किसी काम पर आपको धन्यवाद न दूँ तो मैं शिष्ट नहीं हूँ।

अविनाश समाज का नियम तो ऐसा ही है।

सुलेखा तो आप चाहते है कि जब-जब आप मुझे कविता सुनाएँ, मैं आपको धन्यवाद दूँ ?

अविनाश मुझे तो धन्यवाद की आवश्यकता नहीं है।

सुलेखा आपको आवश्यकता नहीं है, किन्तु अगर मैं धन्यवाद दूँ तो आपको कोई आपत्ति न होगी।

अविनाश धन्यवाद में किसे आपत्ति हो सकती है ?

सुलेखा तो दिन भर में आप मेरे लिए जितने काम करें, सबके लिए मैं धन्यवाद कहा करूँ।

अविनाश तुम चाहे न कहो, किन्तु आदत होनी चाहिए।

सुलेखा तो दिन भर मैं धन्यवाद ही कहती रहूँ। अच्छी बात है। मेरी इच्छा के विरुद्ध कविता सुनाने के लिए भी आपको धन्यवाद।

(हाथ जोड़ती है।)

अविनाश सुलेखा ! यह बात व्यंग्य से कही गई है !

सुलेखा इसमें व्यंग्य की कौन-सी बात है ? जो तुमने चाहा, वह मैंने कहा।

अविनाश तो यह धन्यवाद आपके हृदय से नहीं निकला ?

सुलेखा आपके लिए चाहे धन्यवाद हृदय से निकले, या न निकले, वह है तो धन्यवाद !

अविनाश सुलेखा ! विवाह के सिर्फ़ तीन महीनों के भीतर ह: मैं आपको स्वर से कविता सुनाऊँ और आप मुझे हृदय से धन्यवाद भी न दे सकें !

सुलेखा और विवाह के सिर्फ तीन महीने बाद मै मोज़ा बुनने के लिए बैठूँ और आप मुझे काम न करने दें और यहाँ-वहाँ की कविता सुनाएँ !

अविनाश आप क्या समझें कि पं० सुमित्रानन्दन की कविता कितनी उत्कृष्ट है।

सुलेखा आप ही सिर्फ़ कविता समझ सकते हैं और मैं तो निरी मूर्ख हूँ !

अविनाश (उठते हुए) कविता न समझनेवाला वास्तव में मूर्ख होता है !

सुलेखा (दृढ़ता से) तो आपने मुझे मूर्ख भी कह दिया।

अविनाश मैंने तो उसे मूर्ख कहा है जो कविता नहीं समझता।

सुलेखा कहते जाइये, मैं मूर्ख हूँ !

अविनाश तुम तो मुझे बहुत विचित्र मालूम होती हो, सुलेखा ! ज़रा-सी बात·· ···

सुलेखा अच्छा ! मैं विचित्र भी हूँ ! मूर्ख हूँ, विचित्र हूँ। और क्या-क्या हूँ······?

अविनाश एक साधारण-सी बात और आप······

सुलेखा यह साधारण-सी बात नहीं है, यह समझ की बात है।

अविनाश तो आप भी मुझे नासमझ कह रही हैं !

सुलेखा आपकी समझ आपसे जो कहे, उसे समझिए, मैं क्या कहूँ ?

अविनाश तो क्या आपके कहने का मतलब यह है कि जब-जब आप मोज़ा बुनने के लिए बैठें, तब-तब मैं अपने को समझाए रहूँ कि मैं आपके सामने कविता न पढ़ूँ ?

सुलेखा तो क्या आप भी समझते हैं कि जब-जब आप कविता पढ़ें, मैं मोज़ा बुनने का नाम भी न लूँ ?

अविनाश यह तो मैंने कभी नहीं कहा।

सुलेखा और जब-जब आप कविता पढ़ें, तब-तब मैं आपको अपने···अपने हृदय से धन्यवाद दूँ ! और सदैव धन्यवाद दूँ !

अविनाश यह भी मैंने कभी नहीं कहा।

सुलेखा आपने नहीं कहा तो मैं झूठ बोल रही हूँ। ठीक है, मैं मूर्ख हूँ, मैं विचित्र हूँ और अब मैं झूठ बोलने वाली भी हूँ।

अविनाश फिर आप उसी बात पर जाती हैं। उसे दोहराने की आवश्यकता ?

सुलेखा यानी आप यह सब मान रहे हैं कि मैं मूर्ख हूँ, विचित्र हूँ और झूठ बोलनेवाली हूँ। यही आपका प्रेम है, यही आपका व्यवहार है !

अविनाश मैंने क्या बुरा व्यवहार किया ?

सुलेखा जिस पत्नी को आए तीन महीने से अधिक नहीं हुआ, उसे पति

मूर्ख, विचित्र और झूठ बोलनेवाली कहे, यह व्यवहार ठीक कहा जा सकता है ?

अविनाश आप तो व्यर्थ बातें बढ़ा रही हैं !

सुलेखा अच्छा, व्यर्थ बातें बढ़ाने वाली भी कह लीजिए। कहते जाइए। आपके साहित्य में जितनी भी गालियाँ हैं, उन सभों को आज ही मेरे सामने कह डालिए। (**एक दबी हुई सिसकी**)

अविनाश मुझे यह सब अच्छा नहीं मालूम होता, सुलेखा !

सुलेखा आपको क्यों अच्छा मालूम होगा ! आपकी फुलवारी में तो फूल ही फूल हैं, काँटा एक भी नहीं। यही कहा था न ? यहाँ इतने काँटे हैं कि केवल एक दिन ही में वे सब तरफ़ से चुभने लगे।

अविनाश मैं नहीं कह सकता कि मैं जीवन में आपको कभी समझ सकूँगा !

सुलेखा और अभी दो क्षण पहले कह रहे थे कि 'मैं तुम्हें बहुत अच्छी तरह समझता हूँ। हम लोगों का जीवन ऐसा ही है जैसा इस फूल-दान में लगे हुए चमेली और गुलाब के फूलों का।' यह जीवन है ! (**फूलदान के फूल निकालकर फेंक देती है।**) 'हम लोग अपने वैवाहिक जीवन में बहुत सुखी हैं, जैसा सुखी शायद ही कोई संसार में होगा।' कौन झूठ बोला—मैं या आप ?

अविनाश और क्या आपने भी अभी दो मिनट पहले यह नहीं कहा था कि 'मेरा सुख साकार होकर मेरे सामने है और मैं उसकी आँखों में आँखें मिलाकर कह रही हूँ कि तुम मेरे हो और मैं तुम्हारी हूँ।'

सुलेखा आपने कहलाया, तो मैंने कहा !

अविनाश और क्या आपने अभी मुझसे बग़ैर कहलाये यह नहीं कहा था—'अगर कोई लहर से पूछे कि तूने तट को छूकर कितना सुख पाया तो वह मेरी ओर संकेत कर देगी।' कौन झूठा था—मैं या तुम ?

सुलेखा (**व्यथित होकर**) तुम···तुम···धोखा तो मैंने खाया ! मैं नहीं जानती थी कि आप इतने कठोर हैं, इतने झूठे हैं ! मैं व्यर्थ ही ठगी गई !

अविनाश तो क्या वे सब बातें झूठ हैं, जो आपने मेरी प्रशंसा में कहीं !

सुलेखा जैसे जो बातें आपने मेरी प्रशंसा में कहीं वे सब सच ही हों ! जब पति-पत्नी एक-दूसरे को समझ ही नहीं सकते तो उन्हें अलग हो जाना चाहिए ।

अविनाश बहुत आगे मत बढ़ो, सुलेखा ! मैं तो समझता था कि हम लोग बहुत सुखी हैं ।

सुलेखा यह आप अपने ही सम्बन्ध में कहें, मेरे सम्बन्ध में नहीं । मैं तो एक ऐसे इद्रजाल में फँस गई हूँ, जहाँ से सिर्फ़ मर कर ही निकल सकती हूँ !

अविनाश तो क्या आप समझती हैं कि यह हानि केवल आप की ही हुई है ? मेरी आप से अधिक हानि हुई है । मेरा सारा गृहस्थ-जीवन ही नष्ट हो गया ! मैं संसार में क्या उन्नति करूँगा, जब मेरे कलेजे पर ऐसी चोट लगी है जो दिनोंदिन भरने के बजाय और भी गहरी होती जाती है । जिसके घर में ही आग लगी हो वह विश्राम कहाँ पा सकता है ?

सुलेखा (**व्यंग्य से**) और मैं फूलों की सेज पर सो रही हूँ !

अविनाश आप ही ने तो यह आग लगा रक्खी है । आदमी विवाह करता है, अपने जीवन की सुख-शान्ति के लिए । यहाँ विवाह होता है रही-सही सुख-शान्ति के नष्ट करने के लिए । (**दृढ़ता से**) यह विवाह का सुख है, जहाँ छोटी-छोटी बातों पर कुढ़ना पड़ता है !

सुलेखा (**तीव्रता से**) आप मुझे क्या समझते हैं, और अपने को क्या समझते हैं ? क्या आप ईश्वर के अवतार हैं ? सारे दोष मेरे हैं और आप बिल्कुल निर्दोष हैं !

अविनाश हाँ, हाँ सारे दोष आपके हैं ! मैं तो सीधी कविता सुना रहा था, बीच में आपने ही यह बखेड़ा खड़ा कर दिया । आप ही ने मुझे धोखा दिया है, आप ही ने मुझे अपमानित किया है । आप ·· आप···

सुलेखा (**उठ खड़ी होती है ।**) आप मुझसे किस तरह की बातें करते हैं ! आपको इस तरह बातें करने का क्या अधिकार है ?

अविनाश (कुछ आगे बढ़कर) और आप मुझसे किस तरह की बातें कर रही हैं ?

सुलेखा क्या आप मुझसे लड़ना चाहते हैं ? आप किस तरह के आदमी हैं ? मैंने अभी तक नहीं समझा था कि जिसके साथ मेरा विवाह हुआ है वह सचमुच ही...वह सचमुच ही......

अविनाश सचमुच ही, सचमुच ही...क्या ? मैं सचमुच ही क्या कहूँ ?

सुलेखा झगड़ालू, धोखेबाज़, निर्दयी और...और

अविनाश सुलेखा ! अपनी ज़बान क़ाबू में रक्खो, मैं ऐसी बातें सुनने का आदी नहीं हूँ !

सुलेखा मैं भी ऐसी बातें सुनने की आदी नहीं हूँ। ऐसे विवाह पर धिक्कार है, जहाँ पुरुष अपनी स्त्री से मनमानी बातें कह सकता है। क्या तुमने मुझे अपनी कोई दासी समझ रक्खा है कि समय-कुसमय में तुम्हारी कविताएँ सुना करूँ और हँसो तो तुम्हारे साथ हँसा करूँ ?

अविनाश मैं भी ऐसी स्त्री की कोई क़ीमत नहीं करता, जो अपने काम में अपने को इस तरह उलझा ले कि दीन-दुनियाँ की ख़बर भी उसे न रहे। कोई प्रेम से उसके सामने कविता पढ़े और वह मोज़ा बुनने से अपनी नज़र भी ऊपर न उठाए। जो अपने आपको इस तरह समझे कि उसके सामने पति की कोई हस्ती ही नहीं !

सुलेखा (उग्रता से) पति...पति...पति पति क्या कोई भूत है, जो हमेशा सिर पर बैठ कर बोले ? पति···पति सुनते-सुनते थक गई !

अविनाश क्या आपकी यह मजाल कि आप मुझे इस तरह अपमानित करें ?

सुलेखा क्यों, आप मेरा क्या कर लेंगे ? मैंने ग़लती की जो अपनी शादी आपसे हो जाने दी। आपसे...आप से...

अविनाश तो अब उस ग़लती का प्रायश्चित्त कर डालिए।

सुलेखा हाँ, मैं प्रायश्चित्त करूँगी। अब इस तरह ज़िन्दगी नहीं बिता सकती। आत्महत्या करूँगी, मर जाऊँगी। ऐसे व्यक्ति के साथ रहना घोर पाप है जो...

(कहते-कहते बाहर निकल जाती है।)

अविनाश (सिर हिलाकर) आत्महत्या करेंगी ! आत्महत्या करना आसान बात है ! ऐसे आत्महत्या करने वाले बहुत देखे हैं ! मेरा सारा गृहस्थ-जीवन चौपट हो गया ! (टहलते हुए)...बात-बात पर झगड़ा बात-बात पर बहस...! ऐसे मैं इनके नाज़ कहाँ तक उठाऊँगा....! देख चुका...! बहुत हो चुका...! इनके सामने मैं कोई चीज़ ही नहीं रहा...! कहती हैं 'क्या कर लेंगे आप...?' मै तो वह कर सकता हूँ कि ज़िन्दगी भर याद बनी रहे । सुलेखा...यह मेरे जीवन का चित्र खींचेगी, या उस पर स्याही डाल देगी...!

(सुलेखा शीघ्रता से लौट आती है ।)

अविनाश क्यों ? क्यों लौट आईं ? आत्महत्या नहीं की ?

सुलेखा मैं क्या आत्महत्या करने से डरती हूँ ? ज़रूर करूँगी । ऐसे व्यक्ति के साथ नहीं रह सकती जो क़दम-क़दम पर पत्नी को लांछित करता है ! मैं अभी ही आत्महत्या करती, लेकिन मेरे सिर में इतने ज़ोर का दर्द है कि मैं इस समय आत्महत्या करने की बात ही नहीं सोच सकती। सिर का दर्द कम होने दीजिये और देखिये कि मै आत्म-हत्या करती हूँ या नहीं !

अविनाश कर चुकीं आत्महत्या ! मुसीबत तो मेरी है कि मैं इस तरह ज़िन्दा हूँ ! ज़िन्दा हूँ ! ज़िन्दा रहते हुए भी मृतक के समान हूँ ! घर में मेरी कोई इज़्ज़त नहीं, बाहर क्या इज़्ज़त होगी, ख़ाक ! पत्नी का रुख़ देखकर चलो तो हँस सकते हो, नहीं तो झगड़ालू, धोखेबाज़ और निर्दयी...!

सुलेखा हाँ, हाँ, झगड़ालू, धोखेबाज़, निर्दयी और...कायर !

अविनाश कायर ? किस बात में कायर ?

सुलेखा कायर ! कायर इस बात में कि मैं आत्महत्या करने के लिये आगे बढ़ी और आप में शक्ति नहीं थी मुझे एक क़दम बढ़कर रोक सकते और कहते कि नहीं-नहीं आत्महत्या मत करो ! खड़े रहे पत्थर की तरह । दुम दबाकर भाग जाते तो और भी अच्छा होता !

अविनाश मैं कभी दुम दबाकर भागा भी हूँ ? भागे होंगे आपके भाई-बन्द ।

सुलेखा देखो अविनाश ! तुम मुझे कुछ कह सकते हो, लेकिन मेरे भाई-बंदों का नाम भी नहीं ले सकते !

अविनाश क्यों ? क्यों नहीं ले सकता ? किसी ने मुझे कुछ दे दिया है ?

सुलेखा तुम इस लायक़ ही नहीं हो कि कोई तुम्हें कुछ देता !

अविनाश देखो, सुलेखा ! तुम मुझे बहुत अपमानित कर चुकीं । अपमान सहते-सहते मैं अंतिम सीमा तक पहुँच गया हूँ !

सुलेखा (**झुँझलाकर**) अंतिम सीमा ! बहुत धमकी देते हो । देख चुकी ऐसी धमकी ।

अविनाश कैसी धमकी ? क्या तुम मुझे इतना कमज़ोर समझती हो कि मैं कुछ कर ही नहीं सकता ? मैं तो वह कर सकता हूँ कि...

सुलेखा क्या कर सकते हो ? आज तक कुछ करके दिखाया होता !

अविनाश क्या देखना चाहती हो ? मेरी मौत ।

सुलेखा उसे देखकर मुझे क्या मिल जायगा !

अविनाश मिले, चाहे न मिले । मेरे न रहने से तुम सुखी तो हो जाओगी ।

सुलेखा हो चुकी सुखी ! मेरे भाग्य में सुख कहाँ ?

अविनाश तो चाहती हो कि मैं मर जाऊँ ! अच्छी बात है, अभी सही । गंगा किसलिए बह रही है, यमुना इतनी गहरी क्यों है ! उसमें कूदकर मैं अपनी ज़िन्दगी ख़त्म कर सकता हूँ ! फिर बैठी रहना सुख से । मैं अभी जाता हूँ ! (**शीघ्रता से प्रस्थान**)

सुलेखा (**दोहराते हुए**) गंगा किसलिए बह रही है, यमुना इतनी गहरी क्यों है ! जैसे इन्हीं के डूबने के लिए ! सैकड़ों वर्षों से वह इसीलिए बह रही है कि अविनाश जी उसमें कूदकर आत्महत्या करें । गृहस्थ-जीवन का मुझे यह सुख है...! बाबूजी तारीफ़ करते थे—लड़का इतना अच्छा है...! लड़का उतना अच्छा है ! देखने में, पढ़ने में, बातें करने में, शील में । यह है शील और ये हैं बातें ! मुझे जलती हुई आग में झोंक दिया...! इसीलिए मैंने जन्म लिया था कि ऐसी-ऐसी बातें सुनूँ और सहूँ...(**गहरी सिसकी**)

(**अविनाश लौटकर आता है ।**)

अविनाश (**अपने आप**) चारों ओर घोर अंधकार !

सुलेखा क्यों, लौट क्यों आये ? आत्महत्या नहीं की ! गंगा तो अभी तक बह रही है, यमुना तो अभी तक गहरी है !

अविनाश (**अभिमान से**) क्या तुम समझती हो कि मैं आत्महत्या नहीं कर सकता ? मैं अभी ही गंगा में डूबकर प्राण दे देता, लेकिन बाहर काले-काले बादल उठे हुए हैं। पानी बरसने वाला है। अँधेरा इतना ज़्यादा है कि रास्ता ही नहीं सूझता। सुबह होने दो और देखो, मैं आत्महत्या करता हूँ; या नहीं !

सुलेखा बहुत अच्छा, सुबह आप ज़रूर कर लीजिये। फिर मुझसे भी जो कुछ करते बनेगा कर लूँगी !

अविनाश कर लीजिएगा। (**अपना हृदय दबाकर**) उफ़ !

सुलेखा क्यों, क्या हुआ ?

अविनाश आपको इससे क्या ! परसों मेरी छाती में दर्द था। अभी बाहर गया तो ठण्डी हवा लगने से और भी बढ़ गया। (**अपना हृदय दबाकर**) उफ़ !

सुलेखा छाती में दर्द हुआ करे, किसी को पता न चले, तो कोई क्या दवा करे ?

अविनाश जैसे आपको पता चलता, आप दवा कर ही तो देतीं !

सुलेखा क्यों दवा करने में क्या हर्ज था ? मुझे परसों मालूम हो जाता तो मैं दवा ज़रूर लगा देती।

अविनाश क्या दवा थी जो आप लगा देतीं ?

सुलेखा जैसे मेरे पास कोई दवा ही नहीं है ! शादी में प्रोफ़ेसर सरस्वती प्रसाद ने दवा का जो सेट प्रेज़ेंट किया था वह किस दिन काम आता ?

अविनाश जैसे वह आज ही काम आता और उससे फ़ायदा हो ही जाता !

सुलेखा फ़ायदा क्यों नहीं होता ? मेरा सिर-दर्द दर्जनों बार उससे अच्छा हुआ है।

अविनाश लेकिन दर्द तो मेरी छाती में हो रहा है, सिर में नहीं।

सुलेखा वह छाती के दर्द पर भी आज़माई जा सकती है। लेकिन अब क्या...(सुलेखा जैसे ही आगे बढ़ती है, गिरे हुए फूलदान से उसे ठोकर लगती है और वह आह भर बैठ जाती है।)

अविनाश (आगे बढ़कर) क्या हुआ? ठोकर लगी क्या? कहाँ लगी?

सुलेखा (वेदना के स्वर में) आह!

अविनाश (समीप आकर सुलेखा पर झुककर) कहाँ चोट लगी, कैसी चोट लगी?

सुलेखा (प्रकम्पित स्वर में) नहीं लगी, नहीं लगी। (सिसकियाँ भरने लगती है।)

अविनाश (द्रवित होकर) सुलेखा! सुलेखा! मेरे ही कारण तुम्हें चोट लगी। सचमुच ही मैं बड़ा निष्ठुर हूँ! अपनी प्रिय सुलेखा को इतना कष्ट...! (झुककर) देखूँ, कहाँ चोट लगी है?

सुलेखा (पैर हटाकर) कहीं चोट नहीं लगी...! ओह, ख़ुद ही तो नाराज़ हो जाते हैं और पूछते हैं चोट कहाँ लगी!

अविनाश नहीं, नहीं, सुलेखा! मैं तुम पर बिल्कुल नाराज़ नहीं हुआ! वह तो बातों ही बातों में कुछ बातें मेरे मुख से निकल गईं, नहीं तो मैं अपनी सुलेखा को कहीं आधी बात भी कहता हूँ!

सुलेखा आधी बात क्या, सौ बातें कहो, पर मर्द आदमी समझ के बातें कहता है। तुमने नाराज़ होकर बातें कहीं, मुझे बुरा लग गया। मैंने तुम्हारा अपमान कर दिया।

अविनाश नहीं, अपमान तो मैंने किया।

सुलेखा नहीं, नहीं। मैंने ही तुम से कड़ी बातें कीं। मैंने ही तुमको अपमानित किया!

अविनाश नहीं सुलेखा! यह सब मेरा ही अपराध था। उठो, सोफ़ा पर बैठ जाओ। (सहारा देकर अविनाश सुलेखा को सोफा पर बिठलाता है। थोड़ी देर के लिए दोनों ही मौन रहते हैं।)

सुलेखा (अस्फुट शब्दों में) तुम मुझसे नाराज़ हो?

अविनाश और तुम मुझसे नाराज़ हो ?
सुलेखा नहीं, तुमने मुझे क्षमा कर दिया ?
अविनाश तुम्हारा अपराध ही क्या है, अपराध तो मेरा है ।
सुलेखा नहीं, अपराध मेरा है, सारा अपराध मेरा है ।
अविनाश यह मैं नहीं मानूँगा । बात मैंने बढ़ाई थी ।
सुलेखा बात तुमने भले ही बढ़ाई हो, लेकिन कड़ी बातें तो मैंने ही तुमसे कही थीं ।
अविनाश ख़ैर, मैं उन बातों का बुरा बिल्कुल नहीं मानता ।
सुलेखा और मैंने भी कहाँ बुरा माना !
अविनाश तो अब तो हम लोगों में कभी विरोध न होगा ?
सुलेखा कभी नहीं । हम लोग एक-दूसरे के हृदय को अच्छी तरह समझ गए हैं । तीन महीने में भी क्या हम लोग एक दूसरे को नहीं समझ सके ?
अविनाश नहीं, हम लोग एक दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं । और विरोध तो तब हो, जब मेरी बात तुम्हें अच्छी न लगे, या तुम्हारी बात मुझे अच्छी न लगे ।
सुलेखा नहीं, हम लोगों में से किसी को किसी की बात बुरी नहीं लगती ।
अविनाश अब तुम्हारे सिर का दर्द कैसा है ?
सुलेखा अब अच्छा है ! और तुम्हारी छाती का दर्द कैसा है ?
अविनाश यह भी अब ठीक हो गया !
सुलेखा बस, ठीक है !
अविनाश अब सिर-दर्द अच्छा हो जाने पर आत्महत्या तो न करोगी ?
सुलेखा (हँसकर) क्यों आत्महत्या करूँगी ? क्या तुम्हारे रहते मुझे आत्म-हत्या की ज़रूरत होगी ?
अविनाश (हँसकर) यानी, मैं तुम्हें इतनी तकलीफ़ देता हूँ कि वह आत्म-हत्या के बराबर है ।
सुलेखा (हँसकर) नहीं, यह मेरा मतलब नहीं । तुम इतने अच्छे हो कि तुम्हें छोड़कर आत्महत्या करने की तबियत किसकी होगी ? और

तुम...तुम छाती का दर्द कम होने पर गंगा में डूबने तो नहीं जाओगे ?

अविनाश तुम्हारे प्रेम-सागर में डूबकर कौन गंगा में डूबने की चेष्टा करेगा, सुलेखा।

सुलेखा तुम बहुत अच्छे हो, अविनाश !

अविनाश और सुलेखा ! तुमसे अच्छी स्त्री मैं सौ जन्मों में भी नहीं पा सकता !

सुलेखा मुझे लज्जित मत करो, अविनाश ! ओह, हम लोग एक-दूसरे को कितना अच्छा समझते हैं !

अविनाश हम लोग कितने सुखी हैं, सुलेखा !

सुलेखा हम लोगों का वैवाहिक जीवन वास्तव में कितना सुखकर है !

अविनाश (**गिरे हुए फूलदान और फूलों को लक्ष्यकर**) उस चमेली और गुलाब के फूल की तरह !

सुलेखा हाँ, बिल्कुल इन फूलों की तरह (**जमीन से गुलदस्ता उठाकर मेज पर सजाती है।**)

सुलेखा मैं तुमसे एक प्रार्थना करूँ ?

अविनाश हाँ, हाँ, कहो ! क्या चाहती हो ?

सुलेखा मेरी प्रार्थना अवश्य मानोगे ?

अविनाश ज़रूर मानूँगा। आज्ञा दो।

सुलेखा पं० सुमित्रानन्दन पंत की वह कविता सुनाओगे ? '**तुम्हारी आँखों का आकाश ?**"

अविनाश ज़रूर सुनाऊँगा। और तुम भी मेरी एक प्रार्थना मानोगी ?

सुलेखा इसमें भी कोई सन्देह है ?

अविनाश नहीं, वचन दो, मानोगी ?

सुलेखा मैं वचन देती हूँ ?

अविनाश जब मैं कविता पढ़ूँ तो तुम मेरे लिए मोज़ा बुनती जाओगी ?

सुलेखा अवश्य।

(अविनाश मोजा बुनने का सामान टेबिल से उठाकर सुलेखा के हाथ में देता है।)

सुलेखा हाँ, तो तुम कविता पढ़ो और मैं मोज़ा बुनती जाऊँ।
अविनाश वही कविता ?
सुलेखा हाँ, वही आँखों के आकाश की कविता।
अविनाश अच्छा तो सुनो। (सुनाने की मुद्रा में)
सुलेखा ज़रा, अच्छे स्वर से सुनाना।
अविनाश (स्वर से) तुम्हारी आँखों का आकाश;

सरल आँखों का नीलाकाश,
खो गया मेरा खग अनजान;
मृगेक्षिनी ! इसमें खग अनजान !

सुलेखा (बीच-बीच में) बहुत सुन्दर, वाह ! बहुत सुन्दर !

अविनाश यह कविता हाव-भाव से सुनाता है और सुलेखा मोज़ा बुनती है।)

(धीरे-धीरे परदा गिरता है।)

उपहास
(Comic)

१. फ़ीमेल पार्ट

फ़ीमेल पार्ट

पात्र-परिचय

१—मिस्टर प्रेमानन्द—होस्टल ड्रामा के कनवीनर

२—मिस्टर वर्मा
३—मिस्टर गुप्ता
४—मिस्टर खन्ना
५—मिस्टर शुक्ला
} —प्रेमानन्द के साथी

स्थान—होस्टल का एक कमरा

समय—रात के साढ़े सात बजे, ता० ६ सितम्बर, १९५०

फ़ीमेल पार्ट

(होटल के कमरे में मिस्टर वर्मा, गुप्ता, खन्ना और शुक्ला बैठे हैं। मिस्टर प्रेमानन्द खड़े होकर व्याख्यान के स्वर में बोल रहे हैं।)

प्रेमानन्द (गला साफ़ करके) भाइयो और बहनो! (देख कर) एँ, यहाँ कोई बहन नहीं है!···क्या करूँ, आदत ही तो है! और आप लोग भी सिर्फ़ चार आदमी हैं···मिस्टर वर्मा, मिस्टर गुप्ता, मिस्टर खन्ना और मिस्टर शुक्ला! ख़ैर···लेकिन···लेकिन···फ़ारमैलिटी तो पूरी करनी ही पड़ेगी···तो···तो···भाइयो और···और···भतीजो! मैं आप सब लोगों को कांग्रेचुलेट करता हूँ कि आपने मुझे···यानी मुझे···ड्रामा का कनवीनर चुना है।

शुक्ला (प्रश्न के स्वर में) कांग्रेचुलेट?

प्रेमानन्द (ग़लती सुधारने के ढंग से) एँ? ओ···ओह···वैरी सौरी! मि० शुक्ला! कांग्रेचुलेट नहीं···थैंक्स···यानी मैं आप सब लोगों को थैंक्स···जी हाँ,···थैंक्स देता हूँ कि आपने मुझे···यानी···मुझे ड्रामा कनवीनर चुना है। (संतोष की साँस लेकर) अब ठीक है। हाँ, तो हमारी सोशल गैदरिंग २१ तारीख़ को होने जा रही है।

वर्मा २१ तारीख़ या १२ तारीख़?

प्रेमानन्द १२ तारीख़? कोई बात नहीं, मिस्टर वर्मा! कोई बात नहीं! २१ न सही, १२ सही! १२ और २१ में सिर्फ़ १ और २ की पोज़ीशन में हेर-फेर है। और पोज़ीशन तो हमेशा ही बदलती रहती हैं। जैसे पहले मर्द की पोज़ीशन पहले थी, औरत की बाद में! लेकिन अब औरत की पोज़ीशन पहले है और मर्द की बाद में!

सम्मिलित स्वर—हीयर, हीयर, वैल सैड (सम्मिलित हँसी)

प्रेमानन्द (फिर गला साफ़ करके) अच्छा, आप लोग हँस चुके…तो फिर शुरू करूँ? तो १२ तारीख़ को सोशल गैदरिंग होने जा रही है? १२ तारीख़ को। (सहसा) एँ…यह तो इतने पास की तारीख़ है! बहुत कम दिन रह गए हैं। आज है तारीख़ ६, तो सिर्फ़ ६ दिन ही बाकी रह गए हैं! इस बीच हमें अपना नाटक चुनना है, पार्ट याद करना है, रिहर्सल करना है, ड्रैस का इन्तज़ाम करना है, स्टेज बनाना है और……

गुप्ता टिकटें छपा कर बेचना भी तो है!

प्रेमानन्द हाँ, मिस्टर गुप्ता! यह बात आप ही को याद रह सकती है! यह काम आप ठीक कर सकते हैं। बेचने में आप बहुत एक्सपर्ट हैं।

गुप्ता तारीफ़ के लिए धन्यवाद लेकिन कमीशन क्या देंगे!

प्रेमानन्द कमीशन! कमीशन...अब यह समझिए कि...कि दस टिकट बेचने पर पद्म विभूषण नं२ सौ टिकट बेचने पर पद्म विभूषण नं० १ और पाँच सौ टिकट बेचने पर......

गुप्ता क्या?

प्रेमानन्द पाँच सौ टिकट बेचने पर...(सोचते हुए)...अरे, कोई बोलता भी नहीं!

खन्ना हिज़ हाइनैस!

प्रेमानन्द हिज़ हाइनैस! अब हिज़ हाइनैस रहे कहाँ...

वर्मा अच्छा तो भारत रत्न सही!

प्रेमानन्द (प्रसन्नता से) राइट! पाँच सौ टिकट बेचने पर भारत रत्न! लेकिन देखिए...रात बीतती जा रही है। हमें जल्दी ही कोई नाटक चुन लेना चाहिए। देर नहीं करनी चाहिए!

गुप्ता मैंने एक नाटक पढ़ा है। बहुत अच्छा! मर्चेंट आव् वेनिस की तरह है!

प्रेमानन्द मिस्टर गुप्ता को मर्चेन्ट के सिवाय कुछ सूझ ही नहीं सकता! ख़ुद मर्चेंट के बेटे हैं। नाटकों में भी अपनी आदत नहीं छोड़ते!

ख़ैर, जाने दो ! (शुक्ला से) अच्छा, मिस्टर शुक्ला ! आप कोई नाटक बतला सकते हैं ?

शुक्ला — कालिदास का मेघदूत कैसा रहेगा ?

प्रेमानन्द — ले आये अपनी संसकीरत ! अरे, यार ! मेघदूत भी कोई नाटक है ? अरे, वह तो संस्कृत का प्रेम-काव्य है ! प्रेम काव्य ! ख़ैर, जाने दो ! मिस्टर खन्ना कुछ कह रहे हैं ।

खन्ना — मैं ? कहूँ ? अच्छा तो 'ख़ूबसूरत-बला' कैसा रहेगा ?

प्रेमानन्द — अपना मुँह शीशे में देखकर शायद आपने 'ख़ूबसूरत बला' कहा है ! ख़ूबसूरत बला को लेकर पालना है क्या ! अरे यार ! इतने आगे मत बढ़ो । अभी ज़रा ख़ूबसूरती को और बढ़ने दो ! बला अपने आप बढ़ जायगी । अच्छा, मिस्टर वर्मा ! आपकी क्या राय है ?

वर्मा — मैं समझता हूँ कि कोई नाटक इतिहास से सम्बन्ध रखने वाला हो ! यह बतलाइये, रामकुमार वर्मा का 'तैमूर की हार' कैसा रहेगा ?

प्रेमानन्द — जनाब, रहने दीजिए । मैंने वह नाटक पढ़ा है और रेडियो से सुना भी है । गो उसमें तैमूर की वीरता की जीती-जागती तसवीर खींची गई है लेकिन 'तैमूर की हार' नाम से कुछ लोग अपने मन में समझ लेंगे कि इसमें तैमूर की बुराई की गई है। और आप जानते हैं कि आजकल किसी धर्म के नेता की बुराई करना कितना अनडेमोक्रेटिक है !

वर्मा — लेकिन उसमें धर्म के नेता की बुराई कहाँ है ! नाटक को आप फिर पढ़ सकते हैं !

प्रेमानन्द — आजकल लोगों को नाटक पढ़ने की फ़ुर्सत है ? नाम देख कर ही नाटक का अन्दाज़ कर लेते हैं । 'ख़त का मज़मूँ भाँप जाते हैं, लिफ़ाफ़ा देखकर ।'...जी !

वर्मा — तो उस नाटक का नाम ही बदल दिया ! 'तैमूर की जीत' ।

प्रेमानन्द — हाँ, हो सकता है ? लेकिन...लेकिन मैंने ख़ुद एक नाटक लिखा है ।

खन्ना — अच्छा ?

प्रेमानन्द — (विनम्रता की हँसी हँसते हुए) जी हाँ, मैंने ख़ुद एक नाटक लिखा है !

वर्मा तो फिर आज मान लिया जाय कि बबूल में भी आम के फल लग सकते हैं !

प्रेमानन्द (उसी स्वर में) जी! मैंने हमेशा अजीबोग़रीब काम किए हैं। आप मुझे चाहे बबूल कहें या आम ! जो किसी से नहीं हो सकता, वह काम मैं कर सकता हूँ । और हमेशा कर सकता हूँ !

गुप्ता यह तो हम सब लोग जानते हैं लेकिन कौन-सा नाटक है, ज़रा नाम भी सुनें !

प्रेमानन्द उसका नाम है ' 'धूप' ।

शुक्ला धूप ? इसके क्या मानी !

प्रेमानन्द 'धूप' के मानी नहीं समझते ? इलाहाबाद में रहते हो और धूप से अनजान हो ?

शुक्ला फिर भी 'धूप' किसी नाटक का नाम नहीं हो सकता !

प्रेमानन्द क्यों, जनाब ? क्यों नहीं हो सकता ? आपने पं० सुमित्रानन्दन पन्त के नाटक का नाम सुना है, 'ज्योत्स्ना' ?

शुक्ला हाँ, हाँ, उन्होंने 'ज्योत्स्ना' नाम का नाटक लिखा है ।

प्रेमानन्द तो तब उन्होंने 'ज्योत्स्ना' यानी चाँदनी नाम का नाटक लिखा है तो मैं 'धूप' क्यों नहीं लिख सकता ?

वर्मा नहीं, ज़रूर लिख सकते हैं और धूप तो बहुत मामूली नाम है। प्रसाद जी ने तो 'आँधी' नाम से अपनी कहानियों का संग्रह किया है । आँधी ! तो 'धूप' नाम तो 'आँधी' से घट कर ही रहा !

प्रेमानन्द घट कर रहे या बढ़ कर ! मैं तो कहता हूँ, जनाब ! कि 'धूप' के आगे 'आँधी' कुछ भी नहीं । जब कस के सिर पर बेभाव से पड़ती है तो फिर किसी भी चीज़ का बेभाव से सिर पर पड़ना कोई हैसियत नहीं रखता !

गुप्ता हैसियत ? सिर पर पड़ना भी हैसियत रखता है ?

वर्मा अरे, छोड़ो भी इस बहस को ! हम लोग नाटक चुन रहे थे और सिर पर और ही चीज़ का इस्तेमाल होने लगा !

प्रेमानन्द हाँ, भाई ! हम लोगों के पास ज्यादा वक्त नहीं है। जल्दी ही तय करना है।

गुप्ता तो आपने 'धूप' नाम का नाटक लिखा है। अच्छा, साहब ! बहुत अच्छा नाटक है। पंत जी सुकुमार हैं तो उन्होंने 'ज्योत्स्ना' लिखा, आप हाथीनुमा हैं तो आपने 'धूप' लिखा, ठीक है !

शुक्ला बिल्कुल ठीक ! मिस्टर प्रेमानन्द ! उसकी स्टोरी क्या है ?

प्रेमानन्द अहा ! स्टोरी ! ओह, मैंने अपनी चार रातें खराब की हैं। इतना सोचा है, इतना सोचा है कि गोल्ड फ्लेक सिगरेट के छः डिब्बे खत्म हो गए ! जी !

गुप्ता अच्छा, तो आपके सोचने का पैमाना सिगरेट का डिब्बा है !

प्रेमानन्द देखिए, जनाब ! आप मेरे सोचने को आसान न समझिए। सारी रात मैंने तारे गिन-गिनकर सोचा है, तारे गिन-गिनकर···

वर्मा भाई ! तारे गिनकर सोचते तो आपके नाटक का नाम 'रात' होना चाहिए। आपने तो लिखा है 'धूप' !

प्रेमानन्द तो जनाब ! क्या धूप भी गिनी जा सकती है ! कल गिनकर बतलाइएगा ! कभी गिन सकते हैं आप धूप को ? आप भी वर्मा होकर हिसाब-किताब की बातें करते हैं। गोया, आप गुप्ता हैं !

वर्मा अच्छा, भाई ! ग़लती हुई ! ज़रा धूप की स्टोरी सुना दो !

प्रेमानन्द धूप की स्टोरी ! अहा ! कितने मायने रखती है ! ज़रा सोचिए ! और मैंने अपनी स्टोरी सारी दुनियाँ की स्टोरी बना दी है। अगर मेरी स्टोरी का अँग्रेज़ी अनुवाद हो गया तो आप देखेंगे कि इंगलैंड, फ्रांस, बेलजियम, नार्वे, स्वीडन, रशा के साहित्यकार मेरा पता पूछ-कर मुझे ख़त लिखेंगे। मुमकिन है, कोई साहित्य-प्रेमी महिला हो तो उसका प्रेम पत्र भी···

वर्मा मिस्टर प्रेमानन्द ! मैं अभी से आपको कांग्रेचुलेट करता हूँ। प्रेम-पत्र आने पर आपका नाम प्रेमानन्द भी सार्थक हो जायगा। आपकी स्टोरी सुनकर विदेश की कोई महिला आपसे ज़रूर प्रेम करने लगेगी, कांग्रेचुलेशन्स !

गुप्ता महज़ कांग्रेचुलेशन्स से काम नहीं चलेगा, हम लोग गहरी दावत वसूल करेंगे, लेकिन अभी स्टोरी तो सुनाइए।

प्रेमानन्द अहा! कितनी अच्छी स्टोरी मैंने लिखी है! सुनने के लिए तैयार हो जाइए।

गुप्ता यार! ख़ामख़्वाँ बोर कर रहे हो। सौ बार तो कह चुके कि स्टोरी सुनाता हूँ। अभी तक स्टोरी की स्टोरी चल रही है!

प्रेमानन्द आइ एम वैरी वैरी सौरी! अच्छा, सुनो स्टोरी! (**सोचकर**) अहा! क्या स्टोरी है!

शुक्ला बड़ी इमारत मालूम देती है, फर्स्ट स्टोरी है, या सेकंड स्टोरी!

खन्ना अब सुनो भी! (**प्रेमानन्द से**) हाँ, मिस्टर प्रेमानन्द! स्टोरी ज़रा धीरे-धीरे सुनाना, सीढ़ी, दर सीढ़ी। लिफ्ट से चढ़ने की हैसियत नहीं है।

प्रेमानन्द अच्छा जनाब! तो मेरी स्टोरी चलती है, प्रातःकाल से! अहा! ठंडी-ठंडी हवा बह रही है, कलियाँ चटख़ रही हैं, सूरज अभी नहीं निकला लेकिन उजेला फैल रहा है।

शुक्ला जैसे आप क्लास में नहीं आए लेकिन आपकी अटैंडैंस रजिस्टर में भर चुकी है, क्योंकि किसी दोस्त ने प्राक्सी करने का कन्ट्रेक्ट कर लिया था!

गुप्ता ठीक है, इस फ़ेन में तो आप उस्ताद है! आगे क्या हुआ!

प्रेमानन्द (**भावावेश में**) तारे धीरे-धीरे डूब रहे हैं।

शुक्ला जैसे वार्डन साहब की हसरतें हम लोगों को देखकर डूब जाती है!

प्रेमानन्द (**उसी भावावेश में**) अहा! क्या समा है! उल्लू बेचारा रात भर जागता रहा। उसकी आँखों में निद्रा देवी धीरे-धीरे सामने की कोशिश कर रही है।

शुक्ला आपको उल्लू से बहुत सहानुभूति हुई?

गुप्ता क्यों न हो! इन्हीं की जाति का है!

प्रेमानन्द आप लोग टीका-टिप्पणी करके मेरा ध्यान भंग कर देते हैं और मेरा मन है कि स्टोरी से चिपटा हुआ है! (**पुनः भावावेश में**)

अहा ! इतने में ही सूरज निकला, सारा संसार जाग उठा। यह जीवन जागरण का संदेश है, यह राष्ट्र का संदेश है, भाइयो और बहिनो !······नहीं नहीं भाइयो और भतीजो ! यह मानव जाति का सन्देश है, यह विश्व-बन्धुत्व का सन्देश है !

वर्मा धन्य है ! धन्य है !!

खन्ना इतना सफल नाटक संसार में नहीं लिखा गया।

प्रेमानन्द आप लोग तारीफ़ करें। तो ख़ैर···आप लोगों का···आप लोगों का···

वर्मा मोची हूँ, कहिये !

प्रेमानन्द मोची होना कोई बुरी बात नहीं है। मिस्टर वर्मा ! आप समझिए। अहा ! कबीरदास ने कहा है—जो तोंकू काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल। तो सज्जनो ! आप लोग जानते हैं कि अमरवाक्य की रक्षा मोची ही करता है। आपके चरण कमलों में जूता नाम की वस्तु को सुसज्जित करके। मोची ! तुम धन्य हो ! इसलिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अछूतोद्धार की बात कही है !

शुक्ला सचमुच आपने ही अछूतोद्धार का रहस्य समझा है !

प्रेमानन्द सचमुच में मैं ही ऐसा व्यक्ति होने का दावा पेश कर सकता हूँ। लेकिन—कबीर साहब ने कहा है—दुनिया ऐसी बावरी पत्थर पूजन जाहिं—अरे मुझे कोई नहीं पूजता। मैं···मैं···मैं······

वर्मा ओह, प्रेमानन्द ! तुम अपने व्याख्यान में बिल्कुल बोर कर रहे हो। नाटक की पूरी बात नहीं करते !

प्रेमानन्द हाँ, नाटक ! आपने मुझे जगा दिया। धन्य हैं आप ! तो मेरे नाटक में इतने कैरेक्टर्स हैं। तारे, सूरज, पुष्प, पवन, उल्लू और धूप !

खन्ना अच्छा, तो यह एक रूपक है। इसमें तारे, सूरज, पुष्प और पवन तो हममें से सभी बन सकते हैं, धूप और उल्लू के बारे में दिक्कत पड़ेगी।

प्रेमानन्द अहा ! प्रकृति में सब वस्तुएँ बराबर हैं। कहिये मिस्टर शुक्ला ! आप उल्लू बनेंगे ! यानी मेरे कहने का मतलब यह है कि आप उल्लू

का पार्ट लेंगे। पंत जी ने भी अपने नाटक ज्योत्स्ना में उल्लू का पार्ट रक्खा है। इसमें कोई बुराई की बात नहीं है!

गुप्ता हाँ, कोई बुराई की बात तो है नहीं। शुक्ला! तुम बौने कूद के गदबदे आदमी भी हो और तुम्हारी आँखें भी गोल हैं। कपड़े भी तुम अक्सर भूरे रंग के पहनते हो!

शुक्ला उल्लू बनें आप। आपकी आँखें भी तो गोल हैं और अक़्ल में भी आप कुछ वैसे ही हैं।

गुप्ता देखो, शुक्ला! मेरी अक्ल के बारे में कुछ कहने का तुम्हे कोई हक़ नहीं।

शुक्ला और तुम्हें भी मेरी आँखों के बारे में कहने का कोई हक़ नहीं।

गुप्ता हक़ है और सौ बार हक़ है! आँखों के बारे में कहने में बुराई नहीं है, जनाब! अक़्ल के बारे में कहना गाली देना है।

शुक्ला गोल आँखों के बारे में कहना भी गाली देना है!

गुप्ता अच्छा, तो तुम कोई लाठ साहब नहीं हो कि मैं तुम्हारी हमेशा तारीफ़ करूँ।

शुक्ला और तुम अपने को क्या समझते हो! लाट साहब की दुम।

गुप्ता ए, ज़रा ज़बान सम्हाल कर बोलो, नहीं तो होस्टल से निकलवा दूँगा!

शुक्ला होस्टल से निकलवा दूँगा। हँसी खेल है। मुझे होस्टल से निकलवाना। होस्टल से निकलवा देंगे? गोया वार्डन साहब के भतीजे हैं न!

वर्मा ओह! आर्डर, आर्डर! मैं समझता था कि आप लोग मज़ाक कर रहे हैं लेकिन आप तो कलोनियल वार पर आमदा हो गए!

शुक्ला इन्हीं को देखो! तीसमारखाँ की दुम बनते हैं ना—उल्लू कहीं के!

गुप्ता और तुम उल्लू की दुम!

प्रेमचन्द उल्लू की दुम की ज़रूरत नहीं है, भाई! उल्लू की है। लड़ाई-झगड़ा करने की क्या बात है! इसमें उल्लू बनने में किसी को ऐतराज़ है

तो मैं उल्लू बन जाऊँगा, भले ही भारी भरकम हूँ। उल्लू मोटा ही सही। चलिए, लिखिए मेरा नाम और उसके आगे उल्लू।

गुप्ता बहुत अच्छा! मिस्टर प्रेमानन्द उल्लू।

प्रेमानन्द यह ठीक हुआ। अब लड़ाई-झगड़ा न होगा।

वर्मा नहीं साहब! जब पार्ट फ़िट हो गया तब लड़ाई झगड़े की क्या बात!

प्रेमानन्द आह ही एक अक्लमन्द आदमी हैं। अच्छा अब धूप का फ़ीमेल पार्ट है! कहिए, मिस्टर खन्ना! आप धूप का पार्ट लेंगे?

खन्ना बिना फ़ीमेल पार्ट के काम नहीं चल सकता, मि० प्रेमानन्द?

प्रेमानन्द मिस्टर खन्ना! यह बात विचारणीय है कि बिना धूप को लाये हुए सूरज का पार्ट फ़िज़ूल है। फिर आपके ही नाम पर मेरा नाटक है। यह पार्ट तो हीरोइन का है, हीरोइन का! जब आप चमचमाती हुई सुनहली रेशम की साड़ी पहनकर निकलेंगे तो अहा! मिस्टर खन्ना! दिन में भी बिजलियाँ बरस जायँगी, बिजलियाँ!

खन्ना बिजलियाँ गिराइए आप! मुझसे यह पार्ट न होगा?

प्रेमानन्द इस तरह ख़फ़ा होने से कैसे काम चलेगा, मिस्टर खन्ना! मै जब उल्लू बन रहा हूँ तो धूप कैसे बन सकता हूँ।

खन्ना क्यों आप डबल रोल प्ले कर सकते हैं।

प्रेमानन्द लेकिन धूप आती है और उल्लू जाती है...ओह माफ़ कीजिए उल्लू जाता है। वाह, क्या सीन है! एक ही साथ मैं धूप बनकर कैसे आ सकती हूँ ओह...माफ़ कीजिए कैसे आ सकता हूँ और उल्लू बनकर कैसे जा सकता हूँ।

वर्मा प्रेमानन्द ठीक कह रहा है, खन्ना! ले लो न धूप का पार्ट! तुम्हारा रंग भी निखरा हुआ है। लोग तुम्हें देखकर लड़कियों की तरफ़ देखना भूल जायँगे।

खन्ना वर्मा! क्या फिर लड़ाई करनी है!

प्रेमानन्द नहीं, मिस्टर खन्ना! लड़ाई तो स्त्रियाँ करती हैं, आप हम कहाँ कर सकते हैं। लेकिन ईश्वर ने आपको वह ख़ूबी दी है—अहा! नहीं दरकार गहने की जिसे ख़ूबी ख़ुदा ने दी—कि फ़लक पर ख़ुशनुमा

लगता है देखो चाँद बेगहने ! (भावुक होकर) हाय ! खन्ना ! तुम तो होस्टल के चाँद हो ! चाँद !

शुक्ला — ले भी लो, खन्ना ! धूप का पार्ट !

प्रेमानन्द — आह ? जब तुम चमचमाते हुए स्टेज पर आओगे तो मैं आर्कलाइट से ऐसी रोशनी फेकूँगा कि लोग चमचमाते हुए मेडल तुम्हारे ऊपर निछावर करेंगे। और खनखनाते हुए रुपयों के ढेर खन्ना के क़दमों को चूमेंगे !

शुक्ला — लेकिन आजकल रुपयों की खनखनाहट कहाँ, नोटों की सरसराहट है।

प्रेमानन्द — मि० शुक्ला ! अगर तुम्हें बात करना नहीं आता तो बेहतर है तुम चुप रहो। बनती हुई बात को बिगाड़ते हो। यहाँ खन्ना राज़ी हो रहा है और तुम सरसराहट से उसके सर को भी उलटा कर रहे हो !

खन्ना — सर के उलटने की क्या बात ! मैं धूप का पार्ट ले ही नही रहा हूँ !

प्रेमानन्द — डियर ! मान जाओ ! यह हीरोइन का पार्ट है। हीरोइन के पार्ट से ही नाटक की शोभा होती है ! तुम्हारे पार्ट से मेरा नाटक खिल उठेगा ! शहर में धूम मच जायगी खन्ना की। शहर में धूम मच जायगी प्रेमानन्द की ! दुनिया पागल हो उठेगी। वाह रे नाटककार-वाह री हीरोइन ! होस्टल का सिर उठकर आस्मान से लग जायगा ! आस्मान से।

शुक्ला — मैं समझा, कालेज की छत से। अच्छा खन्ना ! ले भी लो हीरोइन का पार्ट !

वर्मा — क्यों, खन्ना ! कोई बात तो ऐसी नहीं है। नाटककार के नाटक का नाम रूप की धूप भी सार्थक हो जायगा ! हम लोगों में तुम्हारा रूप ही……

गुप्ता — उसका क्या कहना है, भाई वर्मा ! खन्ना की क्या बात है। जहाँ से निकल जाता है, बाहर की साँस बाहर और अन्दर की साँस अन्दर ! (गहरी साँस लेकर) हाए……

वर्मा — यह तो ठीक है लेकिन गुप्ता इनके बड़े गहरे दोस्त हैं। अगर गुप्ता कहें तो खन्ना पार्ट ले सकते हैं, क्यों गुप्ता ! कह दो न !

गुप्ता अच्छा, भाई खन्ना ! ले भी लो हीरोइन का पार्ट !

खन्ना यार, तुम भी अजीब आदमी हो ! इन लोगों में मिल गए ! कैसे लूँ पार्ट । फ़ादर नाटक देखने आएँगे तो क्या कहेंगे ।

वर्मा कहेंगे क्या कहेंगे ? बरखुरदार काफ़ी तरक्की कर चुके हैं ।

खन्ना हाँ, सोचेंगे कि घर पर तो यह लड़का था—होस्टल में आकर लड़की बन गया ।

वर्मा अमाँ, तो हमेशा के लिए लड़की थोड़े ही बने रहोगे । दो घंटे बाद—फिर वही आता हूँ, जाता हूँ, कहोगे ।

खन्ना लेकिन मुझसे यह पार्ट नहीं होगा ।

प्रेमानन्द होगा, मेरे दोस्त और बहुत अच्छी तरह से होगा । ईश्वर की कृपा से···ओह वेरी सारी ! वेरी सारी ! फ़ैशन की कृपा से तुम क्लीन शेव्ड रहते भी हो ! कोई ऐसी बात नहीं—सिर्फ़ घण्टे भर रेशमी साड़ी को ओबलाइज कर देना । बस ! मिस्टर खन्ना ! क्या कहूँ, लोग कहते हैं, हम स्वतन्त्र हैं ! हम स्वतन्त्र हैं ! लेकिन ख़ाक स्वतन्त्र हैं ? हमें फ़ीमेल पार्ट लेने की स्वतन्त्रता तक नहीं है । फ़ादर यह कहेंगे···वह कहेंगे ! और अगर कहेंगे भी तो तुम्हारा घट क्या जायगा ! ओह खन्ना ! यह हमारी बदक़िस्मती है कि लड़कियाँ हमारे नाटक में हमारे साथ पार्ट नहीं लेतीं । उनको हम लोगों पर फ़ेथ नहीं है । लेकिन विलायत में तो यह इंसल्ट समझा जाता है अगर साथ पार्ट न करने दिया जाय । हम स्वतन्त्र हैं ! **हमारी स्वतन्त्रता की कीमत क्या है यह भी कोई स्वतन्त्रता है ?**

वर्मा लेक्चर तो बहुत अच्छा देते हो, प्रेमानन्द ! तुमको जल्द ही कोई नेता होना चाहिए !

प्रेमानन्द ओह ! क्या ख़ाक नेता होऊँगा जब मिस्टर खन्ना ज़रा-सी बात नहीं मानते !

खन्ना माफ़ कीजिए, मिस्टर प्रेमानन्द ! मैं सब बात मान सकता हूँ । यह नहीं मान सकता ! अगर फ़ादर की बात छोड़ भी दूँ तो मेरी सिस्टर क्या कहेगी !

वर्मा अच्छा, तो यह बात! साहब! यहाँ सिस्टर का ज़िक्र नहीं है, सिस्टर की फ्रैंड का ज़िक्र है जो इन्हें फ़ीमेल ड्रेस में देखकर मज़ाक करेगी!

शुक्ला यह बात तो और भी अच्छी है। आयन्दा मिस्टर खन्ना को देखकर उनको घमंड करने का मौक़ा न मिलेगा! फ़ीमेल ड्रेस में खन्ना उससे लाख गुने अच्छे दिखेंगे।

खन्ना माफ़ कीजिए। यह सवाल नहीं है। फ़ीमेल पार्ट लेना मेरे टेम्परामेंट को क़बूल नहीं!

प्रेमानन्द मिस्टर खन्ना! टेम्परामेंट तो बनाने से बनता है। और सिर्फ़ एक हफ़्ते की बात है। मिस्टर खन्ना! अगर तुम मेरी बात मान लो तो तुम्हारे हफ्ते भर के सिनेमा और रेस्टोरेंट का खर्च ड्रामा कमेटी पर रहा।

सम्मिलित स्वर हीयर, हीयर!

खन्ना देखिए आप लोग मुझे परेशान न कीजिए। मैं यह पार्ट नहीं करूँगा। नहीं करूँगा। मैं जाता हूँ। (प्रस्थान)

प्रेमानन्द अरे, जरा सुनो तो मिस्टर खन्ना! ज़रा मेरी भी तो सुनो।

वर्मा खन्ना! मिस्टर खन्ना!

गुप्ता चले गए महाशय!

प्रेमानन्द बताइए, जनाब! सिर्फ़ ६ दिन रह गए! और अभी तक हीरोइन का पार्ट तय नहीं हुआ! मिस्टर खन्ना अगर यह पार्ट ले लेते तो होस्टल का नाम हो जाता!

गुप्ता तो फिर जाइए! उन्हें मनाइए!

प्रेमानन्द मैं अकेला क्या मना सकता हूँ! आप सब लोग अगर उन्हें मनाएँ और मिस्टर गुप्ता! हम लोग आपके एहसान को कभी न भूलेंगे अगर आप यह बात तय करा दें।

गुप्ता मेरे सिनेमा का खर्च ड्रामा कमेटी उठाएगी?

प्रेमानन्द क्यों भाई वर्मा!

वर्मा हाँ, हाँ, ड्रामा कमेटी न देगी तो मैं अपने पास से ही दूँगा।

प्रेमानन्द जीते रहो, वर्मा ! तो तुम लोग जाकर खन्ना को घेरो कहीं वह हाथ से निकल न जाय !

शुक्ला मेरे एक दिन का रेस्टोरेंट का ख़र्च ?

प्रेमानन्द अच्छा साहब ! यह भी सही।

शुक्ला ऑलराइट, गुड नाइट ! (प्रस्थान)

वर्मा और मेरा !

प्रेमानन्द दोस्त वर्मा ! तुमसे क्या कहूँ। जान हाज़िर है। खन्ना को राज़ी करना तुम्हारा ही काम है !

वर्मा ख़ैर, यह आपकी दानिशमन्दी है। मैं ठीक कर दूँगा।

प्रेमानन्द ईश्वर करे, ठीक हो जाय ! मैं नहीं जानता था कि फ़ीमेल पार्ट में ये मुसीबतें हैं। अब तुम्हीं देखो ! सब कैरेक्टर्स में मैंने उल्लू का पार्ट लिया। कहीं यह पार्ट नाटक के ख़तम होते होते मेरे लिए सच न हो जाय ! इन लोगों ने बोर कर दिया ! हायरे ! फ़ीमेल पार्ट !

वर्मा बात इस तरह समझो प्रेमानन्द ! कि आजकल कितनी फ़ीमेल्स हैं उन्होंने अपना पार्ट छोड़कर मेल पार्ट करना शुरू कर दिया है। तो अब बेचारे मेल्स क्या करें। ख़ैरियत इसी में है कि मेल्स भी अपना पार्ट छोड़कर फ़ीमेल पार्ट करना शुरू करें। आज स्टेज तो एक ट्रेनिंग कालेज है जिससे एल० टी० यानी 'लेडीज़ ट्रेनिंग' की डिग्री मिल सकती है; 'लेडीज़ ट्रेनिंग'—यानी एल० टी०।

प्रेमानन्द तब तो एल० टी० के लिए फ़ीमेल पार्ट ज़रूरी है !

वर्मा बहुत ज़रूरी है। खन्ना को करना ही पड़ेगा।

प्रेमानन्द तब तो 'फ़ीमेल पार्ट' ज़िन्दाबाद ! ज़िन्दाबाद !

(परदा गिरता है !)

व्याजोक्ति
(Sarcasm)

१. छींक

छींक

पात्र-परिचय

१—पंचम मिसिर—पुराने विचारों के पंडितजी

२—गायत्री—उनकी पत्नी

३—संपत—पंडित जी का भतीजा

४—देवीदीन—ग्वाला

समय—प्रातः सात बजे

छींक

(पंचम मिसिर का घर। वे सो रहे हैं। उनकी पत्नी गायत्री उन्हें जगाने की चिन्ता में है।

नेपथ्य में ज़ोर से एक छींक होती है। दस सेकेंड बाद दूसरी बार फिर छींक होती है।)

गायत्री (पंचम मिसिर को जगाते हुए) अरे, आज क्या सोते ही रहोगे? सात बज गए, इतना दिन चढ़ आया!

(पंचम मिसिर आलस भरे स्वर में अँगड़ाई लेते हैं।)

गायत्री कल कह रहे थे, मुझे यह काम करना है, वह काम करना है। सात सात बजे सोकर काम करोगे?

पंचम (जम्हाई लेकर अलसाए स्वर से)

जय जय जय नटवर गिरधारी।
दिन भर राखो लाज हमारी॥

गायत्री (उसी स्वर में) कुम्भकरन जी की बलिहारी!

पंचम (अलसाए स्वर में) ऐं, क्या कहा? सुन नहीं पाया। हाँ, तुम भी मेरे साथ प्रार्थना किया करो। (फिर अँगड़ाई लेकर) ओह, क्या दिन निकल आया? आज बड़ी जल्दी सूरज भगवाज निकल आए!

गायत्री सूरज भगवान तो अपने समय पर निकलते हैं। तुम्हारी नींद तो जैसे कुम्भकरन की धरोहर है। खुलने का नाम ही नहीं लेती। कल कह रहे थे, त्रिवेनी की माँ! कल ऐसी जगह जाऊँगा, वैसी जगह जाऊँगा कि बस, तुम्हारे लिए सोने का हार बना-बनाया समझो। यहाँ सोने की क्या बात, चाँदी की अच्छी-सी जंजीर तक नहीं जुड़ी। सब रुपया भगवान जाने कहाँ जाता है! ये सोने का

हार बनवाएँगे । अरे, नींद का सोना कहो तो कहो, हार का सोना कह के काहे को जलाते हो ? और उस पर ढंग कि ये उठेंगे सात बजे !

पंचम (**चैतन्य होकर**) शिव-शिव ! धीरे-धीरे उठ रहा हूँ, भाई ! जरा उठने तो दो । आज ज़रा कुछ नींद लग गई,तो सबेरे-सबेरे तुम सत्यनारायण की कथा बाँचने लगीं । अभी उठता हूँ, हाथ-मुँह धोता हूँ । फिर जरा मुहूर्त देख कर निकलूँगा तो देख लेना तुम्हारे द्वार पर सोना न बरसा दूँ तो पंचम मिसर नाम नहीं । हाँ । ऐसा-वैसा नहीं हूँ । लाला हरकिसन दास का पुरोहित हूँ जिसका सारी दुनियाँ में कारबार है । हाथी झूलते हैं उनके द्वार पर, हाथी । (**सहसा**) अरे हाँ, त्रिवेनी की माँ ! मैं तो कहना ही भूल गया । हाथी के नाम पर याद आया । ऐसा बढ़िया सपना देखा है कि बस......उछल पड़ो ।

गायत्री क्या उछल पड़ूँ ! यही कहोगे कि सपने में सुनार की दूकान पर गया था ।

पंचम (**प्रसन्नता से**) अरे त्रिवेनी की माँ ! सुनार की दूकान क्या है उसके सामने । मैंने देखा कि......अहह, क्या देखा है कि बस देखते ही रहो ! तुम मुझे न जगाती तो हाय, हा, मैं कहाँ से कहाँ पहुँच जाता !

गायत्री चारपाई पर पड़े-पड़े ?

पंचम अरे, हँसी समझती हो, त्रिवेनी की माँ ! अरे, मैंने वह देखा कि बड़े-बड़े ऋषिमुनि भी नहीं देख सकते ।

गायत्री सो क्या देखा है, मैं भी तो सुनूँ ।

पंचम सुनाऊँ ? मैंने देखे हैं, विष्णु भगवान । बतलाओ, देखे हैं किसी ने विष्णु भगवान सपने में ? अहह ! क्या सीन था—विष्णु भगवान शेषनाग पर सो रहे हैं । नाभी से धनुष बान की तरह कमल की डंडी निकल रही है । साक्षात् लक्ष्मी जी उनका पैर दबा रही हैं । तो, मैं भी दूसरी तरफ से पहुँचा और दूसरा पैर दबाने लगा । विष्णु

भगवान ने मेरी तरफ देखा तो पूछा—क्या चाहते हो, पंचम मिसिर ! मैंने कहा—हे दीनबन्धु ! दीनों के रखवाले ! वंशीवाले ! आप की माया में भूला हूँ, पर मैं यही चाहता हूँ कि लाला हर किसनदास की लड़की जानकी की शादी मनोहर लाल के लड़के से लगा दूँ।

गायत्री वाह ! तुमने विष्णु भगवान से क्या माँगा। अरे, सोना-चाँदी कुछ माँगते !

पंचम अरे, त्रिवेनी की माँ माँगी तो वो चीज है कि खुद विष्णु भगवान चक्कर में पड जायँगे। सुनो, हरकिसन दास की लड़की जानकी की शादी तो बहाना है, बहाना। इस शादी के लगाने से घर में इतनी लक्ष्मी आएगी कि दो साल बाद त्रिवेनी की शादी कर लेना। विष्णु भगवान की लक्ष्मी शेषनाग को छोड़ कर तुम्हारे घर आ जायँगी, तुम्हारे घर।

गायत्री अच्छा, तो विष्णु भगवान ने क्या कहा ?

पंचम उन्होंने गनेश जी को बुलाया और उनके चूहे पर मुझे बिठलाया।

गायत्री चूहे पर बिठलाया ?

पंचम हाँ, हाँ, साक्षात् चूहे पर बिठलाया। गनेश जी का चूहा कोई मामूली चूहा था ! वह था एक बड़े हाथी के बराबर—जैसा हाथी हरिकिसन दास का है न ?

गायत्री फिर ?

पंचम फिर जैसे ही मैं चढ़ने को हुआ कि लक्ष्मी जी ने बड़े जोर से छींका।

गायत्री लक्ष्मी जी ने ?

पंचम हाँ, हाँ साक्षात् लक्ष्मी जी ने। मुँह फेर कर ऐसे जोर से छींका।

गायत्री अरे, वो तो सम्पत ने छींका था जब तुम सो रहे थे।

पंचम संपत ने ? नहीं, मुझे तो ऐसा मालूम हुआ कि साक्षात लक्ष्मी जी ने छींका था।

गायत्री नहीं, संपत ने छींका।

पंचम तो अगर लक्ष्मी जी ने नहीं छींका, तो मेरा काम बना-बनाया है।

पर इस संपत को छींकने की क्या जरूरत पड़ गई ? मेरे जागने में छींके तो छींके, मेरे सोते में भी छींकता है ।

गायत्री छींक आ गई होगी ।

पंचम ऐसे कैसे आ गई होगी ? छींक अच्छी नहीं होती, त्रिवेनी की माँ ! हाॅ, उससे बड़े-बड़े राज उलट जाते हैं ।

गायत्री खैर, तुम्हारा राज तो नहीं उलटा ।

पंचम उलटे या न उलटे, उसे देख लूँग, हाँ ।

गायत्री अच्छा तो बाद में देख लेना, अभी तो उठो ।

पंचम देखो, त्रिवेनी की माॅ । मैंने रात में पंचांग देख लिया है । हरिकिसन दास के यहाँ जाने का मुहूर्त नौ बज कर पंद्रह मिनट पर है। अभी काफी देर है । पर मैं इस गधे संपत को देख लेना चाहता हूँ । (**पुकारते हुए**) संपत, संपत ।

संपत (**बाहर से**) जी, पंडित जी । (**प्रवेश**)

पंचम इधर तो आ, पंडित जी के बच्चे ! घूमने के लिए काफी समय मिलता है, पर घर का काम करने में नानी याद आती है ।

संपत नहीं पंडित जी ।

पंचम (**चिढ़ा कर**) नहीं, पंडित जी । क्यों रे, कल मैंने तुझसे क्या काम करने को कहा था ?

संपत (**डरते हुए**) पंडित जी ! आप ने कहा था ·····आपने कहा था···

पंचम हाँ, हाँ, क्या कहा था, बोलता क्यों नहीं ?

संपत पंडित जी ! आप ने कहा था कि चूहेदानी में नेवला पकड़ कर रख लेना ।

पंचम तो चाहे मुझे सपने में चूहा दिख जाय, लेकिन चूहेदानी में तुझसे नेवला पकड़ते नहीं बनेगा !

गायत्री चूहेदानी में नेवला ?

पंचम हाॅ, चूहेदानी में नेवला । नेवला शकुन की चीज है । मैंने इससे कहा था कि मुझे कल एक बड़े काम पर जाना है तो हमारे शास्त्रों में लिखा है कि घर से चलते समय अच्छा शकुन होना चाहिए।

नेवले का देखना अच्छा शकुन माना जाता है। मैंने सोचा कि चलते वक्त नेवला कैसे दिखेगा, तो मैंने संपत से कहा कि चूहेदानी में नेवला पकड़ लेना और चलते वक्त मुझे दिखला देना।

गायत्री सगुन का अच्छा इन्तजाम किया था आपने।

पंचम तो, क्यों रे, तूने चूहेदानी में नेवला पकड़ा ?

संपत जी···जी···नेवला आया ही नहीं ! मैंने कई बार पिंजड़े में रोटी डाल-डाल कर नेवले को दिखलाया पर वह आया ही नहीं।

पंचम तो तेरी तरह नेवले के दिमाग भी चढे हैं। कमबख्त समझते हैं कि उनका देखना शकुन है तो नखरे दिखलाते हैं। मौके पर नहीं दिखेंगे। पंचांग में इन कम्बख्तों का दिखना अपशकुन माना जाय, तब तो बात है ।

संपत ऐसा जरूर कर दीजिए, पंडित जी !

पंचम (चिढ़ाते हुए) ऐसा जरूर कर दीजिए, पंडित जी ! और हाँ, तूने देवीदीन ग्वाले से कह दिया है कि जब मैं घर से चलूँ तो गाय और बछड़ा लेकर मेरे सामने दूध दुह दे !

संपत देवीदीन से तो कह दिया है।

गायत्री तो क्या यह भी कोई सगुन है ?

पंचम पंचम मिसिर की पत्नी होकर इतना भी नहीं जानती कि यह कार्य-सिद्धि का सबसे बड़ा शकुन है ? और हाँ, तुमने दही मँगा लिया है।

गायत्री वह तो घर ही में है।

पंचम बस, तो ठीक है, मैं उसे खाकर जाऊँगा। संपत, बाहर जाकर देख कि अभी ग्वाला तो नहीं आया।

संपत बहुत अच्छा, पंडित जी !

(प्रस्थान)

पंचम बात यह है, त्रिवेनी की माँ ! कि हमारे शास्त्रों और पुराणों में जो कुछ लिखा है, वह झूठ थोड़े ही हो सकता है ? आजकल की दुनिया बदल गई है, चारों तरफ़ क्रिस्तानी विद्या फैली हुई है। कोई

पुराणों की बात मानना नहीं चाहता, पर जब तक दुनिया में पंचम मिसिर हैं तब तक तो पुराणों की बात मैं मनवा कर ही रहूँगा। लाला हरिकिसन दास तक मेरी बात मानते हैं। और ये सम्पत, अपने ही घर का लड़का! इन बातों को हँसी समझता है! दिया तले अँधेरा?

संपत (**आकर**) पंडित जी! अभी देवीदीन नहीं आया।

पंचम जब आए तब मुझे खबर देना, समझे? अब मैं उठता हूँ।

(**उठते ही संपत जोर से छींकता है।**)

पंचम (**उबल कर**) इस गधे ने फिर छींका! क्यों बे संपत! लगाऊँ दो तमाचे? तू मेरा भतीजा होकर मेरे घर में रहता है, तो इसका यह मतलब है कि तू मेरे कामों में हमेशा अड़ंगा डाले?

संपत मेरा कोई कसूर नहीं है, पंडित जी!

पंचम तो किसका है? मेरा है? मैंने छींका है? देखो, त्रिवेनी की माँ! मैं उठा और इसने छींका। यानी आज मेरा कोई काम न होगा। मुझे लाला हरकिसन दास के यहाँ जाकर मुहूर्त बताना था, तो मैं न जाऊँ? और आज के दिन हाथ खाली! यह सम्पत ऐन मौके पर छींकता है, मैं इस गधे की नाक काट डालूँगा। हाँ गनेश जी की सूड़ की तरह नाक बढ़ा ली है, जब देखो तब छींक। जब देखो तब छींक।

त्रिवेनी (**हँसकर**) कहीं गनेश जी की नाक छींकने से ही तो नहीं बढ़ गई है?

पंचम ऐसी बात कह कर तुम मेरा गुस्सा दूर करना चाहती हो? मैं जानता हूँ। लेकिन यह छींक अच्छी नहीं होती। मैं बताये देता हूँ।

त्रिवेनी तो मैं यह जानना चाहती हूँ कि छींक की बात किस पुराण में लिखी है? जा रे सम्पत, बाहर जा।

(**संपत बाहर जाता है।**)

पंचम मैं जानता हूँ, तुम उसको बचाना चाहती हो।

त्रिवेनी बचाने की बात नहीं है। पर सुबह-सुबह से गुस्सा करना ठीक नहीं

है। जो बात न बिगड़ती हो, गुस्सा करने से वह बात और बिगड़ जाती है।

पंचम — जब छींक हो गई तो गुस्सा आने, न आने की कौन बात है; बात तो बिगड़ेगी ही।

त्रिवेणी — तो मैं यह जानना चाहती हूँ कि छींक की बात किस पुराण में लिखी है?

पंचम — छींक की बात जल-पुराण में लिखी है।

त्रिवेणी — जल-पुराण में?

पंचम — क्यों, क्या तुम्हें शक है? अरे, हमारे यहाँ बहुत से पुराण है। अग्निपुराण, वायुपुराण है तो एक जलपुराण भी है।

त्रिवेणी — पर जलपुराण का नाम तो कभी सुना नहीं।

पंचम — तो सुना तुमने किस-किसका नाम है? और पंडित लोग किसी नई बात की खोज तो करते नहीं। अरे, इतना नहीं समझतीं कि जब तीन लोक के जानने वाले हमारे ऋषी-मुनियों ने अग्निपुराण लिखा, वायुपुराण लिखा तो क्या जल-पुराण न लिखा होगा?

त्रिवेणी — नहीं, जरूर लिखा होगा। तो जलपुराण का छींक से क्या सम्बन्ध।

पंचम — अब तुमको यह भी समझाऊँ? अरे जल के देवता कौन हैं? वरुण भगवान; और वरुण भगवान का स्थान है नाक। इसीलिए छींक में नाक से पानी निकलता है। इसीलिए हमारे ऋषी-मुनियों ने छींक का वर्णन जलपुराण में किया है।

त्रिवेणी — ठीक है। अब बात समझ में आई। और पंडित आपकी तरह न समझा पाते होंगे।

पंचम — किसी ने इतना पढ़ा भी है, जितना मैंने पढ़ा है? तभी तो सेठ हरिकिसन दास मेरा लोहा मानते हैं। और उनके सामने एक ही पुरोहित है पंचम मिसिर! हाँ।

गायत्री — तो उठो, फिर जल्दी से तैयार हो जाओ। सेठ जी के यहाँ जाने का समय हो रहा है।

पंचम — अच्छी बात है, उठता हूँ।

(जैसे ही वह उठते हैं, एक बिल्ली के बोलने की आवाज, वह सामने से निकल जाती है।)

पंचम हाय रे, भगवान्! इस कम्बख्त को इसी समय मरना था। यह बिल्ली रास्ता काटकर निकल गई! इसका सर्वनाश हो!

गायत्री सचमुच यह बिल्ली कहाँ से आ गई?

पंचम जहन्नुम से। रास्ता देखती रही कि कब मैं सो कर उठता हूँ। उठा और सामने से निकल गई तीर की तरह जैसे मेरे घर में इस काली कलूटी का राज है। इस योनी को भगवान ने पैदा ही क्यों किया? सिवा रास्ता काटने के इस योनी ने सीखा ही क्या है? और मेरा ही रास्ता काटने के लिए इसे मिला? और किसी का रास्ता इसे नहीं मिला? और आज ही, जब मैं सेठ हरिकिसन दास के पास जा रहा हूँ? किस्मत ही उलटी है। कहीं सम्पत छींकेगा! कहीं बिल्ली रास्ता काटेगी।

गायत्री तो बिल्ली पर किसका जोर है?

पंचम किसी का नहीं तो काटा करे चौबीसों घंटे मेरा रास्ता! इसने मेरा रास्ता काटा है, मैं इस कलूटी का सिर काटूँगा।

गायत्री ब्राह्मण हो के सिर काटेंगे? हत्या नहीं होगी?

पंचम तो अपनी जिन्दगी में किस-किस बात का ध्यान रखूँ? यहाँ बिल्ली रास्ता भी न काटे, और हत्या भी न लगे!

गायत्री चलिए, जाने दीजिए। दो असगुन मिलकर एक सगुन में बदल गए! अब उठिए, छींक के असगन को बिल्ली ने काट दिया! उठो, चलकर मैं भी ~~नहाती हूँ~~।

(प्रस्थान)

पंचम जो कुछ होना होगा, देखा जायगा। अब उठता हूँ।

(बाहर से देवीदीन की आवाज़)

देवीदीन पंडित जी महाराज!

पंचम अब यह कौन आ गया? आज उठना भाग्य में नहीं बदा है! (ज़ोर से) कौन है?

देवीदीन मैं पंडित जी महाराज ! देवीदीन । सम्पत भैया कहे रहें कि होत भिन्सार गैया और बछवा लेके हमार घर के समनवै दुहि जायो । कौनो ससुर हमार गैया कानीहौद में कइ दीन है । अब गइया तो आइ नहीं सकत । अज्ञा होइ तो भैंस लाइकै दुहि देई । मुदा आप का सगर दूध लेइ का पड़ी ।

पंचम क्या तुम्हारी गाय कानीहौद में चली गई ?

देवीदीन अब का बताई, पंडित जी महाराज ! हमार गइया जानो उई ससुर के सरबस खाइ लीन रहै, ठोंक दिहिस कानीहौद माँ । अब उइका चारज आठ आना दुइ रुपैया लागी । जितेक घन्टा के देर होई उतेक आना रुपैया बाढ़त जाई । आप तीन रुपैया उधार देइ देयं तो छुड़ाइ लेई । आपन दूध के हिसाब माँ उहिका काट लेंय !

पंचम (**अपने आप**) रुपए मिलने की बात तो दूर, ऊपर से और जुरमाना दो सुबह-सुबह । (**देवीदीन से**) भाई देवीदीन ! इस वक्त तो रुपैया नहीं है । सुबह-सुबह कौन रुपैया निकाले ।

देवीदीन तो पंडिताई आप ऐसनै करत हौ । हमार गॉव में एक पंडित जी रहें, उनके घर माँ अस लक्ष्मी रहे कि तीन रुपैया का तीन हजार जौन इखत चाहे तौन ले लेय । मुदा ब्याज़ आपन लगावत रहें । तुमहूँ ब्याज लै लैव ।

पंचम ब्याज की बात नहीं । अब इस वक्त लौट जाव ।

देवीदीन तो दूध के बरे भैंसिया लै आई ।

पंचम नहीं, उसे भी लाने की जरूरत नहीं है । आज दूध नहीं लगेगा । (**अलग**) अच्छा शकुन रहा, गाय के बदले भैंस ।

देवीदीन जैसी मरज़ी, पालागी (**अलग**) ऐसनै पंडित जी बना हैं । आपन टेंट में रुपैया धरे होइहैं, मुदा गरीबन का जरिकौ मदद नाहीं कइ सकत ।

पंचम क्या कह रहे हो, देवीदान ?

देवीदीन कुछ नाहीं, पंडित जी ! (**जोर से छींकता है ।**) ई ससुर छींक ।

पंचम सुबह-सुबह छींकता क्यों है ?

देवीदीन का बताई, पंडित जी ! आपके बगलिया में कौनो मरिचा पिसाई रहा है। ओई से जौने का देखौ तौनौ छींकत है। अबहिन सम्पत भैयो छींकत रहें। आक् छीं !

(देवीदीन छींकता है। संपत का दौड़ते हुए प्रवेश)

संपत पंडित जी ! चूहेदानी में रोटी रक्खी थी तो उसमें रात चूहे फँस गए थे। उनको खाने के लिए बिल्ली इधर-उधर घूम रही थी। यहाँ से तो नहीं निकली।

पंचम तो तूने ही वह बिल्ली खदेड़ी थी ? उसे चूहे खाने के लिए नहीं मिले तो शायद मुझे ही खाने आई थी ! ठहर, आज मैं तेरी छींक निकालता हूँ। अरे मुझे भी छींक आ रही है ? एं, ये छींक ..... आक् छीं ! आक् छीं !

(परदा गिरता है।)

वक्रोक्ति
(Tendency Wit)

१. एक अंक की बात
२. छोटी-सी बात

एक अंक की बात

पात्र-परिचय

१—हेमचन्द्र—एक नवयुवक—आयु बीस वर्ष

२—कामिनीलता—एक नवयुवती आयु सोलह वर्ष

३—मैनेजर

(विशेष—यह एक स्वोक्ति रूपक माना जा सकता है। इसका अभिनय एक पात्र से संभव है। वह रंगमंच पर आकर अभिनय की मुद्रा में खड़ा हो और भिन्न-भिन्न पात्रों के स्वरों में नाटक का अभिनय करे। नाटक के संकेत नेपथ्य की ओर संकेत करते हुए स्पष्ट किए जा सकते हैं।)

एक अंक की बात

पात्र हेमचन्द्र, एक नवयुवक आयु बीस,
और कामिनीलता, वियोगिनी, हृदय में टीस,
बाल बिखरे हैं नेत्र नीचे साँस गहरी,
एक लट आकर कपोल पर है ठहरी,

संध्या काल, चार तारे गंध मकरंद की,
इस समय अकेली एक पंक्ति किसी छंद की।

"आह हेमचन्द्र, तुम—
आए नहीं अब तब।
आ गए हैं व्योम में
ये चार चार तारे !"........

(**हेमचन्द्र का प्रवेश**) "देवि !
आ गया हूँ आज।
पा गया हूँ जागते ही
प्रेम स्वप्न सारे।"

**(दोनों मिलते हैं। नाट्य
हँसने की ध्वनि का।
साथ-साथ प्रस्थान।
गिरती यवनिका।)**

**(दूसरा दृश्य। स्थान-अध्ययन कक्ष। रात।
बैठी हुई कामिनी। हो जैसे प्रश्नवाली बात॥
खिड़की खुली है। अर्द्धचन्द्र दिशा द्वार से
झाँकना है जैसे झुका प्रेम ही भार से।**

बाहर सूनसान--कोई पक्षी बोल उठता।
और कभी वायु झोंका आके डोल उठता॥
पढ़ रही है कामिनी, टेक्स्ट बुक मेज पर।
जाने कब से लगी है दृष्टि एक पेज पर॥)

"अध्ययन बीच हाय! प्रेम का मचलना।
खद्दर के साथ जैसे रेशम का सिलना।"

(पुस्तक तो सामने है किन्तु दूसरा है ध्यान।)

"हाय। इन पुस्तकों में
प्रेम का न कोई गान!!
रातें बीतती हैं, दीप—
मेरे साथ जलता!
देखूँ, क्या परीक्षा-फल
मेरा है निकलता!!
हाय! हेम! यदि तुम,
होते पुस्तकों के बीच!
तो मैं तुम्हें नित्य पढ़ लेती!
प्रिय! आँखें मींच!!"

(सो गई थी कामिनी। शिथिल हाथ सरका।
परदा गिराओ। शब्द गूँजा मैनेजर का।)
(दृश्य तीसरा। मलीन वसना है कामिनी।
तीसरा प्रहर। बत जाने को है यामिनी।)

"प्रेम का यही परिणाम
दुख झेल कर।
क्या मिला परीक्षक को।
हाय, मुझे फेलकर!

जागती रही हूँ, हाय ?
दीपक-सी रात भर !

फेल हो गई ? थी एक
अंक की ही बात भर !"

(हेम का प्रवेश । करता है वह भौंहें बंक ।)

"एक अंक की है बात ?
मेरे पास है वह अंक ।"

(अंक पर हाथ—हँसी ओठों पर—बढ़ता ।
रंगमंच का है यहीं पर परदा गिर पड़ता ।)

उपसंहार

परदा गिरते ही—स्टेज मैनेजर—काला पैंट !
ह्वाइट शर्ट मुख में सिगार और "एक्सलैंट ।
"जैंटिल मैन ! उत्सुक हैं जानने को परिणाम ?
लीडर में निकला है कामिनी लता का नाम !
उसने गो प्रेम किया तो भी पास हो गई ।
प्रेम की सरलता भी इतिहास हो गई !
अध्ययन और प्रेम—आधुनिक काल के ।
दो हैं ये फूल इस सेन्चुरी की डाल के ।
दोनों फूलते हैं, चाहे उसमें न गंध हो ।
हारता है गार्जियन, चाहे जरासंध हो ।
एक अंक की थी बात, उसको मिले हैं दो ।

एक यहाँ है, एक वहाँ !
थैंक्स नाऊ यू मे गो ।"

छोटी सी बात

पात्र-परिचय

राकेश—एक अध्ययनशील शिक्षक, आयु ३५ वर्ष ।

उमा—राकेश की पत्नी, आयु ३० वर्ष ।

मनोहर—राकेश का अशिक्षित नौकर, आयु ४५ वर्ष ।

समय—संध्या, पाँच बजे ।

छोटी सी बात

(प्रयाग के कटरे में एक पुराना मकान। बीच के कमरे का पुराना-पन नीले रंग की पुताई से दूर करने की चेष्टा की गई है। पुराने दरवाजों पर भी नीला वार्निश किया हुआ है और उन पर नीले परदे पड़े हुए हैं। कमरे की दाहिनी ओर एक टेबिल है, जिस पर नीला ही मेज़पोश है। उसी के समीप दो कुर्सियाँ पड़ी हैं। कुछ हटकर तख्तों से बना हुआ एक खुला बुकस्टैंड है, जिसमें तीन सतरों में पुस्तकें सजी हुई हैं। उसी के सामने एक दरी बिछी हुई है। 'बुकस्टैंड' की बगल में एक आरामकुर्सी है, जिस पर एक 'कुशन' है, उसमें धागों से फूल-पत्तियों के बीच 'गुड-लक' कढ़ा हुआ है।

कमरे की रूपरेखा में अभिरुचि का संकेत है। दीवालों पर रविवर्मा के बनाये हुए कुछ चित्र लगे हुए हैं। उन्हीं चित्रों में से एक बड़ा चित्र कमरे की बाईं दीवाल पर लगा हुआ है; उसमें पंचवटी की पर्णकुटी में राम-सीता की अत्यन्त भावमयी छवि है। सीता कांचन-मृग मारीच की ओर संकेत कर रही हैं और राम उसी ओर देख रहे हैं। यह चित्र अन्य चित्रों की अपेक्षा बड़े आकार का है, जो दूर से भी स्पष्टता के साथ देखा जा सकता है। उस चित्र के नीचे काठ का एक त्रिभुज है जिसमें बेल-बूटे का कटाव किया गया है। उस पर 'बेबी बेन' घड़ी है। घड़ी के समानान्तर एक शीशा है जो सामने और बाईं ओर के कोने में लगा हुआ है। टेबिल के ठीक सामने एक दरवाज़ा है जो अन्दर की ओर खुलता है।

इसी समय शाम के पाँच बजे हैं। कमरे में दाहिनी ओर राकेश टेबिल के समीप वाली कुर्सी पर बैठ कर बड़ी एकाग्रता के साथ एक पुस्तक पढ़ रहे हैं। पुस्तक टेबिल पर रखी है, उसी की बगल में कागज का पैड है

जिस पर राकेश कभी-कभी कुछ लिखने लगते हैं। कमरे में निस्तब्धता है। केवल घड़ी की 'टिक', 'टिक', सुन पड़ रही है। कुछ देर बाद मनोहर राकेश के पीछे की ओर से प्रवेश करता है। यह दरवाज़ा सामने के दरवाजे की विपरीत दिशा में है और घर के भीतर खुलता है। मनोहर भीतर से आकर चुपचाप खड़ा हो जाता है। राकेश की दृष्टि पुस्तक पर है।)

मनोहर (**कुछ क्षण दाएँ-बाएँ देखकर अटकते स्वर में**) बाबूजी! चाह पियै का बखत होइ गवा।

(राकेश पढ़ने में मग्न रहता है, नौकर की बात पर ध्यान ही नहीं देता।)

मनोहर (**कुछ देर उत्तर की प्रतीक्षा कर**) बाबूजी! चाह धरी अहै। ऊ ठण्डी हुई जाई। कइयू फेरा देखि-देखि कै लौट गैन। आप आपन काम माँ लाग हैं। ई पढ़ै का काम तो ऐस आय कि कबहूँ खतमौ नाहीं होत।

राकेश (**सिर उठाकर पीछे देखते हुए**) क्या है?

मनोहर (**सम्हलकर**) बाबूजी! चाह पी लेतेन तौ...

राकेश (**तीक्ष्णता से**) देखो, मनोहर! जब मैं पढ़ता रहूँ तो बीच में आकर शोर मत किया करो। समझे!

मनोहर बाबूजी! हमका कौन जरूरति अहै सोर करै से। पढ़ाई से हमार कौन ताल्लुक? न तौ हमार बापै पढ़ा रहे और न हम ही पढ़े अही। बहूजी कहिन कि बाबूजी के पास जाय कै बोलदया कि चाह पी लेयँ, फिर जौन काम होय तौन करें। चाह धरी अहै।

राकेश (**झुँझलाकर**) देखता नहीं, काम में लगा हूँ! चाह ठहरकर पिऊँगा।

मनोहर बाबूजी! बहूजी आपका रस्ता देखति अहैं। उनका परन इहै अहै कि जब ताईं बाबूजी न पी लेयँ तब ताईं हम चाह न पियब। जब बहूजी हुकुम दीन अहैं तबै तौ हम आपके पास आवा अही, आपका बुलावै के वास्ते, नाहीं तौ यह गुस्ताखी हम कइ नाईं सकत।

राकेश इन कम्बख्तों से बात करना अपना दिमाग़ ख़राब करना है ! जाके कह दे, मै चाय नहीं पियूँगा ।

मनोहर (**खुशामद के स्वर में**) बाबूजी, चाह पी लेतेन तौ बहूजी का चाह पियाय देइत । फिर हम आपन दूसर काम देखी जाय । अरे हाँ, हम हू छुट्टी पाय जाइत ।

राकेश (**क्रोध से**) इधर से तू जाता है कि नहीं ? कह दे, मैं अभी आ रहा हूँ । एक पल को धीरज नहीं है ! (**मनोहर का मुँह लटकाये हुए प्रस्थान**) शैतान कहीं का ! आकर सिर पर सवार हो जाता है, न वक्त देखता है, न बात···!

(**राकेश पढ़ने में फिर दत्तचित्त होता है । कुछ देर बाद काग़ज़ पर लिखते हुए पढ़ता है ।**) संसार की महान् घटनाएँ···छोटी-सी बात से···प्रारम्भ···होती है···। यह सारी सृष्टि···पहले···एक उल्का के रूप में···प्रारम्भ हुई । (**गला साफ़ करके**)···अपनी गतिशीलता में···इसे प्रकाश···और अन्धकार मिला······। समय ने······इसे···शीतलता प्रदान की··· । आज···वही भाप से परिपूर्ण उल्का···ठोस सृष्टि है । (**गहरी साँस लेकर एक क्षण ठहरकर**) वही सृष्टि······जिसमें···प्रेम और घृणा के···बीच··· ··मानव जीवन के अनगिनती संसार···बसते और······ उजड़ते हैं !

(नेपथ्य में उमा की झुँझलाहट, बर्तनों को ज़ोर से उठाकर रखने की आवाज़ । फिर कुछ तीखे स्वर में पास आते हुए वाक्य—"यह अच्छा पढ़ना है ! चाय छूट जाय लेकिन किताब हाथ से न छूटे···! इधर चाय ठंडी हुई जा रही है, उधर किताब ख़त्म होने पर ही नहीं आती···!" अन्तिम शब्द रंगमंच पर आकर समाप्त होते हैं । उमा दरवाजे पर आकर ठिठक जाती है । एक क्षण रुककर राकेश पर दृष्टि डालती है । राकेश लिखने में व्यस्त है ।)

···कौन जानता है कि···उस भाप के जीवन में···इतने

संघर्ष···छिपे···हुए हैं···! छोटी-सी···बात···लेकिन···, उसका··· परिणाम इतना महान्···!

(उमा पैर की ठोकर से आवाज़ करती है।)

उमा (**व्यंग्य से**) मैं श्रीमान् के कमरे में आ सकती हूँ ?

राकेश (**सिर उठाकर**) ओह, उमा···! अरे भई, माफ़ करना···।

उमा (**पुनः व्यंग्य से**) श्रीमान् के पढ़ने में बाधा तो नहीं पड़ जायगी ?

राकेश (**मीठी झुँझलाहट से उठकर**) यह 'श्रीमान्'—'श्रीमान्' क्या कह रही हो ? (**समझाते हुए**) मैं जानता हूँ कि तुम मेरे लिए चाय तैयार किये बैठी हो। मैं अपनी किताब······

उमा हाँ, हाँ, आप अपनी किताब पढ़िए।

राकेश (**मीठेपन से**) देखो उमा ! इस तरह व्यंग्य मत करो। मैं अब किताब कहाँ पढ़ रहा हूँ ? देखो, यह बन्द कर दी ! (**किताब बन्द कर देता है।**)

उमा नहीं, मैं किताब खोल देती हूँ। (**किताब फिर खोल देती है।**) अब पढ़िए, शौक़ से पढ़िए ! किताब ख़त्म हो जाय, तभी उठिएगा। इधर चाय ठंडी होने दीजिए। किताब के सामने चाय की या मेरी हस्ती ही क्या है !

राकेश (**हँसते हुए**) वाह ! चाय से तुमने अपने को ख़ूब जोड़ा। सचमुच चाय का जो रंग है···वही रंग······

उमा मैं श्रीमान् से कोई मज़ाक सुनने नहीं आई हूँ।

राकेश फिर वही व्यंग्य ! बड़ी जल्दी नाराज़ी आ जाती है तुम्हारे मुँह पर ! आओ, इधर ! इतना सुन्दर मुँह और ऐसी व्यंग्य-भरी बात···! देखो शीशे में अपना मुँह ! (**शीशे की ओर संकेत करता है।**)

उमा (**रुआँसे स्वर में**) क्या मेरा मुँह, और क्या मेरी बात !

राकेश (**मनाते हुए**) अरे, अरे, यह बात क्या है ? तुम्हारा मुँह और तुम्हारी बात सब कुछ। अभी तो कोई ऐसी बात हुई नहीं ! (**यकायक**) ओह, याद आ गया। चाय पीने के लिए तुमने मुझे बुलवाया था। मैं क्या करूँ, यह कम्बख़्त मन किताब में इतना

उलझ गया (**रुककर, उमा में कोई परिवर्तन न देख कर**) फेंक दूँ इस किताब को ?

उमा नहीं, नहीं। किताब क्यों फेंकें ? किताब का ध्यान सबसे बड़ी बात है !

राकेश (**परेशानी से**) अब तुम वही बात कहे जाती हो ! मैं तुम्हे किस तरह समझाऊँ ? बात यह हुई कि इस किताब में एक बात इतने बड़े मार्के की समझाई गई है कि...

उमा (**बीच ही में**) वह बात श्रीमान् ! जो मुझे भी समझा दें..

राकेश फिर वही 'श्रीमान्' ! उफ़-ओह ! अगर टीचर होने के बजाय मैं व्याकरण का पंडित होता तो पति-पत्नी के बीच से इस 'श्रीमान्' या 'श्रीमती' शब्द को निकाल देता, यानी निषेध कर देता। 'श्रीमान्' या 'श्रीमती' शब्द में एक तरह का आडम्बर है, बनावट है, भिन्नता है, दूरी है। पति-पत्नी के बीच न आडम्बर है, न बनावट है, न भिन्नता है, न दूरी है। क्यो ?

उमा (**अन्यमनस्कता से**) न होगी !

राकेश 'न होगी' नहीं, नहीं है। अच्छा चलो, चाय ठंडी हो रही होगी। वह तो किताब में बात ही इतनी मनोरंजक और सच्ची थी कि क्या कहूँ ! देखो, मैंने नोट भी कर लिया है ! (**काग़ज़ दिखलाता है।**) लेकिन चलो, चाय ठंडी हो रही होगी।

उमा ठंडी हो रही होगी या हो गई ! अब तो दूसरा पानी गरम करना होगा।

राकेश अच्छा लाओ, अब मैं पानी गरम करूँ। मेरी सज़ा यही है। इसी कम्बख़्त कागज को जलाकर पानी गरम करूँगा, जिस पर मैंने नोट लिखा है।

उमा चलिए, रहने दीजिए। आप क्या चाय का पानी गरम करेंगे !

राकेश क्यों, क्या मैं चाय के लिए पानी भी गरम नहीं कर सकता ?

उमा चाय का पानी क्या गरम करेंगे, दिमाग़ जरूर गरम कर लेंगे !

राकेश आज तुम मानोगी नहीं, मालूम होता है, अच्छा, मैं अभी दूसरा पानी गरम करवाता हूँ। (**पुकारकर**) मनोहर !

(**नेपथ्य से**) बाबूजी !

राकेश (**उमा से**) देखो, अब शान्त रहो, नहीं तो नौकर क्या कहेगा !

(**मनोहर का प्रवेश**)

मनोहर बाबूजी का हुकुम है ?

राकेश देखो चाय के लिए दूसरा पानी गरम करो। समझे ?

मनोहर चाहे का ना गरमाय देईं ?

(**उमा को हँसी आ जाती है।**)

राकेश अरे बेवकूफ़, अपनी अक़्ल रहने दे। दूसरा पानी गरम कर।

मनोहर बहुत अच्छा। (**जाते हुए**) जाय देव ! नुकसान केकर होई !

राकेश क्या बात है ?

मनोहर कुछ नहीं बाबूजी, दूसर पानी गरमावै के बरे सोचित है कि कौन बरतन माँ गरमावा जाय।

राकेश दस-पाँच बरतन में गरमायेगा ?

मनोहर नहीं बाबूजी, एकै बरतन मा गरमाय जाई। (**प्रस्थान**)

राकेश अजीब नौकर है ! जङ्गली जानवर !

उमा आपने ही तो बहुत खोजकर रखा है !

राकेश अजी, आजकल नौकर कहाँ मिलते हैं। लड़ाई ने ऐसा चौपट किया है कि ईश्वर मिल जाय, लेकिन नौकर नहीं मिलते। यह तो कहो, चीनी-चावल की तरह इनका कंट्रोल नहीं हुआ। नहीं तो ये दो-चार भी देखने को न मिलते। और ये मिलते भी हैं तो इनका दिमाग़ आसमान पर है।

उमा इन लोगों के सम्बन्ध में भी कुछ नोट ले लीजिए।

राकेश इन लोगों पर नोट क्या लूँगा ! जिन बातों पर नोट लेता हूँ वे तो चाय का पानी ठंडा कर देती हैं, इन लोगों पर लूँगा तो दिल और दिमाग भी ठंडा हो जायगा !

उमा किन बातों पर नोट लिया है आपने ?

राकेश जाने दो, क्या रखा है इस नोट लेने में।

उमा आख़िर सुनूँ भी तो।

राकेश क्या करोगी सुनकर ?

उमा देखूँगी, ऐसी कौन-सी चीज़ थी जिसने चाय ठंठी कर दी।

राकेश क्या उसे देखने से चाय गरम हो जायगी ?

उमा अब आप भी व्यंग्य करने लगे ? लाइए, मैं ही पढ़ूँ।

(**काग़ज़ हाथ में ले लेती है और पास की कुर्सी पर बैठकर पढ़ने की चेष्टा करती है।**) संसार की महान् घटनाएँ...(**लिखावट समझ में न आने से रुक-रुक कर पढ़ती है।**) छोटी-सी बात से... प्रारम्भ...होती हैं। यह सारी दृष्टि...

राकेश दृष्टि नहीं सृष्टि। लाओ मैं पढ़ दूँ (**काग़ज हाथ में लेकर पढ़ता है।**) संसार की महान् घटनाएँ-छोटी-सी बात से प्रारम्भ होती हैं। यह सारी सृष्टि पहले एक उल्का के रूप में उत्पन्न हुई। अपनी गतिशीलता में इसे प्रकाश और अन्धकार मिला। समय ने इसे शीतलता प्रदान की। आज वही भाप से परिपूर्ण उल्का ठोस सृष्टि है, जिसमें प्रेम और घृणा के बीच मानव जीवन के अनगिनती संसार बसते और उजड़ते हैं। कौन जानता है कि उस भाप के जीवन में इतने संघर्ष छिपे हुए हैं! छोटी-सी बात, लेकिन उसका परिणाम इतना महान्...!

उमा (**बीच ही में**) छोटी-सी बात, यानी ?

राकेश छोटी-सी बात, यानी यह कि कहाँ भाप और कहाँ यह ठोस पृथ्वी!

उमा तो उससे क्या हुआ ? चीज़ें तो बदला ही करती हैं।

राकेश (**पास की कुर्सी पर बैठकर**) यों नहीं बदला करतीं...अच्छा दूसरा उदाहरण लो। देखो, बड़ का पेड़ है। कितना बड़ा! उसकी शाखें राक्षसों की बाँहों जैसी हैं। उसका तना ऐसा, जैसा कोई लम्बा-चौड़ा फ़ौलाद का ड्रम हो। उसकी जटाएँ ऐसी, कि जादूगरनी के बालों जैसी, जो बाद में चलकर ख़ुद एक पेड़ हो जायँ! अरे तुमने यूनीवर्सिटी के सिनेटहॉल के सामने देखा होगा टैनिस-कोर्ट

के लॉन में ! उसकी एक जटा तो पेड़ बनने जा रही है। 'कोट रामी टाट आरबोरीज़।'

उमा यह कौन-सा कोट है ? बड़ के पेड़ का कोट से क्या सम्बन्ध ?

राकेश (हँसकर) अरे, यह 'कोट' पहनने का कोट नहीं है। यह लैटिन भाषा का एक वाक्य है : 'कोट रामी टाट आरबोरीज़'—जितनी शाखें उतने पेड़। यानी जितने लड़के यूनीवर्सिटी से निकलेंगे वे अपने रूप में एक पूरी संस्था हो जायँगे। ख़ैर, जाने दो इस बात को। यह तो इलाहाबाद यूनीवर्सिटी का मॉटो है। मैं तो बड़ के पेड़ के बारे में कह रहा था। क्या कह रहा था ?

उमा यही कि उसकी शाखें जादूगरनी के बालों जैसी···

राकेश हाँ, ये शाखें भी कुछ समय बाद पेड़ हो जाती हैं। तो यह इतना लम्बा-चौड़ा बड़ का पेड़ लाखों टन का होता है, और उसका बीज जानती हो कितना होता है। राई के बराबर। इतना-सा (**उँगली से दिखला कर**) फूँक दो तो उड़ जाय। लेकिन उससे पेड़ कितना बड़ा होता है। उसके नीचे सैकड़ों हाथी बाँध लो। इसी तरह छोटी से छोटी बात से बड़ी से बड़ी घटना हो जाती है। कहाँ उड़ती हुई भाप, और कहाँ यह भारी भरकम पृथ्वी ? जिस पर हिमालय जैसे न जाने कितने पहाड़ खड़े हुए हैं।

उमा लेकिन बात इससे उल्टी भी हो सकती है।

राकेश उल्टी कैसे ?

उमा उल्टी ऐसे—(**सोचते हुए**) अब यही ले लीजिये। जब हम लोगों की शादी···यानी शादी हुई थी तो हजारों आदमी इकट्ठे हुए थे। इतनी रोशनी, इतना जल्सा, इतना नाच, इतना 'ऐट–होम', इतने आदमी ! लेकिन आख़िर में रहा क्या ? रह गए हम और आप। बस—(**राकेश और अपने को उँगली से छूकर**) एक और दो। हज़ार आदमियों में सिर्फ़ दो रह गए।

राकेश (**हँसकर**) बात तो तुमने पते की कही, लेकिन हमारी और तुम्हारी बातें उन आदमियों की संख्या से हज़ारगुनी ज़्यादा हैं, यह क्यों भूल

जाती हो? इन बातों की कोई संख्या ही नहीं। अच्छा जाने दो, दूसरा उदाहरण लो। (**कुछ सोचता है फिर उठकर दीवाल की ओर देखता हुआ**) यह तस्वीर ही लो। (**पंचबटी के चित्र की ओर संकेत करता है**) यह तस्वीर किसकी है?

उमा (**सरलता से**) यह तस्वीर पंचवटी में राम और सीता की है।

राकेश इसमें क्या है?

उमा इसमें क्या है? सीताजी हरिण की ओर संकेत कर रही हैं और रामजी उसकी ओर देख रहे हैं।

राकेश सीताजी हरिण की ओर क्यों संकेत कर रही हैं?

उमा (**खीझकर**) अब इसमें कौन बात पूछनी है? रामायण में लिखा है कि मारीच-राक्षस कपट-मृग बन कर आया था। उसकी खाल इतनी अच्छी थी, कि सीताजी ने श्री रामचन्द्रजी से उसे मारकर उसकी खाल लाने के लिए कहा।

राकेश (**इतमीनान से**) ठीक है, बात तो इतनी-सी ही न है कि सीताजी ने रामचन्द्रजी से मृग मारने के लिए कहा। और उसका परिणाम क्या हुआ? उसका परिणाम हुआ सीता-हरण! राम जैसे वीर पुरुष और मर्यादा-पुरुषोत्तम का रुदन और क्रोध, और अन्त में लाखों राक्षसों की मृत्यु! सोने की लंका का विनाश! रावण जैसे पराक्रमी योद्धा का पतन! कितना भयानक परिणाम। बात न-कुछ छोटी-सी.......

उमा स्त्री के पीछे यह सब कुछ होता है।

राकेश ठीक है, लेकिन समझ लो कि रामचन्द्रजी मृग मारने के लिए न जाते, तो सीता-हरण होता ही नहीं। राम को इतनी विपत्ति न झेलनी पड़ती। वे आराम से पंचवटी में चौदह वर्ष बिताकर अयोध्या लौट आते। कहीं कुछ न होता।

उमा होता कैसे नहीं, भाग्य की जो बात है!

राकेश इसमें भाग्य की क्या बात? श्री रामचन्द्रजी कह देते कि सीते आज

मैं थका हुआ हूँ, कल मार दूँगा। बात टल जाती और श्री रामचन्द्र जी को इतनी मुसीबतों का सामना न करना पड़ता।

उमा — कह कैसे देते ?

राकेश — क्यों ? बराबर कह सकते थे। जंगल-जंगल घूमते उनके पैरों में काँटे गड़ गए होंगे। कह देते, मेरे पैर में काँटे गड़ गए हैं, चलने में कष्ट होता है; आज काँटा निकाल दो; कल तुम्हारे लिए देख के इससे अच्छा मृग मार दूँगा !

उमा — श्री रामचन्द्रजी मर्यादा-पुरुषोत्तम थे। आपकी तरह बहानेबाज़ी थोड़े ही कर सकते थे ?

राकेश — क्यों ? मैंने कब बहानेबाज़ी की ?

उमा — **(तमककर)** पिछले हफ्ते ही की थी, जब मैंने आपसे सिनेमा जाने के लिए कहा था ! आपने कहा, रुपये ख़त्म हो गए। जब मैंने चुपके से रात में आपके पॉकेट की तलाशी ली तो उसमें दस रुपये का नोट निकला। मैंने उसे लिया नहीं, यही बहुत है।

राकेश — वह रुपया मेरा कहाँ था, वह तो आफ़िस का था।

उमा — तो आफ़िस का रुपया आप अपनी जेब में रखते हैं ?

राकेश — जेब में क्यों रक्खूँगा, जेल न चला जाऊँगा ? घर चलते वक्त चन्दे का रुपया आया था। वक्त ज़्यादा हो गया था। मैं उसे जमा नहीं कर पाया। दूसरे रोज़ मैंने उसे आफ़िस में जमा कर दिया। मैंने कभी तुमसे बहानेबाज़ी की ही नहीं।

उमा — **(लापरवाही से)** ख़ैर, न की होगी।

राकेश — और अगर मैंने कभी बहानेबाज़ी भी की, तो मैं रामचन्द्रजी तो हूँ नहीं, जिन्होंने अपने जीवन भर बहानेबाज़ी नहीं की। मारीचमृग मारने में क्यों बहानेबाज़ी करते ? सच बात हो सकती थी कि काँटों के गड़ जाने से उनके पैरों में दर्द होता। लेकिन ख़ैर उन्होंने यह बात नहीं कही, अपनी पत्नी के छोटे-से अनुरोध से उन्होंने भयानक दुःख भोगा। पैर की अपेक्षा यदि उनके हृदय में सैकड़ों काँटे गड़ जाते तब भी उन्हे इतना कष्ट न होता। तभी तो लेखक

ने कहा है कि एक छोटी-सी बात कितने भयानक परिणाम उत्पन्न करती है...! ख़ैर चलो, चाय का पानी गरम हो गया होगा।

उमा क्या गरम हो गया होगा ! न ख़ुद चाय पी और न मुझे पीने दी।

राकेश तो तुम चाय पी लेतीं। बाद में मैं पी लेता। यह ज़रूरी तो है नहीं कि अगर मै चाय न पिऊँ तो तुम भी न पियो !

उमा आप क्या जानें स्त्री के हृदय की बात।

राकेश हाँ, स्त्री के हृदय की बात जानना तो बहुत मुश्किल है। कल मदन भी यही कह रहा था।

उमा (तीखे स्वर से, उठकर) आपके मदन को क्या हक़ है मेरे सम्बन्ध में कुछ कहने का ? आप अपने दोस्तों को मना कर दीजिए कि वे मेरे सम्बन्ध में कुछ न कहा करें।

राकेश मदन तुम्हारे सम्बन्ध में कुछ नहीं कह रहा था। वह अपनी स्त्री के सम्बन्ध में कह रहा था। उस दिन जब हम तीनों चाय पी रहे थे...

उमा (चौंककर) हम तीनों ? यानी ?

राकेश (सरलता से) हम तीनों—यानी मदन, उसकी स्त्री और मैं।

उमा अच्छा, मदन की स्त्री आपके साथ चाय भी पी लिया करती है ?

राकेश तो इसमें क्या बात हुई ?

उमा कोई बात नहीं हुई ! कभी मदन मौजूद भी न रहे तो उनकी स्त्री और आप तो चाय पी ही सकते हैं !

राकेश ऐसा अवसर तो कभी आया नहीं, और न मैं किसी स्त्री से अधिक मेल-जोल ही रखता हूँ।

उमा आप नहीं रखते तो स्त्रियाँ तो मेल-जोल रखती हैं।

राकेश तो उसमें क्या हानि है ? सामाजिक शिष्टता भी तो कोई चीज़ है।

उमा अच्छी आपकी सामाजिक शिष्टता है ! मैंने तो कभी किसी पुरुष के साथ चाय नहीं पी।

राकेश तो क्या मैं पुरुष नहीं हूँ ?

उमा मैं आपकी बात नहीं कहती। आपके सिवाय मैंने किसी ग़ैर पुरुष के साथ चाय नहीं पी।

राकेश पीने में कोई आपत्ति तो नहीं है! तुम्हारी इच्छा ही नहीं होती कि दूसरों के साथ चाय पी जाय।

उमा मेरी अपनी इच्छा है, और वह स्वतन्त्र है। किसी को कुछ कहने का अधिकार नहीं है।

राकेश मुझे भी नहीं?

उमा आपको हो चाहे न हो। आप दूसरों के साथ चाय पीते हैं तो मेरे साथ चाय पीने का अवकाश कहाँ होगा! इसीलिए चाय ठण्डी हो जाया करती है!

राकेश कैसी बातें करती हो, उमा! मैं किस-किस के साथ चाय पिया करता हूँ! कब-कब मैंने मदन की स्त्री के साथ चाय पी है? और फिर तुम मदन की स्त्री के साथ अन्याय करती हो!

उमा मदन की स्त्री का बड़ा पक्ष ले रहे हैं आप!

राकेश पक्ष नहीं ले रहा हूँ, न्याय की बात कह रहा हूँ।

उमा दूसरों की स्त्रियों के साथ न्याय किया कीजिये। मेरे साथ न्याय क्यों करने लगे? कहाँ-कहाँ की शैतान स्त्रियाँ......

राकेश उमा, ज़बान क़ाबू में रखो।

उमा अच्छा, अब दूसरों की स्त्रियों के पीछे मुझे गालियाँ भी सुननी पड़ेंगी? (**गला भर आता है।**) मेरी यही क़िस्मत है!

राकेश क़िस्मत नहीं है। मैं कहता हूँ, ढंग से बातें करो।

उमा (**करुण स्वर से**) तुम मेरा अपमान करते जाओ और मैं ढंग से बातें करूँ? मैं यहाँ से चली जाऊँ तो ढंग से बातें करने वाली आपको बहुत मिल जायँगी (**रुआँसे स्वर में**) अच्छी बात है, मैं यहाँ से चली जाऊँगी, जल्दी ही चली जाऊँगी!

राकेश (**कुछ कोमल पड़ते हुए स्वर में**) तुम क्यों चली जाओगी? जाये तुम्हारी बला! तुमने किसी का लिया क्या है?

उमा मेरी क़िस्मत में ही लिखा हुआ है। कोई क्या करे?

राकेश क्या लिखा हुआ है, कि तुम घर से चली जाओ ? फिर इस घर को भी आग लगा जाओ।

उमा आग लग जायगी तो स्त्रियों का स्वागत कहाँ होगा ?

राकेश स्वागत होता है सिर्फ़ तुम्हारे कारण। आज तुम चली जाओ, कल से स्त्री क्या, स्त्री की छाया भी यहाँ नहीं दीख पड़ेगी।

उमा ये सब कहने की बातें हैं !

राकेश तुम्हें विश्वास न हो तो मैं क्या करूँ ! इसका मेरे पास कोई इलाज नहीं। लेकिन मैं यह दावे के साथ कहता हूँ कि अगर तुम यहाँ से एक रोज़ के लिए भी चली जाओ, तो यह सारी गृहस्थी एक दिन में चौपट हो जायगी।

उमा सम्हालने वालियाँ बहुत मिल जायँगी।

राकेश जिनके यहाँ सम्हालने वालियाँ इकट्ठी होती हैं, उनकी गृहस्थी तो और जल्दी चौपट होती है ! तुम्हारी जैसी स्त्री मिलना कुछ कम क़िस्मत की बात नहीं होती।

उमा आप अपनी क़िस्मत बड़ी बनाइये और मुझे रोने के लिए छोड़ दीजिये।

राकेश रोने के लिए क्यों छोड़ूँ ? अगर रोने में तुम्हारा विश्वास होता तो तुम इस कुशन पर 'गुडलक' बना ही नहीं सकती थीं, (**कुशन हाथ में ले लेता है।**) कितना अच्छा 'गुडलक' कढ़ा हुआ है ! तुम कितना अच्छा काम जानती हो, उमा ! अच्छा, अगर यह काम मैं सीखना चाहूँ तो तुम मुझे कितने दिन में सिखला सकती हो ?

उमा (**कुछ मुस्कुराहट ओठों पर रोकते हुए भी बिखर जाती है।**) बस, अब ऐसी बातें करने लगे ! पहले छेड़ देते हैं, बाद में मीठे बन जाते हैं।

राकेश कहीं इस मीठेपन पर 'कंट्रोल' तो न हो जायगा ?

उमा कंट्रोल भले ही हो जाय, लेकिन आपके ब्लैक-मारकेट पर तो किसी का बस नहीं है ? (**दोनों हँस पड़ते हैं।**)

राकेश लेकिन बात चाहे जो हो, तुमने गृहस्थी सम्हाली ख़ूब है ! हर एक चीज़ का एक अपना ढंग है। ढंग का खाना, ढंग का पीना, ढंग का रहना। परसों मदन ही कह रहा था कि उमा जी की कपड़े की पसंद लाजवाब है ! ड्राइंगरूम की सजावट में कितना 'टेस्ट' है, यहाँ तक कि दरवाज़ों के परदे भी दीवाल के रंग से मिला दिये हैं।

उमा चलिए, रहने दीजिए ये बातें ! दीवाल का रंग इस साल अच्छा आ ही नहीं सका !

राकेश फिर भी तारीफ़ के लायक़ तो परदों का चुनाव तुमने किया ही।

उमा उस पर भी मुझे आपकी बातें सुननी पड़ीं !

राकेश नहीं, वह मेरी ग़लती थी। वह तो मैं बाहर से गुस्से में भरा हुआ आया था, उसी समय परदों की बात हुई, तो मुझे कुछ कह आया। लेकिन मैं सच कहता हूँ, और उस रोज मदन की स्त्री ने भी कहा था, कि उमा जी ने सारी गृहस्थी को इस प्रकार सम्हाला है कि घर में लक्ष्मी बरस रही है।

उमा मुझे किसी से अपनी तारीफ़ नहीं सुननी ! मेरे सम्बन्ध में कोई बात न करे।

राकेश क्यों न करे ? अच्छी ख़ासी स्त्री हो ! मैं तो चाहता हूँ कि सारी दुनिया तुम्हारी तारीफ़ करे। (**सहसा**) अरे हाँ, आज सुबह मदन की स्त्री का पत्र आया था।

उमा क्या अब पत्र आने भी शुरू हो गए ?

राकेश तुम तो ज़रा-सी बात में बुरा मान जाती हो। अरे, पत्र मेरे पास आया है ज़रूर, लेकिन तुम्हारे नाम से है।

उमा मुझे किसी का पत्र नहीं पढ़ना। पढ़ लीजिए आप ही।

राकेश मैं तुम्हारे नाम का पत्र क्यों पढ़ूँ ? ख़ासकर जब एक स्त्री ने भेजा है।

उमा न पढ़िये तो जला दीजिये।

राकेश मैं क्यों जलाऊँ ? जलाना हो तो तुम्हीं जला देना, पढ़ने के बाद। सम्भव है, मेरे सम्बन्ध में कोई बात लिखी हो !

उमा क्या ऐसी बात भी हो सकती है ?

राकेश यह मैं क्या जानूँ !

उमा अच्छा लाइए, देखूँ वह पत्र।

(राकेश टेबिल के दराज़ से पत्र निकाल कर देता है। उमा शीघ्रता से खोल कर पढ़ती है। दो क्षण बाद उसके ओठों पर मुस्कराहट आ जाती है।)

राकेश अब यह कौन-सी मिठाई है ? क्या इस पर कोई कन्ट्रोल नहीं हो सकता ?

उमा **(पत्र पर से अपनी दृष्टि उठाकर हँसते हुए)** इस पर 'कन्ट्रोल' हो ही नहीं सकता। और अगर आप 'कन्ट्रोल' का नाम लेंगे तो आप को सज़ा मिलेगी।

राकेश न्याय के नाम पर सज़ा ?

उमा हाँ, सज़ा।

राकेश क्या सज़ा होगी ?

उमा आपके हाथ बाँध दिये जायँगे।

राकेश **(हाथ आगे बढ़ाते हुए)** अच्छी बात है, बाँध दो मेरे हाथ।

उमा मैं क्यों बाँधूँगी ? हाथ आपके बाँधेगी मदन की स्त्री, श्रीमती देवी !

राकेश **(आश्चर्य से)** श्रीमती कमला देवी ?

उमा **(प्रसन्नता से)** हाँ, वही श्रीमती कमला देवी। कल रक्षाबन्धन है, वे कल आपके हाथों में राखी बाँधेंगी।

राकेश वाह, फिर यह सज़ा कहाँ रही ! यह तो वरदान है। बहन कमला ! कमला देवी की ओर से रक्षा-बन्धन पाना किसी भी भाई के लिए अभिमान की बात हो सकती है !

उमा मैं श्रीमती कमला देवी से क्षमा माँगूँगी कि मैंने व्यर्थ ही उनको दोष दिया।

राकेश **(हँसकर)** और मुझसे क्षमा माँगने की आवश्यकता नहीं है ?

उमा — आपको तो मैं अभी गरम चाय पिलाए देती हूँ! **(पुकारकर)** मनोहर। **(नेपथ्य से)** आए सरकार!

राकेश — मैं सिर्फ़ चाय से नहीं मान सकता।

उमा — मिठाई भी मँगवाती हूँ।

राकेश — उसकी कमी मैं तुम्हारी बातों से पूरी कर लेता हूँ!

(मनोहर का प्रवेश)

मनोहर — जी सरकार!

उमा — चाय का पानी गरम हो गया?

मनोहर — होय गवा, सरकार!

उमा — फिर ख़बर क्यों नहीं दी?

मनोहर — सरकार, बाबू ते बड़ा डिर लागत है। ए कहि देयँ **(राकेश की आवाज़ और भाषा में बोलने का प्रयत्न करता हुआ)** 'सिर खावत हो क्यों, मनोहर!'

उमा — **(हँसकर)** खैर, इस समय सिर खाने की बात नहीं है, मिठाई खाने की बात है। मिठाई का भी इन्तज़ाम कर।

मनोहर — बहुत अच्छा सरकार! ऐसन बात होय से भल नीक लागत है।

उमा — अच्छा जा! **(मनोहर का प्रस्थान। राकेश से)** अच्छा, अब चलिए चाय पी लीजिए, अब कहीं फिर ठंडी न हो जाय?

राकेश — अब क्या ठंडी होगी? लेकिन मेरी बात तो वैसी ही सच है।

उमा — वह क्या?

राकेश — वह यह कि छोटी-सी बात से कितने भयंकर परिणाम होते हैं!

उमा — चाय की बात में फिर वही बात आ गई? अभी ऐसी कौन-सी बात हो गई कि वह फिर सच निकल गई?

राकेश — बहुत बड़ी बात हो गई! बहिन श्रीमती कमला देवी के सम्बन्ध में तुम्हारे छोटे-से सन्देह से जानती हो क्या होता? तुम नाराज़ होकर यहाँ से चली जातीं। मेरी सारी गृहस्थी चौपट हो जाती। मैं सब काम छोड़ देता! शायद घर से निकल जाता! और इसी तरह मेरी सारी ज़िन्दगी तबाह हो जाती!

उमा लेकिन मैं गई तो नहीं।

राकेश तुम नहीं गईं तो वह भी एक छोटी-सी बात से। एक छोटे-से पत्र से, जिससे तुम्हें मालूम हुआ कि हमारा और उनका व्यवहार भाई-बहन का है। एक छोटे-से पत्र ने उजड़ती हुई गृहस्थी को बचा लिया।

उमा अच्छी बात है, मान लेती हूँ आपका सिद्धान्त।

राकेश तो फिर एक छोटी-सी हँसी हँस दो, तो (**दर्शकों की ओर देखकर**) इतना बड़ा संसार खुश हो जाय!

(**दोनों हँस पड़ते हैं। धीरे-धीरे परदा गिरता है।**)

व्यंग्य
(Irony)

१. कहाँ से कहाँ
२. आशीर्वाद

कहाँ से कहाँ

पात्र-परिचय

१—**केसरी नन्दन**—एक मध्य वर्ग का सम्भ्रांत गृहस्थ

२—**भवानी**—केसरी नन्दन की माता

३—**पद्मा**—केसरी नन्दन की पत्नी

कहाँ से कहाँ

समय—रात के आठ बजे।

(दृश्य—केसरीनन्दन के मकान का भीतरी कमरा। कोई विशेष सजावट नहीं है किन्तु वस्तुएँ ढंग से रक्खी हुई हैं। दीवालों पर राजा रवि वर्मा चित्रित राधा-कृष्ण, लक्ष्मी और राम-सीता के चित्र लगे हुए हैं। कमरे में दाहने और बाएँ दो दरवाज़े हैं। कमरे के बीचो-बीच पिछली दीवाल से सट कर एक चारपाई है जिस पर एक दरी बिछी हुई है। बाँई ओर एक कुरसी और उसके सामने एक तिपाई है जिस पर खद्दर का एक 'टेबल-क्लाथ' पड़ा हुआ है। चारपाई से हट कर पटियों का एक 'बुक रैक' है जिस पर कुछ धार्मिक पुस्तकें रक्खी हुई हैं।

परदा उठने पर पद्मा कुर्सी पर बैठी हुई एक पुस्तक ध्यान से पढ़ रही है। वह सोलह वर्षीय नव विवाहिता है। गौर वर्ण और स्वभाव की सौम्य। शरीर पर वायल की छपी हुई सफेद साड़ी और सफेद-काले चेक का ब्लाउज़ है। सिर में सिन्दूर और माथे पर बिन्दी। हाथ में आसमानी रंग की चूड़ियाँ।

नेपथ्य से तीखे स्वर में भवानी का स्वर गूँजता है—'अरी, कहाँ गई! कहाँ गई, बहू! इधर घर का काम अधूरा पड़ा हुआ है, उधर वह ग़ायब हो गई!' पद्मा सिर उठा कर नेपथ्य की ओर देखती है, फिर शीघ्रता से पुस्तक रखने के लिए 'बुक रैक' के समीप जाती है। वह पुस्तक रख ही रही है कि भवानी का प्रवेश। भवानी पचास वर्ष की स्त्री है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन और स्वर में तीखापन। वह नीले रंग की देशी ज़नानी धोती पहने है और कत्थई रंग का सलूका। हाथ में मोटी लाल चूड़ियाँ और कड़े। नाक में लौंग और कान में भद्दे कर्णफूल। वह पान खाए हुए है।)

भवानी (**प्रवेश करते हुए**) बस, फ़िर वही किताब! किताब! केसरी से कह क्यों नहीं देती कि तू घर बैठ। नौकरी मैं कर लूँगी। बड़ी पढ़ने वाली! बहुत बहुएँ देखी हैं, काम से जी चुराने वाली ऐसी बहू कहीं नहीं देखी।

पद्मा (**नीचे दृष्टि कर नम्रता से**) माँ जी! अभी तो दूध आग पर रख कर आई हूँ।

भवानी (**हाथ नचा कर**) जिससे वह उबल कर गिर जाय! दूध से यह भी कह दिया है कि जब तक मैं न आऊँ तब तक उबलना मत? वाह रे काम का ढंग! जब काम करना नहीं आता तब काम करने का स्वाँग क्यों भरती हो? अस्पताल की मेमों की तरह कपड़े पहने कर कहीं घर का काम होता है? कपड़े बचाती फिरती हैं महारानीजी, कि कहीं मैले न हो जायँ, कहीं दाग-धब्बा न लग जाय! अरे, काम में दाग-धब्बे लगना तो गिरहस्थी की शोभा है, शोभा। और दो पैसे का साबुन तो दुनियाँ से उठ नहीं गया है। लेकिन लगाए कौन? हाथ की मेंहदी न फीकी पड़ जायगी?

पद्मा मैंने तो इसका ख़याल भी नहीं किया, माँ जी!

भवानी तो ख़याल तुम रखती किन-किन बातों का हो? बर्तन मलने में कभी तो रानी जी ऐसे मलेंगी कि बेचारा बर्तन टूट जाय। और कभी तश्तरी दो उँगलियों से ऐसे उठायेंगी जैसे वह डस लेगी या ज़हर का डङ्क मार देगी। कहीं उँगलियों से भी तश्तरी उठाई जाती है? यों? (**अभिनय करती है।**) कहीं खिसक जाय...अरे घी, तेल की चिकनाहट लगी ही रहती है— तो नुकसान किसका होगा? तुम तो 'अरे' कह कर रह जाओगी। बहुत हुआ तो रोने लगोगी। जिससे मालूम हो कि रानी जी बेकसूर हैं। मैं ख़ूब जानती हूँ तुम्हारे रंग-ढंग! इतना भी नहीं जानूँगी! बाल सफेद हो गए!

पद्मा मैं तो कुछ नहीं कहती।

भवानी तुम कहोगी क्या? चार किताबें पढ़ के क्या तुम समझती हो कि तुममें मुझसे बात करने की लियाकत आ गई? तीस बरस से गिरहस्थी चला रही हूँ। अच्छे-बुरे दिन देख चुकी हूँ। दो लड़कियों के हाथ पीले किये और केशरी का ब्याह कर तुमको लाई हूँ। डंके की चोट। तो तुमसे काम न लूँगी? तुम्हारी पूजा करूँगी? केशरी को खिला-पिला के बड़ा किस लिए किया था? इसी दिन के लिए कि तुमको लाके किताबें पढ़ाऊँ और खुद काम में जुती रहूँ?

पद्मा तो मैंने काम के लिए मना कब किया, माँ जी?

भवानी मना कर कैसे सकती हो? लेकिन ऐसे काम करने से, न करना अच्छा। कभी बर्तन ऐसे हलके मलती हो जैसे किसी के पैर सहलाती हो। झाड़ती-बुहारती ऐसे हो जैसे बालों में कंघी दे रही हो। घर का काम इतना सहज नहीं है कि बालों में तेल डाल कर सिंगार कर लिया। घर के भीतर मीलों चलना पड़ता है तब घर का काम होता है।

पद्मा तो माँ जी! मैं बैठी तो रहती नहीं। मैं भी तो चलती रहती हूँ।

भवानी ऐसे तो घड़ी भी चलती रहती है, लेकिन घर के कामों में चलना दूसरी बात है। मैं तो कहती हूँ........

पद्मा **(बीच ही में)** माँ जी! कहीं दूध न उबल गया हो **(शीघ्रता से भीतर जाती है।)**

भवानी अच्छा, अब मेरी बात भी काटेगी? **(पद्मा के जाने की दिशा में देखती हुई)** मेरी इतनी उमर बीत गई। मेरी बात केसरी के पिता तक ने नहीं काटी और कल की छोकरी की यह मजाल कि मेरी बात काटकर चली जाय? **(ओंठ चबाकर)** देखो, आज तुम्हारी कौन गत करांती हूँ! आने दो केसरी को! सिर पर चढ़ गई है! केशरी के पिता तक मेरा गुस्सा सह जाते थे।

आज मेरे ये दिन आ गए कि...**गला भर आता है।)** अच्छा, मैं देखती हूँ......

(बुक रैक से पद्मा की पुस्तक उठाकर चारपाई पर भारीपन से बैठकर फाड़ने लगती है। आँखों से जैसे चिनगारियाँ बरस रही हैं)

पद्मा **(शीघ्रता से आकर)** माँ जी! ग़ज़ब हो गया!

भवानी **(घबराकर चारपाई से उठते हुए)** क्या हुआ! दूध उबाल कर गिरा दिया क्या?

पद्मा **(अपराधी की तरह)** नहीं माँ जी! दूध तो मैंने उतार कर रख दिया था लेकिन...

भवानी **(कर्कशता से)** क्या बिल्ली को पिला दिया?

पद्मा गरम दूध बिल्ली कैसे पी सकती है!

भवानी तुम्हारी तरह उसके भी नख़रे हैं! कहो तो ठंडा कर दिया करूँ उसके लिए।

पद्मा माँ जी, आप तो......

भवानी अच्छा, बिल्ली के पीछे अब मुझसे बहस की जायगी? मैं बिल्ली से भी गई-बीती हूँ? कम्बख़्त बिल्ली...यह बिल्ली...**(राम-सीता के चित्र की ओर देखकर हाथ जोड़ते हुए)** हाय, भगवान् देख लो, कलजुग आ गया...! सास बिल्ली...सास बिल्ली से भी गई बीती...

पद्मा **(चिढ़कर)** आप तो मुझे यों ही दोष देती हैं।

भवानी **(हाथ झुलाकर)** लो, अब बहू सास को गालियाँ भी देने लगी! मेरे तो भाग्य ही फूट गए हैं कि अब बुढ़ापे में यह सब देखूँ-सहूँ। मेरी किस्मत में यह—(**"यह" पर ज़ोर**) बहू लिखी थी। यह बहू जो बोलती है तो भाले मारती है। मेरा हीरा जैसा लड़का केसरी ऐसी ही बहू के पल्ले...(**गला भर आता है।)**

पद्मा मैं ही मर जाती तो अच्छा था ! घर में काम करते-करते खटती हूँ, फिर भी दो मीठे बोल......

भवानी (**व्यंग्य से**) मीठे बोल ? मैं रानी जी की बाँदी हूँ, न कि रात-दिन हँसाती रहूँ और भौंहों के बल देखा करूँ !

पद्मा मेरे भौंहों के बल कौन देखेगा ! मैं तो आप ही मरी जाती हूँ कि आपका रेशमी ब्लाउज़......

भवानी (**व्यग्रता से**) मेरा रेशमी ब्लिाउज ? क्या हुआ उसका ? बोल न जल्दी ?

पद्मा चूल्हे के ऊपर की खूँटी से गिर पड़ा और अगर जल्द न उठाती तो...

भवानी (**माथा पीटकर**) हाय राम ! अब मेरे कपड़े गिराकर आग में जलाना भी शुरू कर दिया इस बहू ने। (**दौड़कर अन्दर जाती है। चीखने के स्वर में**) कहाँ है मेरा बिलाउज ! हाय, जला कर फेंक दिया इस कुलच्छनी ने ! अब आग लगाने की धुन सवार हुई है। एक रोज़ घर में आग लगा देगी और कहेगी कि चूल्हे में घर गिर पड़ा ! हाय, राम ! इतना अच्छा बिलाउज ! चार रोज़ भी नहीं पहन पाई और इसने जला दिया ! इसके माँ-बाप ने गाड़ी भर कपड़े जो भेज दिये हैं कि मैं रोज़ एक-एक बिलाउज इसे जलाने के लिए देती जाऊँ ! (**कराहते हुए स्वर में**) हाय, कहाँ है मेरा बिलाउज ! आज बिलाउज जलाया है कल मुझे जलाएगी। मैं भी देखती हूँ। बिलाउज न सही, कहाँ है झाड़ू ! क्या उसे भी कहीं छिपाकर रख दिया—? यह है—मैं अभी देखती हूँ—क्यों री बहू—?

(भवानी जैसे ही झाड़ू लेकर आती है वैसे ही बाहर के दरवाजे से केसरी आता है। केसरी क़रीब पच्चीस वर्ष का युवक है। देखने में सुन्दर। नाक लम्बी और ओंठ कसे हुए जो उसकी निश्चयात्मकता की सूचना देते हैं। दिन भर काम करने की वजह से उसके मुख पर मलिनता है, बाल

बिखरे हुए हैं। शरीर पर साफ़ कुरता और धोती, पैर में चप्पल और हाथ में एक डंडा।)

केसरी नन्दन (प्रवेश करते हुए तीव्र स्वर से) क्या है, माँ? (पद्मा भीतर चली जाती है।)

भवानी (केसरी को देखते ही झाड़ू फेंककर क्रोध से) माँ! माँ को तुम भी मारो! मारो तुम भी! (रोने लगती है।) बहू ने तो मारना शुरू ही कर दिया! तुम भी मारो! (सिसककर) हाय, राम! मैं मर भी नहीं गई! (पुकार कर) बहू! एक झाड़ू और लगा दे, यह पड़ी है! एक और—हाय! मेरे नसीब में......(भवानी रोने लगती है। केसरी किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर ठिठक कर रह जाता है।)

केसरी नन्दन हुआ क्या? (चारपाई की ओर देखकर) यह किताब फटी हुई पड़ी है?

भवानी (सँभलकर) मैंने कुछ नहीं कहा। मैं बेचारी खड़ी थी और वह सामने चली आई। किताब फाड़कर झाड़ू उठाई और—

केसरी नन्दन तो क्या पद्मा ने तुम्हें मारा?

भवानी यह झाड़ू नहीं देखते? इसी से उसने मेरी कमर तोड़ दी। मैंने जैसे ही उसके हाथ से छीनी कि तुम आ गए—(सिसकती है।)

केसरी नन्दन (दाँत पीसकर) अच्छा, दिमाग़ यहाँ तक चढ़ गया? यह कल की छोकरी बूढ़ी माँ को इस तरह तंग करे? अभी बात करने की तमीज़ नहीं और मार-पीट शुरू कर दी?

भवानी तुम कुछ मत कहो, बेटा! यह मेरी क़िस्मत है! ऐसा ही लिखा के लाई हूँ! बुढ़ापे में इन छोकरियों की मार सहूँ! (और भी फूट पड़ती है।)

केसरी नन्दन (तेज़ होकर) कहाँ है वह?

भवानी (रोते हुए) होगी कहाँ! यहीं कहीं होगी! मेरे रोने का तमाशा देख रही होगी!

केसरी नन्दन तमाशा? तमाशा क्या देखेगी! मैं उसे दिखलाऊँगा तमाशा!

उस बेवकूफ़ बदतमीज़ को ! चूर-चूर होकर मैं लौटता हूँ तो यह महाभारत सुनता हूँ ! मैं आज इसका आख़िरी फ़ैसला करूँगा । यह रोज़-रोज़ का हंगामा मुझे पसंद नहीं है ।

भवानी (**सम्भल कर**) मुझे भी पसंद नहीं, बेटा ! मेरे लिए एक किराये का मकान ले दो, मैं अपने अलग रहूँगी । राम का नाम लूँगी बुढ़ापे में । तुम अपनी रानी जी को लेकर चैन से रहो । मरते वक़्त अपने हाथ-पैर नहीं तुड़वाने हैं मुझे । (**सिहर कर कराहते हुए**) हाय, बहुत बुरा मारा है इधर ! हाय राम ! (**फिर रोने लगती है ।**)

केसरी नन्दन कहाँ लगा है, माँ ! ज़रा देखूँ । (**आगे बढ़ता है ।**)

भवानी (**हाथ से दूर करते हुए**) अब आए हो देखने जब उसने मेरी हड्डी-पसली एक कर दी । मार डालती तो चैन से जला देते मुझे ! (**सिसकती है ।**)

केसरी नन्दन (**झुँझलाकर**) कैसी बातें करती हो, माँ ! तुम्हें जलाने के बजाय आज उसे ज़िन्दा जलाऊँगा । देखूँगा, कहाँ भाग के जाती है ! बहुत दिमाग़ चढ़ गया है उसका । (**माँ की ओर तीव्रता से**) यह सिसकना बन्द करो, माँ ! मैं आज दिखला दूँगा कि बूढ़ी माँ पर हाथ उठाने का नतीजा क्या होता है ।

भवानी तुम कुछ मत कहो, बेटा ! कहीं तुम्हारे लिए भी वह हाथ में झाड़ू न उठा ले !

केसरी नन्दन मेरे लिए ? दोनों हाथ तोड़ दूँगा उसके । उसने समझ क्या रक्खा है मुझे ! ऐसी मार मारूँगा कि जोड़-जोड़ ढीले हो जायँगे । मैं औरत का ग़ुलाम नहीं हूँ । सीधे-सीधे रहे तो सिर-माथे पर नहीं तो ज़मीन पर पीस दूँगा उसे......

भवानी सो तो मैं जानती हूँ, बेटा...मगर ।

केसरी नन्दन हुआ क्या ? ज़रा उसकी शैतानी सुनना चाहता हूँ । बात कैसे बढ़ाई उसने ?

भवानी सो तो उसके बाएँ हाथ का खेल है । चौबीसों घण्टे किताब पढ़ती

है। मैंने बड़े मीठे ढङ्ग से कहा—बेटी, इतना मत पढ़ो, आँखें ख़राब हो जायँगी! रानी बिटिया की आँखें ख़राब हो जायँगी! यों तो मैं घर का सारा काम करती हूँ लेकिन इस वक़्त हाथ खाली नहीं है तो ज़रा दूध ही गरम कर दो। तुम्हारे हाथ का दूध केसरी को बहुत अच्छा लगता है। मैंने तो ऐसे पुचकार कर कहा और उसने चिढ़कर सारा दूध बिल्ली को पिला दिया!

केसरी नन्दन बिल्ली को पिला दिया?

भवानी अरे, गरम किया हुआ दूध इस तरह रख दिया कि बिल्ली पी जाय। पी गई बिल्ली। और फिर मेरा रेशमी बिलाउज! कितनी मेहनत से कमा कर तूने चार दिन हुए मेरे लिए बिलाउज बनवाया था सो...(**सिसकने लगती है।**)

केसरी नन्दन (**उत्सुकता से**) सो क्या हुआ?

भवानी उस पर चाँद-तारे काढ़ दिये रानी जी ने—यह सुनना चाहते हो? अरे चूल्हे में झोंक दिया उसने! आग में भसम कर दिया! मुझे भसम कर देती तो और अच्छा होता। तुम भी खुश हो जाते!

केसरी नन्दन कैसी बातें करती हो माँ! तुम भी!

भवानी जिसका बिलाउज जलता है बेटा! उसका ही जी जानता है, तुम क्या जानो! बनवा देना सहज है, मगर उसके जल जाने का सदमा दूसरी बात है! हाय, मेरा बिलाउज!

केसरी नन्दन तो जला दिया उसने बिलकुल?

भवानी और जब मैंने बहू को मीठे से समझाया तो ले आई झाड़ू! बेटा! तुम मुझे अलग कर दो। मैं अकेली आराम से मर जाऊँगी। अंग-भंग होके चिता में नहीं जलना चाहती! (**सिसकने लगती है।**)

केसरी नन्दन अच्छा माँ! तुम अन्दर जाओ। आज मैं उसके हाथ-पैर तोड़ूँगा। आयंदा वह हाथ में झाड़ू उठा भी न सके! आज उसे मालूम हो जायगा कि केसरी की माँ को सताना आसान बात नहीं है।

भवानी बेटा ! दस बरस हुए मैंने अपनी सास से एक आधी बात कही थी तो तुम्हारे पिता जी ने मुझे ऐसा पीटा था कि चार रोज़ उठ न सकी थी ? इस हाथ पर उसी चोट का निशान है ! देखो। **(अपना हाथ दिखलाती है।)**

केसरी नन्दन तो आज उसके सारे बदन पर चोट के निशान न बना दूँ तो केशरी नाम नहीं। जाओ माँ ! अन्दर तुम। मैं दरवाज़ा बन्द कर आज उसकी ख़बर लेता हूँ जिससे वह कहीं भाग भी न सके।

भवानी अब बेटा ! ऐसा भी न मारना कि पुलिस में रपट हो जाय। तुम्हें बहुत गुस्सा आता है, मैं जानती हूँ। गुस्से में तुम आगे-पीछे की नहीं सोचते। दरवाज़ा बन्द मत करना, बेटा !

केसरी नन्दन यह हो नहीं सकता। बीच में आकर कहीं तुमने उसे बचाया तब ? आख़िर तुम भी तो स्त्री हो ! पत्थर का दिल तो तुम्हारा है. नहीं। आज मैं इस तरह मार मारूँगा कि अगले जन्म तक उसको याद बनी रहे।

भवानी बेटा ! ऐसा मत करना। अगले जनम की बात कौन जानता है ! अगर इसी जनम में तुम जेहल चले गए तो मैं तो बेसहारे हो जाऊँगी ! ऐसा मारना भी किस काम का कि पुलिस आके पकड़ ले। नहीं बेटा ! मैं हाथ जोड़ती हूँ। दरवाज़ा बन्द कर मत पीटना।

केसरी नन्दन माँ ! अब मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूँगा। रोज़-रोज़ का यह झगड़ा मैं बन्द करना चाहता हूँ। आख़िर मैं भी तो आदमी हूँ। ज़िन्दगी में आराम करना चाहता हूँ। यह क्या कि हर रोज़ घर आऊँ तो रोना-धोना मचा रहे ? जाओ तुम यहाँ से।

भवानी बेटा ! गुस्सा ज़रा सम्हाल के रक्खो। हाय, मैंने कहाँ से कहाँ बात कही। बेटा, एक बार फिर बात मान ले कि दरवाज़ा बन्द मत करना। तेरे पिता जी मुझे पीटते थे लेकिन दरवाज़ा कभी बन्द नहीं करते थे।

केसरी नन्दन लेकिन यह चुड़ैल है। निकल के भाग जायगी।

भवानी नहीं भागेगी, बेटा! मैं दरवाज़े पर खड़ी रहूँगी।

केसरी नन्दन तो वहाँ भी झाड़ू की मार खाओगी तुम? अब जाओ, ज़्यादा बहस मत करो। मुझे गुस्सा आ रहा है। जाकर उस कमनसीब को भेजो। इसी वक्त मेरे पास।

भवानी हाय, बेटा! तुम्हारे गुस्से को देख कर तो मुझे घबराहट हो रही है। बात समझा देना, ज़्यादा गुस्सा अच्छा नहीं होता। पुलिस तुम्हें कहीं पकड़ न ले।

केसरी नन्दन अब मुझे तुम्हारा सिखापन नहीं सुनना है, माँ! जाकर फ़ौरन उसे भेजो। आज आख़िरी बार उससे निबटूँगा। भेजो उसे जल्दी। (**दाँत पीसता है।**)

भवानी अब कौन समझाये तुमको! (**आगे बढ़ती है**) चला भी तो नहीं जाता। उसने मार सही दिया लेकिन मेरे पैरों में पहले से भी तो दर्द था।

(**भवानी लँगड़ाते हुए जाती है। केसरी कमरे में बेचैनी से टहलता है।**)

केशरी नन्दन (**एक क्षण बाद पुकार कर तीव्र स्वर में**) पद्मा!

(**पद्मा एक तश्तरी में दूध का ग्लास लेकर आती है और कोने में चुपचाप खड़ी हो जाती है। फिर दूध का ग्लास तिपाई पर रख देती है। उसकी आँखों में आँसुओं की धारा बह रही है। उसके आने पर केसरी एक क्षण घूरता है। फिर दरवाज़ा बन्द करने के लिए आगे बढ़ता है।**)

केसरी नन्दन (**आगे बढ़ते हुए।**) आओ तुम! देखूँ तुम्हें! (**दरवाज़ा बन्द करता है। लौटते हुए गहरी नज़र से देखकर**) रो रही हैं रानी जी? इससे मैं पिघलने वाला नहीं हूँ! बूढ़ी माँ पर हाथ उठाते समय रोना नहीं आया? बोलिए न? (**अपने हाथों में डंडा तोलता है।**) यह भले आदमियों का घर है या मछली बाज़ार, जहाँ रात-दिन लड़ाई-झगड़ा मचा रहता है! सारी

इज़्ज़त धूल में मिला दी ! आज मैं हमेशा के लिए यह झंझट दूर करूँगा। कहिए बिल्ली को दूध क्यों पीने दिया ? (**पद्मा चुप है।**) बोलिए, श्रीमती जी ! अपनी सास से भी पूजनीय बिल्ली को दूध क्यों पीने दिया ?

पद्मा (**तिपाई की ओर संकेत करते हुए**) दूध तो यह रक्खा हुआँ है।

केशरी नन्दन (**देखकर**) यह दूध है ? चाक मिट्टी घोल कर रख दी है और कह दिया कि यह दूध है ! झूठी ! मक्कार औरत ! और माँ का ब्लाउज़ क्यों जला दिया ? उस रेशमी ब्लाउज़ से इतनी जलन क्यों हुई ? क्या बूढ़ी माँ को रेशमी कपड़े पहने नहीं देख सकती ? और जलना था तो खुद ही जलतीं, ब्लाउज़ को आग में क्यों झोंक दिया ?

पद्मा (**अपने अञ्चल से ब्लाउज़ निकाल कर**) यह ब्लाउज़ है।

केसरी नन्दन (**चिढ़ कर**) तो इसके मानी ये हुए कि तुम बेचारी बूढ़ी माँ को खामख़ा चिढ़ाती हो और उसे झाड़ू से भी पीटती हो। मैं आज तुम्हारे हाथ-पैर तोड़ दूँगा। तुम उठ भी न सकोगी। बूढ़ी माँ का अपमान करना इतना आसान नहीं है जितना तुम समझ रही हो। जिस डाल पर बैठी हो उसी को काटना चाहती हो ? (**कर्कश स्वर में**) इधर आओ (**जोर से**) इधर आओ !

(नेपथ्य से भवानी का विह्वल स्वर—बेटा ! रहम करो। मेरी बहू ने मुझे ज़्यादा नहीं मारा तुम रहम करो। पुलिस आ जायगी।)

केसरी नन्दन मैं रहम करूँ ? एक शैतान पर रहम ! इस दुष्टा स्त्री पर रहम ? तुमको मारते वक्त इसने रहम नहीं किया ! आज मैं इसे मार कर दम लूँगा ! मत रोको मुझे। (**चिल्ला कर**) क्यों री पद्मा ! तू पद्मा है ? तू पद्मा नहीं मेरी जिन्दगी का सबसे बड़ी सदमा है। आज उसे हमेशा के लिए मिटा दूँगा ? वहाँ कहाँ खड़ी है ? चल इधर !

(नेपथ्य से भवानी दरवाज़ा पीट कर—बेटा! कहीं उसे ज़्यादा न मार बैठना। हाय, पुलिस तुम्हें ले गई तो मैं बेसहारे हो जाऊँगी। उसने मुझे मारा कहाँ है! यों ही कड़ी बात कही थी।)

केसरी नन्दन कड़ी बात कही थी तो मेरी कड़ी मार भी सहे! बूढ़ी माँ का अपमान करना इतना आसान नहीं है, जितना यह समझ रही है। क्यों री, बेहया! जिस शीशे में मुँह देखती है उसी को चूर-चूर करना चाहती है? इधर आ! (ज़ोर से) इधर आ!

(नेपथ्य से भवानी दरवाज़ा पीट कर—बेटा! तुम उसे मत मारना। उसने कड़ी बात भी कहाँ कही है। उसने सिर्फ़ अपनी सफ़ाई दी थी।)

केसरी नन्दन (**चिढ़ कर**) सफाई दी थी गोया कहीं की वकील है! घर ही में वकालत! हम लोग तो जैसे बेवकूफ हैं! कोई बात ही नहीं समझते! यह सफ़ाई देकर समझाती है। समझती है कि हम लोग इसकी चालाकी नहीं समझ पाते। बूढ़ी माँ का अपमान करना इतना आसान नहीं है। इधर आ (जोर से) इधर आ!

(नेपथ्य से भवानी फिर दरवाजा पीटकर—बेटा! हाथ मत उठाना। उसने सफ़ाई भी नहीं दी। वह तो बिलकुल चुप खड़ी रही।)

केसरी नन्दन चुप खड़ी रही? इसकी इतनी मजाल कि कोई इससे बात करे और यह चुप खड़ी रहे? जैसे लाट साहब है। बात करते हम लोगों का मुँह सूख जाय और उसके मुँह से जबान भी न निकले! चुप खड़ी रहे। जिस घर में रहती है उसी में आग लगाती है। इधर आ! (जोर से) इधर आ!

(नेपथ्य में बदहवासी में दरवाजा पीटते हुए भवानी का स्वर—बेटा! यह बेकसूर है। हाय! मैं बेसहारे हुई।)

केशरी नन्दन अच्छा, यह बात है। अब तो मैं पूरी तरह समझ गया कि क्या बात है। (**पुकारकर**) माँ! अब तो इसका यही कुसूर है कि

यह बेकुसूर है। क्यों री, शैतान औरत! अब अपनी मौत के लिए तैयार हो जा। यह मेरा डण्डा तेरे सिर पर गिरा! आख़िरी वक़्त कुछ बोलना चाहती है? (शीघ्रता से समीप जाकर पद्मा के कान में कहता है—मैं जानता हूँ तुम बेकुसूर हो। मैं तुम्हें मारूँगा नहीं लेकिन जब चारपाई पर लकड़ी मारूँ तो तुम ज़ोर-ज़ोर से चीख़ना। समझे? फिर अलग हट कर) क्यों? बोलती क्यों नहीं? और माँ का अपमान करेगी?

(केसरी चारपाई पर ज़ोर से लाठी मारता है। पद्मा चीख़ उठती है।)

पद्मा (तड़पते हुए स्वर में) हाय, मुझे मार डाला! (जोर से सिसकने लगती है।)

(नेपथ्य से दरवाज़ा पीटते हुए फिर भवानी का क्रुद्ध स्वर—यह क्या कर रहा है तू! बेचारी बेकसूर को पीट रहा है! दरवाज़ा खोल!)

केसरी नन्दन (क्रोध से) मैं दरवाज़ा हरगिज़ नहीं खोलूँगा। आज दिखला दूँगा कि मेरी माँ का अपमान करना आसान नहीं है। सिर पर चढ़ गई है! (पद्मा से) क्यों? माँ से और झगड़ा करेगी? (दूसरी लाठी जमीन पर पीटता है। पद्मा फिर चीख़ उठती है—नहीं? नहीं! मैं झगड़ा नहीं करूँगी!) नहीं, अभी और झगड़ा कर! (तीसरी लाठी दीवार पर मारता है। प्रत्येक बार चारपाई या दीवार पर लाठी पड़ने पर पद्मा और जोर से कराहती हुई तपड़ कर कहती है—मुझे माफ़ करो। हाय, मुझे मार डाला! मैं अब कुछ न कहूँगी। अब कुछ न कहूँगी। माँ—माँ—मुझे बचाओ—हाय, मुझे मार डाला!)

केसरी नन्दन (जोर से साँस लेता हुआ) कम्बख़्त कहीं की! अभी क्या हुआ है!

भवानी (**नेपथ्य से जोर से दरवाज़ा पीटते हुए**) चल रे केसरिया ! खोल ! बेचारी बहू के प्राण ले लेगा क्या ?

केसरी नन्दन (**फिर ज़ोर से साँस लेता हुआ**) आज मैं प्राण लेकर ही दम लूँगा। यह झगड़ा मैं आयंदा कभी नहीं देखना चाहता। क्यों री, यह झगड़ा फिर मुझे दिखलायेगी ? रोना ही जानती है कि कुछ बोलना भी ! माँ के सामने नहीं रोई ? शैतान कहीं की ! ले और रो ले ! (**फिर ज़मीन पर लकड़ी पीटता है। पद्मा चीख़ उठती है, हाय ! मैं मरी ! उसका गला रुँध जाता है।**

भवानी (**व्याकुल होकर नेपथ्य से**) दरवाज़ा खोल रे केसरिया ! मैं मुहल्ले वालों को बुलाती हूँ।

केसरी नन्दन बस, दम तोड़ देने में सिर्फ एक डण्डे की कसर है। ले यह आख़िरी डंडा। मेरा घर हमेशा के लिए ख़ाली कर। (**चिल्ला-कर**) माँ, मैंने तुम्हारे अपमान का बदला......

भवानी (**नेपथ्य से दरवाजा पीटती हुई**) अगर अब तूने हाथ उठाया तो तुझे तेरे पिता की सौगन्ध ! बड़ा अपमान का बदला लेने आया ! पिता की सौगन्द भी नहीं मानेगा ?

केसरी नदन्न इधर शिकायत करती है उधर सौगन्ध भी पड़ाती है। आज मैं इसे ज़िन्दा नहीं छोड़ना चाहता ! (**पद्मा कराहती है।**)

भवानी मैं सच कहती हूँ, सारा कसूर मेरा था। मैंने झूठी शिकायत की थी। पद्मा रानी को हाथ मत लगा। तुझे मेरी कसम। दरवाज़ा खोल दे, नहीं तो चिल्लाती हूँ।

केसरी नन्दन (**पद्मा को लेट जाने का इशारा करता है।**) अच्छा, ! माँ तुम्हारे कहने से इसे इस बार माफ़ करता हूँ। (**पद्मा कराहते हुए लेट जाती है।**) आयंदा जिन्दा न छोड़ूँगा। (**दरवाज़ा खोलता है।**) अब तुम जानो और तुम्हारी बहू जाने।

(**दरवाज़ा खुलते ही भवानी दौड़ कर पद्मा का सिर**

अपनी गोद में रखती है और शरीर **सहलाती हुई केसरी को घूर कर देखती है।**)

भवानी निर्दयी कहीं का। मेरी फूल-सी बहू को पीस डाला! हाय, हाय, कितनी चोट लग गई! (**पद्मा कराहती है।**) बहू, तू मुझे माफ़ कर। सारा कसूर मेरा ही था।

(**केसरी से**) अब तूने कभी बहू को हाथ लगाया तो घर से निकल जाऊँगी। खूँख्वार कहीं का! ऐसा पीटा जाता है? दुनिया के लोग अपनी-अपनी औरतों को पीटते हैं मगर तेरे जैसा कोई नहीं पीटता। पद्मा का फूल-सा बदन कुम्हला गया! अब कसम खा कि आयंदा बहू को नहीं पीटेगा। मेरी बेचारी बहू! हाय, मेरी बेचारी बहू!

केसरी नन्दन और तुम भी क़सम खाओ, माँ! कि आज से मुझसे किसी तरह की शिकायत नहीं करोगी।

भवानी आज से कान पकड़ती हूँ, बेटा! जो कभी शिकायत करूँ! चाहे मुझे बहू सचमुच ही झाड़ू से मारे। मेरी बहू को इस क़दर मारा है कि बेचारी कराह तक नहीं सकती। मैं अभी दवा लाती हूँ, बहू! सारी देह में मलहम लगाती हूँ? हाय, हाय, मेरे मुँह को आग लगे कहाँ मैंने मामूली-सी शिकायत की थी और कहाँ धुन दिया निर्दयी ने इस बेचारी को! सम्हाल इसको! मैं दवा लाऊँ! (**दवा लेने के लिए बड़बड़ाती हुई जाती है।**) कहाँ से कहाँ मैंने बात कही...(**प्रस्थान**)

केसरी नन्दन (**पद्मा का हाथ पकड़ कर उठाते हुए, मुस्कराकर**) कहाँ... से...कहाँ (**दोनों मुस्कराते हैं।**)

(**परदा गिरता है।**)

आशीर्वाद

पात्र-परिचय

राजेश कुमार

सरोज—राजेश कुमार की पत्नी

रमेश—राजेश कुमार का क्लर्क

आशीर्वाद

(दृश्य—प्रयाग स्थित बँगले में राजेशकुमार का ड्राइङ्ग-रूम। अत्यन्त सुरुचि के साथ उसकी सजावट की गई है। दीवारों पर प्राकृतिक दृश्यों के सुन्दर चित्र हैं। सामने सन् १९४७ का कैलेण्डर है जिसमें दिसम्बर मास का पृष्ठ दीख रहा है। कैलेण्डर के बग़ल में एक घड़ी है जिसमें सन्ध्या के चार बजे हैं। ज़मीन पर चैक-डिज़ाइन का कारपेट बिछा हुआ है। कमरे के बीचोबीच एक गोल टेबल है, जिसके दो ओर कुर्सियाँ हैं। टेबल पर रेशमी क्लाथ। उस पर एक चौड़ा फूलदान है, जिसमें गुलाब के फूल-पत्तियों सहित काफ़ी घने लगे हुए हैं। कुर्सियों पर कुशन। कमरे के दोनों ओर दो दरवाजे हैं। दाहिना दरवाज़ा बाहर जाने के लिए और बायाँ अन्दर आने के लिए है। दरवाजों पर हरी जाली के परदे हैं। कमरे के बीचोबीच पिछली दीवाल में एक अँगीठी है जिसके ऊपर मैंटलपीस। उस पर राजेश और सरोज के फ्रेम में लगे हुए फ़ोटो और चीनी मिट्टी के कलात्मक हाथी और हिरन रक्खे हुए हैं। अँगीठी के दाहने एक आराम कुर्सी है और बाएँ चौकोर तख़्त, जिस पर मखमली क़ालीन बिछा हुआ है। तख़्त और अँगीठी के बीच में एक टीक की आल्मारी है, जिसके ऊपरी शैल्फ़ पर कुछ काग़ज़ ढंग से रक्खे हुए हैं और नीचे के शैल्फ़ों में पुस्तकें सजी हैं।

परदा उठने पर सरोज जिसकी अवस्था २५ वर्ष के लगभग है, तख़्त पर बैठी हुई स्वैटर बुन रही है। सरोज सौम्य और सुन्दर है और पारिवारिक शान्ति बनाये रखने में कुशल है। हलके हरे रंग की साड़ी और पीले रंग का ब्लाउज़ पहने हुए है, जो ऊपर डाले हुए सफ़ेद ऊनी शाल से कहीं-कहीं दिख जाता है। गले में सोने की चेन और माथे पर मंगल तारे की भाँति हलकी लाल बिन्दी। हाथ में पतली रेशमी चूड़ियाँ।

राजेश जिनकी आयु तीस वर्ष की है कमरे में धीरे-धीरे टहल रहे हैं। टहलने की दूरी आराम कुर्सी से लेकर तख़्त के निम्न भाग के कोण तक है। वे सफ़ेद क़मीज़ पर ब्राउन पुलओवर पहने हुए हैं और चाकलेट रंग का ढीला पैण्ट है। पैर में पेशावरी चप्पल। राजेश भावुक और अस्थिर चित्त के व्यक्ति हैं। देखने में सुन्दर, बाल ग्लिसरीन से पीछे की ओर मुड़े हुए हैं। कपड़ों से निकल कर सारे कमरे में सुगंधि की महक है। वे एकाउंटेण्ट जनरल के आफ़िस में काम करते हैं। अपनी आर्थिक स्थिति से अधिक संतुष्ट नहीं हैं, यद्यपि शौक़ीन तबियत के हैं।)

राजेश कुमार (**टहलते हुए आराम कुर्सी के समीप पहुँच कर रुक कर**) तो मैं आज आफ़िस नहीं गया।

सरोज (**बुनते हुए**) हूँ! लेकिन चले जाते तो हर्ज़ क्या था।

राजेश कुमार (**मुड़ कर**) कुछ नहीं। हर्ज़ क्या होता है? लेकिन जब कोई ख़ास बात होने को होती है तो मन जाने कैसा हो जाता है!

सरोज (**विनोद से मुसकरा कर**) कैसा हो जाता है?

राजेश कुमार तुम तो मुझसे ऐसे पूछती हो जैसे तुम्हारे मन में कोई हलचल ही न हो?

सरोज मेरे मन में क्या हलचल होगी? मैं तो मज़े से स्वैटर बुन रही हूँ।

राजेश कुमार (**व्यंग्य से**) जी। इसीलिए तो स्वैटर बुनी जा रही है जिससे मन की हलचल कोई भाँप न सके। कोई दिल की धड़कन सुने तो आफ़िस क्लाक की आवाज़ सुनाई दे!

सरोज (**हँस कर**) ख़ैर, अगर मेरे दिल में हलचल भी होगी तो आपके दिल से कम ही होगी। आपके दिल की आवाज़ में तो युनिवर्सिटी क्लॉक के घटे होंगे! घंटे!

राजेश कुमार (**हँस कर**) घंटे क्या होंगे, यहाँ तो दिल ही बैठ रहा है! लेकिन तुमने आख़िरकार मान ही लिया न कि तुम्हारे दिल में भी हलचल है।

सरोज तो उसमें बुराई क्या हो गई ? मैं भी तो इन्सान हूँ ! कोई अच्छी बात होते समय हलचल होना स्वाभाविक है ।

राजेश कुमार लेकिन अच्छी बात हो जाय तभी तो बात है ।

सरोज बात अच्छी क्यों नहीं होगी ? मैंने मनौती जो मान रक्खी है ।

राजेश कुमार अच्छा, बात यहाँ तक पहुँच गई ? किसकी मनौती मानी है ?

सरोज ये बातें बतलाई नहीं जातीं ।

राजेश कुमार न बतलाओ । मेरी तो इस मामले में आशा ही टूट चली है ! **(आराम कुर्सी पर निराशा से बैठ जाते हैं ।)**

सरोज क्यों ?

राजेश कुमार **(हाथ झुला कर)** अरे, जब अभी तक कुछ नहीं हुआ तो आगे क्या होगा ! दो महीनों से तो प्रतीक्षा कर रहा हूँ ! प्रत्येक दिन आशा से उठता हूँ और निराशा से सो जाता हूँ । निराश होते-होते दिल ही बैठ गया है । अब आशा करना भी बुरा मालूम होता है !

सरोज इसीलिए तो आज शायद आफ़िस नहीं गए !

राजेश कुमार **(उठकर)** फिर तुम वही बात लेके बैठ गईं ! बात यह है कि निर्णय की तारीख़ कल ही थी यानी . **(कैलेण्डर की ओर देख कर)** १५ दिसम्बर । तो आज मुझे ख़बर मिल जानी चाहिए । सुबह से इन्तज़ार कर रहा हूँ कि तार का चपरासी अब आता है, तब आता है । लेकिन न तार है, न चपरासी । मैंने सोचा, आफ़िस में भी मन नहीं लगेगा ! फ़िज़ूल लोग आवाज़ें कसेंगे । इशारेबाज़ियाँ होंगी । इससे अच्छा यही है, घर पर रहूँ, तो कोई कुछ कहेगा नहीं । घर पर ही तार का इन्तज़ार करूँ ।

सरोज लेकिन आज तार का चपरासी क्या, पोस्टमैन भी नहीं आया ।

राजेश कुमार कोई साज़िश तो नहीं है ? कहो तो किसी नौकर को पोस्ट आफ़िस भेज दूँ ।

सरोज भेज देखिए, लेकिन अगर वहाँ भी कुछ न आया होगा तो वहाँ

के लोग भी तो आपस में इशारेबाज़ियाँ करेंगे। मुमकिन है, मज़ाक के लिए किसी दूसरे का तार आपके पास भेज दें।

राजेश कुमार वाह, कहीं ऐसा भी हो सकता?

सरोज ऐसा नहीं हो सकता तो वे लोग यही कर सकते हैं कि तार के चपरासी से कह दें कि वर्मा साहब के बँगले पर जाकर पूछ लेना कि साहब, यह तार किसका है? तार के चपरासी का झूठमूठ दरवाज़े पर उतरना क्या कम मज़ाक रहेगा?

राजेश कुमार अच्छा, तो तुम भी अपनी ज़बान मुझ पर माँज रही हो?

सरोज मैं क्यों माँजने चली? आपने नौकर पोस्ट आफ़िस भेजने को कहा तो मैंने यह सोचा कि बात कहाँ तक बढ़ सकती है!

राजेश कुमार कहीं अपनी सूझ पोस्ट आफ़िस वालों को न भेज देना!

सरोज (**बात पलटते हुए**) जाने दीजिए, इन बातों को सोचने से फ़ायदा क्या? तार आना होगा तो आयेगा ही।

राजेश कुमार हाँ, कल तो नतीजा निकल ही गया होगा।

सरोज तो फिर आज तार ज़रूर आयेगा।

राजेश कुमार कैसे?

सरोज आप ही तो कहते थे कि नतीजा निकलने के बाद तार से सूचना दी जायगी।

राजेश कुमार तार से सूचना ज़रूर दी जायगी लेकिन उसको, जो भाग्यशाली होगा। अगर मैं इतना भाग्यशाली न हुआ तो मेरे पास तार से सूचना क्यों आने लगी?

(**गोल टेबल के समीप की कुर्सी पर बैठते हैं।**)

सरोज लेकिन भाग्यशाली होने की सनद किसी ख़ास आदमी के पास तो है नहीं! आख़िरकार मनुष्य ही तो भाग्यशाली हुआ करते हैं।

राजेश कुमार शायद मैं उन भाग्यशाली मनुष्यों में न होऊँ!

सरोज भाग्य की बात न पूछिए। संसार में ऐसी-ऐसी बातें होती हैं जिनका सिर-पैर ही नहीं समझ पड़ता। ज़िन्दगी भर जिन्हें

खाना नसीब नहीं हुआ उनका भाग्य आजकल ऐसा चमका है कि बड़े-बड़े लोग भी उनकी ख़ुशामद करते हैं।

राजेश कुमार मेरा भाग्य अगर ऐसा चमक सकता तो दो सौ की नौकरी पर पड़ा रहता ? आज हज़ार, दो हज़ार कमाता !

सरोज (मुस्कुराकर) शायद आज से ही भाग्य चमक जाय।

राजेश कुमार मुझे तो आशा नहीं है।

सरोज क्यों ?......मान लीजिए आपके नाम ही लाटरी का पहला इनाम निकल जाय, पाँच लाख। पाँच लाख में क्या नहीं हो सकता ! सारी ज़िन्दगी चैन से गुज़र सकती है। न किसी से लेना, न किसी को देना। मुमकिन है, कल पहला इनाम आपके नाम ही निकला हो। शायद तार रास्ते में हो।

राजेश कुमार (लापरवाही से) तार आना होता तो अभी तक आ गया होता।

सरोज अरे, आजकल तार की कुछ न पूछो। चिट्ठी से भी गए बीते हो गए हैं। चिट्ठी जल्दी मिल जाय, लेकिन तार न मिले। अभी उसी रोज़ शीला कह रही थी कि शरणार्थी कैम्प से भेजा गया तार आठ रोज़ बाद मिला।

राजेश कुमार ख़ैर, शरणार्थी कैम्प से न आना एक बात है और बम्बई से आना दूसरी बात। लेकिन हो सकता है कि तुम्हारी बात सही हो।

सरोज मैं कहती हूँ, सही होगी। आज कोई न कोई सूचना बम्बई से ज़रूर आयेगी।

राजेश कुमार तुम्हें तो बड़ा विश्वास है।

सरोज सच्ची बात पर तो विश्वास होता ही है। यह बात दूसरी है कि लाटरी के निर्णय में घण्टे, दो घण्टे की देर हो जाय।

राजेश कुमार (सोचते हुए) हाँ, हो सकती है। लाटरी की घोषणा करने से पहले बोर्ड आव् डायरेक्टर्स की मीटिंग हुई हो, परिणाम सुनाया

गया हो, फिर मैनेजिंग डायरेक्टर ने उस पर दस्तख़त किये हों ; तब भेजा हो ! फिर आने में भी कुछ विलम्ब लग सकता है ।

सरोज (**प्रसन्न होकर**) मैं भी तो यही कह रही थी ।

राजेश कुमार (**गहरी साँस लेकर**) भाग्य की बात कौन जानता है ?

सरोज आप तो लाटरी का टिकट ही नहीं ख़रीद रहे थे।

राजेश कुमार अरे, आजकल खाने-पीने से पैसा बचता नहीं, लाटरी का टिकट कौन ख़रीदे ? चीज़ों के दाम छः गुने-अठगुने बढ़ गए हैं, लेकिन तनख़्वाह उतनी ही । वार एलाउंस तो और जले पर नमक छिड़कता है । तनख़्वाह का साढ़े सत्रह परसेंट ! सवा सत्रह परसेंट कर देते तो सरकार का बहुत रुपया बच जाता ।

सरोज (**स्वच्छन्दता से**) मैं तो इन बातों पर सोचती नहीं । जैसा समय आये अगर उसके अनुसार अपने को बना लो तो फिर कोई झंझट ही नहीं होती और फिर दुनियाँ का काम तो चलता ही है । अगर आप लाटरी के टिकट के दस रुपया बचा ही लेते तो किन-किन चीज़ों के ख़रीदने में मदद हो जाती !

राजेश कुमार क्या मदद हो जाती ! लेकिन मैंने भी समझा कि दो महीने तक आशा के हिंडोले में झूलने के लिए दस रुपया ख़र्च करना बुरी बात नहीं है । ख़रीद लिया टिकट ।

सरोज (**मुस्कुरा कर**) और अब कहीं लाटरी मिल गई तो ?

राजेश कुमार (**हँसकर**) तो...तो फिर क्या पूछती हो, सरोज ! (**उठ खड़े होते हैं**) शहर भर में राजेशकुमार की धूम मच जायगी । लोग कहेंगे कि क़िस्मत हो तो राजेश जैसी । लोग मुबारकबाद देने आवेंगे । दावतें होंगी, पार्टियाँ होंगी । एटहोम्स और क्या ?

सरोज (**व्यंग्य से**) और मैं बैठी रहूँगी एक कोने में ?

राजेश कुमार तुम क्यों बैठी रहोगी ? शहर भर की स्त्रियों की आँखें तुम्हारी तरफ घूर कर रह जायँगी । तुम तो इस तरह उड़ोगी जैसे ऐरो-प्लेन । (**दोनों हँस पड़ते हैं** ।)

सरोज देखिए, आप मज़ाक न कीजिए।

राजेश कुमार अच्छा, सच बतलाओ सरोज! अगर लाटरी मिल जाय तो तुम क्या करो?

सरोज अभी से मन की मिठाई खाने से क्या फ़ायदा?

राजेश कुमार और, अभी कह रही थीं कि आज कोई न कोई ख़बर बम्बई से ज़रूर आयेगी। और अब वही बात मन की मिठाई हो गई?

सरोज मैं तो यों ही कह रही थी।

राजेश कुमार मुझसे बातें आप यों ही किया करती हैं? कहाँ स्त्री पति को हमेशा बढ़ावा देती है? आप उसकी आशा को मन की मिठाई कहती हैं?

सरोज आप तो बात न जाने किस अर्थ में ले लेते हैं! मैं कह रही थी कि लाटरी मिल जाने के बाद सोचना अच्छा होगा कि क्या किया जाय। अभी से क्या कहा जा सकता है?

राजेश कुमार जी, यदि पहले से सोच न रक्खा जाय तो रुपया ऐसे उड़ता है जैसे कन्ट्रोल का गेहूँ। पता नहीं चलता, कहाँ ग़ायब हो गया।

सरोज अच्छी बात है, पहले से सब स्कीमें बना लीजिये।

राजेश कुमार चलो, अब मुझे कोई स्कीम नहीं बनानी। दिल यों ही खट्टा हो गया।

सरोज अरे, बस, आप तो यों ही बिगड़ जाते हैं। कुछ हल्की बात की कि आप भारी बन गए। अच्छा, जाने दीजिये। पहले यह बतलाइये कि लाटरी है कुल कितने की। तब बतलाऊँगी कि उसके रुपये से क्या करूँगी।

राजेश कुमार (**उपेक्षा से**) मुझे कुछ याद नहीं।

सरोज देखिये, आप बुरा मान गए। कहिये, तो माफ़ी माँग लूँ। अब तो बतला दीजिये। शायद पहला इनाम पाँच लाख का है। है न?

राजेश कुमार (**उसी उपेक्षा से**) होगा।

सरोज अभी तक आप बुरा माने ही हुए हैं! मैं ख़ुद ही उसका नोटिस न देख लूँगी? (**उठ कर आलमारी के ऊपरी शैल्फ़ से एक**

क़ाग़ज़ निकालती है। उसे लेकर राजेश के समीप पहुँचते हुए) देखिये, यही तो है।

राजेश कुमार (**हँसकर**) अरे, यह तो पोचा की तरकारियों का कैटलाग है। तुम भी अजीब हो!

सरोज (**उसे फेंक कर**) तो मैं क्या करूँ? उसी जगह तो रक्खा था आपने लाटरी का काग़ज़। (**झुँझला कर तख़्त पर बैठ जाती है।**)

राजेश कुमार (**हँसते हुए**) तो कैटलाग फेंक क्यों दिया? अच्छा, मेरी ग़ल्ती सही। जाने दो लाटरी के काग़ज़ को। मुझे तो सारे इनाम ज़बानी याद हैं। सुनो, पहला इनाम तो पाँच लाख का है, दूसरा ढाई लाख का, तीसरा एक लाख का। फ़िर पचास हज़ार के चार इनाम। इसी तर छोटे-बड़े पैंतीस इनाम हैं। कुल दस लाख की लाटरी है।

सरोज तब तो काफ़ी बड़ी है।

राजेश कुामर मान लो, बीस-पच्चीस हजार का छोटा इनाम ही तुम्हें मिले, तो क्या करो?

सरोज सब से पहले तो मन्दिर में उत्सव करना चाहिये। मैंने मनौती जो......।

राजेश कुमार (**बीच ही में**) ऊँ हूँ, ले बैठी नाइनटीन्थ सैनचुरी की बात! जो कुछ अच्छा-बुरा होता है, वह तुम्हारे भगवान् की कृपा से ही तो होता है! खैर, मान लो, तुमने भगवान् का उत्सव ही मनाया, तो कितना ख़र्च होगा? ज़्यादा से ज़्यादा सौ, डेढ़ सौ, दो सौ...बस।

सरोज (**तीव्रता से**) देखिए, आप भगवान् का अपमान न कीजिये।

राजेश कुमार अच्छा बाबा, पाँच सौ सही! बस? अब तो अपमान नहीं हुआ? लेकिन लाटरी होगी पचीस हज़ार की! बाक़ी रुपया कहाँ जायगा? पचीस हज़ार कुछ कम रक़म नहीं होती।

सरोज जी, यह बात मैं नहीं जानती थी!

राजेश कुमार (**मुस्करा कर**) अच्छा, अब बुरा मानने की आपकी बारी है !

सरोज (**अन्यमनस्कता से**) बुरा मानने का मेरा हक़ ही क्या है ? क्या स्त्री भी पति से बुरा मान सकती है ? उसकी हैसियत ही क्या है ?

राजेश कुमार लो, उठा लाईं मनूसिमृति ! छोड़ो इन बातों को। मुझसे पूछो, मैं क्या करूँगा। बतलाऊँ ? सबसे पहले तो दूँगा दोस्तों को एक गहरी पार्टी ! बधाई देने आयेंगे वे लोग, तो तुम्हारे हज़बैण्ड की शान इसी में है कि वह एक ग्रैंड पार्टी दे। दूँगा। बहुत दिनों से कोई पार्टी दी भी नहीं है। इसके बाद वह सामने वाला मकान जो बिकाऊ है न ? वह मारबल हाउस ? वह ख़रीदूँगा। फिर उसके चारों तरफ फूलों और तरकारियों का एक बढ़िया बाग़ लगाऊँगा...।

सरोज (**बीच ही में**) अच्छा, इसीलिए आपने पोचा की तरकारियों का कैटलाग मँगा रक्खा है।

राजेश कुमार तो इसमें बुराई क्या है ? ऐसा बढ़िया बाग़ लगाऊँगा कि साल भर मौसम और गैर मौसम की तरकारियाँ मुफ़्त खाओ और चाहो तो बाज़ार में बिकवाओ।

सरोज (**रुखता से**) मुझे कुँजड़े की दूकान नहीं सजानी है।

राजेश कुमार लो, तरकारी बिकवाने में मैं कुँजड़ा बन गया। अच्छी बात है, मत बिकवाना। घर की तरकारियाँ तो खाने दोगी ?

सरोज अच्छी बात है। फिर बाग़ लगाने के बाद...।

राजेश कुमार इसके बाद (**हँस कर**) कहीं तुम मुझे शेख़चिल्ली न कहने लगो। लेकिन मैं सब सही बातें कह रहा हूँ...इसके बाद...एक अच्छी-सी मोटर ख़रीदूँगा। (**सहसा**) हाँ, तुम्हें मोटर का कौन-सा मॉडल पसन्द है ?

सरोज आपकी तरकारियों के कैटलाग की तरह मेरे पास कोई कैटलाग तो है नहीं ?

राजेश कुमार अरे, इतनी बार मोटरों पर बैठ चुकी हो, तुम्हें कोई मॉडल ही

पसन्द नहीं ? स्टूडीबेकर, शेव्ह, फ़ोर्ड, बियूक, हडसन, हिन्दुस्तान टैन, मारिस, आस्टिन।

सरोज — आप तो बिलकुल मोटर-डीलर बन गए। सारी मोटरें आपके दिमाग़ में दौड़ रही हैं।

राजेश कुमार — मोटरें क्या दौड़ रही हैं, ख़यालात दौड़ रहे हैं।

सरोज — (**मुस्करा कर**) और अभी तक लाटरी का नतीजा नहीं निकला।

राजेश कुमार — नहीं निकला तो निकल आयेगा (**एकाएक कौतुक से आँखें फाड़कर प्रसन्नता से**) या कहो तो मैं ही निकाल लूँ। निकालूँ ? लो निकालता हूँ। (**पाकेट से मुट्ठी में रुपये निकाल कर एक रुपया चुनते हुए**) देखो, इस, रुपये को उछाल कर अभी जान सकता हूँ कि लाटरी मिलेगी या नहीं। बोलो, क्या लेती हो। हैड या टेल ? राजा या रुपया ! इस तरफ़ राजा की तस्वीर है, उस तरफ़ एक रुपया लिखा है।

सरोज — रुपया उछालने से भविष्य की बात मालूम हो जायगी ?

राजेश कुमार — (**दृढ़ता से**) निश्चय। तार बाद में आयेगा, यह रुपया पहले बतला देगा कि लाटरी मिल गई। अच्छा, क्या लेती हो, राजा या रुपया ? जैसे ही मै रुपया ऊपर उछालूँ, वैसे ही राजा या रुपया में से अपनी पसन्द का शब्द कह देना। देखो, यह ऊपर गया वन्...टू...थ्री ई।

(**राजेश रुपया 'टन' शब्द से ऊपर उछालता है और सरोज बोल उठती है 'राजा, राजा, हैड'। राजेश रुपया झेलने में चूक जाता है और रुपया फूल-दान में गिरता है। वह झुक कर रुपया खोजने लगता है।**)

राजेश कुमार — हाथ ही में नहीं आया रुपया, कहाँ गया ? (**नीचे खोजते हैं, फिर फूलदान की ओर बढ़ कर**) अगर हैड सामने है तो समझो लाटरी मिल जायगी। लेकिन रुपया गया कहाँ ! (**गहरी दृष्टि से खोजते हैं, एकाएक चौंककर**) वाह रे रुपये !

सरोज (उत्सुकता से) क्यों, क्या हुआ ?

राजेश कुमार (झुँझला कर) कम्बख़्त रुपया गिरा भी तो गुलदस्ते की पत्तियों में सीधा उलझा हुआ है, न इस ओर, न उस ओर।

सरोज तो इसका मतलब क्या हुआ ? दोनों में से कुछ भी नहीं।

राजेश कुमार (कंधे उचकाकर) मैं क्या बतलाऊँ ? रुपये महाराज के सीधे विराजमान होने से तो कुछ तस्फ़िया नहीं हुआ ! लाओ, फिर से उछालूँ।

सरोज एक ही समय में बार-बार सगुन निकालने से वह झूठा पड़ जाता है।

राजेश कुमार झूठा क्यों पड़ेगा ? अबकी बार बिलकुल सच निकलेगा। अलग उछालूँगा, जिससे वह फूलदान या और किसी चीज़ में न गिरे। यह रुपया कम्बख़्त मुझी से मज़ाक करता है। जैसे जानदार है। जानबूझ कर मुझे चिढ़ाता है।

सरोज चिढ़ाएगा क्यों ? लेकिन जिस तरह रुपया गिरा, उससे तो जान पड़ता है कि लाटरी शायद निकले ही नहीं ?

राजेश कुमार (मुँह बना कर) वाह, ऐसा भी कहीं हो सकता है ? दो महीने पहले एनाउंस हो चुका है कि लाटरी १५ दिसम्बर को निकाली जायगी। कल तो शायद वह निकल भी चुकी होगी। तार आ रहा होगा।

सरोज ईश्वर जाने !

राजेश कुमार ईश्वर क्या जाने, मैं जानता हूँ ! अच्छा तो अबकी बार इसे ठीक उछालूँगा। समझ कर बोलना मैं इधर अलग कोने में उछालता हूँ जिससे कहीं उलझ न सके। (कोने की ओर बढ़ते हुए) बोलो हैड या टेल, राजा या रुपया ? यह रुपया उछला वन्... टू...।

(थ्री कहने के पूर्व ही बाहर से आवाज़ आती है।)

आवाज़ तार ले जाइए, साहब !

सरोज (चौंक कर चीखते हुए) ता...र !

राजेश कुमार (प्रसन्नता मिली घबराहट से) तार···र ?

आवाज़ आपका तार है, साहब ?

राजेश कुमार (टूटते स्वरों में) मिल ··गई···लाटरी !

(दरवाज़े की ओर शीघ्रता से जाते हैं।)

सरोज (उल्लास से) मिल गई ! मिल गई !

(दरवाज़े की ओर आतुरता से बढ़ जाती है।)

राजेश कुमार (तार लेकर फौरन अन्दर आते हुए) आख़िर आ ही गया तार (काँपते हुए हाथों में लिफ़ाफ़ा फाड़ते हुए) बहुत इन्तज़ार कराया कम्बख़्त ने ! गुड हैवेंस !

आवाज़ साहब ! दस्तख़त तो कर दीजिए।

राजेश कुमार (लिफ़ाफ़ा फाड़ते हुए) क्या ?

आवाज़ दस्तख़त, साहब !

राजेश कुमार (उतावली से) सरोज़ ! तुम कर दो।

सरोज लाओ। (दरवाज़े की ओर बढ़ जाती है। तार का काग़ज़ हाथ में लेकर) क्या नंबर है ?

आवाज़ सतासी।

सरोज (देखते हुए) कहाँ है सतासी ? यह है !

(शीघ्रता से दस्तख़त कर काग़ज़ तारवाले को देती है। तार वाला 'सलाम, साहब' बोलता है लेकिन किसी को सलाम लेने की फ़ुर्सत नहीं है। शीघ्रता से सरोज राजेश के समीप आ जाती है। तार का काग़ज़ लिफ़ाफ़े में चिपक जाने के कारण निकालने में उलझन होती है। राजेश के हाथ काँप रहे हैं। आख़िर वे तार निकाल कर खोलते हैं।)

सरोज (उत्साह से) कितने की मिली लाटरी ?

(राजेश तार पढ़ते ही रहते हैं।)

सरोज बतलाइए न, पाँच लाख की या ढाई लाख की ?

(राजेश दाँत पीस कर क्रुद्धता से तार ज़मीन पर फेंक कर उसे पैरों से कुचल देते हैं।)

सरोज　　(**घबराहट से**) अरे यह क्या ? यह क्या ?
(राजेश दाँत पीसता हुआ कुर्सी पर बैठ जाता है।)

सरोज　　क्या लाटरी नहीं मिली ? बात क्या है ?

राजेश कुमार　(**गुस्से से साँस छोड़ता हुआ**) नानसेन्स !

सरोज　　(**कुतूहल मिश्रित दुःख से**) नानसेन्स, क्या लिखा है तार में ? मैं तो अँग्रेजी जानती नहीं, नहीं तो मैं ही पढ़ लेती ! (**तार उठाती है।**)

राजेश कुमार　(**जैसे सरोज की बात न सुनते हुए, अपने ही आप**) अच्छी क़िस्मत है ! खूब मौक़ा देखा !

सरोज　　आख़िर कुछ बतलाइएगा, कैसा तार है ?

राजेश कुमार　(**तीव्रता से**) मेरा सर है और क्या !

सरोज　　(**आश्चर्य से**) मेरा सर ?

राजेश कुमार　और क्या ? मिस्टर मुसद्दीलाल का तार है कि उनका ट्रान्सफ़र हो गया।

सरोज　　ट्रान्सफर ? कहाँ ?

राजेश कुमार　जहन्नुम, और कहाँ ! इसी मौक़े पर तार भेजना था ! यहाँ मैं बैठा हूँ दूसरी आशा में, आप तार भेज रहे हैं कि ट्रान्सफ़र हो गया। अच्छा हो गया। दुनियाँ से ट्रान्सफ़र हो जाता तो और अच्छा था !

सरोज　　(**पश्चात्ताप के स्वर में**) मैं तो समझी थी कि लाटरी मिल गई !

राजेश कुमार　(**झुँझलाहट से**) मिल जाने में शक क्या था ? अगर ये महाशय मुसद्दीलाल न होते या इनका ट्रान्सफ़र न होता। ट्रान्स-फ़र हो गया ! अच्छा हो गया ! मैं क्या करूँ ? ख़ुद मर जाऊँ या मार डालूँ ? जनाब आज ही तार देने बैठे हैं। कल दे दिया होता या चार दिन बाद दे देते ! आज ही उनकी क्या लङ्का जली जाती थी जो ख़ामख़ा मेरी ख़ुशी में आग लगा दी !

जनाब टेलीग्राम दे रहे हैं कि मेरा ट्रान्सफ़र हो गया ! सर नहीं फूट गया ! 'अइ विश दैट शुड हैव बीन' (**कुछ ठहर कर**) मै जानता हूँ, कम्बख़्त क़िस्मत ही मुझसे मज़ाक़ कर रही है ।

(बैठ कर हथेली पर सिर टेक लेते हैं ।)

सरोज (**सहानुभूति से**) सचमुच क्या कहा जाय ?

राजेश कुमार कुछ नहीं । मुझे इसी तरह रोते-झींकते जीना है । कभी भाग्य की आज़माइश करो, तो यार लोग बीच में अड़ङ्गा डाल देते हैं । कहीं ट्रान्सफ़र हो गया, कहीं यह हो गया, कहीं वह हो गया । दोस्त मुसीबत में मदद करते हैं, ये उल्टी मुसीबतें ढाते हैं । क़िस्मत उलट गई है, और क्या ?

सरोज चलिए जाने दीजिए ! कोई दूसरा तार आ जायगा ।

राजेश कुमार (**अशान्ति से**) ईश्वर न करे, कोई दूसरा तार आये ! आयेगा तो कोई साहब लिखेंगे कि उनका हार्टफ़ेल हो गया है ! सचमुच ही फ़ेल हो जाय तो अच्छा है !

सरोज ईश्वर न करे, कहीं ऐसा हो । आप तो छोटी-सी बात पर नाराज़ हो उठते हैं ।

राजेश कुमार (**तड़प कर**) यह छोटी बात है, सरोज ! यहाँ मेरी पाँच लाख की बाज़ी लगी हुई है । तुम्हारे लिए छोटी-सी बात है ! तुम क्या समझो इसे ?

सरोज (**शान्ति से**) अच्छी बात है । मैं कुछ नहीं समझती । लेकिन आपके दोस्त मिस्टर मुसद्दीलाल को क्या पता था कि उनका तार ऐसे वक़्त पहुँचेगा जब आप पाँच लाख का इंतज़ार कर रहे होंगे ? उनको तो पता भी न होगा कि आपने लाटरी का टिकट ख़रीदा है ?

राजेश कुमार (**तीव्रता से**) तो क्या मैं लाटरी के टिकट का डंका पीटता फिरूँ ? अख़बारों में छपा दूँ कि मैंने लाटरी का टिकट ख़रीदा है ? दोस्त लोग इस बात को नोट कर लें । अच्छी बात है । अब से यही करूँगा । डंका पीट कर लाटरी का टिकट ख़रीदूँगा ।

सरोज आप तो बहुत जल्दी . ...

राजेश कुमार सुनो, सरोज ! आज से मैं क़सम खाता हूँ कि रुपया किसी भूखे-प्यासे को दे दूँगा, लेकिन लाटरी का टिकट नहीं ख़रीदूँगा। कभी नहीं ख़रीदूँगा।

सरोज यह तो और भी अच्छा होगा। किसी भूखे-प्यासे का पेट भरेगा।

राजेश कुमार और क्या ? तुम भी तो यही चाहती हो कि मेरी हालत ऐसी ही भिखमंगे जैसी बनी रहे।

सरोज आपकी यह हालत भिखमंगे जैसी है ?

राजेश कुमार नहीं है, तो हो जायगी। आज नहीं कल। न जाने किसका मुँह देखकर उठा था।

सरोज ख़ैर, अब शान्त हो जाइये। काफ़ी देर हो गई है। (**घड़ी की ओर दृष्टि**) शाम हो चली है। आप थोड़ा नाश्ता कर लीजिये।

राजेश कुमार मुझे कुछ नहीं करना—नाश्ता-वाश्ता।

सरोज तो क्या लाटरी के पीछे आप खाना-पीना छोड़ देंगे ?

राजेश कुमार खाना-पीना क्या छोड़ दूँगा ? उसमें भी मेरे लिए ज़हर निकल आयेगा !

सरोज आप कैसी बातें करते हैं ? क्या मैं आपके खाने-पीने में ज़हर मिला दूँगी ?

राजेश कुमार मुसद्दीलाल ने तार में कौन ज़हर मिला दिया था लेकिन हो गया मेरे लिए।

सरोज (**अन्यमनस्कता से**) ठीक है, तो मैं अब कुछ बोलूँगी भी नहीं।

(**बाहर दरवाज़े पर आवाज़ होती है।**)

सरोज देखिये, कोई बाहर आया है ?

राजेश कुमार अब मैं किसी से नहीं मिलना चाहता।

सरोज मुमकिन है, कोई दूसरा तार वाला हो !

राजेश कुमार (**तीखे स्वर में**) तुम फिर जले पर नमक छिड़कती हो, सरोज ! क़िस्मत की तरह तुम भी मुझ से मज़ाक़ करती हो !

सरोज — मैं आपसे क्यों मज़ाक करूँगी ? आज तो मेरा बोलना भी मुश्किल हो रहा है !

(बाहर दरवाज़े पर फिर आवाज़ होती है ।)

राजेश कुमार — **(झुँझला कर)** आज चपरासी भी अफ़िस से नहीं आया जो जाकर देखे कि बाहर कौन है ? **(ज़ोर से)** कौन है ?

आवाज़ — मैं हूँ, रमेशचन्द्र ।

राजेशकुमार — अच्छा, क्लर्क ! **(सरोज से)** सरोज ! रमेश आया है । **(सरोज भीतर चली जाती है ।)**

(रमेशचन्द्र का प्रवेश । वह दुबला-पतला युवक है । आयु २६ वर्ष के लगभग । ख़ाकी रङ्ग का बन्द गले का कोट और सफ़ेद पैजामा पहने हुए है । सिर पर किश्तीनुमा टोपी, पैर में चप्पल । उसके हाथ में कुछ काग़ज़ और लिफाफ़े हैं । वह आकर राजेश को नमस्कार करता है ।)

राजेश कुमार — क्या बात है, रमेश ?

रमेश — जी, आज आप अफ़िस नहीं पहुँच सके । यह आपकी डाक है । मैंने सोचा, घर जाते समय आपकी यह डाक पहुँचा दूँ । मुमकिन है, कोई ज़रूरी चिट्ठी हो !

राजेश कुमार — ठीक किया । रख दो मेज़ पर । **(रमेश डाक मेज़ पर रखता है ।)** सब पेपर्स डिसपैच हो गए ?

रमेश — **(नम्रता से)** जी ।

राजेश कुमार — और कोई ज़रूरी बात ?

रमेश — जी नहीं !

राजेश कुमार — तो तुम जा सकते हो ।

रमेश — जी **(नमस्कार करके प्रस्थान)**

(राजेश कुछ क्षणों तक शून्य में देखते रहते हैं । फिर गहरी साँस लेकर डाक हाथ में लेते हैं ।

राजेश कुमार — **(डाक देखते हुए)** सरोज !

सरोज — **(नेपथ्य से)** कहिए ।

राजेश कुमार तुम्हारी एक चिट्ठी है।

सरोज (**आकर**) कहाँ की है?

राजेश कुमार मैं तो तुम्हारे पत्र कभी खोलता नहीं। होगी तुम्हारी किसी सहेली की!

सरोज क्या पोस्टमैन आया था?

राजेश कुमार नहीं, रमेश डाक दे गया है।

(**सरोज पत्र लेती है। डाक के पत्र देखते हुए एकाएक राजेश चौंक उठता है।**)

राजेश कुमार (**विह्वलता से**) अरे, यह पत्र तो बम्बई से आया है। लाटरी-विभाग की ओर से।

सरोज (**प्रसन्नता से**) लाटरी-विभाग की ओर से!

राजेश कुमार हाँ, मुहर तो वहीं की है—आल इण्डिया लाटरी ब्यूरो। देखो, इस कोने में सील है।

सरोज (**आतुरता से**) खोलिए, क्या लिखा हुआ है? क्या कोई लाटरी?

राजेश कुमार (**विकल और उद्‌भ्रान्त होकर टूटे स्वरों में**) लाटरी...एँ...... लाटरी तो नहीं...सकती...एँ...लाटरी! (**पत्र खोलने लगता है। हाथ काँपते हैं।**)

सरोज क्यों? कोई छोटी-मोटी लाटरी तो हो सकती है! आपही तो कहते थे कि बड़ी लाटरी की सूचना तार से दी जायगी और छोटी लाटरी की चिट्ठी से!

राजेश कुमार (**अस्फुट शब्दों में**) हाँ...छोटी लाटरी...की सूचना...चिट्ठी से... तो लो फिर...तुम्हीं खोलो। न जाने...मेरा...दिल कैसा हो रहा है...कहीं कुछ...न निकला ..तो एँ, तुम्हीं खोलो...

सरोज लाइए...लाइए मैं ही खोलूँ। (**राजेश के हाथों से पत्र ले लेती है।**)

राजेश कुमार हाँ, मेरा दिल...न जाने...कैसा हो...रहा है! जल्दी खोलो... ज़रा जोर से पढ़ना।

(**सरोज शीघ्रता से पत्र खोल कर पढ़ती है। राजेश स्तब्ध होकर सुनता है।**)

सरोज यह रहा पत्र! हिन्दी ही में है :—

महानुभाव,

आप जानते हैं कि साम्प्रदायिक आग से पंजाब झुलस गया है। वहाँ करोड़ों की संपत्ति का विनाश हो गया है। जनता त्राहि-त्राहि कर उठी है। जिनके पास लाखों की सम्पत्ति थी वे दानों-दानों के मुहताज हो गए हैं। उनके पास न खाने को अन्न है और न शरीर ढकने को वस्त्र। संसार के इतिहास में इतनी भयानक दुर्घटना कभी नहीं घटी। हमारे बोर्ड आव् डायरेक्टर्स ने यह निश्चय किया है कि लाटरी के लिये जितना रुपया एकत्रित हुआ है वह पंजाब के शरणार्थियों की सहायता के लिए भारत सरकार की सेवा में भेज दिया जाय। यदि आप इस निश्चय से सहमत नहीं हैं तो कृपया लौटती डाक से हमें सूचित करें, आपके टिकट का रुपया आपकी सेवा में तुरन्त भेज दिया जायगा। आशा है, आप देश के इस संकट-काल में सहायक होंगे। आपको इस सम्बन्ध में जो असुविधा हुई हो, उसके लिए हम सविनय क्षमा चाहते हैं।

भवदीय,
जगदीशचन्द्र जौहरी
मैनेजिंग डायरेक्टर,
आल इंडिया लाटरी ब्यूरो, बम्बई १.

(**कुछ क्षण तक दोनों मौन रहते हैं।**)

सरोज (**ठण्डी साँस लेकर**) आख़ीर में यह नतीजा निकला!

राजेश कुमार (**विमूढ़ की भाँति**) हूँ!

सरोज मैं तो तारीफ़ करूँगी लाटरी वालों की कि अच्छे काम में रुपया लगाया है—शरणार्थियों की रक्षा में।

राजेश कुमार ठीक है। (**ऊपर की ओर अन्यमनस्क दृष्टि**) उछालने पर कम्बख्त रुपया भी पत्तियों में सीधा उलझ कर रह गया था। न हैड, न टेल। उसने पहले ही डंका पीट दिया था कि लाटरी नहीं मिलने की।

सरोज तो आपको लाटरी न मिलने का कोई दुःख तो नहीं है?

राजेश कुमार क्या दुःख होगा? मुझे नहीं मिली तो और किसी को भी तो नहीं मिली!

सरोज हाँ, यही सन्तोष क्या कम है? फिर शरणार्थियों की सेवा इस समय हमारा पहला कर्तव्य है।

राजेश कुमार अजीब बात तो यह है कि देश पर विपत्ति भी इसी समय आई। ख़ूब मौक़ा देखा।

सरोज यह हमारे-आपके भाग्य की बात नहीं, सारे देश के भाग्य की बात है। इसके लिए कोई क्या करे?

राजेश कुमार हाँ, यही कहना पड़ता है।

सरोज तब तो मेरी राय है कि लाटरी वालों को लिख दिया जाय कि हमारे टिकट का रुपया वापस भेजने की ज़रूरत नहीं है। उसे शरणार्थियों की रक्षा में लगा दिया जाय।

राजेश कुमार (**किंचित् मुस्कुरा कर**) ठीक है, पाँच लाख रुपये न मिले, पाँच लाख आशीर्वाद मिलेंगे!

सरोज (**हँस कर**) तो फिर आपको लाटरी का पहला इनाम मिल कर ही रहा!

राजेश कुमार और क्या? पाँच लाख...! पूरे पाँच लाख...

सरोज (**हँस कर वाक्य पूरा करते हुए प्रत्येक अक्षर पर ज़ोर देकर।**)

आ...शी...र्वा.. द...

(परदा गिरता है।)

विकृति
(Satire)

१. इलेक्शन

२. सही रास्ता

इलेक्शन

पात्र-परिचय

१—**कैलास**—होस्टल का एक विद्यार्थी
२—**नरेन्द्र**—कैलास का मित्र
३—**सत्यवीर**—प्रेम प्रकाश का समर्थक
४—**प्रेम प्रकाश**—सभापति पद के उम्मीदवार
५—**मुहम्मद मुनीर**—सभापति पद के उम्मीदवार
६—**हरे कृष्ण**—सभापति पद के उम्मीदवार
७—**मलकानी**—सभापति पद के उम्मीदवार
८—**अनादि बैनर्जी**—मलकानी का समर्थक
—होस्टल के कुछ अन्य विद्यार्थी

इलेक्शन

(इलेक्शन के दिन हैं। होस्टल का एक कमरा। कैलाश कपड़े पहनता हुआ सिनेमा का एक गीत गुनगुना रहा है।

कैलास — ओ, बचपन के दिन भुला न देना। आज हँसे, कल रुला न देना...रुला न देना। बचपन के दिन...अरे भाई नरेन्द्र! तैयार हो गये! (**कुछ उत्तर न पाकर फिर गुनगुनाता हुआ**) आज हँसे, कल रुला न देना रुला न...अमाँ यार! जब तुमसे चलने को कहो तो बस...अपने कमरे में ऐसे डूब जाते हो गोया कमरा न हुआ, किसी का दिल हुआ।

नरेन्द्र — (**दूसरे कमरे से**) अरे, भाई! कमरे की तरह बड़ा किसी का दिल भी तो हो। तिल बराबर दिल तो कहीं देखने को मिलता नहीं, इन्हें कमरे जैसा दिल हर रास्ते पर पड़ा मिल जाता है?

कैलास — देखने वाला चाहिये, दोस्त...(**ठंडी साँस लेकर**) ह ह ह ह! ख़ैर जाने दो, तो अभी तैयार नहीं हुए!

नरेन्द्र — तुम्हारा गाना तो ख़त्म हो ले।

कैलास — सो तो कभी ख़तम होगा नहीं। बचपन के दिन कभी भूले जा. सकते हैं? (**ठंडी साँस लेकर**) बचपन के दिन भुला न देना!

नरेन्द्र — बहुत ठंडी साँसें न लो, कैलास! कोई देखेगा तो कहेगा कि तुम्हारा गला क्या है रेफिरीजिरेटर है, जिसमें से हर एक चीज़ ठंडी निकलती है। पास पड़ा हुआ कहीं दिल भी ठंडा न हो जाय!

कैलास — इस इलेक्शन के मारे लोग उसे ठंडा न होने देंगे। दोस्त! रात-दिन इलेक्शन की दौड़-धूप! तभी तो कह रहा हूँ कि भाग

चलो, नहीं तो ऐसी बुरी तरह पकड़े जाओगे कि तीन घंटे में कोई इण्टरवल भी नहीं मिलेगा।

नरेन्द्र तो इलेक्शन की दौड़-धूप न रही, कोई पिक्चर हुआ जिसमें आप इण्टरवल चाहते हैं। अरे यार...अरे, मेरा रुमाल किधर गया...

कैलास रुमाल...रुमाल की क्या हस्ती है ! हमेशा दिल के पास पाकेट में किसी दास्तान की तरह छिपा रहता है और दिल की धड़कनें गिना करता है।

नरेन्द्र आज तो बड़े मूड में हो। (**बाहर निकल कर**) अच्छा, तो ये ठाठ हैं तुम्हारे कैलास ! यह सिल्क का सूट और उससे मैच करती हुई यह रेशमी टाई !

कैलास रेशमी टाई तो रामकुमार वर्मा की है।

नरेन्द्र इस वक्त तो तुम्हारे गले में है।

कैलास तो इससे क्या हुआ।

नरेन्द्र बहुत कुछ। आज उस पार्टी में तुम्हीं रहोगे हीरो !

कैलास अच्छा ?

नरेन्द्र और क्या ! वे बेवकूफ़ हैं जो कहते हैं कि क्लास में तुम्हें ज़ीरो मिलता है। मिला करे। यहाँ तो ज़ीरो के चचा हो तुम...हीरो !

कैलास और तुम नीरो बनकर गीत गाना जब मेरी हसरतों का रोम जले।

नरेन्द्र गाना तो गा रहे हो तुम ! लेकिन हाँ, यह हसरतों की बात कैसी !

कैलास देर लगाते जाओगे तुम मेरी हसरतों की बात पूछोगे !

नरेन्द्र क्यों न पूछूँ ! आखिर तुम्हारा दोस्त हूँ ! तुम्हारे ही कहने से तुम्हारे साथ पार्टी में जा रहा हूँ।

कैलास वैसे तुम जानते ही नहीं !

नरेन्द्र सचमुच मैं नहीं जानता, डियर !

कैलास बात यह है कि आज सचमुच ही मेरा इलेक्शन होने जा रहा है।

नरेन्द्र — इलेक्शन ! वाह दोस्त ! लेकिन तुम्हारा नामीनेश न तो होस्टल के नोटिस बोर्ड पर था नहीं ?

कैलास — तुम भी रावण के ग्यारहवें सिर हो। यार ! होस्टल का इलेक्शन नहीं।

नरेन्द्र — अच्छा ! तो किस जगह का ? किस बात का ?

कैलास — अक़्ल तो तुमने अपनी रुमाल की तरह खो दी है, तुम क्या समझो ! तुम केशरीनारायण को जानते हो ?

नरेन्द्र — हाँ, हाँ, अपने शहर के वकील।

कैलास — तो उन्होंने मुझे आज मिलने के लिए चाय पर बुलाया है।

नरेन्द्र — अच्छा ! किस लिये ?

कैलास — वह उनकी लड़की सरोजिनी !......

नरेन्द्र — (हँसते हुए) अच्छा ! यह बात है। तो इस जगह तुम्हारा इलेक्शन रहा ! किस-किस के वोट पड़ेंगे ?

कैलास — घर भर के। और अपनी तारीफ़ कराने के लिये मैं तुम्हे ले चल रहा हूँ।

नरेन्द्र — अच्छा ! तभी यह झूम-झूम कर गाना गा रहे थे "आज हँसे कल रुला न देना।" कोई क्यों रुलायेगा दोस्त ! जब यह रेशमी सूट... यह रेशमी टाई...गले में लगा रक्खी है। अब समझ में आया कि यह मामूली इलेक्शन नहीं है ! तभी तो मैं कहूँ कि होस्टल का इलेक्शन छोड़ के ये जा कहाँ रहे हैं। अच्छा तो जनाब ! अपनी तारीफ़ कराने की मेरी फीस आप क्या देंगे ?

कैलास — मौक़ा मिलने पर तुम्हारा भी इलेक्शन करा देंगे ?

नरेन्द्र — मेरे इलेक्शन की जरूरत नहीं है। आप ही अपना एलेक्शन कराएँ।

(नेपथ्य में शोर होता है।)

एक स्वर — प्रेम प्रकाश को...

दूसा स्वर — वोट दो। **(यह दो-तीन बार दुहराया जाता है।)**

कैलास — यार ! जल्दी चलो, नहीं तो पकड़ जाओगे । सारा इलेक्शन धरा रह जायगा ।

नरेन्द्र — बहुत अच्छा । ज़रा रुमाल तो ले लूँ । ऐसी जगह चलना है जहाँ रुमाल निकाल कर बार-बार मुँह पोंछना जरूरी है । जी, तुम देखना रुमाल में कितना बढ़िया सेण्ट लगाता हूँ ।

कैलास — जहन्नुम में जाओ । लेकिन ज़रा ज़ल्दी करो ।

नरेन्द्र — अभी आया कमरे से ।

(शीघ्रता से प्रस्थान)

कैलास — यहाँ एक-एक मिनट भारी हो रहा है और इसे रूमाल की पड़ी है ।

(सत्यवीर का प्रवेश)

सत्यवीर — हलो, कैलास !

कैलास — **(स्वगत)** आ गये कम्बख़्त ।

सत्यवीर — हलो, कैलास ! कैलास !

(कैलास चुप है ।)

सत्यवीर — कैलास, भई बोलते क्यों नहीं ? क्या बात है ?

कैलास — कहिये ।

सत्यवीर — ज़रा एक मिनिट बात ।

कैलास — जी नहीं, मैं एक मिनिट भी बात नहीं कर सकता ।

सत्यवीर — अच्छा, न करें लेकिन अपने होस्टल के नेता श्री प्रेमप्रकाश जी आपसे मिलना चाहते हैं ।

कैलास — जी नहीं, मैं किसी से इस समय नहीं मिल सकता । मुझे एक जगह बहुत ज़रूरी काम से जाना है ।

सत्यवीर — सिर्फ़ एक मिनिट में कुछ हर्ज़ न होगा । देखिये, ये आ गये श्री प्रेमप्रकाश जी ।

(प्रेम प्रकाश का प्रवेश)

प्रेमप्रकाश — हलो कैलास, बस एक मिनिट ।

कैलास कहिये।

प्रेमप्रकाश भाई, सुनो! यह तो तुम जानते हो कि होस्टल इलेक्शन होने जा रहा है। मैं सभापति पद के लिए खड़ा हूँ, यह भी तुम जानते हो।

कैलास जी।

प्रेमप्रकाश तो फिर तुम्हारा वोट।

कैलास अभी मैं कुछ कह नहीं सकता!

प्रेमप्रकाश अच्छा, तो ये बात है! उस दिन मैंने जो स्पीच दी थी वह इस तरह भुला दी जायगी?

कैलास स्पीच सुनने के लिये होती है, अमल करने के लिए नहीं।

प्रेमप्रकाश अमल करने के लिए नहीं। तो क्या स्पीच मैंने यों ही दी थी?

कैलास जी। स्पीच देने का शौक होता है, फैशन होता है, लीडर होने का तकाज़ा होता है और...और दर्जनों बातें होती हैं, मैं क्या-क्या गिनाऊँ!

प्रेमप्रकाश देखिये, इलेक्शन होने जा रहे हैं। बहस की बातों को छोड़िये। मैं तो आपको अपना ही आदमी समझता हूँ।

कैलास यह आपकी मेहरबानी है लेकिन मुझे एक जरूरी काम से जाना है। समय बहुत कम है।

प्रेमप्रकाश शायद सिनेमा जाना है आपको।

कैलास जी। इलेक्शन के दिनों में सिनेमा देखा जाता है। आप अपने ही इलेक्शन को बहुत बड़ी चीज़ न समझें।

प्रेमप्रकाश जी नहीं। हरगिज़ नहीं समझता लेकिन आप अपनी पार्टी का प्रोग्राम देखें। कितना सुलझा हुआ है। होस्टल में सोशल सङ्घ का निर्माण, शक्ति प्राप्त करने का उद्देश्य, जिसके लिए आवश्यकता पड़ने पर होस्टल के नौकरों और खाना बनाने वाले पंडितों से हड़ताल भी कराई जा सकती है। टैनिस, क्रिकेट और वालीबाल की गेंदों पर कन्ट्रोल। लेकिन यह समझ लीजिये कि हमारा

संकेत यानी सिम्बल है हल। वह हल जिसकी नोक से राजरानी सीता की उत्पत्ति हुई थी।

कैलास लेकिन जनाब! इस समय आपका यह हल मेरे दिल पर चल रहा है।

प्रेमप्रकाश उससे आपके दिल में विचारों की अच्छी फ़सल पैदा होगी। लेकिन...आप शौक से जाइये। बस मुझे वोट देने का वचन भर दे दीजिये।

कैलास (**झुँझला कर**) वोट ही लेंगे, जान तो नहीं लेंगे। जाइये दूँगा आपको वोट!

(**नेपथ्य में फिर शोर होता है।**)

एक स्वर मुहम्मद मुनीर को।

दूसरा स्वर वोट दो (**दो तीन बार दुहराया जाता है।**)

कैलास यह दूसरी पार्टी रही।

प्रेमप्रकाश अरे, वही मुनीर है। अपना दोस्त। उससे भी दो बातें कर लीजियेगा। अच्छा, भाई कैलास! बहुत-बहुत धन्यवाद। आखिर-कार तुम अपने ही हो। लोग ख़ामख़ा मेरे मन में शक डाल रहे थे। थैंक्यू, गुडबाई। (**प्रस्थान**)

कैलास (**सोचते हुए**) टैनिस, क्रिकेट और वालीबाल की गेंदों पर कन्ट्रोल। सोशल सङ्घ का निर्माण। कोई अपने काम पर न जाने पाये, यह सोशल सङ्घ है। (**पुकार कर**) नरेन्द्र! अभी तक तुम्हारा रुमाल नहीं मिला।

नरेन्द्र (**दूसरे कमरे से**) रुमाल तो मिल गया, सैंट खोज रहा हूँ।

(**मुहम्मद मुनीर का प्रवेश**)

मुनीर कैलास साहब, आदाब अर्ज़ है। यह बात क्या है। अजीब खोये से नज़र आ रहे हैं आप।

कैलास (**सम्हल कर**) जी! जी! नहीं तो, नहीं तो। कहिये।

मुनीर अगर दुश्मनों की तबियत नासाज़ हो तो कहिये फौरन ही दवा

हाज़िर करूँ। यह बात क्या है कि आप इस क़दर परेशान हों और अपने दोस्तों को खबर भी न करें!

कैलास जी नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। तबीयत ख़राब नहीं है। नहीं तो आपको इत्तला ज़रूर करता। और फिर अपने दोस्त मुनीर को?

मुनीर (हँसते हुए) ह ह ह, यह आपकी ऐन नवाज़िश है, बन्दा परवरी है। आप जैसा सच्चा दोस्त पाना हर किसी की क़िस्मत में नहीं है। मैं तो कहता हूँ कि सच्ची मोहब्बत की अगर सही मिसाल देखना चाहते हैं तो कैलास साहब को देखें। क्या तबियत पाई है आपने! क्या कहना है! (खाँस कर) हँ हँ, ज़रा सी बात कहनी थी, अगर आप सुनने के मूड में हों।

कैलास हाँ, हाँ, ज़रूर फ़रमाइये।

मुनीर बात ये है कि मैं तो इस इलेक्शन में खड़ा होना ही नहीं चाहता था मगर आप जैसे दानिशमन्द दोस्तों ने इस क़दर इसरार किया कि मैं लाचार हो गया। कहने लगे कि म्याँ मुनीर! अगर तुम प्रेसीडेंटी के लिये नहीं खड़े हुए तो हम लोग होस्टल छोड़ देंगे। अब आप ही ग़ौर फ़रमाएँ कि क्या मैं इतना गया-बीता हूँ कि महज़ अपनी ज़िद की वजह से दर्जनों दोस्तों को होस्टल से अलहदा करवाऊँ? लाचार खड़ा होना पड़ा! लेकिन यक़ीन मानिये, कैलास साहब! कि मैं आप लोगों के पैरों से ही खड़ा हुआ हूँ। अगर आप लोगों का सहारा हट जाय तो मुनीर की क्या हस्ती कि एक लमहे के लिये वह चुनाव में खड़ा हो सके। जी। यह तो बस, आपके हुक्म की तामील कर रहा हूँ।

कैलास यह आपकी मेहरबानी है।

मुनीर तो बस, अब आप लोगों ने जैसे मुझे खड़ा किया है, वैसे ही अपना अक़बाल बुलन्द रक्खें। अपना वोट अता फ़रमावें। जी! और जनाब! आपकी डेमोक्रेसी में वोट उस जल्वे का नाम है जिससे इन्सान फ़रिश्ता बन जाता है।

कैलास सही है। हर इलेक्शन में मैं सोचता हूँ कि इंसान फ़रिश्ता बन जाता है।

मुनीर बजा इरशाद है और जनाब ! अगर वोट से इंसान फ़रिश्ता बन जाता है तो वोट में यह कमाल भी है कि फ़रिश्ता को इंसान बना दे। आप भी चाहते होंगे कि हमारे होस्टल के सब लड़के इंसान बन जायँ। ऐसे इंसान कि फ़रिश्ते भी उनके सामने शर्म से सिर झुकावें।

कैलास आजकल इंसान बनना ही तो मुश्किल है।

मुनीर वल्लाह ! आप बहुत सही फ़रमाते हैं और इंसान बनना ही तो सारी दुनिया को रूस ने सिखलाया है। यह क्या बात, जनाब ! कि आप तो शौक़ से ऐशो-इशरत से अपने दिन गुज़ारें और बेचारे किसानों और मज़दूरों को खाना भी मुयस्सर न हो ! दुनिया की सारी बरकत उन्हीं के हथौड़े और हँसिये से है।

कैलास आपका कहना दुरुस्त है।

मुनीर और कैलास साहब ! आपकी तारीफ़ ऐसी सुनी गई है कि दुबारा आपको याद दिलाने की ज़रुरत नहीं पड़ती।

कैलास क़तई नहीं।

मुनीर तो फिर बहुत-बहुत शुक्रिया। माफ़ कीजिये, आपका बहुत वक्त ज़ाया किया।

(नेपथ्य में फिर शोर होता है।)

एक स्वर हरे कृष्ण को······

दूसरा स्वर वोट दो (**दो-तीन बार दुहराया जाता है।**)

मुनीर देखिये, वो हरे किशन साहब आ रहे हैं। अच्छा, तो इजाज़त दीजिये···आदाब अर्ज़ है। (**प्रस्थान**)

कैलास आदाब अर्ज़ है।···इन लोगों ने इस क़दर घेर रक्खा है कि अगर कहीं से निकल भागना चाहूँ, तो भी नहीं निकल सकता। मैं पहले ही कहता था कि···

(हरे कृष्ण का प्रवेश)

हरे कृष्ण (उमंग से हँसते हुए) नमस्ते, श्री कैलास जी !

कैलास (रूखेपन से) नमस्ते ! कहिये वोट चाहिये ?

हरे कृष्ण ज्ञात होता है कि वह आपने अपने दल के लिए पहले से ही सुरक्षित कर लिया है।

कैलास जी हाँ, सुरक्षित कर लिया है। आप जाइये, मुझे ग़ुस्सा आ रहा है।

हरे कृष्ण ठीक है। जब तक पुरुष को क्रोध नहीं आता तब तक वह जीवन की विपत्तियों को पराजित ही नहीं कर सकता। अन्याय को रोकने के लिए क्रोध अत्यन्त आवश्यक है।

कैलास अच्छा, तो आप इस समय जाइये। मैं कह रहा हूँ।

हरे कृष्ण देखिये, मैं केवल आपको स्मरण दिलाने आया हूँ कि आप भारत के नागरिक हैं, अखण्ड भारत के नागरिक हैं। अपने पूर्ण उत्तरदायित्व से आपको कार्य करना है।

कैलास जी हाँ, करना है।

हरे कृष्ण तो आप समझ लीजिये कि अपने दल का कार्यक्रम कितना स्पष्ट है ! होस्टल में हिन्दू संघ का निर्माण होना आवश्यक है। उसमें अन्य जाति के व्यक्ति भी सम्मिलित हो सकते हैं। हम लोगों का उद्देश्य है, शक्ति प्राप्त करना, हम लोगों की नीति है, समता स्थापित करना, हम लोगों का सिद्धांत है, अहिंसा, किन्तु शक्ति प्राप्त करने के लिए हमें बल प्रयोग करने का भी अधिकार होगा। होस्टल की किसी वस्तु पर कन्ट्रोल नहीं होगा। आप मेरा नाम स्मरण रक्खें, हरे कृष्ण ! यदि पूरा नाम लेने में आपको कष्ट हो तो आप केवल हरे ही कह सकते हैं।

कैलास अच्छा, तो अब आप परे हों और अपना भाषण समाप्त करें। मुझे स्वच्छन्दता दें कि मैं अपने समय का उपयोग करूँ।

हरे कृष्ण अवश्य। आप हिन्दू हैं। मैं इसी विश्वास से जाऊँगा कि आपको अपने हिन्दुत्व का गर्व है।

(नेपथ्य में फिर शोर)

एक स्वर मलकानी को...

दूसरा स्वर वोट दो। (**दो-तीन बार दुहराया जाता है।**)

कैलास अब तो मुझे आत्म-हत्या करनी पड़ेगी।

हरे कृष्ण अवश्य, लेकिन वोट देने के बाद। मुझे प्रसन्नता है कि अन्य दलों का कोलाहल सुन कर आपको इतनी ग्लानि हो रही है कि आप आत्म-हत्या की बात सोचें। किन्तु अपना कर्त्तव्य करने के बाद। अपने दल का प्रतीक है स्वस्तिका !! स्वस्तिका !! स्वस्तिका !!!

(**अनादि बैनर्जी का प्रवेश**)

बैनर्जी (**शीघ्रता से**) ओहो ! कैलाश बाबू। हामरा कोथा नाहीं शुनेगा की ? एइ होरे क्रिष्न तो एइ रोकम शाबशे गाल्प कोरता है।

हरे कृष्ण देखिये, अनादि बैनर्जी महाशय ! यदि आप इस प्रकार मुझे अपमानित करेंगे तो......

बैनर्जी तो की कोरेगा तुम ? गुली मारेगा ? कैशे मारेगा ? शोचता हाय जे शाब लोग बेकूप हाय। जोदि हमारा उमोट खाराप कोरेगा तो हाम तुम को देखेगा।

हरे कृष्ण (**लापरवाही से**) अरे, क्या देखियेगा ! दृष्टिपात करना है तो अभी कीजिये।

बैनर्जी (**कैलास से**) देखो, कैलाश बाबू ? हाम होरे क्रिष्न को तूमरा शाथी बूझ के खोमा किया। जोदि अब कुछ बोलेगा तो हम उशको ठिक कोरेगा।

कैलास अरे भाई, जाने भी दो। जरा सी बात पर...

बैनर्जी कैलाश बाबू ! तुम तो ठिक बुजते किन्तु ए होरे क्रिष्न ऐशेइ रोकोम शे दुश्मनी मोलता। हाम शामझाय दिया जे शमज के बोलो, भाई ! किन्तु एइ ऐशा गोरम-माशाला खाय लिया हाय जे जबि बोलता तबि छूरी चालता ! हाम बोल दिया जे आजकाल टेवेनटिएथ सेनचुरी का बैटरहाफ हाय। ईश में डेमोक्रेशी चोलेगा। तुम क्या खाय के एलेक्शन में पोड़ेगा !

हरे कृष्ण तुमको न पराजित किया तो मैं अपना नाम परिवर्तित कर दूँगा। मैं दृष्टिपात करूँगा कि तुम्हारे नायक मलकानी को कितने मत-पत्र प्रदान किये जाते हैं। मैं गमन करता हूँ।

(प्रस्थान)

वैनर्जी गिया। कोतना मात पत्र प्रोदान होते शो तो शांशार देखेगा। हाँ, तो कैलास बाबू! ए लोक तो एक रोकम गोलमाल कोरता। मलकानी का होश्टाल में फीपटी टू परसेंट उओट हाय। जोदि तुमरे लोक का दाश उओट पाइ ले तो उओट फीपटी शिक्श हो जाइगा। **(मलकानी का प्रवेश)**

मलकानी अच्छा, बैनर्जी बाबू! यहाँ हैं! कैलास! तुम तो जानते हो कि हमारा दल कितने सही रास्ते पर है।

कैलास लेकिन मेरा रास्ता तो गलत होता जा रहा है। मुझे जल्दी से जल्दी जाना था एक जगह। वहाँ मेरा इन्तज़ार हो रहा होगा, यहाँ मैं सही रास्ते पर चलाया जा रहा हूँ।

मलकानी लेकिन इलेक्शन के दिन हर रोज़ नहीं आते कैलास!

कैलास मैं भी तो यही कहता हूँ कि इलेक्शन के दिन हर रोज़ नहीं आते। आज बरसों बाद एक चांस मिला था तो कहीं प्रेमप्रकाश, कहीं मुनीर, कहीं हरेकृष्ण और कहीं मलकानी ये चारों चार दिशाओं में अपनी तरफ खींचते हैं। मैं तो बोर हो गया। कहाँ जाऊँ, कहाँ न जाऊँ!

मलकानी लेकिन अब तो हमारी इज़्ज़त तुम्हारे हाथ में है।

कैलास और मेरी इज़्ज़त किसके हाथ में है? लोग क्या कहेंगे कि आज ऐन इलेक्शन के दिन मैं एक पार्टी में नहीं जा सकता।

मलकानी तुम्हारे लिये कहो दस पार्टियों का इन्तज़ाम करूँ, दोस्त! तुम्हारे लिये जान हाज़िर है।

कैलास मेरी ही जान बची रहे तो बहुत है!

बैनर्जी तुमरा जान तो बेशी कीमती हाय! कैलाश बाबू! बेशी कीमती हाय! बिलकुल गौहर जान हाय!

मलकानी (हँसते हुए) और इस क़ीमती गौहर जान की ज़रूरत किसान-मज़दूर दल को है ।

कैलास कम्बख़्त नरेन्द्र भी कहीं मर गया ! (**नरेन्द्र को पुकारता है ।**)

मलकानी हाँ, नरेन्द्र का वोट भी दिला देना, दोस्त ! और फिर तुम हमारे बचपन के दोस्त हो ! उन दिनों को मत भुला दो, दोस्त !

कैलास ओह ! मलकानी ! तुम जाओ । मैं पागल हो जाऊँगा, तुम लोग जाओ । (**पुकार कर**) अरे नरेन्द्र, नरेन्द्र !

(**नरेन्द्र का प्रवेश**)

नरेन्द्र कहो, कैलास ! बढ़िया सेंट ले आया ! कम्बख़्त मिल ही नहीं रहा था । मैंने समझा जब तक तुम इन लोगों से बातें कर रहे हो तब तक मैं दूकान से सेंट लेता ही क्यों न आऊँ ! ले आया । देखो, कितना बढ़िया ! (**दिखलाता है ।**)

मलकानी अच्छा, दोस्त कैलास ! नरेन्द्र का सेंट लगाकर वोट के लिये आना । तुम्हारे वोट में भी खुशबू आ जायगी !

बैनर्जी बात शे हाम बोला, जे कैलाश बाबू हिरा आदमी है ! एइ मानुश त दुर्लभ, एके बारे दुर्लभ । आच्छा, आच्छा ! नोमाशकार······ चोलिये, मलकानी बाबू ! हाम कैलास बाबू शे ठिक कार लिया है । आब तूमारा फिफ्टी शिक्स हो गिया । आब कैलास बाबू का वास्ते चा-पार्टी का बान्दोबश्त कोरो ।

कैलास मुझे अब किसी चा-पार्टी की ज़रूरत नहीं है । अब तो मैं ज़हर पिऊँगा ।

मलकानी अरे, यार ! ये बातें तो हुआ ही करती हैं । अगर किसी खास हाथ से ज़हर पियोगे तो वो भी अमृत हो जायगा ! अमृत ! (**अट्टहास**) अच्छा, बनर्जी ! चलो । अच्छा, भाई ! फिर आऊँगा । गुडबाई ! नरेन्द्र ! गुडबाई ! (**बनर्जी के साथ प्रस्थान**)

कैलास कम्बख़्तों ने मुझे कहीं का नहीं रक्खा । अब क्या जाऊँगा पार्टी में ! सब लोग चले गये होंगे । आज कितने दिनों बाद ये चांस

मिला। और इस इलेक्शन के चक्कर में मेरा सब फ़्यूचर चौपट हो गया।

नरेन्द्र चौपट हो गया या बन गया ?

कैलास तुम जले पर नमक छिड़क रहे हो! एक तो इन कम्बख़्तों ने बोर किया, अब तुम बोरिंग कर रहे हो।

नरेन्द्र अरे यार! यह तो समझते नहीं कि तुम्हारे इलेक्शन में तुम्हारी कितनी शान बढ़ेगी। जमाई बाबू की सौ बार ख़ुशामद करो तब पार्टी में आते हैं। यह बात! नहीं तो पहले ही बुलाये में चले गये, क्लर्क की तरह! अरे हैड आव् दि डिपार्टमेण्ट की तरह जाओ। डीन की तरह जाओ, वाइस चांसलर की तरह जाओ। सेंट लगा कर।

कैलास (हँसते हुए) यार! तूने बोर कर दिया!

नरेन्द्र और तूने ? तूने तो इतना बोर कर दिया कि दुनियाँ में अब कोई बोर ही नहीं कर सकता! गुडबाई!

(प्रस्थान)

कैलास (चिढ़ाते हुए स्वर में) बोर कहीं का! (हँसता है।)

(परदा गिरता है।)

सही रास्ता

पात्र-परिचय

सत्यप्रकाश—सच्चाई और ईमानदारी की खोज में एक संभ्रान्त व्यक्ति

जयचन्द—वकील	सत्य प्रकाश के साथी
महेन्द्रकुमार—प्रोफ़ेसर	
केसरी—कवि	
गिरधारीमल—सेठ	
जान मसीह—सप्लाई आफ़िसर	

प्रभा—सत्यप्रकाश की भतीजी

सही रास्ता

कथानक की पृष्ठभूमि

समय—रात के दो बजे।

स्थान—सत्यप्रकाश का सजा हुआ सोने का कमरा। सामने उमर ख़ैयाम का एक चित्र है जिसमें उसके सामने शराब का साग़र रक्खा हुआ है। कमरे के बीचोबीच टेबल और कुर्सी। टेबल पर घण्टी बजाने वाली टाइम-पीस घड़ी। कमरे में एक ओर पलँग।

(सत्यप्रकाश ओर से चलकर कमरे में आते हैं। आल्मारी खोलने की आवाज़। आल्मारी से शराब की बोतल और गिलास निकालकर टेबल पर रखते हैं।)

सत्यप्रकाश **(भारीपन से कुर्सी पर बैठते हुए उमर ख़ैयाम के चित्र को देखकर)** ओफ़, प्यारे ख़ैयाम! तुमने ज़िन्दगी का सही रास्ता देखा था! जीवन का बसन्त तुम्हारे सामने फूल-फूल में बिखरा हुआ था! तुम्हारा वह बसन्त कहाँ है! आज तो ज़िन्दगी को ख़ाक करने वाली गर्मी है। बहुत गर्मी! जैसे दुनियाँ भर की गर्मी को इस शहर में भरकर ढक्कन बन्द कर दिया गया! कौन ज़िन्दा रहे इस गर्मी में! मैं तो रह ही नहीं सकता था अगर यह न होती···मौत को ज़िन्दगी पर तैराने वाली हस्ती··· मेरी शराब···! जैसे जवानी पिघलकर बोतल में समा गई है! जब बेहिश्त ने अपने को पानी में डुबा दिया तो उसका नाम हो गया···शराब···! चल, तू भी मुझे अपने में डुबा ले। **(गिलास में शराब भरने की आवाज़। एक घूँट पीकर)** ओफ़, ज़िन्दगी जाग उठी! कौन कहता है कि शराब ज़िन्दगी को

पहिचानने का सही रास्ता नहीं है ! इसके एक-एक बुलबुले में ज़िन्दगी के राज़ सिमिटकर फूट पड़ते हैं और चारों तरफ़ ख़ुशबू छा जाती हैं ! (**फिर एक घूँट पीकर**) अंधी दुनियाँ को राह पर लाने की ताक़त किसमें है ? ख़ुशी में । मस्ती में । मेरी शराब में । (**दबी हँसी हँसते हैं** ।) कम्बख़्त दुनियाँ सही बात नहीं समझना चाहती । अंधे की तरह चलती है और जो चीज़ हाथ में आ जाती है उसी को सहारे की लकड़ी समझ लेती है । कौन समझाए कि कम्बख़्त ! तेरी आँखों में उजेला नहीं है, सही रास्ता नहीं है ! दिल की आँखें खोल···दिल की आँखें खोल··· और दिल की आँखें खुलती कैसे हैं ? ख़ुशी के आलम में ? मस्ती की फ़िज़ा में ! (**फिर एक घूँट पीते हैं**) वाह, क्या कहता है, कबीर क्या कहता है···(**मस्ती से**)

हरि रस पीया जानिए, कबहुँ न जाय ख़ुमार ।
मैमन्ता घूमत फिरै, नाहीं तन की सार ॥

एँ, नाहीं तन की सार ! तन-बदन की कुछ ख़बर ही न रह जाय ! यह नुसख़ा आज की दुनियाँ को नहीं मालूम । दुनियाँ में वह ख़ुशी कहाँ है कि मस्ती छा जाय ? (**झूमकर**) कबीर साहब ! दे दो मुझे वह नुसख़ा जिसमें तुमने अपने को भुला दिया ! (**ठहरकर**) आज का कवि क्या लिखेगा ? क्या वह ऐसा ख़ुमार पैदा कर सकता है जो कभी ख़त्म न हो ? जो झूठ को सच बना दे ? जिसमें दुनियाँ मिट जाय, ग़ायब हो जाय ? हरग़िज़ नहीं । जब तक वह नुसख़ा मुझे न मिले तब तक यह नुसख़ा बुरा नहीं है । (**शराब और पीते हैं । ओठों से चुस्की लेकर**) बुरा नहीं है ! कौन समझाए वकील जयचन्द को कि उनके गले की आवाज़ कब तक झूठ बोल सकती है ! सेठ गिर-धारी मल को कौन समझाए कि उनकी मिलें तेल के बजाय ग़रीब मज़दूरों का ख़ून पीती हैं ! (**आँखें फाड़कर**) एँ ? कौन समझाए प्रोफ़ेसर महेन्द्र कुमार को कि रात-दिन किताबों के

पढ़ने से लियाक़त नहीं आती! कवि केसरी की समझ में कैसे आए कि गलेबाज़ी से कविता की क़ीमत नहीं बढ़ती! (**हिचकी लेते हैं।**) कौन समझाए सप्लाई आफ़िसर जान मसीह को कि ग़रीबों के कमाए हुए अन्न को गोदामों में भरने की ज़रूरत नहीं है! कौन समझाए......(**आँखें बन्दकर सर हिलाते हुए**) कोई न समझाए! शराब! तू समझा दे कि सही रास्ता कौन-सा है...(**फिर पीते हैं। अब आवाज़ लड़खड़ाने लगती है।**) सही रास्ता...मैंएँ जानता हूँ, मैंएँ समझता हूँ। मैंएँ, सहत्य परकाश। मेहेरी शर···आव की मस्ती नेह मुहुजे ख़ ख़ ऊ ब समझा दिया है। अहौर प्रभा आ भी समझती हए। (**हिचकी और हँसी साथ**) गाती हए ना? ख़ ख़ ऊब गाती हए! मैं भी गाऊँगा। (**टूटे-फूटे स्वर में राग से एक फ़िल्मी गाना गाते हैं।**)

पा आ प की दुनिया से कहीं दुहूर चला चल।
दुहूर चला चल, तू कहीं दुहूर चला चल...
पाप की...दुनियाँ...से...कहीं...

(**आँखें फाड़कर भर्राए हुए स्वर में**) एँ? पाप की दुनियाँ से? (**हँसते हैं।**) हाँ...पाप की...दुनियाँ से शराब पीकर जाऊँगा। (**गहरी साँस लेकर**) सिर्फ़ ···शराब···(**घड़ी में दो बजते हैं। ध्यान से सुनकर**) दो...? सिर्फ़ दो ही बजे हैं? (**घड़ी से**) अरे, और क्यों नहीं बजाती? (**विकृत हँसी हँसते हैं।**) बिना.. शराब के...तू भी आगे नहीं बजाती! ले तूऊ भी...शराब पीई ले! तुझ में भी मस्ती आ जाए। (**शराब का गिलास घड़ी पर उलट देते हैं।**) अब शराब पीकर तू ख़ूऊब चलेगी। (**गाकर**) दूर चली-चल···तू कहीं दूऊर··· (**एका-एक रुककर**) एँ? तू बिल···कुहुल···चुप् हो गई? (**हँसकर**) शराआब पीने ··पर···एतनीई···मस्ती? (**एक क्षण रुककर**) अब···क्या···हो? अच्छा···ले, तू भी बिस्तर

···पर···सोओ···जा। (**बिस्तर पर घड़ी को सुला देते हैं।**) मैं भी···सोऊँगा (**हँसकर**) अहौर···सो कर···चलूँगा। (**गाते हुए**) दुहूर चला···चल···तू कहीं···दुहूर···चला···चल···!

(**गाते-गाते बेहोश हो जाते हैं।**)

कथा-भाग

(**सत्यप्रकाश के कमरे में वकील जयचन्द, सेठ गिरधारीमल, प्रोफेसर महेन्द्रकुमार, कवि केसरी और जानमसीह बैठे हैं। बग़ल के कमरे में रिकार्ड बज रहा है—'दूर चला चल तू कहीं दूर चला चल, इस पाप की दुनियाँ से कहीं दूर चला चल।' रिकार्ड के समाप्त होते ही स्त्री-कण्ठ से सिसकियों की आवाज़ आती है।**)

महेन्द्र कुमार यह गाने के बाद रोना कैसा?

केसरी (**किंचित हँसकर**) प्रोफ़ेसर साहब! विद्वान् होकर आप इतना भी नहीं समझते कि जिन्दगी में गाने के बाद रोना और रोने के बाद गाना है? मैंने भी अपनी कविता में लिखा है :—

गान में रुदन, रुदन में गान,
यही है जीवन की पहिचान।

जयचन्द यह कवि-सम्मेलन नहीं है, कवि जी! यह शोक-सम्मेलन है। कौन जानता था कि सत्यप्रकाश जी इतनी जल्दी संसार छोड़कर चले जावेंगे! दो दिन के लिए वे अपने गाँव गए थे। कौन जानता था कि कल उनके आने के बदले उनकी मौत की ख़बर आ जायगी!

गिरधारी मल वकील साहब! सच्ची बात तो जे है कै शराब उन्हें लै गई। मैंने कित्ती बार उनसै कहा कै लाला जी! जो लोग शराब पीते हैं, शराब उन लोगों कौ पीती है। मैंने कहा कै शराब आपकौ पियै लेती है। उन्होंने सुना नईं और आज जे हाल देख लो! गोविंद हरि! गोविन्द हरि!

जान मसीह सेठ जी! होल्ड योर टङ्ग एबाउट वाइन।

गिरधारी मल तौ मैं तौ उनके बारे में कहता हूँ, आपके बारे में थौड़े कुछ कहता हूँ। गोविन्द हरि! गोविन्द हरि!

महेन्द्र कुमार लेकिन सचमुच, यह बड़े दुःख की बात है कि सत्यप्रकाश जी का अकस्मात् देहान्त हो गया! कैसे हो गया, पता नहीं। कहने को तो वे शराब पीते थे लेकिन बात मार्के की करते थे। वे ज़िन्दगी का एक-एक पहलू पहिचानते थे। क्यों, वकील साहब!

जयचन्द इसमें क्या शक है? हम लोगों ने उनकी बातों पर भले ही ध्यान न दिया हो लेकिन उनकी बातें ज़िन्दगी के राज़ से भरी होती थीं। ऐसी चोट करते थे कि बस, दिल ही जानता था। और ये सब बातें मज़ाक और हँसी से भरी होती थीं। कमाल का दिमाग़ था उनका! उनका परिहास मार्के का होता था!

जान मसीह आइ नो दैट परफ़ैक्टली वैल।

जयचन्द बात यह थी कि ज़िन्दगी में ख़ुश रहने को वे बहुत बड़ी बात समझते थे लेकिन ज़िन्दगी में ख़ुशी है कहाँ? चारों तरफ़ तो तकलीफ़ ही तकलीफ़ है। आदमी को हँसने का मौक़ा ही नहीं मिलता! इसीलिए ख़ुश और मस्त रहने के लिए उन्हें शराब का सहारा लेना पड़ा।

केसरी यदि वे रहस्यवाद का सहारा लेते तो आनन्द खोजने के लिए उन्हें बाहर न जाना पड़ता! आत्मा में परमात्मा की अनुभूति ही आनन्द का साधन है।

जान मसीह स्पीक लाइक ए जैण्टलमैन, मिस्टर केसरी!

महेन्द्र कुमार यह कविता का समय नहीं है, कवि जी! अवसर देखकर बात कीजिए। कहना हो तो कुछ सत्यप्रकाश जी के बारे में कहिये।

केसरी महाकवि तुलसीदास के आदर्श को ध्यान में रख कर मैं संसार के मनुष्यों पर कविता लिखना कविता का अपमान समझता हूँ।

"भक्त हेतु विधि-भवन विहाई,
सुमिरत सारद आवत धाई
राम चरित सर बिनु......"

महेन्द्र कुमार इस समय चुप रहिये।

केसरी आप चुप रहिये। मैं क्यों चुप रहूँ ?

महेन्द्र कुमार यदि चुप नहीं रहेंगे तो निकाल दिए जायेंगे।

केसरी आप होते कौन हैं, निकालने वाले ?

जान मसीह आर्डर, आर्डर।

जयचन्द आप लोगों को अवसर का कुछ ख़्याल नहीं है ?

केसरी मैं कहता हूँ.........

(दरवाज़े पर सिसकने की आवाज़। प्रभा का प्रवेश)

प्रभा **(भरे हुए गले से)** क्षमा कीजिए, मुझे देर हुई। आप लोगों का स्वागत करती हूँ। **(सिसकियाँ)** कहाँ मैं सोच रही थी कि चाचा जी की स्वर्ण-जयन्ती पर आप लोगों का स्वागत करूँगी किन्तु आज ऐसा समय आया कि उनकी मृत्यु.........!

(ज़ोर से सिसकियाँ लेने लगती है।)

जान मसीह वेरी सारी, वेरी सारी इनडीड !

जयचन्द लेकिन, प्रभा जी ! धैर्य रखिए। संसार में यह कष्ट किसे नहीं झेलना पड़ता ? जो संसार में आता है, उसे एक दिन जाना ही है। कोई जल्दी जाता है, किसी को थोड़ी देर लग जाती है। लेकिन प्रभा जी ! अकस्मात् उनकी मृत्यु कैसे हो गई ?

प्रभा मैं स्वयं नहीं जानती। यहाँ से तो बिल्कुल अच्छे गए थे। मैंने उन्हें भोजन कराया था। कह गए थे कि बेटी ! मैं जल्दी ही आऊँगा ! हाय ! **(सिसकी लेकर)** उनकी चलते समय की हँसी अभी तक कानों में गूँज रही है ! क्या जाने उन्हें क्या हो गया !

जयचन्द प्रभा जी ! मौत तो दबे पाँव आती है ! हँसता-खेलता आदमी एक मिनट में चला जाता है ! कौन कह सकता था कि सत्यप्रकाश जी का स्वर्गवास.........

गिरधारी मल अब मुझी कौ न देखौ बेटी ! मेरा भतीजा विरचीचन्द कैसा हँस-मुख और बाँक-बनक का था। दिन भर मिलों का काम देखता

था और हज़ारों का कारबार करता था। उसकी उमर क्या थी? यही अठारह बरस! चल दिया एक दिन हँसते-हँसते! दवा-दारू का बखत भी नईं दिया उस निर्मोही ने। और मैं साठ बरस का बूढ़ा बैठा हूँ अपना तन घसीटता हुआ! गोविन्द हरि! गोविन्द हरि! **(गला भर आता है।)**

जयचन्द — इसका हम सब लोगों को बहुत दुःख है, सेठ जी! लेकिन इस वक़्त ऐसी बातें कर आप प्रभा जी के मन को और भी तकलीफ़ पहुँचाते हैं! उन्हें तो इस वक़्त धैर्य की ज़रूरत है।

जान मसीह — आफ़कोर्स।

प्रभा — आपकी सान्त्वना के लिए अनेक धन्यवाद! चाचा जी शायद जानते थे कि उन्हें संसार से जल्दी ही जाना है, इसलिए उन्होंने जाने से पहले दो पत्र लिख छोड़े थे। कहते थे, जब मैं गाँव चला जाऊँ तो ये पत्र पढ़ना। एक पत्र तो मेरे नाम है और दूसरा पत्र श्री जयचन्द जी वकील के नाम। यदि अपना पत्र मैं पढ़कर न सुनाऊँ तो आप लोग मुझे क्षमा करेंगे। लेकिन मैं इतनी बात बतला दूँ कि उन्होंने चाहा था कि मैं आज दस तारीख़ को सर्वश्री वकील जयचन्द, प्रोफ़ेसर महेन्द्र कुमार, कवि केसरी, फ़ुड आफ़िसर मिस्टर जान मसीह और सेठ गिरधारीमल जी को ठीक छः बजे शाम को आने का निमन्त्रण दे दूँ। आप सब लोगों को उन्होंने क्यों बुलाया है, यह मैं नहीं जानती। आप सब उनके मिलने वालों में से थे। आप लोग ख़ुद जान सकते हैं। शायद आप लोगों के लिए उन्होंने कोई सन्देश छोड़ा हो। सम्भव है, वकील साहब के पत्र में इसका संकेत हो। वकील साहब का पत्र यह है!

(प्रभा पत्र बढ़ाती है। वकील जयचन्द अपनी जगह से उठकर उसे लेते हैं।)

जयचन्द — **(देखकर)** हाँ, यह पत्र मेरे नाम है।

(लिफ़ाफ़ा फाड़कर पत्र पढ़ते हैं।)

महेन्द्रकुमार (एक क्षण बाद) क्या लिखा है, भाई! जिसके लिए हम सब लोगों को बुलाया ?

गिरधारीमल मुमकिन है, अपनी वसीयत लिखी हो।

केसरी आपके नाम ?

महेन्द्रकुमार कवि लोग अपने को इतना स्वच्छन्द समझते हैं कि कभी-कभी उन्हें सामाजिक शिष्टता का ध्यान ही नहीं रहता।

प्रभा महेन्द्रकुमार जी! मैं आपसे एक बात पूछना चाहती हूँ।

महेन्द्रकुमार आज्ञा कीजिए।

प्रभा स्वर्गीय चाचा जी ने मेरे पत्र में लिखा है कि मैं उनकी पुस्तकें चाहे जिस संस्था को दान में दे दूँ। किस संस्था को दूँ ?

महेन्द्रकुमार नागरी प्रचारिणी सभा को दे दीजिए। सम्मेलन तो दलदल में फँसा है।

प्रभा अब यह उन्हीं के हाथों से होता तो कितना अच्छा था! दो-एक बार उन्होंने कहा भी था किन्तु मैं भूल गई। मेरी भूल के कारण उन्हें आज यह लिखना पड़ा! मैं कितनी अभागिनी हूँ! (**गला भर आता है।**)

गिरधारीमल बेटी! कहाँ तक जे बातें सोचोगी! अब तो इनको भूलने की कोशिश करनी चाहिए। ऐसा हीरा आदमी मैंने जिन्दगी में नईं देखा। तसवीर खिंच जाती है आँखों के सामने, तसबीर। मेरे मिल के सामने से निकलते थे तो बिरधीचन्द से कहते थे— बेटा! सेठ जी सै जै गोपाल कह देना। आज बिरधीचन्द नईं रहा है! कौन कहे जै गोपाल!

(**आँखों में आँसू आ जाते हैं।**)

जयचन्द (**प्रसन्नता से**) वाह, क्या खूब पत्र लिखा है!

महेन्द्रकुमार क्या हम लोग सुन सकते हैं?

जयचन्द हाँ, हाँ, यह पत्र तो हम सब लोगों के लिए ही है। सुनिए शुरू ही में लिखा है :—

'यह पत्र मेरे मित्रों के सामने पढ़ा जावे। मित्रों के नाम ये हैं—

सर्वश्री जयचन्द, महेन्द्र, केसरी, गिरधारी और मसीह।

प्रभा तो मैं यहाँ से चली जाऊँ?

जयचन्द नहीं, आप क्यों जायँ? आप तो परिवार की ही हैं। आपके यहाँ रहने से किसी को कोई आपत्ति न होगी। फिर आपके सम्बन्ध में भी कुछ बात है। अच्छा, तो मैं पत्र पढ़ता हूँ। सुनिये!

प्रिय मित्रो,

आप लोग यह अच्छी तरह से जानते हैं कि ज़िन्दगी में मैंने दो बातें सबसे ज़्यादा क़ीमती समझी हैं। पहली बात है, ख़ुशी और दूसरी है, सचाई और ईमानदारी। लेकिन दुनिया में आकर मैंने देखा कि आज की ज़िन्दगी में ये दोनों बातें नहीं हैं। ख़ुशी के बजाय दर्दोग़म है और ईमानदारी की जगह बेईमानी। मैंने ख़ुशी और ईमानदारी की खोज की। लेकिन मुझे सही रास्ता नहीं मिला। में दुर्भाग्य से संत और महात्मा नहीं था कि साधना और लगन से ये बातें हासिल करता। उसके बाद मुझे शराब की मस्ती में ये दोनों बातें मिलीं। मुमकिन है, मेरा रास्ता ग़लत हो, लेकिन मेरा आदर्श मुझे मिल गया है। और मैं दुनियाँ से और अपने-आप से यह कह सकता हूँ कि मैं ख़ुश और ईमानदार हूँ।

महेन्द्रकुमार वकील साहब! आपका अनुभव सही था।

जयचन्द आगे सुनिए। (**पढ़ता हुआ**) लेकिन मेरी हाल ख़राब हो चली है। कभी-कभी बेहोशी का आलम बड़ी देर तक बना रहता है। मुमकिन है, किसी रोज़ हमेशा के लिए बेहोश हो जाऊँ! इसलिए अभी से यह पत्र अपने होश में लिख छोड़ता हूँ।

जब मैं इस दुनियाँ से चला जाऊँ तब मेरा पत्र पढ़ा जाय। पहली बात तो यह है कि आनन्द और सुख में मेरा अटल विश्वास है। इसलिए मेरे मरने के बाद मेरे परिचित

किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार न होगा कि वह मेरे लिए आँसू बहाये और दुखी हो।

(लोगों में 'वाह' 'वाह' की ध्वनि)

और जब मेरा पत्र पढ़ने के लिए आप सब लोग एकत्र होंगे तब आप लोगों का स्वागत और प्रस्थान मेरे प्रिय गीत से होगा। 'दूर चला चल तू कहीं दूर चला चल'। आशा है, आपके आने पर प्रभा ने वह गीत बजाया होगा क्योंकि इसका आदेश मैंने उसके नाम लिखे गए पत्र में दे दिया है।

दूसरी बात यह है कि इस संसार से चलते समय मैं अपने मित्रों को भेंट देकर जाना चाहता हूँ, ऐसी भेंट जिसे वे जीवन भर स्मरण रख सकें। भेंट की सामग्री मैंने अपने ड्राइंग रूम के बग़ल वाले कमरे में प्रत्येक मित्र के नाम की स्लिप लगाकर रख दी है। आशा है, मेरे मित्रगण मेरी अन्तिम भेंट स्वीकार करने की कृपा करेंगे।

('धन्य' 'धन्य' और 'एक्सलैण्ट' की ध्वनि)

तीसरी बात यह है कि आप लोगों में से कोई भी सभा के बीच से उठकर न जावे। जब तक मेरी अन्तिम स्लिप न पढ़ ली जाय तब तक सभा में से किसी को जाने का अधिकार न होगा। आशा है, भेंट की सूची पढ़े जाने के पूर्व ही सब लोग वचन-बद्ध हो जायेंगे। (सब लोगों से) क्यों साहब! आप लोग वचन-बद्ध होते हैं?

सम्मिलित स्वर—हाँ, हाँ, अवश्य। आल राइट।

महेन्द्र कुमार — और फिर हम लोगों में से प्रत्येक को उत्सुकता रहेगी कि हमारे अन्य मित्र को क्या भेंट मिली। हम लोग बीच ही में क्यों उठने लगे?

केसरी — फिर कुतूहल में ही तो जीवन की संजीवनी है।

जान मसीह — हाट डिड यू से?

केसरी — मैंने आपसे बात नहीं की।

गिरधारीमल (जयचन्द से) भाई! जिस कमरे में भेंट की चीजें रक्खी हुई हैं, उसमें तो ताला लगा हुआ है।

जयचन्द अरे, अभी पत्र पूरा कहाँ हुआ है?

गिरधारीमल आँ, अच्छा भाई! माफ़ी देना। पूरा पढ़ दो। गोविन्द हरि! गोविन्द हरि!

जयचन्द सुनिए : (पत्र आगे पढ़ता हुआ) अन्तिम बात यह है कि आप लोग प्रभा के जीवन को अधिक-से-अधिक समृद्धिशाली बनावें। माता-पिता के अभाव में मैंने उसकी रक्षा की है यद्यपि मैंने उसे अपने से दूर ही रक्खा। मैंने अपने प्रति उसके मन में अधिक मोह उत्पन्न होने का अवसर ही नहीं दिया। वह बहुत गुणमयी है। बहुत मधुर कण्ठ से गाती है। मैंने उसके नाम अपने रहने की कोठी लिख दी है। वह मेरे धन से संगीत-विद्यालय खोलकर संसार में सुख और आनन्द का विस्तार करे। यह मेरा दुर्भाग्य था कि मेरे पास उसके जैसा मधुर कण्ठ नहीं था, नहीं तो मैं भी अपने सुख की खोज में यही मार्ग ग्रहण करता, लेकिन अब तो मेरे जीवन के अन्तिम क्षण हैं। आप सब लोग सुखी रहें, यही मेरी अन्तिम कामना है।

आपका हितचिन्तक मित्र,

सत्यप्रकाश

पुनश्च :

जिस कमरे में आप सब की भेंट रक्खी है, उसकी चाबी मेरे ड्रेसिंग टेबल के दराज़ में है। प्रभा ताला खोल कर प्रत्येक मित्र को मेरी ओर से भेंट दे देगी।

सत्यप्रकाश

प्रभा (पत्र समाप्त होते ही) क्या मुझे आज्ञा है कि चाबी लाऊँ?

सम्मिलित स्वर—ज़रूर, ज़रूर।

(प्रभा का प्रस्थान)

महेन्द्रकुमार किस मुख से हम लोग सत्यप्रकाश जी तारीफ़ करें जिन्होंने

मरते समय भी अपने प्रत्येक मित्र का ख़्याल रक्खा और उन्हें भेंट दी।

केसरी (गम्भीरता-पूर्वक विचार करते हुए) यह भेंट क्या हो सकती है?

गिरधारीमल मुझको तो शायद हीरे की अँगूठी दी होगी!

जयचन्द हाँ, आप मिलों के मालिक हैं; इतने बड़े सेठ हैं। आपकी इज़्ज़त के लायक़ ही कोई चीज़ होगी। अच्छा, महेन्द्र जी! सोचिए, आपको क्या दिया होगा?

महेन्द्रकुमार मैं तो उनके साथ कम ही रहा करता था। मुझे पढ़ने-लिखने से फ़ुर्सत ही कहाँ मिलती थी! यही हो सकता है कि मेरे लेखों की प्रशंसा में शायद कोई मेडल या मान-पत्र हो!

जयचन्द (केसरी से) और कवि जी! आपको?

केसरी अजी, कविता का पुरस्कार कौन दे सकता है! देवी सरस्वती भी कहीं रुपये से तौली जाती हैं? शायद दी होगी कोई अच्छी-सी फ़ाउन्टेन पेन कविता लिखने के लिए।

जयचन्द मुमकिन है। (जान मसीह से) अच्छा, मिस्टर मसीह! आप तो सप्लाई आफ़िसर हैं। आपके लायक़ क्या भेंट हो सकती है?

जान मसीह मी? ही कैंट गिव मी ए राय बहादुरशिप। ओ नो! प्रोबैबली ही मे गिव ए गोल्ड वाच! आर ह्वाट?

महेन्द्रकुमार और वकील साहब! आप अपनी भेंट का क्या अनुमान लगाते हैं? आप तो उनके हमेशा के मिलने वालों में रहे हैं और सबसे ज़्यादा बोलने वाले। कभी-कभी तो वे आपकी स्पीच पर 'वाह' 'वाह' कह उठते थे!

जयचन्द्र (ठण्ढी साँस लेकर) ख़ैर, उनकी यह मेहरबानी थी। लेकिन मेरा ख़याल है कि आप सब लोगों के अनुमान ग़लत हो सकते हैं। सत्यप्रकाश जी ज़िन्दगी में बड़ी गहरी नज़र रखते थे और उनकी भेंट का राज़ भी कोई गहरे मानी रखता होगा। मैं समझता

हूँ कि······(**प्रभा का प्रवेश। बीच ही में रुककर**) प्रभा जी! आ गईं। चाबी मिली ?

प्रभा — जी, यह है।

जयचन्द — तो फिर कमरा खोलिए। हमारे मित्र लोग अपनी-अपनी भेंट पाने के लिए उत्सुक हैं।

प्रभा — बहुत अच्छा। कमरा अभी खोल देती हूँ। यह मेरा सौभाग्य है कि स्वर्गीय चाचा जी ने मुझे भेंट देने की आज्ञा दी है! मैं कमरा खोलती हूँ।

(**कमरा खोलने की आवाज़। प्रभा कमरे में जाती है। सब लोग चुप हैं।**)

प्रभा — (**कमरे के भीतर से**) यहाँ डाइनिंग टेबल पर कुछ चीज़ें रक्खी हुई हैं। हर एक के साथ एक-एक स्लिप है। आप लोग कहें तो मैं एक-एक चीज़ उठाकर लाऊँ।

जयचन्द — हाँ, एक-एक चीज़ उठाकर लाइए और भेंट करती जाइए।

प्रभा — (**भीतर ही से**) पहले किसकी चीज़ लाऊँ ?

गिरधारीमल — पहले मेरी लाओ, बेटी!

महेन्द्रकुमार — आप स्वार्थी मालूम देते हैं।

जान मसीह — टू सैलफ़िश। आफ़टर आल ए सेठ!

केसरी — सेठ जी की तरह सबके हृदय में भी तो उत्सुकता हो सकती है!

जयचन्द — अरे भाई साहब! पाँच मिनट में सब चीज़ें सामने आई जाती हैं। उतावली की क्या ज़रूरत ? (**ज़ोर से**) प्रभा जी! किसी की भी भेंट लेती आइए।

केसरी — (**धीरे से**) यानी वकील साहब की। (**प्रभा का एक बोतल लिये हुए प्रवेश**)

प्रभा — (**सामने उठाकर**) यह श्री सेठ गिरधारी जी की भेंट है। एक बोतल।

गिरधारीमल — (**आश्चर्य से आँखें फाड़कर**) बोतल ? मरने पर आज तक किसी ने बोतल भेंट की है ?

केसरी (व्यंग्य से) शायद इस बोतल में ही आपके लिए हीरे की अँगूठी हो!

महेन्द्रकुमार आख़िर इस बोतल में है क्या?

गिरधारीमल अरे, शराब होगी, शराब। मैं शराब-उराब कुछ नहीं पीता। बुढ़ापे में और यह बदनामी लेकर जाऊँ! गोविन्द हरि! गोविंद हरि!

जयचन्द (हँसकर) लेकिन है तो आपके ही लिए।

गिरधारीमल बेटी प्रभा! ज़रा ध्यान से देखना। इस पर मसीह साहब का नाम तो नहीं लिखा?

जानमसीह होल्ड योर टंग, सेठ!

प्रभा इस बोतल के साथ यह एक स्लिप भी है। लिखा है :—

'श्रीमान् सेठ गिरधारीमल जी, मिल-ओनर,

मैं आपकी सेवा में यह बोतल भेंट करता हूँ। यह न समझिए कि इस बोतल में शराब है। उसे तो आप हम जैसे पापियों के लिए छोड़ दीजिए। इस बोतल में मेरा ख़ून है।

सम्मिलित स्वर (चौंककर) ख़ू······न······?

प्रभा (स्लिप पढ़ते हुए) इस ख़ून से मैं आपकी सहायता करना चाहता हूँ। आपकी मिलें तेल नहीं पीतीं। वे पीती हैं ग़रीब मज़दूरों का ख़ून। यह जानते हुए भी आप अपनी मिलों को शान से ख़ून पिलाए जा रहे हैं। खाना न मिलने की वजह से बेचारे ग़रीब मज़दूरों में कितना ख़ून रह गया होगा, यह आप भी जानते हैं। इसलिए आपकी मिलों के लिए ख़ून की कमी होने पर मेरा यह ख़ून काम में ले आइएगा। थोड़ा ही सही, कुछ काम तो चलेगा। कल मैंने अपने हाथ में चीरा देकर निकाला है। आशा है, आप मेरी भेंट-स्वीकार करेंगे।

आपका,

सत्यप्रकाश'

गिरधारीमल अब मैं यहाँ नहीं बैठ सकता। मैं जाऊँगा। गोविन्द हरि! गोविन्द हरि! **(उठ खड़ा होता है।)**

जयचन्द सेठ गिरधारीमल जी! हम सब लोग पहले से ही वचन-बद्ध हो चुके हैं कि बीच में हम लोगों में से कोई भी न उठ सकेगा। **(प्रभा से)** प्रभा जी! सेठ जी पर इसका बहुत असर पड़ा है। यह भेंट बाद में उनके घर भेज दीजियेगा।

महेन्द्रकुमार ठीक है, हम सब लोगों की भेंट भी आप हमारे घर भिजवा दीजिए। **(गिरधारीमल बैठता है।)**

जयचन्द **(तीव्रता से)** जी नहीं। यहाँ स्वर्गीय मित्र की इच्छा का प्रश्न है। उन्होंने पत्र लिखकर अपनी इच्छा प्रकट की है, उसका पालन होना चाहिए। नहीं तो वे हम सब लोगों को यहाँ बुलाते ही क्यों? फिर अपने वचन की मर्यादा भी तो रखिए। **(प्रभा से)** प्रभा जी! वह बोतल इस कोने में रख दीजिए, दूसरी भेंट लाइए। मित्र की इच्छा ही पूरी हो, हम लोगों को चाहे लज्जित होना पड़े।

(प्रभा कमरे में फिर प्रवेश करती है।)

प्रभा **(अन्दर से ही)** किसकी भेंट लाऊँ?

(कमरे में सन्नाटा छाया हुआ है। सब चुप हैं।)

जयचन्द अब आप लोग क्यों नहीं बोलते?

महेन्द्रकुमार किसी की भी ले आइये।

(प्रभा एक पार्सल लेकर आती है।)

प्रभा यह भेंट प्रोफ़ेसर महेन्द्र कुमार के लिए है।

जयचन्द यह तो बड़ा अच्छा पार्सल है!

केसरी इसमें होगी अँगूठी, या रिस्टवाच, या मेडल।

गिरधारीमल नहीं बाबा! इसमें कहीं उनका कलेजा न हो! गोविन्द हरि! गोविन्द हरि!

प्रभा इस पार्सल के साथ यह स्लिप है। इसमें लिखा हुआ है :—

प्रोफ़ेसर महेन्द्रकुमार जी,

आपकी सेवा में यह पार्सल भेंट करता हूँ। आप उत्सुक

होंगे यह जानने के लिए कि इसमें क्या है। मैं बतलाए देता हूँ। इस पार्सल में दस चश्मे हैं। आप समझते हैं कि दुनियाँ से आँख बन्द करके किताबों को आँखें फाड़-फाड़ कर पढ़ने से लियाक़त आती है। पैदा कीजिए ऐसी लियाक़त आप। दुनियाँ की हस्तियों से अनजान रह कर मेरी तरफ़ से आप लाखों किताबें पढ़ते रहें। इसलिए आप मेरी तरफ़ से ये दस चश्मे स्वीकार कीजिए।

आपका

सत्यप्रकाश

जयचन्द — लीजिए महेन्द्र जी! ये चश्मे। सैकड़ों बरसों तक पढ़ने का सुभीता हो गया।

महेन्द्रकुमार — कितना सुन्दर व्यंग्य है! रख दीजिये चश्मे, प्रभा जी!

गिरधारीमल — गोविन्द हरि! मेरे लिए भी कोई ऐसी भेंट दे देते।

प्रभा — आगे की भेंट लाऊँ?

गिरधारीमल — ज़रूर, ज़रूर!

महेन्द्रकुमार — जी, अब तो आप चाहेंगे ही कि आपके साथ औरों का राज़ भी खुल जाय!

(प्रभा कमरे में जाती है।)

जयचन्द — आज किसी की ख़ैर नहीं।

महेन्द्रकुमार — सब को और वचन-बद्ध कराइए।

(प्रभा का प्रवेश। उसके हाथ में एक डिब्बा है।)

प्रभा — तीसरी भेंट, यह डिब्बा है। यह श्री जयचन्द जी, वकील की सेवा में भेंट होने को है। इसके साथ की स्लिप में लिखा हुआ है :—

श्रीमान जयचन्द जी, वकील,

आपकी क्रिमिनल प्रेक्टिस खूब चल निकली है। हर महीने आप सैकड़ों केसों में बहस कर, झूठ-सच दलीलें देकर न जाने कितने निरपराध लोगों की जान लेते हैं और अपराधी लोगों की जान बचाते हैं। आपका यह रास्ता बरक़रार रहे और

आप इसी तरह ज़्यादातर झूठी बहसें करते रहें, इसलिए आपके गले की आवाज़ को साफ़ और सुरीली करने के लिए मैं दो सेर शुद्ध कुलंजन पिसवाकर इस डिब्बे में आपको भेंट करता हूँ। आशा है, इसे फाँक-फाँक कर आप अपना गला और भी साफ़ कर लेंगे और ज्यादा अच्छी बहस कर सकेंगे।

आपका

सत्यप्रकाश

जयचन्द लाजवाब मज़ाक है!

गिरधारीमल जी नहीं, करारा तमाचा है। झूठी वकालत छोड़िए।

जयचन्द पहले आप अपनी मिलों को तो ख़ून पीने से रोकिए।

गिरधारीमल तो क्या अब मैं आपके कहने का रास्ता देखूँगा?

प्रभा यदि आज्ञा हो तो चौथी भेंट लाऊँ?

गिरधारीमल हाँ, हाँ, लाइए।

(प्रभा का प्रस्थान)

जानमसीह नाऊ इट मस्ट बी माई टर्न।

केसरी शायद मेरी हो।

(प्रभा का एक छोटा 'होल्ड-आल' लिये हुए प्रवेश)

महेन्द्रकुमार ओह, यह होल्ड-आल! मैं कुछ आपकी मदद करूँ?

प्रभा जी नहीं, यह अधिक भारी नहीं है। छोटा-सा बंडल है।

जयचन्द अच्छा, होल्ड-आल किसके लिए?

केसरी इसे तो उन्हें साथ ले जाना चाहिए था।

जयचन्द शिष्टता सीखिए, केसरी जी!

प्रभा यह भेंट मिस्टर जान मसीह के लिए है। साथ की स्लिप में लिखा हुआ है:—

डीयर मिस्टर जान मसीह,

हिन्दुस्तान में रहकर और हिन्दुस्तानी समझ कर भी आप हमेशा अँग्रेज़ी में बातचीत करते हैं। इस स्वामि-भक्ति के नमूने के लिए आपकी तन्दुरुस्ती का प्याला आज मैं फिर पी चुका हूँ।

.. चलते वक्त आपको भेंट—आपकी भाषा में 'पार्टिङ्ग प्रेज़ेण्ट' देना है। आप सप्लाई आफ़िसर हैं। आप ख़ुद लोगों को 'पार्टिङ्ग प्रेज़ेण्ट' सप्लाई कर सकते हैं। लेकिन आप जानते हैं कि आज ग़रीब जनता दानों-दानों को तरस रही है, तड़प-तड़प कर मर रही है। उसे अन्न का एक दाना भी नहीं मिलता। और आप गोदामों में गेहूँ और चावल के सैकड़ों बोरे जमा कर रहे हैं। गेहूँ और चावल को भरकर रखने में शायद आपको खाली बोरों की कमी पड़ती होगी, इसलिए मेरी तरफ़ से आप एक दर्ज़न खाली बोरे भेंट में स्वीकार कीजिए। इससे ग़रीबों को अन्न के लिए भूखे तरसाकर अनाज जमा करने में आपको थोड़ी-बहुत मदद अवश्य मिलेगी। गुडबाई !

आपका
सत्यप्रकाश

जानमसीह — आई एम वेरी मच···ओ : मैं बहुत शर्मिन्दा होना माँगता हूँ।

महेन्द्रकुमार — कभी भीख भी माँगिएगा।

जानमसीह — क्या बोला आप ?

जयचन्द — कुछ नहीं। आपकी तारीफ़ कर रहे हैं, प्रोफ़ेसर साहब। बहुत किताबें पढ़ी हैं न इन्होंने ? बड़ी अच्छी भाषा में तारीफ़ कर रहे हैं।

जानमसीह — ओ, थैंक्स···नो नो···शुक्रिया !

महेन्द्रकुमार — कवि केसरी ! अब जिगर थाम लो।

केसरी — मुझे किसी भेंट की आवश्यकता नहीं। यह माया मिथ्या है।

जयचन्द — जी नहीं, अभी सच हुई जाती है।

प्रभा — अब अन्तिम भेंट लाऊँ ?

जयचन्द — हाँ, हाँ, अवश्य।

(प्रभा का प्रस्थान)

गिरधारीमल — कवि जी को कविता सूझ रही है। आँखें आसमान पर हैं।

महेन्द्रकुमार — अनन्त की खोज में वीणा के टूटे तारों को बजा रहे होंगे !

केसरी — इस समय मैं परिहास नहीं सुनना चाहता।

जयचन्द — (प्रभा को पुकारकर) लाइए, प्रभा जी! भेंट। केसरी जी परिहास नहीं सुनना चाहते।

प्रभा — (कमरे के अन्दर से) यहाँ तो कुछ दीखता ही नहीं।

महेन्द्रकुमार — क्या पूरा रहस्यवाद है?

केसरी — मैंने कहा ही था कि मेरे लिए कुछ हो ही नहीं सकता। लेकिन आप रहस्यवाद का अपमान नहीं कर सकते।

प्रभा — (कमरे के अन्दर से) जी हाँ, है। मिल गई चीज़।

केसरी — होगी कोई काव्य की पुस्तक।

(प्रभा का एक कपड़े की पोटली लिए हुए प्रवेश)

प्रभा — यह कपड़े की पोटली कवि केसरी जी की भेंट है।

केसरी — है बहुत छोटी, इसमें है क्या?

महेन्द्रकुमार — कविता का चूरन।

केसरी — आप कविता का अपमान नहीं कर सकते प्रोफ़ेसर साहब? कविता का अपमान करना साहित्य का अपमान करना है। साहित्य का अपमान करना देश का अपमान करना है।

गिरधारीमल — गोविन्द हरि! गोविन्द हरि!

प्रभा — इस भेंट के साथ यह स्लिप है। इसे सुन लीजिए। (पढ़ते हुए) कविवर श्री केसरी जी, आप बड़े ऊँचे कवि हैं।

केसरी — देखिए, मैंने कहा था न? 'गुन न हिरानो, गुनगाहक हिरानो है।'

जयचन्द्र — ठहर जाइए। अभी गुन और गुनगाहक दोनों सामने आते हैं।

प्रभा — (पढ़ते हुए) आप बड़े ऊँचे कवि हैं। आप कल्पना की रस्सी गले में बाँध कर कविता के कुएँ में कितने गहरे डूबे हैं, यह तो मैं नहीं जानता लेकिन इतना जरूर जानता हूँ कि कविता के पढ़ने में आप लोग गलेबाज़ी में ज़रूर होड़ लगा रहे हैं। मैंने दो-एक कवि-सम्मेलनों में देखा है कि बेचारा अच्छे से अच्छा कवि स्वर से न पढ़ सकने के कारण मज़ाक का शिकार हो जाता है और सड़ी-गली पुरानी बातों की नक़ल करके स्वर से पढ़ने

वाला कवि 'वाह' 'वाह' से लद जाता है। आप में मधुर कण्ठ तो है ही और आप अपनी कविता ताल-स्वर से भी पढ़ते हैं लेकिन आपको अपनी कविता अधिक से अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए और भी कुछ करना चाहिए। इसमें मैं आपकी सहायता करना चाहता हूँ और आपको मुरादाबाद की बनी हुई एक अच्छी खँजड़ी भेंट करना चाहता हूँ। (**सम्मिलित हँसी और 'वाह' 'वाह' की ध्वनि**) आप अपनी कविता के साथ कवि-सम्मेलनों में इसे बजाइए। फिर देखिए, आप आजकल की कविता के सबसे बड़े कवि माने जाते हैं या नहीं। आपकी कविता खँजड़ी के साथ देश के कोने-कोने में गूँजे, यही मेरी कामना है।

आपका
सत्यप्रकाश

(**फिर सम्मिलित हँसी और 'वाह' 'वाह'**)

गिरधारीमल गोविन्द हरि! गोविन्द हरि? बहुत अच्छी बात कही है!

महेन्द्रकुमार हाँ, कविता और संगीत में अटूट संबंध है।

जयचन्द खँजड़ी पर कितना अच्छा मालूम होगा—

'कहत केसरी सुन भई सजनी'

केसरी यह मेरा सरासर अपमान है!

महेन्द्रकुमार अपमान नहीं है, सही बात है। आप कविता पढ़ते समय अलाप और तान भी तो ले लिया करते हैं।

जयचन्द ख़ैर, इस अपमान से आपके मन में जो भाव उठेंगे उनसे एक और भी अच्छी कविता बन जायगी। आपका तो लाभ ही होगा।

जानमसीह मिस प्रभा! अब तो हम लोग जाने सकेंगे। कोई और स्लिप तो नईं है?

प्रभा जी नहीं। सब भेंट समाप्त हो गई।

जानमसीह थैंक्स। ओ नो, शुक्रिया।

जयचन्द प्रभा जी! इन भेंटों के लिए हम सब आपको धन्यवाद देते हैं। आपको बहुत कष्ट उठाना पड़ा।

प्रभा — जी नहीं, कोई कष्ट नहीं।

जयचन्द — और हमारे स्वर्गीय मित्र श्री सत्यप्रकाश जी ने इतने सुन्दर व्यंग्य से जो सही रास्ता दिखलाया है उस पर हम लोगों को अमल करना होगा। उन्होंने अपने नाम को सार्थक करते हुए हमें सत्य का प्रकाश दिया है। मरने के बाद भी वे हमारे पथ-प्रदर्शक हैं।

प्रभा — और ये भेंट की चीजें आप लोगों के यहाँ भिजवा दूँ?

जयचन्द — ये भेंट की चीजें उसी कमरे में (**सम्मिलित स्वर—हाँ, यही ठीक है, यही ठीक है**) रहने दीजिए। सत्यप्रकाश जी तो यही चाहते थे कि उनकी भेंट से प्रभावित होकर हम लोग सही रास्ता पा सकें। उनकी भेंट का उद्देश्य पूरा हो गया। इन्हें उसी कमरे में सुसज्जित कर दें जिससे उनके उच्च विचारों का संग्रह हमेशा के लिए सुरक्षित रहे। हम लोगों के जीवन का आज नया पृष्ठ खुलेगा।

महेन्द्रकुमार — बिलकुल नया।

गिरधारीमल — मेरी तो आँखें खुल गईं साहब! गोविन्द हरि! गोविन्द हरि!

जान मसीह — हम भी समझता हूँ।

केसरी — यह दिव्य दर्शन है!

जयचन्द — अच्छी बात है, तो हम लोग चलें?

प्रभा — किन शब्दों में आप सब लोगों को धन्यवाद दूँ! आप लोग सदैव मुझे सही रास्ता दिखलाते चलिए, यही मेरी प्रार्थना है। आप लोगों के सिवाय अब मेरा कोई नहीं है। (**गला भर आता है।**)

महेन्द्रकुमार — देखिए, आप दुखी न हों। यह स्वर्गीय सत्यप्रकाश जी की इच्छा के विपरीत है। उन्होंने अपने पत्र में लिख ही दिया है कि 'मेरे मरने के बाद मेरे परिचित किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार न होगा कि मेरे लिए आँसू बहाये और दुखी हो!'

प्रभा — मैं भूल गई थी। क्षमा चाहती हूँ।

जयचन्द अच्छा तो हम सब चलें ?

सम्मिलित स्वर हाँ, चलना चाहिए। (सब चलने के लिए प्रस्तुत होते हैं।)

(सत्य प्रकाश का प्रवेश। प्रभा चुपके से भीतर चली जाती है।)

सत्य प्रकाश अच्छा, आप लोग जाने के लिए तैयार हैं ?

सब लोग (चौंककर) अरे, सत्यप्रकाश !

सत्यप्रकाश जी हाँ, मैं सत्यप्रकाश हूँ।

गिरधारीमल ऐं ! सत्य प्रकाश...ऐं...अरे...तुम तो मर गये थे, !...अरे भूत...भूत...(अत्यन्त भय-मिश्रित स्वर में) भू...त (भागने के लिए उद्यत होता है किन्तु अचेत होकर गिर पड़ता है। गिरधारी मल को गिरता हुआ देखकर सब लोग भिन्न दिशाओं में भागने के लिए उद्यत होते हैं।)

सत्यप्रकाश (ज़ोर से आदेश के स्वरों में) भागो मत ! नहीं तो अनिष्ट होगा। (सब स्तब्ध होकर रुक जाते हैं। कवि केसरी कुर्सी के पीछे छिपते हैं। प्रोफ़ेसर महेन्द्र ज़मीन पर बैठ जाते हैं। जान मसीह कुर्सी का सहारा लेकर खड़े रहते हैं और जयचन्द ग़ौर से सत्यप्रकाश को ऊपर से नीचे तक देखते हैं।)

सत्यप्रकाश (अट्टहास करते हुए) भूत ! मैं भूत हूँ ? (फिर अट्टहास करते हैं।) जयचन्द। देखो मैं भूत हूँ (फिर अट्टहास करते हैं) संसार में इसी भय के भूत ने लोगों को तितर-बितर कर दिया है। कोई बेहोश होता है, कोई कुर्सी के पीछे छिपता है, कोई ज़मीन पर बैठता है और कोई सहारा लेकर खड़ा रहता है।

जयचन्द मरने के बाद भी नसीहत !

सत्यप्रकाश तुम्हें भी मुझ पर सन्देह हो रहा है ? ग़ौर से देख रहे हो, जैसे मैं सचमुच भूत हूँ ?

जानमसीह (भय-मिश्रित स्वर में) घोस्ट्स आलवेज़ स्पीक लाइक दिस ! माइ गॉड !

सत्यप्रकाश तुमने अभी तक अँगरेज़ी नहीं छोड़ी, मसीह ! अँग्रेज़ के बच्चे !

जयचन्द ! मसीह को समझाओ कि मैं भूत नहीं हूँ । मैं सत्य प्रकाश हूँ, जो मैं पहले था । छूकर देखो मुझे । मेरा शरीर जानमसीह के 'बाडी' की तरह है या नहीं ?

जयचन्द मैं भी यही सोचता हूँ कि आप सत्यप्रकाश ही हैं । यह सब लोग यों ही डर गये !

महेन्द्रकुमार (उठकर) तो क्या सत्यप्रकाश जी सचमुच नहीं मरे ? (ग़ौर से देखता है ।)

सत्यप्रकाश शायद मरने की कला प्रोफ़ेसर लोग ही जानते हैं । मैं वह कला नहीं जान सका । महेन्द्र जी ! जो चश्मे मैंने आपको भेंट किए हैं, उन्हें लगाकर देखिये मैं मरा हूँ या ज़िन्दा हूँ । क्या मरे हुए आदमी मेरी तरह बात कर सकते हैं ? देखो मुझे, मैं सत्य-प्रकाश का भूत नहीं ।

जानमसीह रियली ! दैट्स स्ट्रेंज ! ओह सॉरी ! ताज्जुब का बात है !

सत्यप्रकाश और कवि केसरी कहाँ हैं ?

कवि केसरी (कुर्सी के पीछे से निकलते हुए) वह रहस्य-दर्शन है ! यह न समझें कि मैं डर गया था, मैं पीठिका के पीछे से आपको उसी प्रकार देख रहा था जिस प्रकार ब्रह्म माया के पर्दे से संसार देखता है । कवि और ब्रह्म में अन्तर क्या है ! उपनिषदों में…

जानमसीह नो टाइम फ़ार दिस जारगन ! स्टाप !

(कवि केसरी तीक्ष्ण दृष्टि से जानमसीह को देखते हैं ।)

जयचन्द तो यह आपका नाटक ही था !

सत्यप्रकाश अरे भाई ! गिरधारीमल को तो उठाओ । बेचारे सेठ जी बेहोश हो गये ! मैं नहीं जानता था कि कैलकटा नेशनल बैङ्क की तरह सेठों के दिमाग़ भी उलट जाते हैं । प्रभा कहाँ है ? (पुकारता है ।) प्रभा ! ज़रा पानी लाना ! सेठ जी को होश में लाना है ।

(नेपथ्य से प्रभा का स्वर—जी अभी लाई ।)

महेन्द्रकुमार आश्चर्य है कि इतनी-सी बात पर सेठ गिरधारीमल बेहोश हो गये !

केसरी आप भी तो ज़मीन पर बैठ गये थे। और मैं, मैं सौन्दर्य-दर्शन कर रहा था!

जयचन्द थोड़ी देर और होती तो आप लेट कर सौन्दर्य-दर्शन करते!

(किंचित् हँसी, प्रभा का प्रवेश)

प्रभा यह लीजिए पानी!

जयचन्द लाइये, मुझे दीजिए; मैं सेठ जी को होश में लाऊँ। (पानी लेकर गिरधारीमल के समीप जाते हैं, साथ में महेन्द्र और केसरी भी। जयचन्द पानी के छींटे देते हैं और महेन्द्र केसरी के गले में पड़े हुए दुपट्टे के एक छोर से हवा करते हैं।)

केसरी अहा! मेरे वस्त्र की वायु सेठ जी में चेतना का संचार करेगी।

सत्यप्रकाश मि० जानमसीह! मुझे आपसे माफी माँगनी चाहिए कि मैंने आपके अँग्रेज़ी दिमाग़ को भी चक्कर में डाल दिया।

जानमसीह दैट्स आल राइट! ओह! ठीक है। ठीक है! यू हैव मेड ए फूल आव अस; बट ए वाइज़ फूल! आइ मीन, होशियार मूरख बनाया!

महेन्द्रकुमार सेठ जी को होश आ गया! होश आ गया!

गिरधारीमल ऐं! मैं कहाँ हूँ? (आँखें फाड़कर) भूत! (काँपते हुए स्वरों में) 'भूत-पिशाच निकट नहिं आवै। महावीर जब नाम सुनावै।' महावीर स्वामी! महावीर स्वामी!

जयचन्द सेठ जी! हनुमान चालीसा पढ़ने की जरूरत नहीं है। सत्य प्रकाश जी मरे नहीं, यह सब उनका नाटक था।

सेठजी (उठते हुए) ऐं! तो जे ठिठोली थी, वह मरे नईं। जे ठिठोली तो अच्छी रही! जिसमें मैं भी देखते-देखते मर जाता। गोविन्द हरि! गोविन्द हरि! (खड़े होकर) वाह, सत्य प्रकाश! तो जे आपकी ठिठोली थी, आप सचमुच नहीं मरे!

सत्यप्रकाश माफ़ कीजिए, सेठ जी! आप तो फ़िजूल ही इतना डर गए, मैं अगर जानता कि आप लोग दोस्त होकर मुझसे इतना डर जायँगे तो शायद मैं ऐसी गुस्ताख़ी कभी न करता!

यह भी आपका मज़ाक ही रहा।
मैं जानना चाहता था कि मेरे मरने के बाद आप लोग मेरी बात की कितनी क़ीमत करते हैं। बैठिए, बैठिए।

(सबको कुर्सी पर बिठाते हैं)

• मैं बग़ल के कमरे से आप लोगों की बातचीत सुन रहा था। हम लोग मौत की पूजा करते हैं और ज़िन्दगी को ज़लील करते हैं।

हम सब बहुत शर्मिन्दा हैं कि आपके इस नाटक से इतना डर गए! हमें इससे बहुत ग्लानि हो रही है।
सत्य प्रकाश जी के सत्य को परखना कठिन है। अब तो यही कहना चाहिए कि आज का नाटक दुःखान्त होते-होते सुखान्त बना गया। हमें खुशी है कि सत्य प्रकाश अब भी हम लोगों के बीच में हैं।

जैसे कंटकों के बीच में पुष्प।
और सबसे ज़्यादा तारीफ़ के लायक तो पार्ट रहा प्रभा जी का। जो इस नाटक को समझते हुए भी अनजान की तरह पार्ट निभाती रहीं।
इसके लिए मैं क्षमा चाहती हूँ। चाचाजी ने आदेश दिया था कि इस अवसर पर सच्चा अभिनय करूँ!
एक्सीलेंट पार्ट इनडीड। ख़ूब पार्ट किया!
कवि जी! मसीह साहब को हिन्दी बोलना सिखला सकोगे!
फूलै फले न बेत, जदपि सुधा बरसहिं जल्द!
मसीह साहब में 'मसी' तो है, लेखनी भर की ज़रूरत है, वह सत्य प्रकाश जी अपने अगले नाटक में उन्हें भेंट कर देंगे।

आप लोगों को भेंट तो हमेशा ही देता रहूँगा।
सचमुच, आपकी भेंट कमाल की है। ऐसा 'सही रास्ता' दिखलाया कि शायद ही कोई दिखला सकता। और, सबसे बड़ी

बात तो यह है कि आपने ज़िन्दा होकर अपने आप को भेंट दिया। यह नाटक अमर नाटक है।

गिरधारीमल हाय! मेरा बिरधीचन्द भी ऐसा नाटक करता तो कितना अच्छा होता! पर वो वो सचमुच ही मर गया!

सत्यप्रकाश अरे सेठ जी! नाटक तो सबका आख़ीर में ऐसा ही होने को है अच्छा, अब आप सब लोग मेरे जी उठने की ख़ुशी में चा के जाइएगा—

सब लोग बहुत ख़ूब···बहुत ख़ूब···

सत्यप्रकाश प्रभा! मेरा प्रिय संगीत सुनाना।

प्रभा बहुत अच्छा, चाचा जी!

(प्रभा अंदर जाती है और गीत का रिकार्ड चढ़ा देती है।)

दूर चला चल तू कहीं दूर चला चल।
इस पाप की दुनियाँ से कहीं दूर चला चल॥

(गीत की ध्वनि गूँजती रहती है। परदा गिरता है।)